मैत्री आश्रम को

सादर सस्नेह

प्रस्तावना

कुमारी निर्मला देशपांडे की यह पुस्तक 'चिंगलिंग' कुछ समय पहले मराठी में प्रकाशित हुई थी अब हिन्दी में आ रही है। हिन्दी में भी यह मौलिक ही है, अनुवाद नहीं है। पढ़नेवाले को भी अनुवाद नहीं लगेगा। एकाध जगह भाषा टकसाली हिन्दी से कुछ अलग हो गयी है, सो यह इसकी मौलिकता का प्रमाण है। हिन्दी पूरे हिन्द की बन रही है और अधिक समय लीक में ही बंधी रहनेवाली नहीं है। यह कहना मुझे इसलिए आवश्यक हुआ है कि स्थान-स्थान पर मैं इस भाषा की रुचिरता और नम्रता से आकृष्ट और प्रभावित हुआ हूँ। कहीं वह भाषा चित्रमय हो उठी है, तो सब कहीं मितवाक् है। शब्दों का अपव्यय कहीं नहीं है और उनका चयन सर्वथा सार्थक है। कुमारी निर्मला को मैं इसके लिए बधाई दे सकता हूँ।

निर्मला उपन्यास-लेखिका नहीं हैं। शायद यह उनका पहला और अकेला उपन्यास होगा। वह कार्यकर्त्री हैं, समाज-सेविका हैं। पहले कॉलेज में प्राध्यापिका थीं। पर क्रियात्मक मनन उनका स्वभाव बन गया है। तदनुसार इस उपन्यास की पीठिका वैचारिक है और यह शुभ घटना है। उपन्यास-सम्पन्न के क्षेत्रीय बन्धु अनेक ऐसे प्रश्नों की ओर जो सामयिक और चिन्तनीय हैं, दुर्लक्ष कर जाते हैं। मानो उपन्यास की साहित्यिक भूमिका प्रेम-भावना तक हो विचार-विवेचन के प्रदेश उससे अलग एवं दूर जान के लिए हों। कुमारी निर्मला का यह

उपन्यास निश्चय ही परम्परा से अलग है और उसका मुख किंचित सुख मिला है।

कुल मिलाकर यद्यपि मैं यह मानता हूँ कि कृत्य का घटना का अगम प्रतिफल है, कारणभूत उसमें कुछ दूसरा ही भावजगत होता है। खोज गहरी नहीं होती मन की गवेषणा के लिए राजनीतिक प्रवृत्तियाँ अथवा पदार्थ नहीं हैं। तो भी निमला के 'चिंगलिंग' का आयाम तक सीमित नहीं है और वह कृत्य को जन्मभार की अपेक्षा रखने और आँकने का प्रयत्न करता है।

चिंगलिंग चीन की कन्या है। पर निरी चीन की नहीं माता उसकी अमेरिकन है। तिस पर मन उसका भारत की है और उपन्यास के काल में वह भारत भूमि पर वास विचरण करती है। बुद्ध भारत में जनमे उनकी देशना आरम्भ यहीं से हुआ। इस सूत्र से भारत के साथ उसकी पहले से आत्मीयता है। इस प्रकार सब कहीं आत्मीय और सभी कहीं प्रवासी इस विद्यामासीन कुमारी युवती के समक्ष अनायास कुछ व्यावहारिक प्रश्न आते हैं। जैसे राष्ट्र और राष्ट्रीयता का प्रश्न चीन और अमेरिका के राष्ट्रवाद परस्पर विमुख बन जाते हैं। चीन में साम्यवाद कूच करता हुआ आगे बढ़ रहा है और विजयोन्माद में है। अमेरिका उसकी निगाह में पूँजीवाद का प्रतीक होने से पहले दुश्मन है। वैसे चीन और अमेरिका दोनों पदार्थ की प्रभुता और प्रचुरता के पीछे होने से समान

है। अमेरिका तो कुछ ही अर्वाचीन है, चीन के पास अपनी प्राचीनता भी है और चिंगलिंग के पिता उसीके श्रेष्ठ प्रतिनिधि हैं। चिंगलिंग की माता अमरिकी अर्वाचीनता में जो श्रेयस् है, मानो उसकी प्रतीक हैं। इन माता-पिता की कन्या होकर चिंगलिंग की मानसिकता मुक्त और ऊर्ध्वमुखी है। वह प्रादेशिक नहीं हो सकती। चीन अमेरिका में किसीकी अपनी या गैर नहीं हो सकती। किन्तु राष्ट्रों के बीच परस्पर उन्माद और भय हो तो चिंगलिंग जैसी व्यक्ति का क्या बने ? राष्ट्रीय उसके लिए अपर्याप्त होता है, अन्य किसी नागरिकता की अभी सृष्टि नहीं हुई है। मानव-एकता की भावना यों प्रिय सबको होती है, लेकिन मानो बैठने-बसने के लिए उस भावना के पास अभी कोई घर नहीं है। वह अनिकेतन-अनगारिक रहने को बाध्य है। उत्तम है पर मानो मूल्यहीन और उपयोगहीन है।

चिंगलिंग कुछ ऐसे ही भावलोक में विहरण करती हुई भारत में आती है। यहाँ विनोबा की भूदान-यात्रा हो रही है और चिंगलिंग को बड़ा आश्वासन प्राप्त होता है। जैसे उसने पा लिया जो चाहती थी। यह यात्रा मनुष्य के दैनन्दिन से घनिष्ठ भाव से जुड़ी है, ग्रामवासी और गृहवासी की समस्या के मूल में जाती है। धरती की है ऊपरी आकाशीय नहीं है। लेकिन अधिष्ठान उसका किसी स्वत्व अथवा निजत्व पर नहीं है, 'जय जगत' पर है। दरसती है कि अकिंचन होकर एक सन्त यहाँ दीन तक को दाता बना रहा है। जो अपने को असहाय और दीन

उपन्यास निश्चय ही परम्परा से अलग है और उसको पढ़कर मुझे किंचित सुख मिला है।

कुल मिलाकर यद्यपि मैं यह मानता हूँ कि कृत्य का और घटना का उतना प्रतिरूप है, कारणीभूत उसमें अन्तर्व्यास कुछ दूसरा ही भावजगत होता है। खोज गहरी वहाँ होती है, मन की गवेषणा के लिए राजनीतिक प्रवृत्तियाँ अथवा मतामत पर्याप्त नहीं हैं। तो भी लिसमा के 'लिगलिंग' का आयाम वाम तक सीमित नहीं है और वह कृत्य का अन्तर्भाव की अपेक्षा में उलझन और मौखन का प्रयत्न करता है।

लिगलिंग चीन की कन्या है। पर निरी चीन की नहीं है, माता उसकी अमरिकन हैं। तिस पर मन उसका भारत की ओर है और उपन्यास के काल में वह भारत भूमि पर वास और विचरण करती है। बुद्ध भारत में जन्मे, उनकी चेतना का आरम्भ यहीं से हुआ। इस सूत्र से भारत के साथ उसकी पहले से आत्मीयता है। इस प्रकार सब कहीं आत्मीय और सभी कहीं प्रवासी इस लिंगालिंग कुमारी युवती के समक्ष अनायास कुछ व्यावहारिक प्रश्न आते हैं। जैसे राष्ट्र और राष्ट्रीयता का प्रश्न। चीन और अमरिका के राष्ट्र परस्पर विमुख बन आये हैं। चीन में साम्यवाद कुछ करता हुआ आगे बढ़ रहा है और विश्वसंसार में है। अमरिका उसकी निगाह में पूँजीवाद का प्रतीक होने से पहला दुश्मन है। वैसे चीन और अमरिका दोनों पश्चिम की मनुष्यता और मनुष्यता के पीठ होने से समान

हैं। अमरिका तो कुछ ही अर्वाचीन है, चीन के पास अपनी प्राचीनता भी है और चिंगलिंग के पिता उसीके श्रेष्ठ प्रतिनिधि हैं। चिंगलिंग की माता अमेरिकी अर्वाचीनता में जो श्रेयस् है, मानो उसकी प्रतीक हैं। इन माता-पिता की कन्या होकर चिंगलिंग की मानसिकता मुक्त और ऊर्ध्वमुखी है। वह प्रादेशिक नहीं हो सकती, चीन अमेरिका में किसीको अपनी या गैर नहीं हो सकती। किन्तु राष्ट्रों के बीच परस्पर उन्माद और भय हो तो चिंगलिंग जैसी व्यक्ति का क्या बने? राष्ट्रीय उसके लिए अपयास होता है अन्य किसी नागरिकता की अभी सृष्टि नहीं हुई है। मानव-एकता की भावना यों प्रिय सबको होती है, लेकिन मानो बैठने-बसने के लिए उस भावना के पास अभी कोई घर नहीं है। वह अनिकेतन-अनगारिक रहने को बाध्य है। उत्तम है पर मानो मूल्यहीन और उपयोगहीन है।

चिंगलिंग कुछ ऐसे ही भावलोक में विहरण करती हुई भारत में आती है। यहाँ विनोबा की भूदान-यात्रा हो रही है और चिंगलिंग को बड़ा आश्वासन प्राप्त होता है। जैसे उसने पा लिया जो चाहती थी। यह यात्रा मनुष्य के अन्तस्तल से घनिष्ठ भाव से जुड़ी है, ग्रामवासी और गृहवासी की समस्या के मूल में जाती है। धरती की है ऊपरी आकाशीय नहीं है। लेकिन अधिष्ठान उसका किसी स्वत्व अथवा निजत्व पर नहीं है 'जय जगत्' पर है। देखती है कि अकिंचन होकर एक सन्त यहाँ दीन तक का दाता बना रहा है! जो अपने को असहाय और दीन

मानते आये हैं, उनका संचालन में वह रहा है कि तुम तो धरती माता के समान हो, जिसका सबको आधार है। पहचानने की देर है कि सत्ता सब तुम्हारी है। सिर्फ तुम बँटे न रहो एक बनो और गाम को एक बनाओ। तो देश बनेगा, जगत बनेगा। होगे तो पाओगे। और विनोबा की यात्रा का वातावरण चिंगलिंग के मन को भिगा देता है।

यात्रा में अन्य साथी लोग हैं और निर्मला ठीक है कि उन सबको दूध-धुला नहीं दिखा पाती। सब अपनी समस्याओं में हैं और उनसे जूझ रहे हैं। लेकिन जिस प्रेरणा का सम्बल लेकर जीवन-पुरुषार्थ में वे लगे हैं वह उद्दीपक है, उद्बोधक है।

पुस्तक में एकरसता नहीं है, न वह एकांगी है। गाँव ही नहीं शहर की कुछ झाँकी भी आ जाती है। चिंगलिंग के संबंधों द्वारा जैसे यह व्यक्त कर दिया जाता है कि मताग्रहवादी बनकर जीवन को मुक्ति की ओर नहीं ले जाया जा सकता। सहानुभूति की व्यापकता और असम्पृक्तता में से ही जीवन प्रशस्त और मुक्त होगा।

हिमालय की सीमा पर जो काण्ड हुआ उस पर चीन की ओर से चिंगलिंग की मनोदशा देखिए :

"मेरी आँखों के सामने अँधेरा छा गया। समाचार-पत्र में छपे हुए बड़े-बड़े अक्षर भी मुझे दिखाई नहीं दे रहे थे। मन मूर्च्छित हो गया, बुद्धि कुंठित हो गयी, शरीर जड़वत्, प्राणहीन चेतना हीन बन गया। समाचार-पत्र हाथ से छूट गया।

"जिस देश ने हमें बुद्ध दिया, धर्म दिया, दर्शन दिया, उसी

देश पर हमने आक्रमण किया! युग-युग से यहाँ केवल विनम्र श्रद्धा ही लेकर आते रहे, आज यहाँ पर उन्मत्त विजिगीषा लेकर आ धमके! आज तक यहाँ यात्री ही भेजे गये आज इसी तीर्थ भूमि में शस्त्रास्त्रों से सज्जित सेना भेजी गयी!

"मेरे पैरों तले से धरती खिसक गयी थी। धरा का आधार टूट गया था। मैं फिर से निराधार बन गयी थी। बिल्कुल *निराधार, एकाकी मेरे अन्तर की वह टीस दिल का वह दर्द* कोई नहीं जान सकता था।"

आगे राष्ट्र नागरिकता के प्रश्न का असमंजस देखिए

'रीटा! तुमने अमेरिका का नागरिकत्व छोड़कर भारत की नागरिकता लेने में बुद्धिमानी नहीं की"

"मुझे अभी तक भारत का नागरिकत्व नहीं प्राप्त हुआ है। हाँ अमेरिका का जरूर छोड़ दिया है।"

"माई गॉड स्थिति कितनी जटिल हो गयी। अब तो भारत सरकार तुम्हें चीनी मानकर चाहे जब जेल में भेज सकती है। आज ही फिर से अमेरिकन नागरिकत्व प्राप्त करना होगा।"

'मुझे नहीं चाहिए।

"और भारत का न मिला तो?

"जो होना है सो होगा।"

जिम को केवल मेरे नागरिकत्व की चिन्ता थी। मुझे अपने अस्तित्वमात्र की ही चिन्ता थी अब मैं किसी प्रकार की सुरक्षा नहीं चाहती थी न मेरा कोई वतन रहा न घर।

मनुष्य की इस स्थिति में कि जब समस्या अस्तित्व और अनस्तित्व की हो जाती है, दूसरी सब समस्याएँ मानो कोई कपड़े की तरह उतरकर अलग हो जाती हैं, शायद प्राप्त होता है वह, जिसे शांति कह सकते हैं। आदि दुःख और विषाद। यहीं से मानो व्यक्ति को आत्मा प्राप्त होती है। वह कि जिसे लेकर आदमी उछल नहीं सकता, आँखें नीची रख के धीरे-धीरे चल ही सकता है कि जैसे पहाड़ पर चढ़ा जाता है।

पुस्तक का समाहार कुछ ऐसे ही वातावरण में होता है :

'मेरे पाँव बुद्ध-मन्दिर की दिशा में बढ़ने लगे। रात हो गयी थी इसलिए बाहर के प्रकाश की प्रतीक्षा करनी नहीं थी। पाँच ज्योति का बड़ा दीया कदाचित् हवा के झोंके से बुझ जाय इसलिए मैंने मूर्ति के निकट एक छोटा-सा दीप ही जलाया। उस छोटे-से दीप के छोटे-से प्रकाश से बाहरी दुनिया का घना अन्धकार दूर होना कठिन ही था भव्य मूर्ति भी स्पष्ट नहीं दीख रही थी पर उस दीप ने दो वस्तुएँ आलोकित कर दीं— बुद्धदेव के चरण तथा चिंगलिंग के नयन।"

पुस्तक से कुछ विरल वायु का स्पर्श मिला मालूम होता है जो स्वास्थ्यप्रद है और कुमारी निर्मला का इसके लिए आभार माना जा सकता है।

७/११ दरियागंज
दिल्ली ६
१२.११.६१

जैनेन्द्रकुमार

दो शब्द

मातृ-भूमि की एक सुकन्या की यह कहानी युद्ध-भूमि में सुनायी जा रही है इस आशा और विश्वास के साथ कि सुननेवाले करुणाप्लुत श्रवणों से सुनेंगे और वह करुणा स्मृति में समाहित होगी ।

चिंगलिंग अपना दुख-दर्द बरसों तक छिपाये रही । शायद दर्द का हद से गुजर जाना ही उसके लिए दवा बन गया था । लेकिन मेरे छोटे-से दिल में वह दर्द समा न सका कलम के सहारे फूट निकला । मैं नहीं जानती कि मैंने उसके साथ न्याय किया है या अन्याय ।

हिन्दी के विख्यात साहित्यिक एवं दार्शनिक जैनेन्द्रकुमारजी ने आशीर्वचन लिखकर मुझे अत्यन्त अनुगृहीत किया है । उनके प्रति कृतज्ञता शब्दों के द्वारा प्रकट करना मेरे लिए सम्भव नहीं है ।

यह पुस्तक सर्व-सेवा-संघ की ओर से प्रकाशित हो रही है इसके लिए मैं आभारी हूँ ।

—निर्मला देशपाण्डे

प्रकाशकीय

'चिरमिलन' उपन्यास में श्री निर्मलाबहन ने एक ऐसी कथा संजोयी है जिसमें चीनवासिनी एक कन्या बुद्ध की लीला-भूमि भारत में आकर विनोबाजी की पद-यात्रा में सम्मिलित होती है और यहाँ की संस्कृति तथा विभिन्न परम्पराओं का स्पर्श तथा अनुभव करते हुए विनोबाजी के चिन्तन के प्रकाश में विश्व के विराट् तथा आध्यात्मिक रूप का दिग्दर्शन करती है। उसकी ज्ञान की पिपासा बढ़ती है हृदय में प्रकाश का संचार होता है और मन प्राण से वह चाहती है कि देशों की दूरियाँ राजनीतिक हदबंदियाँ टूटें और सम्पूर्ण मानव-जगत् एकता तथा समन्वय के सूत्र में ग्रथित हो जाय। भगवान् बुद्ध की यह परम उपासिका हृदय की सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ अहिंसा और अध्यात्म के मधुर लोक में पाठक को पहुँचा देती है।

निर्मलाबहन ने यह उपन्यास सन् ६१ में ही लिख लिया था जब कि भारत पर चीन का आक्रमण नहीं हुआ था। लेकिन इस रचना में लेखिका ने चिरमिलन के चिन्तन में दरसाया है कि चीन का आक्रमण हुआ है। इस सन्दर्भ में जो चिन्तन इस पुस्तक में अभिव्यक्त हुआ है वह औपन्यासिक होते हुए भी रचयित्री की दूरदर्शिता का संकेत करता है।

निर्मलाबहन से हमारे पाठक सुपरिचित हैं। वे सुशिक्षित हैं निष्ठावान् विचारक हैं और भूदान-आन्दोलन में शुरू से ही विनोबाजी के साथ रही हैं—उनकी कन्या के रूप में। विनोबा-विचार को उन्होंने समग्रता से आत्मसात् किया है। विनोबा-विचार उनका मन प्राण बन गया है।

सर्व-सेवा-संघ की ओर से पहले भी निर्मलाबहन की कई रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। इस कृति में उनका प्रबुद्ध अन्तर्मुखी कलाकार व्यक्त हुआ है। इस रचना का हिन्दी-साहित्य में अपना विशिष्ट और सांस्कृतिक स्थान बनेगा ऐसी आशा है।

●

आशीर्वादः

शान्ति-समीरण-जन्या स्वग्राम-धन्या
सुनिर्मला अनन्या
शान्तिं प्रबोधयन्ती सर्वेषां
ब्रह्मचारिणी कन्या ।
भूदान-यज्ञ-निरता स्वार्थ-विरक्ता
गुणग्रहण-रक्ता
कुशल-देहे बलवत्-संकल्पा
स्पष्ट-भाषिणी मुग्धा ।
अनवरत-भ्रमण-शीला सतत-लीला
भग-स्मरण-कुशला
यस्याः कृतिर् विशाला ऽऽकृतिरविशाला,
स्व-कल्पना-माला ।
रचिता कथा तयेयं रुचिरा
श्रुति-रम्य-भावपूर्ण-हृद्या
पद्यावलिरिव हृद्या भवतु जनानां
हितावहा शुभदा ।

भूदान-यात्रा
(असम प्रदेश)
१ १ १

मराठी पुस्तक की भूमिका

नागपुर के प्रसिद्ध साहित्यिक तत्त्वचिन्तक एवं साधक श्री पुरुषोत्तम यशवन्त देशपांडे और श्रीमती विमलाताई देशपांडे की सुविज्ञ कन्या का लिखा यह पहला उपन्यास है। निर्मलाताई को प्रथम महान् माता पिता से साहित्यिक अभिरुचि की बहुत बड़ी विरासत मिली है। बचपन में ही राजनीति साहित्य संगीत कला दर्शन आदि विषयों की गम्भीर चर्चाएँ प्रतिदिन उन्हें सुनने को मिली हैं। नागपुर युनिवर्सिटी से ब एम ए हैं। कुछ दिन प्रोफेसर के नाते काम भी किया है। इसलिए एक-माव उपन्यास लिखना उनके लिए कोई कठिन काम न था। यौवन की वश भूमि में प्रवेश करते ही पिता की तरह पुत्री भी 'बन्धन के परे' (एक मराठी उपन्यास) जैसा चिन्तन बना सकती थी। पर उसने ऐसा न कर डेढ़-दो वर्ष अंतर्मुख वृत्ति से जीवन का निरीक्षण-परीक्षण किया। शारीरिक अस्वस्थता की परवाह न करते हुए लगभग १ वर्ष पूज्य विनोबाजी के साथ भारत-भूमि की पदयात्रा की। कन्याकुमारी से कश्मीर तक विस्तृत भारत-भूमि का अखिलभाव से दर्शन किया। पूज्य विनोबाजी के आश्रम विद्यापीठ में कठोर ज्ञान-साधना की। विनोबा की पदयात्रा में उनके प्रवचनों को शीघ्र लिखना और उनकी सुसम्पादित प्रतियाँ बड़ी निष्ठा के साथ वर्षों तक भूदान साप्ताहिका को उपलब्ध कराना भी निर्मलाबहन और उनकी बहन कुसुम देशपांडे का काम रहा है। सत्वदाता के रूप में किया गया यह काम इतना मूल्यवान् है कि उसका जितना गौरव किया जाय थोड़ा है।

विनोबाजी की पदयात्रा सारी दुनिया में गूँज उठी। जापान अमरिका इंग्लैण्ड जर्मनी आदि दूर-दूर के देशों से युवक-युवतियाँ आकर विनोबाजी की पदयात्रा में भाग लेने के लिए भारत आयीं। दो-चार

सप्ताह या अधिक समय पदयात्रा में रहकर उन्होंने बड़ी आस्था से विनोबाजी का संदेश समझ लेने का यत्न किया। विनोबा की पदयात्रा हमारे इस अणु-युग का एक महान् आश्चर्य है। दुर्भाग्य की बात है कि पदयात्रा की यह पुकार भारत के विद्यालयीन युवकों के कानों में नहीं पहुँची। हमारे देश के विद्यार्थियों में इसका आकर्षण बहुत ही कम पाया गया। इसलिए अन्य देशों से आये युवक-युवतियों पर विनोबाजी की पदयात्रा का पड़ा प्रभाव और भी आश्चर्यजनक प्रतीत होता है। इस पदयात्रा में नित्य ही ऐसे दृश्य और घटनाएँ घटती हैं जिनसे किसी भी साहित्यिक या कलाकार को स्फूर्ति मिले। सिवा विनोबाजी जैसे बड़े सन्त पुरुषों के सहवास का भी लाभ होता है। उपनिषद् जैसे साहित्य के निर्माण की सारी साधन सामग्री यहाँ सज्ज थी। ऐसे सुअवसर से लाभ उठाने की सतर्कता बहुत ही कम लोगों ने दिखायी है।

निर्मलाताई या कुसुमताई और उन जैसे आठ-दस नवयुवकों ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया। पदयात्रा में पूज्य विनोबाजी के साथ रहकर इन लोगों ने कठोर ज्ञान-साधना की है। उनका महान् अधिकार है। निर्मलाताई स्त्री-शान्ति-सैनिक-शाखा की प्रमुख सेनानी हैं। इन्दौर में स्त्री-शान्ति-सैनिकों का मुख्य शिक्षण-केन्द्र है। वहाँ वे प्रशिक्षण का पवित्र कार्य कर रही हैं। कुछ दिन सर्व-सेवा-संघ के सहमंत्री-पद का कार्यभार भी उन्होंने सँभाला है। वे सर्वोदय-आन्दोलन की एक क्रान्तिकारी महिला मानी जाती हैं। मराठी की तरह ही हिन्दी पर उनका अधिकार है। इतनी छोटी अवस्था में जो समग्र जीवन-दृष्टि विचार स्थैर्य एवं तप-सामर्थ्य उन्होंने दिखायी वह सुदुर्लभ है। गत इस वर्ष विनोबाजी के मार्गदर्शन में उन्होंने जो ज्ञान-साधना की वह बेजोड़ है। अवस्था में मुझसे छोटी होने पर भी उनका तप और साधना बहुत बड़ी है। भारतीय युवक-युवतियों के लिए आदर्शमय विद्यार्थी-जीवन वे बिता रही हैं। विनोबाजी की मानस-कन्याएँ गार्गी-मैत्रेयी की तरह बोलने-जानने लगीं तो उसमें आश्चर्य ही क्या है?

निर्मलाबाई द्वारा लिखित इस 'विमलिंग' उपन्यास के एक-एक पृष्ठ पर तत्त्वचर्चा दीख पड़ेगा। 'विमलिंग की आत्मकथा' नाम इसे उचित फबता। कुछ दिन पूर्व दक्षिण अमेरिका के चिली देश से 'स्पेन' नामक एक युवती विनोबाजी की पदयात्रा में आयी थी। वह चार पाँच मास ही भारत में रही होगी पर अपने बुद्धि-वैभव शालीनता और सेवा-भाव से उसने छोटे-बड़े सभी के मन जीत लिये। उसके बाद उसीकी तरह पेंट नाम की दूसरी अमेरिकन युवती भारत आकर विनोबाजी की शिष्या बनी। राबर्ट्स नामक एक स्विस-युवक दो वर्ष पदयात्रा में शामिल हो भूदान का सेवक बना और देशभर मस्ती से घूमा। जर्मनी से आयी 'मार्गरेट बोस्केस' तो विनोबाजी की मानस-कन्या ही बन गयी। विनोबाजी ने उसका नाम 'हेमा' रखा है। बैंगलोर के वैज्ञानिक डॉ प्रसन्नरामन् से उसका विवाह हो गया है।

भूदान-आन्दोलन का जय जगत् जयघोष कितना वास्तविक है, इसकी कल्पना बहुत ही कम लोगों को होगी। राष्ट्रवाद का युग बीत गया यह अब स्वयं हमारे राष्ट्रपति ही अमरिश भाषा से घोषित कर रहे हैं। जापानी चीनी प्रत्येक अमेरिकन और जर्मन ही नहीं अपितु समग्र मानव मात्र के लिए भूदान का आवाहन है।

निर्मलाबाई ने प्रस्तुत उपन्यास में प्राचीन कौमिनतांग शासन के एक चीनी विदेशमंत्री की बुद्धिमती कन्या 'विमलिंग' का आत्मवृत चित्रित किया है। विनोबाजी की पदयात्रा में यह कन्या शामिल होती है और उनकी शिष्या बनती है। चीन और भारत की साधारण जनता में पूर्व संस्कारों के कारण कुछ भ्रातृभाव हो चुके हैं। उन्हें चीनी शासक तक एक नष्ट नहीं कर सकते।

कुशल गायक प्रारम्भ में सुर जमाता है तो उसीसे उसकी तैयारी ध्यान में आ जाती है। इसी तरह उपन्यास के आशय का उसकी नांदी से ही पता चल जाता है। इस उपन्यास का प्रारम्भ होता है इन शब्दों से : कहा जाता है कि शंकराचार्य ने बत्तीसवें वर्ष ही अपनी जीवन-यात्रा पूरी

कर दी । लेकिन मुझे तो जीवन का अर्थ समझने में ही बत्तीस वर्ष लगे । तीसरे परिच्छेद के अन्त में कहा गया है

राजपुत्र सिद्धार्थ घर छोड़कर निकले और जंगलों में भटकने लगे । किसलिए ? प्रथम आर्यसत्य का दुःख का दर्शन न हुआ तो मनुष्य असत् के अँधेरे में टटोलता चक्रवर्ती सम्राट् बनता है और दुःख-दर्शन होते ही सत्य का शोधक सन्यासी हो जाता है । यह खोज मुझ अकेली की नहीं । दुनिया भर बिखरे मुझ जैसे मानव ऐसी ही कुछ खोज कर रहे हैं । दुःख-दर्शन जिसे जितना स्पष्ट होता है उसकी खोज की उत्कटता उतनी बढ़ती है ।

इन प्रारंभिक बोलों से 'निर्मलिंग' की कितनी ऊँची वैचारिक उड़ान है और उसे कौन-सा खोया प्रेम ढूँढ निकालना है इसकी सहज कल्पना की जा सकती है ।

'निर्मलिंग' भारत म आने के पूर्व अमेरिका में पी एच डी का अध्ययन कर रही थी । उसकी जीवन-कथा बहुत ही मनोरम कल्पना प्रवण शैली से वर्णित है । अमेरिका में वह 'रिता' नाम से परिचित थी । विनोबाजी न उसका 'मुक्ता' नामकरण किया ।

भूदान-आन्दोलन में भाग लेनेवाले इस उपन्यास का अधिक रस ले पायंगे । इसमे भूदान के सैनिक और ग्राम-ग्राम में उनकी याद देनेवाले सूक्ष्म स्त्री-पुरुषों का चित्रण बड़ी ही सहृदयता के साथ हुआ है । जब-तब प्रकृति-सौन्दर्य के वर्णन बिखरे पड़े हैं । उदाहरणार्थ 'भोर मे चार बजे पदयात्रा शुरू होते ही आसपास की प्रकृति का वर्णन बड़ा ही सुभावना है । प्रातःकाल होने से पूर्व की वह कालिमा वह नीरव शान्ति वह निस्तब्ध सृष्टि प्रकाश की जगह प्रसन्नता बिखेरनेवाली कुहू-कुहू करती तारिकाएँ मुझे पता नहीं था कि मैं सब चीज इतनी बोलती हुई हुआ करती है । ये सब कितनी बातें करती हैं । पत्तों की मर-मर, झरनों की कल-कल हवा की सर-सर और वर्षा की झर-झर के सारे मधुर बोल मैं सदा से सुनती आ रही हूँ । सारी दृश्य सृष्टि का अदृश्य करनेवाला धूसर कुहरा और तारिकाओं को अपनी आड़ म छिपा लेनेवाले ये काले-काले बादल

भी सुमधुर बातें करते हैं। लेकिन मूक कालिमा और गौरव शान्ति भी अनाम बोल बोलते हैं यह मैंने आज जाना। बुढ़ापा का निष्पन्द स्पंदन राह चलन में साथ देता है यह भी आज ही मैंने अनुभव किया। ऐसे संस्म-रण आपको इस पुस्तक में स्थान-स्थान पर पढ़ने को मिलेंगे।

'हिन्दी चीनी भाई भाई' के जमाने में लाल चीन के शासन का भारत में सर्वत्र जो अप्रत्याशित गौरव हुआ उसे देख निर्मलिया को दुःख होता है। 'मौतिया मेरे दरशन की प्यासी' जैसी उत्कटता से चाऊ-एन-लाई का दिल्ली में स्वागत हो इससे भी उसे विषाद होता है। बाद में जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो वह बिहार के एक देहात में भरी सभा में 'मैं चीनी हूँ' यह घोषणा कर चीन सरकार का प्रतिवाद करती है।

भूदान जैसे आन्दोलन में वह क्यों रम गयी इसकी 'निर्मलिया' ने बड़ी मार्मिक मीमांसा की है। 'हमारे परिवार की दुनिया दादा के देहात की दुनिया और मामू के कस्बाई की दुनिया के बीच अतलान्तिक और प्रशान्त महासागर फैले हुए थे। फिर भी मुझे हर दुनिया घर जैसी ही मालूम पड़ती। लेकिन यह उत्कण्ठा बनी रहती कि मेरी यह सारी तरह-तरह की दुनिया कब निकट से आयेगी। चीन में मैं नौकरों के घर जाकर खाया करती। अमेरिका में नीग्रो छात्रों से दोस्ती करती और अब भारत के गाँव-गाँव में पैदल घूमती हूँ। इस कारण लोग मुझ पर बड़े-बड़े गुण लादने की कोशिश करते हैं। व्यर्थ ही लोगों को भ्रम होता है कि मैं गरीबों के उद्धार की तड़पन, जातिभेद नष्ट करने की उत्कंठा, आर्थिक समता की आकांक्षा आदि उद्देश्यों से यह सब किया करती हूँ। लेकिन मैं सिर्फ इतना ही चाहती हूँ कि सभी यह तरह-तरह की दुनिया निकट आवे जिससे मैं अपने जीवन के अलग-अलग टुकड़े जोड़ सकूँ और एक ही दुनिया में संश्लिष्ट जीवन जी सकूँ। किसी पराये के उद्धार के लिए नहीं अपने-आपके उद्धार के लिए, मुझे लगता है कि ये अनेक दुनिया मिटकर एक दुनिया बन जाय।

चीन के भारत पर आक्रमण से निर्मलिया को असह्य दुःख हुआ। वह कहती है जिस देश ने हमें बुद्ध दिया धर्म दिया दर्शन-तत्त्वज्ञान दिया

उस पर हमने आक्रमण किया ! जहाँ हम आज तक अज्ञातवास हाक
गये वही आज उन्मत्त जिगिषा लेकर पैठे । जहाँ आज तक केवल मा
ही भेजे वहाँ आज हमने सैनिक भेजे । मेरी व्यथा कोई समझ नहीं सकता
मेरे नाम से मेरे भारत पर आक्रमण किया था ! उस भय लगने लगा कि
चीनी होने के कारण हमारी गणना शत्रुओं में होगी । उस समय विनोबाजी
का आश्वासन बड़ा ही शुभ है । उन्होंने कहा 'वेद में एक मंत्र है 'या
विश्वं भवति एकनीडम्' यह भारत भूमि एक विश्वनीडम् है विश्व मे
समस्त मानवों का घोंसला है । किसी भी श्रान्त क्लान्त पंछी को यह
विश्राम और आश्रय मिलेगा । हमने बुद्ध-धर्म बाहर पहुँचाकर जिन देशों
के हृदय अपने से जोड़ लिये उनमें से एक महान् देश में तुम्हें जन्म मिला
यह सुन मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई । लाओत्से और कांफ्रुत्से की महान् भूमि
की एक कन्या की सेवा भारत को प्राप्त हो रही है, यह अद्भुत सुयोग है
दोनों देशों की परस्पर गूढ़ और गाढ़ मैत्री है । चीन और भारत का
सम्पर्क होने जा रहा है । सम्पर्क कभी-कभी प्रारम्भ में कटु भी भासता है
इस सम्पर्क से यदि मधुरता निकली तो विश्व शान्ति का मार्ग दुनिया के
हाथ लगेगा और यदि कटुता पैदा हुई, तो विश्व विनाश टूट पड़ेगा ।
भारत के पास विश्व-कल्याणकारी एक विचार होने से हम समझते हैं कि
यह सम्पर्क एक अवसर है । आज के इस विज्ञान-युग में राष्ट्रों के बीच
की दीवार ढहनेवाली है । सारे विश्व का एक राज्य होनेवाला है
विश्व-मानुष विज्ञान-युग की विभूति है । बुद्धदेव का धर्म-चक्र प्रवर्तन
कार्य पूरा नहीं हो पाया है । विज्ञान ने जगत् का ढाँचा और अब वेदान्त
को मनुष्य का ढालना है । परमेश्वर का यह काम हम लोगों के हाथों
पूरा कराना है इसीलिए उसने तुम्हें यहाँ लाया होगा ।'

उपन्यास का कथावस्तु के विविध अनुभवों का सार-सर्वस्व प्राप्त है ।
विनोबाजी के शुभाशिष से यह समृद्ध हुआ है पर भी "निर्माल्य उसके माता
पिता और उनके मित्रगण से मुक्त पाक निर्मलाबाई की प्रतिभा से ही प्रसू
है । उनकी प्राचीन कविता निर्माल्य शान्ति के पथ पर' विनोबाजी

के साथ' की तरह 'चिगलिन' कोई सकमभावात्मक पुस्तक नहीं है। 'चिगलिन' का व्यक्तित्व प्रतिभासम्पन्न है और इसीलिए वह इतना सरस बन पड़ा है। उपन्यास इतना सरस और हृद्य बन पड़ा है कि हाथ में लेने के बाद पूरा किये बिना रखने को जी नहीं चाहता। पाठक यही अपेक्षा रखेगा कि निर्मलाताई की लेखनी से ऐसी अनेक कलाकृतियाँ निकलती रहें। उनकी जितनी भी सराहना की जाय वह कम ही होगी।

जून १९६९ —पुरुषोत्तम हरि पटवर्धन

चिं ग लिं ग

•

श्रीमान सोहनलालजी साहब दुगड़ की ओर से सादर भेंट एक

आचार्य शंकर बत्तीस वर्ष की आयु में ही अपनी जीवन-लीला समाप्त कर चुके थे। पर मैंने जीवन के बत्तीस मास बाद जाना कि जीवन का क्या अर्थ है।

जब से मैंने पवित्र भारत भूमि में पदार्पण किया मुझसे यही प्रश्न किया जाता था कि आप यहाँ किसलिए आयीं? मैं मन ही मन जवाब देती काश मैं इतना जानती तो यहाँ आती ही क्यों? मंजिल का पता पहले से ही चल जाय तो फिर वह खोज ही क्या रही?

बचपन में न जाने कितनी बार मैंने भगवान् बुद्ध की कहानी सुनी होगी। कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन को पुत्र-जन्म की प्रसन्नता के साथ ही किसी अज्ञात चिन्ता ने घेर लिया। नवजात शिशु की जन्मपत्री देख ज्योतिषी ने कहा महाराज बड़ी अजीब है यह जन्मपत्री। इस बालक को कभी भी दुःख का दर्शन न हुआ तो यह चक्रवर्ती सम्राट् बनेगा और यदि कहीं इसने दुःख देख लिया तो घरबार, राजपाट सब छोड़ संन्यासी बन जायगा। राजपुत्र को दुःख से दूर रखने के लिए राजा ने हर सम्भव उपाय किये। उसे चारों ओर से सुख-सुविधाओं के मोह जाल में फँसाये रखा। फिर भी राजपुत्र ने तीन दुःख देख ही लिये—जरा व्याधि और मृत्यु! बस इसके साथ ही सारा समाप्त हुआ! राजपुत्र सिद्धार्थ राजप्रासाद छोड़कर पहाड़ और जंगलों की खाक छानने लगा।

आखिर किसलिए? कहानी सुनते-सुनते मैं पूछ बैठती। दादा जवाब देते 'यह जानने के लिए कि दुःख का मूल कारण क्या है और उससे छुटकारा कैसे पाया जाय। मुझे यह कभी नहीं जँचा। कोई पहले से ही जान ले कि उसे क्या प्राप्त होगा तो फिर वह क्या खाक खोज करेगा?

जमाना बदला लेकिन मसला कायम ही रहा। माता-पिता अपने बच्चों को दुनिया के सभी दुःखों से दूर रखने की कोशिश करते रहते हैं। फिर भी बच्चे दुःख देख ही लेते हैं और उसमें से महान् अज्ञात को खोजने की अभिलाषा जाग उठती है। फिर घरबार, स्नेहीजन समस्त सुख-साधन सुरक्षित जीवन आदि सब छोड़ जीवन-सर्वस्व को दाँव पर लगा खोज शुरू होती है। यह राजपुत्र सिद्धार्थ की ही नहीं हर मानव की कहानी है। इसीमें मानव-जीवन का सार भरा हुआ है। अधिकतर मानव सुखी जीवन के मोहपाश में फँसे रहते हैं। कुछ को ही दुःख का दर्शन हो पाता है। उनमें भी अधिकांश लोगों की खोज कभी पूरी नहीं हो पाती। विरला ही कोई मुकाम तक पहुँचता है और समस्या का हल पा लेता है। फिर दुनिया उसे बुद्ध ईसा मुहम्मद या महात्मा के नाम से पुकारती है। सुख का माया-जाल दुःख के दर्शन से उसका भेदन अज्ञात की ओर खिंचाव और बोध—यह बुद्ध चरित्र एक सनातन सत्य है।

प्रथम आर्य सत्य (दुःख) का दर्शन नहीं हुआ तो मानव असत् के अन्धकार में टटोलता चक्रवर्ती के सिंहासन पर जा बैठता है और दुःख-दर्शन होते ही वह सत्य-शोधक सन्यासी बन जाता है।

अक्सर मुझसे पूछा जाता आप भारत किसलिए आयी ? और मैं चाहे जो जवाब दे देती "मैं बुद्ध भूमि के दर्शनार्थ आयी हूँ। जानना चाहती हूँ गांधी का भारत क्या कर रहा है। शांति की खोज मुझे यहाँ खींच लायी। ऐसे ही भारी-भरकम शब्दों में मैं दूसरों के साथ अपने मन का भी समाधान कर लेती। ये सभी जवाब गलत न थे। भगवान् बुद्ध के कारण मुझे भारत का पता चला गांधी के कारण ही मैं उसे कुछ समझ पायी और शान्ति की खोज में ही यहाँ पहुँची—यह सब सोलहों आने सही है।

यह खोज मैं अकेली नहीं कर रही थी। मुझ जैसे ही दुनियाभर में फैले असंख्य ज्ञात-अज्ञात मानव कुछ इसी तरह की खोज कर रहे थे।

जो जितनी निकटता से दुःख को देख पाता है उसकी खोज में उतनी ही तीव्रता आ जाती है।

भारत मेरे लिए सर्वथा अपरिचित था फिर भी मुझे वह चिरपरिचित सा लगा। भारत के गाँवों में मैंने देखा—छोटी घास-फूस की झोंपड़ियाँ चारों ओर दिखाई देनेवाले धान के हरे भरे खेतों की अल्पना सूरज के साथ दिनभर खेतों में मेहनत करनेवाले किसान बीते हुए जमानों के औजारों की मदद से घर का काम करनेवाली गृहिणी धरती-माता की गोद में खेलनेवाले अर्ध-नग्न अस्वच्छ दुर्बल बालक प्रकृति समाज और परिस्थिति के कारण पैदा हुई मुसीबतों का सतत सामना करते हुए भी ग्रामीणों के मुख पर दीखनेवाला अकल्पनीय समाधान—यह सारा देखते समय मैंने जो अनुभव किया उसे दुःख कहूँ या सुख ? उस अनुभूति में दुःख-सुख दोनों मिले हुए थे। उसमें मिलन और वियोग का संयोग था।

जी हाँ उस समय मैं अपने देश से बहुत दूर थी और शायद बहुत निकट भी।

मेरे सहपाठियों के लिए यह पहेली थी कि मैंने भारत आने का निर्णय कैसे किया। वे कैसे जानेंगे कि उसके बिना मेरी ही पहेली नहीं सुलझ पाती।

दो साल पहले की बात। मैंने जब प्रोफेसर केनी को अपना निर्णय सुनाया तब उनकी आँखों में कुछ विषाद दिखाई दिया। उन्होंने पचहत्तर साल तक अखण्ड ज्ञान-साधना की थी और अब ढलती आयु में वे अपने वारिस को देखना चाहते थे। दार्शनिक के नाते सारी दुनिया उन्हें जानती थी। वे आशा कर रहे थे कि शायद मैं उनका काम चला पाऊँगी।

मेरी बात सुनते ही वे कुछ देर तक खामोश रहे और फिर धीरे-धीरे कहने लगे 'मुझे बड़ा अफसोस है कि हमारा अमेरिका तुम्हें वह नहीं दे

सका जिसकी तुम्हें चाह थी। भगवान् करे, भारत में तुम्हें पूरा सन्तोष मिले।

मैंने तुरन्त कहा 'ऐसा न कहिये। आखिर अमेरिकावालों का स्नेह ही तो मुझे खींच रहा है। मैं आपकी बड़ी कृतज्ञ हूँ।"

"कृतज्ञता दूसरों के लिए होती है, अपनों के लिए नहीं क्षमा कीजिये।

'मैं कुछ और कहना चाहती थी। अमेरिका मेरा अपना ही देश है। मैं दुनिया के किसी भी कोने में चली जाऊँगी तो अमेरिकन नागरिक के नाते ही जाऊँगी। पर पर प्रशान्त सागर के इस पार रहते हुए भी मेरा मन उस पार चला ही जाता है, क्या करूँ?

'यह बिलकुल ठीक है। तुम जैसे एशियाई तरुणों की प्रखर देश-भक्ति के कारण ही तो हमारी दृष्टि उस अभागी दुनिया की ओर जाती है। तुम लोग इसी तरह हमें याद दिलाते रहो वरना हम भोग-विलास में पड़े रहेंगे और भूल जायेंगे कि एशिया कितना दुखी है, कितना गरीब है। हमारी यह भूल गलतफहमी ईर्ष्या-द्वेष पैदा करेगी और फिर आयेगा विश्व-युद्ध जिसमें न हम बचेंगे न तुम । इसीलिए मैं मानता हूँ कि तुम्हारे जैसी पूरब और पश्चिम को जोड़नेवाली कड़ी की आज विशेष आवश्यकता है।

प्रोफेसर केनी से मुझे पितृ-तुल्य स्नेह प्राप्त होता था। अक्सर वे छात्रों से कहते तुम सारे अमरीकी छात्र बस दर्शन पढ़ा करते हो लेकिन यह एशियाई युवती जीवन में दर्शन को लाने का यत्न करती है। मेरा यह पूरा विश्वास है कि भविष्य में जगत् का नेतृत्व एशिया करेगा। पश्चिम के पास सुख-साधनों की भरमार है लेकिन पूरब के पास जीवन की कला है। ऐसी बातें सुनकर मेरे सहपाठी मुझे चिढ़ाते 'आइये नेताजी!

प्रोफेसर केनी की स्नेहभरी आवाज सुनाई दी "ठीक है बेटा! तुम वही करो जिसमें तुम्हें सन्तोष हो। लेकिन थीसिस पूरा करके जाती तो मुझे अधिक खुशी होती। अच्छा भारत जाकर तुम क्या करनेवाली हो?"

"मैं कहाँ जानती हूँ कि मैं यहाँ पर भी क्या कर रही हूँ ?

'ऐसा न कहो बेटा ! तुम्हारी ऐसी बातें सुनकर मुझे लगता है कि क्या मेरा सारा जीवन व्यर्थ गया ? यदि तुम्हारे मन में भविष्य के लिए आशा भी नहीं पैदा हुई, तो मैंने जीवनभर किया ही क्या ?

"नहीं नहीं। भविष्य के लिए आशा है, इसीलिए तो मैं भी सची वरना मेरे देश के भविष्य के साथ मेरा भी भविष्य समाप्त हो जाता। क्षमा कीजिये ; मुझे यह नहीं कहना चाहिए था।

"तुम सच कह रही हो लेकिन तुम्हें कैसे बताऊँ बेटा तुम नहीं जानती कि तुम कितना बड़ा काम करनेवाली हो ?

प्रोफेसर साहब ने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा। मुझे सहसा अपने दादाजी की याद आ गयी। दो भिन्न मानव-वंशों में पैदा हुए उन दो बूढ़ों के चेहरों में कोई समानता नहीं थी। फिर भी मुझे लगा जैसे मैं पीला सपाट चेहरा देख रही हूँ और वात्सल्य भाव से भरी हुई दो छोटी-छोटी आँखें मुझसे कह रही हैं, 'बेटा तू बहुत बड़ा काम करने वाली है।

'वापस कब आओगी ?

मैं कहने जा रही थी कि मन करता है, यहीं रह जाऊँ। लेकिन मुझे याद आया कि अगले साल हम सब छात्रों ने प्रोफेसर बेन्नी की हीरक-जयन्ती मनाने की योजना बनायी थी। उसमें अभिक्रम मेरा ही था। सारे सहपाठियों ने मुझसे कहा था कि तुम्हारे बिना यह काम नहीं हो सकता।

एक साल में आ जाऊँगी।

"यही भी रही पूछ रहो। यह भावभीनी विदाई मेरे मन पर सदा के लिए अंकित हो गयी।

जहाज भारत की ओर बढ़ रहा था और इसके साथ मेरी बेचैनी भी। मेरी अपनी दुनिया तो कब की नष्ट भ्रष्ट हो चुकी थी फिर विदेश

से मैंने एक दूसरी दुनिया बसायी और उसे भी छोड़कर मैं तीसरी अनजान दुनिया की तरफ जा रही थी। मैंने यह सब क्या किया? अमेरिका में मेरे कितने स्नेही थे वहां पर मेरे लिए सारे सुख-साधन मौजूद थे सुरक्षितता थी। इन सबको छोड़ मैं एक अपरिचित असुरक्षित अज्ञात भूमि की ओर क्यों दौड़ रही थी? मैं मरीचिका तो नहीं देख रही थी? सिवा विनी के भारत में न मैं किसीको जानती थी न कोई मुझे जानता था। फिर वहां भी मैं विनी के पास थोड़े ही रहनेवाली थी। दूर किसी जंगल में किसी छोटे से गांव में सर्वथा अपरिचित व्यक्तियों के बीच सर्वथा प्रतिकूल वातावरण में किसलिए जा रही हूं मैं? क्या मैं भूल तो नहीं कर रही हूं?

इस विचार से मैं एक क्षण के लिए कांप उठी लेकिन दूसरे ही क्षण भीतर से आवाज आयी अमिताभ "अमिताभ"! मेरे अगणित पूर्वजों ने पिछले दो हजार वर्षों से अखण्ड जप किया था अमिताभ अमिताभ। मेरे लिए भय की कोई बात नहीं है। मैं अमिताभ-भूमि की ओर जा रही हूं। बुद्ध भक्त के लिए बुद्ध-भूमि में न कोई भय है न संशय न संकोच।

बम्बई पहुंचते ही देखा विनी अपने माता-पिता के साथ मेरे स्वागत के लिए उपस्थित है। मुझे याद आया कॉलेज का जीवन। जाने कितनी बार विनी ने अपने सुकोमल हाथों की माला मेरे गले में डालते हुए दुलार भरे शब्दों में कहा होगा तुम्हें मेरे लिए भारत आना ही पड़ेगा। विनी मुझसे दो-एक साल छोटी होगी पर उसमें लड़कपन अधिक था। वह मुझे बड़ी बहन मानती थी। हमारा प्रथम परिचय भी एक विशेष संयोग ही था। उस समय एम ए की पढ़ाई के लिए मैंने होस्टल छोड़कर शहर में एक छोटा-सा फ्लैट लिया था। कॉलेज का नया वर्ष आरम्भ हुआ था। एक दिन अचानक प्रिंसिपल साहब का बुलावा आया। मैंने देखा उनके बगल में एक सुकुमार गुलाब की कली-सी लड़की बैठी थी। प्रिंसिपल साहब ने परिचय कराते हुए कहा "विनीता देसाई"। हिन्दुस्तान से आयी है कुछ देर से पहुंची है। जब मैंने कहा कि होस्टल में अब एक भी सीट खाली नहीं है तो यह बेचारी घबरा गयी।

"यहाँ यह किसीको भी नहीं जानती। क्या इसे कुछ दिनों के लिए तुम्हारे घर में जगह मिलेगी? आखिर यह तुम्हारी पड़ोसी जो है।

'जी हाँ और आपने हमें सिखाया ही है कि पड़ोसी पर अपने जैसा प्यार करो। प्रिंसिपल साहब खिलखिलाकर हँस पड़े। विनी का हाथ पकड़कर मैंने उनसे कहा आप निश्चिन्त रहिये यह लड़की मेरे साथ रहेगी और मेरे ही साथ जायेगी। भयभीत हरिणी-सी विनी की आँखें बता रही थी कि वे अपनापन चाहती हैं। 'चलो बहन अपने घर"—विनी मेरा हाथ पकड़कर चलने लगी। उस क्षण से हमारी ऐसी गहरी दोस्ती हो गयी कि विनी जब तक अमेरिका में रही मेरे पास ही रही। मैं उसे याद दिलाती थी कि आखिर हमारी दोस्ती तो हजार सालों की जो है।"

अपनी प्यारी रिटा को भारत में देख विनी को लगा कि आकाश के सारे सितारों को उसके सामने रख दे। उसके पिता बड़े पूँजीपति हैं। उनके मखमार-हितवाले प्रासाद में मेरे लिए किसी चीज की कमी नहीं थी। फिर भी विनी स्वयं मेरी सुख-सुविधाओं की ओर विशेष ध्यान दे रही थी। उसके पिताजी गुजराती और माँ महाराष्ट्रीय होने से घर में किसी भारतीय भाषा के बजाय अंग्रेजी का राज था। इसीलिए वहाँ पर मुझे कभी महसूस ही नहीं हुआ कि मैं किसी विदेश में हूँ। भारतीय सभ्यता के अनुसार विनी के डैडी और ममी मेरा परिचय कराते 'हमारी अमेरिकन बेटी स मिसिसै।

विनी मेरा सारा कार्यक्रम जानती थी और यह भी जानती थी कि मेरे बावन सप्ताहों के कार्यक्रम में पूरा एक सप्ताह उसका है। फिर भी जब मैंने आगे बढ़ने की बात कही तो वह नाराज हो गयी। 'मैं समझ नहीं पा रही हूँ कि आखिर उस विनोबा के पास है क्या जो तुम उनके लिए अमेरिका से भारत आयी?

मैंने हँसते हुए जवाब दिया 'मैं भी कहाँ जानती हूँ? इसीलिए सोचा कि जरा देख तो लूँ वे क्या कर रहे हैं।

"तुम कह रही थी कि वे गाँव-गाँव पैदल घूमते हैं।

"हाँ-हाँ। मैं भी उसके साथ पैदल चलूँगी।

"तुम नहीं जानती कि यहाँ के गाँव कैसे हैं? मैंने एक दफा एक गाँव देखा था और तब से तय कर लिया कि वह इन्सान के रहने के काबिल जगह नहीं है। विनी मुझे आगाह कर रही थी।

'क्या भारत की अस्सी प्रतिशत जनता गाँवों में नहीं रहती?

'बस-बस। नौकरों की बात छोड़ दो गाँव में रहनेवाले क्या इन्सान हैं?"

'विनी मैं उन्हींको इन्सान समझती हूँ। शायद तुम भूल गयी हो कि मैं भी किसान की बेटी हूँ।

"कितनी मक्कारी! क्या मैं जानती नहीं कि तुम एक बड़े देश के भूतपूर्व विदेशमंत्री की बेटी हो? अच्छा यह तो बताओ कि विनोबा के पास तुम्हें क्या मिलेगा?

"मैंने सुना है कि वे गांधीजी के मिशन को चला रहे हैं, अहिंसा के तरीके से जमीन का मसला हल करने की कोशिश कर रहे हैं।

'करते होंगे। पर तुम्हें उस सबसे क्या मतलब? क्या वे तुम्हारे देश की समस्याओं का हल बता सकते हैं?

'यही तो मैं जानना चाहती हूँ। कभी-कभी मुझे यों ही लगा करता है कि जो विचार मुझे सन्तोष देगा वही दुनिया को आधार देगा।"

नौ साल बीत चुके हैं फिर भी लगता है, जैसे यह घटना आज की ही है। उत्कट क्षणों में शायद काल की गति रुक जाती है। फिर न अतीत का कोई अस्तित्व रहता है न भविष्यत् का भान। वर्तमान का वही एक उत्कट क्षण सदा के लिए सत्य बन जाता है।

शाम का समय था। सन्ध्या-राग से रँगी हुई आरक्त प्रकृति रंग बिरंगी पोशाकवाले मानवों का सागर और मंच पर एक ध्यानस्थ प्रतिमा। चारों ओर शान्ति। केवल वह अर्धोन्मीलित नेत्रवाली प्रतिमा की गम्भीर

आवाज सुनायी दे रही थी। अमेरिका के हमारे विद्यापीठों की चर्चाओं में जिन्हें हम एशिया की मूक जनता से सम्बोधित करते हैं वह जनता वास्तव में मूक होकर सुन रही थी। कुछ देर बाद वह प्रतिमा मूक हुई और जनता की आवाज सुनायी देने लगी। सभा विसर्जित हो गयी। लोग अपने-अपने घर लौटने लगे। उनकी बातों से पता चला कि वह ध्यानस्थ प्रतिमा स्वयं विनोबा ही थे।

मानव-सागर में लहरें उठने लगीं। मेरे लिए यह जानना असम्भव था कि उन लहरों की चपेटें मुझे किस दिशा में ले जा रही थीं। आखिर एक लहर मुझे विनोबाजी की कुटी के पास ले आयी। उनके पास कुछ व्यक्ति बैठे हुए थे। उनमें से एक बहन ने मेरी ओर देखा और विदेशी मेहमान का स्वागत करने वह मेरी ओर दौड़ी। मेरा सारा सामान स्वयं उठाती हुई वह मुझे विनोबाजी के पास ले गयी। दस-बीस कदम की उस यात्रा में उसने मेरी सारी जानकारी पूछ ली।

विनोबाजी लालटेन की धीमी रोशनी में कुछ पढ़ रहे थे।

आप हैं रिता देवी अमेरिका से आयी हैं। उसने मेरे नाम को भारतीय रूप दे दिया। वह बहन मेरा परिचय दे रही थी। विनोबाजी पढ़ने में मग्न थे। उनका ध्यान खींचने के लिए उसने फिर से वही बात कही। फिर हँसते हुए विनोबाजी सहज बोले "रिता नहीं ऋता। ऋत याने सत्य। वैसे बारीकी से देखा जाय तो शास्त्रों में ऋत और सत्य का अर्थ थोड़ा भिन्न होता है। इसीलिए 'ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि' कहा जाता है। उनके शब्दों को मैंने न सिर्फ कानों से सुना बल्कि सब इन्द्रियों को ध्यान में लाकर सुना। मैं भी चाहती थी कि भारत आने पर किसी भारतीय नाम को अपना लूँ। विनोबाजी ने कितना अच्छा नाम दिया था—ऋता।

रितादेवी अमेरिका में बौद्ध-दर्शन पर थीसिस लिख रही हैं। यहाँ पर इन्होंने संस्कृत और पाली सीखी। आप हिन्दी भी अच्छी तरह जानती हैं।" यह सुनते ही मेरे होश उड़ गये। मैंने हिन्दी का सारा अध्ययन

किया था। फिर भी हिन्दी बोलना मेरे लिए सम्भव न था। साहस बटोरते हुए मैंने अंग्रेजी में कहा "मैं आपकी बड़ी कृतज्ञ हूँ जो आपने मेरे पत्र का उत्तर दिया और अपने साथ कुछ दिन रहने की अनुमति भी दी। विनोबाजी ने कुछ न कहा। उनका ध्यान किताब की ओर था।

'भोजन की घंटी बज गयी। मेरे साथ चलिये। मेरा परिचय देनेवाली बहन मेरे कान में फुसफुसायी। बगलवाली कुटी की ओर बढ़ते समय उसने अपनी सारी जानकारी दे दी "मेरा नाम सरस्वती। घर पर सब मुझे 'सरस' कहते हैं। आप भी 'सरस' ही कहिये। केरल में कन्याकुमारी के पास एक गाँव में मेरे माता-पिता रहते हैं। वह बिलकुल सहज भाव से कह रही थी। जैसे हम दोनों की बरसों की दोस्ती हो।

दस-पाँच पत्तों की बनी हुई प्लेट मैंने आज तक कभी नहीं देखी थी। "इस पर बैठा जाय ?" सरस खूब हँसी। 'जी नहीं यह तो पत्तल है। इस पर खाने की चीजें रखी जायेंगी'। मेरा चेहरा बता रहा था कि मैं यह कभी सोच भी नहीं सकती थी। सरस गम्भीर हो गयी "हमारा देश बहुत गरीब है। यहाँ पर आपको अमेरिका का वैभव नहीं मिलेगा आपको बहुत तकलीफ होगी।

मैंने झट कह दिया 'जी नहीं तकलीफ की कोई बात नहीं। कहना बड़ा आसान था पर खाली जमीन पर बैठकर जब मैंने पत्तोंवाली प्लेट में परोसा हुआ चावल का ढेर देखा तो लगा जैसे यहाँ से भाग जाऊँ। मेरी हालत सरस की आँखों से छिप नहीं सकी। उसने स्नेहभरी आवाज में पूछा 'चम्मच ला दूँ ? गाँवों में चम्मच नहीं मिलता मेरे पास है। वह दौड़ती हुई चम्मच ले आयी। एक समस्या हल हुई, लेकिन उस नन्हे पत्तल पर नन्हे हाथों से परोसा हुआ चावल खाना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। परोसनेवाले बड़े प्रेम से आग्रह कर रहे थे। उनका ख्याल करते हुए मैंने जैसे-तैसे दो चार कौर खा लिये। मैं नहीं

किसी अपरिचित महिला ने स्नेह से पूछा। यहाँ पर ये सब लोग मुझे क्यों अपना रहे हैं?

"घर की याद आयी होगी। आप इस देश को अपना ही देश समझिये। भारत आपका है और आप भारत की हैं।" वह प्रौढ़ महिला धीरे-धीरे बोल रही थी। उसकी पोशाक कह रही थी कि वह न श्रीमान् है न शिक्षित लेकिन मुझ जैसे विदेशियों को सहजता से अपनानेवाले ये भारतीय हृदय से कितने श्रीमान् हैं। अमेरिका के अर्थशास्त्री इनकी इस सम्पत्ति का अन्दाज नहीं लगा सकते। शायद पुनर्जन्म के सिद्धान्त में विश्वास करने से इन भारतीयों को लगता है कि दुनिया के सारे मानव हमारे किसी-न-किसी जन्म के सगे-सम्बन्धी हैं।

"अब सो जाइये कल सुबह तीन बजे उठना होगा" सरस ने सौम्य सूचना दी।

"सुबह तीन बजे? हे भगवन् उस समय तो हम सोते हैं। यानी जब हम सोते हैं तब आप जागती हैं और जब आप सोते हैं, तब हम जागते हैं। गीता के अनुसार आप ठीक ज्ञानी बन गये।"

सरस मुसकराने लगी "यदि जल्दी सोने और उठनेभर से ज्ञान हो जाता तो फिर और क्या चाहिए? अब सोइये न! आप थकी-सी लग रही हैं पैर दबा दूँ?"

"नहीं-नहीं! मैं बिलकुल नहीं थकी।"

मैंने बिस्तर की शरण तो ली लेकिन सुबह तीन बजे उठने के विचार से मैं जल्दी सो न सकी और जरा झपकी लगी तो सुनी घंटी की आवाज। चारों ओर घोर अँधेरा था। सरस को बिस्तरा लपेटते हुए देखकर मैंने लाइट जला दी।

"धन्यवाद! लेकिन इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। अँधेरे में सारे काम करने की हमें आदत ही हो गयी है। इस अभागे देशवासियों को भगवान का दिया हुआ प्रकाश ही नसीब है। मानव-निर्मित प्रकाश अब तक उनके पास नहीं पहुँचा।"

आप अँधेरे में राह चल सकती हैं और हम प्रकाश में लड़खड़ाते हैं।" मैंने हँसते हुए कहा।

प्रकाश हासिल हो तो लड़खड़ाना भी आसान हो जाता है। अच्छा इस वक्त आपके देश में दोपहर होगी न ? सरस ने सोचा था कि मेरा देश भारत के पश्चिम में है। वहाँ पर सवेरा काफी देर से होता है। मन कहना चाहता था 'जी नहीं ! मेरा देश आपसे पहले जाग जाता है। मैं अमेरिकन नहीं हूँ चीनी हूँ। लेकिन मैंने इतना ही कहा "जी।

अपने सारे काम झट से पूरे करके सरस मेरा बिस्तर लपेटने लगी। मैंने पूछा 'अँधेरे में चलते समय साँप नहीं काटते ?"

सरस खिलखिलाकर हँस पड़ी। भारत भूमि पर जितने साँप हैं उससे अधिक साँप आप अमेरिकनों के दिमाग में भरे हैं। आप सोचती हैं कि यहाँ पर पग-पग पर साँप दीखते हैं।

ठीक चार बजे घण्टी की आवाज सुनायी दी और विनोबाजी निकल पड़े। सारा साथी-दल उनके पीछे चलने लगा।

भोर का वक्त। वह अन्धकार नीरव शान्ति निस्तब्ध सृष्टि प्रकाश नहीं प्रसन्नता प्रदान करनेवाली चमचमानेवाली तारिकाएँ— ये सब इतना बोल सकती हैं इसका मुझे पता न था। कल-कल बहनेवाले झरने मन्द पवन के साथ झूमनेवाले पत्ते बरसात की जलधाराएँ और फूलों की मुस्कान मैंने देखी थी। उन सबका मधु गुंजन सुना था। दृश्य सृष्टि को अदृश्य करनेवाला कुहरा और चमकीली तारिकाओं को छिपानेवाले काले बादल भी मेरे मार्ग अपना दिल खोलते थे। लेकिन मूक अन्धकार और नीरव शान्ति की मौन वाणी मैंने आज सुनी। जलों का निःस्पन्द स्पन्दन भी राह चलते समय साथ देता है यह मैंने आज ही जाना। अँधेरा हलके-हलके हटने लगा। लेकिन आलोक का अवतरण नहीं हुआ। अन्धकार और आलोक की सीमारेखा पर सारी प्रकृति निस्तब्ध खड़ी थी। देखते-देखते प्रकृति नवजीवन रूप धारण करने लगी।

प्राची के पटल पर प्रथम प्रकाश-रेखा दिखाई देने लगी। प्रकाशित प्राची अन्य दिशाओं को आलोकित करने लगी।

प्रकाश की किरणों के साथ प्राची सिपो' कवि के गीत के स्वर भी लेते आयी

"निशा के अंक से ऊषा
अरुण आशा लिये आती
मगर बीते हुए युग की
न कड़ियाँ खींचकर लाती
बहुत ही दूर का वह क्षितिज-
नयनों में समा जाता
वसन्त वेदना का तीर
अंतर में चुभा करता।"

वह मेरे जीवन का प्रथम प्रभात था। ●

दो

•

चीनी मन प्रकृति का बड़ा ही अनुरागी होता है । वृक्ष-वल्लियों की डालियों पर झूमनेवाले पत्ते अधखिली कलियाँ फूलों की पँखुड़ियाँ और हरी दूब—सबमें वह सुन्दरता का दर्शन करता है । बाँस की कोमल कोपलें चीनी कलाकार को मोहित कर देती हैं । चीनी कवि गुनगुनाता है कि गानेवाला हर पंछी गान से कि मैं उसका प्रियसखा हूँ । अन्तर के स्फूर्ति-निर्झर का निनाद न सुनायी दे, तो हम मानते हैं कि दूर कहीं पहाड़ की चोटी पर चढ़कर आसमान से दोस्ती करते हुए अज्ञात की खोज करनी चाहिए, जिससे मन परिशुद्ध बन जाता है । कलाकार को चाहिए कि वह दूर-दूर घूमता रहे । कभी पहाड़ पर चढ़े तो कभी वादियों में उतरे, फूलों के खिल उठ राज डाल से पंछियों के साथ स्वर मिलाये धरती की भीनी गंध में मस्ती का अनुभव करे, जलधाराओं के स्पर्श से पुलकित हो उठे । फिर वह देखेगा कि अन्तर का कलाकार जाग उठा है ।

कविता चीनियों का प्राण है । मानव-जीवन के गूढ़ तत्त्वों की खोज करनेवाले चीनी दार्शनिक भी काव्य के रस में सराबोर हो जाते हैं । जिसने चीन की समाज-व्यवस्था का निर्माण किया वह कन्फ्यूशियस केवल रूखा-सूखा दार्शनिक नहीं था बल्कि वह कहता "शिक्षा का आरम्भ कविता से हो 'लि' (धर्म) के द्वारा चारित्र्य का विकास किया जाय और शिक्षा की परिसमाप्ति संगीत में हो ।

यह वही युग था जब भारत में भगवान् बुद्ध का विहार चल रहा था और उधर चीन में कन्फ्यूशियस का संचार । दुनिया मानती है कि कन्फ्यूशियस एक चीनी महापुरुष थे जो चीनी समाज-व्यवस्था और दर्शन के स्रष्टा थे । लेकिन चीनी कवि उनके प्रति इसलिए कृतज्ञ है कि उन्होंने

अपने युग में प्रचलित तीन हजार कविताओं का चयन कर तीन सौ सर्वोत्तम कविताओं के संग्रह की अनमोल देन भावी पीढ़ियों को दी थी।

ईसा से बारह सौ वर्ष पूर्व एक चीनी कवि गा रहा था

ओस-कण हरी-दूब पर बिखरे हुए—
आदित्य का अस्त हो रहा है
कोमल हरियाली को ओस-कण छिपा रहे हैं
देखते-देखते ओस-कण अदृश्य होनेवाले हैं
और रात भी बीत जानेवाली है।

चीन का कवि शब्द-सुमनों की सुन्दर माला गूँथते समय कूँची उठाता और शब्दों की सीमा से परे जाकर रंगों के द्वारा अपने अन्तर की अनुभूति प्रकट करता है। बाँस की दो चार कोंपलों से मुक्तप्रभ करनेवाले पक्षी का चित्र बनाते समय हमारा कलाकार कूँची फेंककर कलम उठाता है और उसी पक्षी के सुमधुर सुर में सुर मिलाते हुए शब्द-कुसुम की माला गूँथने लगता है। शब्द-रंग का सुमधुर मिलन चीनी कलाकृति का निर्माण करता है।

इस समय मैं भारत के देहातों में घूमती हुई प्रकृति के विविध रूपों को चीनी नयना से निहारती थी। एक मनोहर प्रभात में बाल अरुण की किरणें धान के हरे पौधों के कोमल कपोल चूम रही थीं। मेरा चीनी मन चीनी कवि के साथ गा रहा था

प्रात-प्रभा का छत्र मेरे सिर पर है
कुसुम नीले धवल रक्तिम कभी-से हैं खिलखिलाते
किन्तु मन है खिन्न मेरा!

हरे-भरे खेतावाली छोटी-सी पगडंडी पर हम सब सावधानी से चल रहे थे। दूर कहीं आम्र-कुञ्ज खड़े थे गहरे हरे रंग के पत्तों से आच्छादित मानो सूर्यनारायण को श्रद्धा से अर्घ्य चढ़ा रहे हों। और इनके हरे रंगवाले पौधे

किरण-फुहारा में स्नान करते हुए प्रसन्नता से नाच रहे थे झूम रहे थे। हरा रंग तो एक ही था लेकिन उसके विविध प्रकार विविध वृत्तियों का निर्माण कर रहे थे।

मैं उस हरित वृक्ष का ध्यान करती हुई आगे बढ़ रही थी। किसीने पूछा "आपका नाम श्वेता तो नहीं हो सकता यह तो भारतीय नाम है। आपका असली नाम क्या है ? यह हरित वृक्ष अदृश्य हो गया और भिन्नता की माया दिखाई देने लगी। मैं क्या जवाब देती ? कई भिन्न भिन्न जगत् मेरे अपने थे और हर जगत् के द्वारा मैंने भिन्न नाम पाया था। मेरे दादा चीन की भूमि के भक्त थे जो बड़े प्यार से मुझे पुकारते थे 'चिर्मालिम'। पर ममी के पीहर की दुनिया कुछ दूसरी ही थी। उन सबका तन भले ही चीन में हो मन अमेरिका में था। मेरी नानी तो अमेरिकन ही थी और नाना चीनी ईसाई थे। ननिहाल में मैंने कभी चीनी भाषा नहीं सुनी थी। नाना-नानी मानते थे कि चीन के लिए एक ही सही राह है, जो अमेरिका ने ली है। मेरी मौसी पढ़ाई के लिए अमेरिका चली गयी और कभी लौटी नहीं। नानी गर्व के साथ कहती थी कि उसकी लड़की ने अमेरिकन के साथ शादी करके बुद्धिमानी की है। व्यापार के बहाने मामा भी साल में दो-चार बार अमरिका का चक्कर लगाया करते। मेरी ममी उन सबसे अलग जरूर थी और उसने उनसे भिन्न राह ली। लेकिन वह भी मानती थी कि चीन के विश्वविद्यालयों में कोई शिक्षा नहीं मिल सकती। इसीलिए उसने मुझे उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका भेजा था।

मेरे लिए यह समस्या थी कि हमारी नानी ने एक चीनी से शादी कैसे की होगी ? अपने बच्चे पिता के जैसे ही पीले रंग छोटी आँखें और चपटी नाकोंवाले हैं यह उनसे देखा नहीं जाता था। इसीलिए मेरा जन्म उसके लिए विशेष प्रसन्नता का द्योतक था। उसकी नातिन उनके जैसी ही है यह देखकर वह फूली न समाती। नातिन का बखान करते हुए वह कभी

बचाती नहीं थी । कितनी सुन्दर नीली आँखें हैं और नाक तो ठीक मेरी जैसी । जरा-सा पीला रंग जरूर है, लेकिन बिटिया अमेरिकन ही मानी जायगी । मेरे रूप के साथ नानी ने मुझे अमेरिकी नाम भी दिया था और मैं नानी की लाड़ली 'रिटा' बन गयी । नानी की देन मुझे चीन में अमेरिकन बनाती थी और पापा की देन अमेरिका में चीनी । चीनी सहेलियों में भी मैं विदेशी समझी जाती थी और अमेरिकन सहेलियों में भी । जाने कितनी बार मैंने मन ही मन नानी को कोसा होगा लेकिन आज मैं उसे धन्यवाद दे रही थी । नानी की देन के कारण ही मैं यहाँ पर बच गयी थी । न कोई मुझसे पूछता था कि आपने चीन क्यों छोड़ा और न मुझे वह दर्दनाक कहानी बतानी पड़ती थी ।

अमेरिका में मेरे दो साथी थे व सपने जो टूट चुके थे और वे स्मृतियाँ जो मिट चुकी थीं । बीता हुआ अतीत और कभी न आनेवाला भविष्य ही मेरे लिए सत्य था और बाकी सब कुछ मिथ्या । लेकिन भारत में पैरों की गति के साथ वर्तमान भी वर्तमान् हुआ । भारतीयों के कई विचार अद्भुत मालूम होते हैं । मैंने सुना था कि एक वेद-मंत्र में कहा है कि सोनेवाले की किस्मत भी सो जाती है बैठनेवाले की किस्मत बैठती है खड़े रहनेवाले की किस्मत खड़ी रहती है और चलनेवाले की किस्मत उसके साथ चलना आरम्भ करती है । जब मैंने देखा कि मेरे साथ मेरी किस्मत भी आगे बढ़ने लगी है तो मुझे लगा भारतीयों की कवि-कल्पनाओं में भी कुछ सत्य छिपा रहता है । दुनिया में आज वह दर्शन और श्रद्धा जो किस्मत को चलाती है दुर्लभ बन गयी है । हम सबों में ऐसे कम लोग हैं जो मंजिल को जानते हैं और उनमें भी शायद ही कोई एक हैं जो राह जानते हैं । अगर कोई जान भी ले तो उसके पास राह चलने की ताकत नहीं होती । मैंने देखा कि विनोबाजी के साथ ऐसे कुछ युवक हैं जिन्हें मंजिल का पता है जो राह जानते भी हैं और

अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार बसते भी हैं। तब मैंने जाना कि स्मृति और सपनों के अलावा भी कोई चीज होती है—अनुभूति।

सरस सुधीर, नटराजन् जैसे युवकों को मैंने उत्साह और श्रद्धा के साथ विनोबाजी का काम करते हुए देखा और मन ही मन भगवान् से प्रार्थना की कि उजड़े हुए चमन के ये नव फूल सदा खिलते रहें। सुधीर और नटराजन् ने मेरी तरह अभी-अभी यह जीवन अपनाया था। जनता द्वारा विनोबाजी पर होनेवाली प्रेम-वर्षा और शान-वर्षा से उनके हृदय में छिपा हुआ श्रद्धा-बीज अंकुरित हो रहा था। सुधीर महाराष्ट्र से आया था और नटराजन् मद्रास से। नटराजन् एक छोटे शहर के हाईस्कूल में प्रधान अध्यापक का काम करता था। तीन चार माह पहले त्यागपत्र देकर वह पदयात्रा में शामिल हुआ था। इसलिए वहाँ पर उसे विशेष सम्मान दिया जा रहा था। सुधीर अपने प्रदेश में रचनात्मक कार्य कर रहा था। अपनी पत्नी दीपा के साथ वह किसी देहात में प्रौढ़-शिक्षा सफाई आदि का काम करता था। मैंने सुना था कि महात्मा गांधी जैसा चर्खा चलाते थे वैसे कई चरखे उसके गाँव में चल रहे थे। सुधीर और नटराजन् दोनों एम. ए. की उच्च शिक्षा पा चुके थे। नटराजन हिन्दी नहीं जानता था। जब वह हिन्दी बोलने की कोशिश करता तो सुधीर कहा करता था कि "सुनो उसकी मद्रासी हिन्दी। मैं सोचती थी कि जब वह मद्रासी हिन्दी बोलता है, तो फिर मुझे चीनी हिन्दी बोलने में हिचकिचाने का कोई कारण नहीं है। भारत की भाषा-समस्या को मैंने पहले कभी नहीं समझा था। यहाँ आने पर मुझे पता चला कि भारत में चौदह भाषाएँ और कई बोलियाँ हैं। मैं मानती कि भारत की राष्ट्रभाषा है हिन्दी। लेकिन अब देखा कि भारतीय अपनी राष्ट्रभाषा नहीं बोल सकते भिन्न-भिन्न प्रान्तवाले एक-दूसरे के साथ अंग्रेजी बोलते हैं तो मुझे बड़ा अचरज लगा। मैं समझ नहीं पा रही थी कि जो अंग्रेजी भाषा छोड़ना नहीं चाहते उन्होंने अंग्रेजी राज को ही क्यों हटाया? स्वराज्य अब

का आ चुका था लेकिन स्व-भाषा का प्रश्न नहीं पैदा हुआ था। एशिया के सभी देशों का शिक्षित समाज इसी तरह विदेशी भाषा की गुलामी से मुक्त नहीं हो पाया है, यह एक कटु सत्य है। खुशी की बात यही है कि आम जनता शिक्षा से दूर है। इसीलिए इस गुलामी से भी दूर है। सौभाग्य से मेरे चीन में भारत जैसी भाषा-समस्या नहीं है। वहाँ पर यद्यपि कई बोलियाँ हैं फिर भी पचास करोड़ चीनियों की लिपि भी एक है और भाषा भी एक है।

पदयात्रा में कभी छोटे गाँव तो कभी छोटे-बड़े शहर आते थे। शहरों में स्कूल-कॉलेजों के छात्र मुझे घेर लेते और सवालों की बौछार आरम्भ हो जाती क्या आप भूदान के लिए यहाँ आयी? क्या भूदान के तरीके से भूमि-समस्या हल होगी? इस वैज्ञानिक युग में भारत औद्योगीकरण किये बिना कैसे आगे बढ़ सकता है? चरखे से कुछ न होगा। बड़ी सेना और आधुनिकतम हथियारों के बिना देश की रक्षा कैसे होगी? अन्य देश एटम बम बना रहे हैं और हम ही क्यों पीछे रहें? हवाई जहाजों के इस जमाने में विनोबा पैदल क्यों चलते हैं? मैं समझ नहीं पाती थी कि ये सवाल मुझसे क्यों किये जाते हैं। जिस देश में गांधी पैदा हुए, विनोबा पैदा हुए, उस देश के युवक एक विदेशी से ऐसे सवाल करते हैं और मैं उन्हें गांधी-विचार देती हूँ—कितना विचित्र है यह सारा। अमेरिका में आराम की जिन्दगी बितानेवाली मुझ जैसी युवती केवल पुस्तकों द्वारा गांधी-विचार को कैसे ग्रहण कर सकती थी? न मैंने आज तक कभी भारत के गाँव देखे न उनकी समस्याएँ ही जानी। मैं जानती ही न थी कि चरखा क्या चीज है? आश्रम की तो मैं कल्पना भी नहीं कर पाती थी। फिर भी मुझे गांधी के शब्दों में कहना पड़ता था कि अणु-बम से हिंसा नहीं खत्म सकती। अगर हम गांधीजी को भूल जायेंगे तो मानव का भविष्य सुरक्षित न रहेगा। नवीन समाज रचना का प्रश्न है, युद्ध। युद्ध को समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि समस्याओं के हल का कोई नया तरीका ढूँढा जाय। अज्ञान के द्वारा यानी आत्मिक तरीके

से भारत की भूमि-समस्या का हल करने की कोशिश हो रही है। चरखा विकेन्द्रित समाज रचना का प्रतीक है। केन्द्रीकरण युद्ध को पैदा करता है, क्योंकि केन्द्रीकरण युद्ध का एक मूल कारण है।

बिना कीमत चुकाये मूल्यवान् अनुभव कैसे प्राप्त हो सकता है? पदयात्रा में प्रतिदिन सुबह ऊषा अरुण और आदित्य के आगमन का स्वागत समारोह देखकर आँखों को अनुपम आनन्द प्राप्त होता था। लेकिन उस समय मैं भूल जाती थी कि मीलों तक चलने से पाँव सूज गये हैं। पड़ाव तक पहुँचने के बाद ऐसा लगा कि शरीर थककर चूर हो गया है, अंग-प्रत्यंग में दर्द हो रहा है। रात मे सोचती थी कि कल चलना सम्भव न होगा। पदयात्रा में सामान ढोने के लिए जीप या बैलगाड़ी साथ रहती थी। उसीका सहारा लेना पड़ेगा और भोर में चलने लगती थी। मेरे सहयात्री आग्रह करते थे कि अपने नाजुक पैरों पर तो थोड़ा रहम कीजिये और पैदल मत चलिये। मैं नहीं जानती कि मैं कैसे चल पाती थी। बाद में भारतीय संत-साहित्य का अध्ययन करते समय मैं उसका रहस्य जान गयी। संत कहते हैं कि भगवान् हमें चलाता है वह हमसे बुलवाता है करवाता है। मैंने अनुभव किया कि मैं तो बलहीन हूँ लेकिन कोई मुझे बल दे रहा है मुझे चला रहा है। मुझ जैसे मूरख मानते हैं कि हम दुर्बल शक्तिहीन असहाय हैं क्योंकि वे जानते नहीं कि शक्तिदाता सहायकर्ता उनके निकट ही है। वह मदद देना चाहता है लेकिन हम माँगते ही नहीं। हम शक्ति हीन हैं क्योंकि हमने शक्तिदाता से कभी माँगा नहीं।

सौभाग्य से मेरे पैर चीनी न थे। चीनी रिवाज के अनुसार कसकर बाँध उन्हें यत्नपूर्वक छोटा बनाने का प्रयास नहीं किया गया था वरना मैं पदयात्रा कैसे कर पाती? दादी के जमाने में छोटे पैर सुन्दरता की निशानी माने जाते थे। स्वर्ग की अप्सरा जैसे दादी के छोटे सुकुमार पैर मुझे बड़े प्यारे लगते थे। मेरी ममी इस रिवाज को खत्म करने पर तुली थी। चीनी महिलाओं की मुक्ति के लिए वह बड़े जोश के साथ भाषण देती। मुझे ममी का विचार पसन्द था और दादी के पैर।

मेरे बड़े-बड़े पैरों को देखकर सारी बड़ी दुखी होती थी। 'ये हैं को चिरसा गता!' ऐसा सोचती वह मुझसे कहा करती 'इतने बड़े-बड़े पैर लेकर क्या सिपाही बनना है? तुम लड़कियों ने सारी चीनी सभ्यता डुबो दी है।' दादी की सभ्यता छोटे पैरों तक ही सीमित थी।

सरन सुनाती थी कि उसके प्रदेश में उच्चवर्ग के लड़कों ने अपनी शिखा कटवा डाली और अंग्रेजी फैशन के बाल बढ़ाये तो पुराने ख्याल के बड़े-बूढ़ों ने माना कि सारी हिन्दू-सभ्यता नष्ट भ्रष्ट हो गयी। और बुरका छोड़ने से औरतें इस्लाम को ही छोड़ देती हैं यह बड़े-बूढ़े मुसलमानों का विचार है। दिल चाहता है कि इन सबसे पूछूँ कि जब अकाल पड़ने पर चीन के सैकड़ों गरीब भूख से तड़पते हुए मर जाते हैं तब क्या चीनी सभ्यता नहीं डूबती? इन्सान को अछूत मानने और भक्तों को भगवान् के मन्दिर में प्रवेश देने से हिन्दू-संस्कृति नष्ट भ्रष्ट नहीं हो जाती? पैगम्बर की स्पष्ट आज्ञा है कि धर्म जबर्दस्ती से लादा नहीं जा सकता। इस आज्ञा को न मानने से इस्लाम को कोई धक्का नहीं पहुँचता है? जो सभ्यता छोटे पैर बड़ी शिखा और काले बुरकों में ही कैद है वह इस विशाल युग में कैसे टिकेगी?

अतिथि-सेवा भारतीयों की एक विशेषता है। मेरी हर छोटी-मोटी सुविधा की ओर यहाँ सभी ध्यान देते हैं। भोजन के समय कम-से-कम दस-बीस व्यक्ति बारबार पूछते हैं कि आपको तकलीफ होती होगी। चम्मच लाऊँ? हाथ से भोजन करना मेरे लिए कठिन बात थी इसीलिए इन लोगों को मजे से हाथ से खाते हुए देखकर मुझे इनके प्रति बड़ा आदर मालूम होता था। हमारे देश में काँटे चम्मच भले ही न हों लेकिन चाप-स्टिक्स होती हैं। लेकिन भारतीयों के पास सिर्फ भगवान् की दी हुई पाँच उँगलियों के सिवा दूसरा कोई साधन नहीं है।

मानव नाहक अपनी आवश्यकताओं को बढ़ाता रहता है और उनकी पूर्ति न होने के कारण असन्तुष्ट रहता है। खाना खाने से हाथों का

उपयोग करना ठीक हो सकता है लेकिन हाथ से परोसना मुझे बड़ा अटपटा लगता था। सरस कहती थी कि बिहार के गांवों में ही यह रिवाज है, अन्यत्र परोसने के साधन इस्तेमाल किये जाते हैं। शायद यही कारण होगा, जिससे उस दिन कुछ खाना मेरे लिए असम्भव हो गया। यद्यपि हर चीज बड़े प्रेम से परोसी जा रही थी और वह प्रेम उसे मधुर बना रहा था।

चीज मलाई, दूध जैसी चीजें खाना मेरे लिए कभी सम्भव न हो सका। ममी चाहती थी कि मैं वह खाऊं। इसके लिए उसने अपने प्रिय मानस शास्त्र की कई किताबें छान डालीं लेकिन वह सफल न हो सकी। मैं जब छोटी थी तब प्रतिदिन नाश्ते के समय यही चर्चा होती। पपा उससे कहते "नाहक कोशिश कर रही हो। चिंग चीनी है न? वह चीज कभी नहीं खा सकेगी।" ममी नाराज होकर कहती "चीनियों की मंवममहात्मयों का समर्थन आप-जैसे बुद्धिमानों को शोभा नहीं देता है।" पपा उसे और चिढ़ाते "क्या करूं? तुम्हारी बुद्धिमत्तापूर्ण तर्क की बातें सुनते-सुनते भी मेरा परिवर्तन न हो सका। मैं अभी तक चीनी ही बना रहा। अब भी मुझे चीज अच्छी नहीं लगती। बस तुम्हारे डर से खा लेता हूं।"

'आप यही कहते रहेंगे तो मेरी बिटिया क्यों चीज खायेगी? चिंग पपा की एक न सुनना। मौसी का लड़का देखा कैसा मस्त है? क्योंकि वह दूध पीता है, चीज खाता है। तुम भी वैसी बनोगी न?'

मैं धीरे-से कह देती "ममी मेरी सहेलियां कहती हैं कि दूध पीने से बदन में बदबू आती है।"

'सफेद झूठ एकदम झूठ—ऐसी मंवममहात्मयों के कारण ही तो चीन पिछड़ गया है।'

मैं और कुछ न कहती। सोचती कि ममी को विशेष प्रसन्न देखकर कभी बता दूंगी कि स्कूल की लड़कियां क्या कहती हैं? ममी जानती नहीं कि चीनी लड़कियां अमेरिकन लड़कियों से दोस्ती क्यों नहीं करती हैं

सिर्फ इसीलिए कि वे दूध पीती हैं और उनका बदन बदबू करता
मगर मैं भी बहू बाऊँगी तो मेरी सारी चीनी सहेलियाँ मेरे साथ नहीं बो
और वे मुझे छोड़ देंगी । हाँ उन्होंने मुझे छोड़ दिया । यद्यपि मैं
कभी दूध पिया न चीज खाया फिर भी उन्होंने मुझे छोड़ा । वे
भूल गयी ।

मैं पायस तो नहीं बनी थी ? युद्ध में दुःख में मैं चीन को याद क
दिन में रात में चीन को याद करती चलती बोलती बसती गाती
चीन को याद करती थी ! फिर भी मैं चीन से बिछुड़ी हुई
चीन के द्वार मेरे लिए बन्द हो चुके थे शायद सदा के लिए । चीन
सरकार मुझे देशद्रोही समझती थी । शायद इसीलिए कि चीन की
के नाम पर हुकूमत चलानेवालों से मेरे ममी-पपा कहीं अधिक चीनी

उस समय मैं चीन को ही याद कर रही थी जब सावित्रीदेवी
स्नेहभरी आवाज सुनाई दी— 'क्या स्वास्थ्य ठीक नहीं है ? यह गर्म
हमारा खाना आपको पसन्द न होगा । बताइये आपको क्या पसन्द
कल से मैं आपके लिए कुछ बनाऊँगी ।

मैं खामोश रही । उन्होंने फिर से कहा— 'हम आपके देश
भोजन बना नहीं पायेंगे । हम जानते ही नहीं कि आप घर पर
खाती हैं ।'

मुझे बोलना ही पड़ा 'जी नहीं यहाँ का खाना बहुत अच्छा है

आप मेरी बेटी जैसी हैं । क्या बच्चा माँ के पास कभी संकोच
सकता है ? बताइये मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ ? मुझे म
जैसे मैं ममी की ही आवाज सुन रही थी ।

आप विदेशी नहीं हैं हमारी ही हैं भारत आपका देश है । परदेश
का जीवन बड़ा कष्टमय होता है । अब मैं आपको घर से चर्मूमी च
बढ़िया खाना खिलाऊँगी ।

सावित्रीदेवी और उनके पति रामसुन्दर बाबू पर बिहार की प
यात्रा की व्यवस्था का दायित्व था । इस प्रदेश के रचनात्मक काम

रामसुन्दर बाबू का अपना स्थान है। शक्ल-सूरत में वे बिलकुल देहाती लगते। इस देहाती का अंग्रेजी से कोई ताल्लुक न होगा ऐसा सोचकर मैंने जब हिन्दी में बोलना प्रारम्भ किया और वे अच्छी खासी अंग्रेजी में जवाब देने लगे तो मुझे धक्का लगा। बाद में मुझे पता चला कि वे कुछ साल तक इस प्रदेश के मंत्री रहे और गन्दी राजनीति से ऊबकर उन्होंने सत्ता का त्याग किया। मोटा खद्दर पहने हुए देहाती रामसुन्दर बाबू को जब मैंने देखा तब वे कुएँ से पानी खींचकर अपने कपड़े धोते थे हमारा सामान ढोते थे और कार्यकर्ताओं के साथ पुआल पर सोते थे। मैं सोच ही नहीं सकती थी कि ये कभी मंत्री रहे होंगे।

नटराजन् ने कहा कि सादगी गांधीजी की देन है और बिहार में तो विशेष सादगी नजर आती है।"

रामसुन्दर बाबू सबके 'चाचाजी' थे और सावित्रीदेवी 'चाचीजी'। भारत में मैत्री का नाता शायद ही कहीं दिखाई देता है। माता-पिता की आयुवाले पुरुषों को यहाँ पर बाबूजी चाचाजी कहा जाता है और स्त्रियों को 'अम्माजी' 'चाचीजी'। हम-उम्र तुरन्त भाई बन जाता है और उसकी पत्नी भाभी। फिर उनके बच्चों से 'बुआजी' का रिश्ता जुड़ने में देर नहीं लगती। बुजुर्गों को यहाँ पर कभी भी मसाब श्रीमती शर्मा आदि कहा नहीं जायेगा। हमारे प्रोफेसर वेनी मुझसे जितना स्नेह करते थे लेकिन मैं भी उनके लिए 'मिस रीटा' और वे भी मेरे लिए 'मिस्टर वेनी'। मेरा दिल कहता था कि उन्हें 'दादाजी' कहूँ लेकिन अमेरिका में यह कैसे सम्भव था? भारत-यात्रा के प्रथम कुछ दिनों में ही मेरा परिवार बन गया। दादा दादी चाचा चाची माँ पिताजी भाई-बहनें भतीजे—शायद ही कोई रिश्ता बाकी रहा हो।

तपस्या भारत के जीवन का एक प्रमुख हिस्सा है। शायद इसलिए कि भगवान् बुद्ध और महावीर इसी देश में पैदा हुए थे। हमारी इस पदयात्रा में स्वागत में हजारों लोग जुट जाते थे। विनोबाजी का पड़ाव एक गाँव में एक ही दिन का रहता गाँववाले उस दिन अपने को बड़ा

सौभाग्यशाली समझते और विनोबाजी तथा उनके सहवासियों के सान्निध्य के लिए हर कोशिश करते हैं। इस शक्ति समय में उनकी ओर से कोई कमी नहीं रहती फिर भी हमारी 'तपस्या' में कभी कोई कमी नहीं रह पाती। मैं नहीं समझ पाती कि यहां पर जीवन की छोटी-मोटी सुविधाओं की ओर ध्यान क्यों नहीं दिया जाता है। भोजन मिलेगा खीर और पूड़ी का लेकिन वह गन्दी पत्तलों पर गन्दे हाथों से परोसा जायेगा। हर कोई कहेगा कि हम आपकी सेवा करना चाहते हैं लेकिन उनमें से किसी को यह न सूझेगा कि पीने के लिए साफ पानी किसी साफ बर्तन में ढक कर रखना चाहिए। हममें से हर यात्री को स्नान के लिए गरम पानी मिल सकता है लेकिन हमारे लिए बाथरूम बनाया जायेगा फटे बोरे और जालियों का जिसमें खिड़कियों की भरमार होगी। इन बातों पर अगर ध्यान दिया जाये तो जीवन सुखमय बन सकता है इसका उन्हें भान तक नहीं है। लड़की की शादी में जिस जमींदार ने हजारों रुपये पानी जैसे बहाये उसके घर पर हमें फटी मैली दरी पर बैठना पड़ा और ऐसे पकवान खाने पड़े जिनमें विविध बीमारियों के असंख्य कीटाणु रहे होंगे। मेरे चीनी मन के लिए यह सारा देखा-सुना था। चीनी किसान का जीवन भी ऐसा ही था। लेकिन मैंने अमेरिका में देखा था कि जीवन कितना साफ-सुन्दर और सुखद बनाया जा सकता है। हां बाहरी सफाई कोई ऊंची सभ्यता की निशानी नहीं है। चीन और भारत का अनपढ़ किसान शायद अमेरिका के सभ्य शिक्षित प्रोफेसर से भी अधिक सुसंस्कृत है। वह भूखा है नंगा है मैला है लेकिन हजारों साल की प्राचीन सभ्यता उसके जीवन को आज भी सुगन्धित करती है। यह सारा मैंने सुना जरूर था और जानती भी थी फिर भी मैं ग्रामीण जीवन अपना न सकी। समाजशास्त्र अर्थशास्त्र क्रान्तिशास्त्र जैसे सारे शास्त्र जानती थी लेकिन वह सारा ज्ञान मुझे वह शक्ति न दे सका जिसके आधार पर मैं देहातियों के साथ घुलमिल जाऊं। हम सारे शिक्षित लोग गरीबों के नाम से चिल्लाते हैं लेकिन हमारा दिल उनके साथ नहीं रहता। गरीबों के साथ

एकरूप बनने के लिए कुछ और ही बल चाहिए—जो सन्तों के पास था भक्तों के पास था गांधी के पास था। मेरे पास वह बल नहीं था। क्या इसीलिए मुझे अपना देश छोड़ना पड़ा? बाहरी जख्म का इलाज हो सकता है लेकिन दिल के दर्द को मिटाया नहीं जा सकता सिर्फ सहा जा सकता है।

दुनिया के कोने-कोने से आये हुए भाई-बहन विनोबाजी के पास अपना दिल खोलते हैं। हाल ही में गोवा का एक क्रान्तिकारी देश भक्त पदयात्रा में हमारे साथ रहा। सारा भारत आजाद हुआ लेकिन छोटा-सा गोवा अब भी गुलामी में सड़ रहा था। उस भाई का दिल गोवा की आजादी के लिए सतत तड़पता था। विनोबाजी ने उसे काफी समझाया। विदाई के समय उन्होंने पूछा

'हमारी दवा का कुछ असर हुआ?

'वतन से बिछुड़ा हुआ पंछी सदा तड़पता ही रहेगा।

'तो फिर आप गोवा क्यों नहीं चले जाते?

"गोवा जाने पर मुझे जेल ही काटनी पड़ेगी।

"आप गोवा में रहना चाहते हैं या गोवा के लिए कुछ करना चाहते हैं?

गोवावाले भाई जवाब न दे सके। विनोबाजी ने फिर से कहा "आप अपने देश में रहना चाहते हैं तो गोवा जाइये और गोवा की सेवा करना चाहते हैं तो यहीं से कर सकते हैं।

यहीं से गोवा की सेवा कैसे हो सकेगी?

क्या नहीं हो सकेगी? जड़ परमाणु का दुनिया में कहीं भी विस्फोट होने पर मारक किरणें पैदा होती हैं और उनका बुरा असर सारी दुनिया पर होता है तो फिर चैतन्य परमाणु के विस्फोट का सारी दुनिया पर अच्छा असर क्या न होगा? चैतन्य परमाणु का विस्फोट दुनिया के किसी कोने में हो फिर भी उसमें से पैदा होनेवाली तारक शक्ति सारे जगत् को

अभामेमी। उस शक्ति को पैदा करने का यत्न करते रहिये। फिर चाहे आप भारत में रहें या और कहीं आप अपनी जन्मभूमि की सर्वोत्तम सेवा करेंगे।

'आपने बहुत बड़ी बात कही है। यह किसी योगी का काम है मेरे जैसे तुच्छ विकार-वासनाओं से भरे हुए व्यक्ति से यह काम कैसे होगा ?"

विनोबाजी ने तुरन्त कहा "जब हम कहते हैं कि हम तुच्छ हैं क्षुद्र हैं कमजोर हैं तब श्रुति माता हमसे कहती है तू ब्रह्म है तू यह विकार वासनाओं से भरी हुई देह नहीं है। तत्त्वमसि—तू ब्रह्म है।

उनकी अधखुली आँखें आसमान को निहार रही थीं। फिर भी मुझे लगा जैसे वे मेरी ओर देख रहे थे मुझसे कुछ कह रहे थे। ●

तीन

●

मानव जीवन की सबसे जटिल पहेली है काल। कोई नहीं जानता कि काल क्या चीज है? वैज्ञानिकों ने काल के रहस्य को जानने की कोशिश की और कई भिन्न-भिन्न काल-कल्पनाओं का आविष्कार किया है। मेरी बुद्धि उन काल-कल्पनाओं को कभी समझ न पायी थी लेकिन मेरा मन उन सबकी अनुभूति कर चुका था। कभी मैंने अनुभव किया कि काल की गति चक्राकार है और कुछ घटनाएँ, भावनाएँ, यातनाएँ सतत चक्राकार घूमता है और मेरे मन को घुमाती रहती हैं। भूत-वर्तमान्-भविष्यत् की गति से सतत दौड़नेवाला काल-चक्र कभी मुझे रुका हुआ दिखायी देता है। जैसे बन्द घड़ी बराबर एक ही समय बताती है, वैसे ही मन की गति किसी वेदना में अवरुद्ध हो जाती है। कभी मैं सोचती कि काल और गति से मन भूत, भविष्यत् में चाहे जिधर और चाहे जैसा घूमता रहता है और मेरे मन को भी सूखे पत्ते की तरह यत्र-तत्र उड़ाता रहता है। वर्षा की सुंदर सन्ध्या गगनपटल पर अनेक रंगों का खेल दिखाती है वैसे ही मेरे मनःपटल पर किसी एक क्षण सुख का आनन्द रंग दिखायी देता है तो दूसरे क्षण दुःख का काला रंग और तीसरे क्षण सुख-दुःख से परे आनन्द की अनुभूति का हलका नीला रंग दिखायी देता है।

स्मृति-सुमनों की माला का एक-एक फूल अलग कर उसकी सुगन्ध का अलग अलग आनन्द आसान नहीं है। विवाह की यात्रा के दिनों की स्मृतियों में एक क्षण जाकर अलग ही रंग का था यद्यपि अलग भय का न था।

जब अनशिला ने हमारे के बारम्बार विद्यार्थी को अपनी यात्रा स्थगित कर चन्द दिनों के लिए उन्नाव सीमा के निकटवर्ती ग्राम में आवास करना

उस दिन मेरा अभाव गृहिणी-दिल को छ गया। उसने मेरा हाथ पकड़कर कहा हाँ-हाँ मेरी प्यारी बहन जमाने के बाद मिल रही है। वह मुझे भीतर कमरे में ले गयी और दरी बिछाते हुए कहने लगी आराम नहीं करोगी ? पैदल चलने से थक गयी हो ? मैं गरम तेल लाती हूँ थोड़ा मल दूँगी तो सारी थकान मिट जायेगी। मैंने तुरन्त कहा नहीं-नहीं कोई आवश्यकता नहीं है। आप तकलीफ न उठायें।

अपनी छोटी बहन के लिए क्या मैं इतना भी नहीं करूँगी ? इसमें तकलीफ नहीं खुशी है।

गृहिणी की स्नेहभरी वाणी से दिल का दरवाजा खुला मन पंछी उड़ा और किसी बीते हुए जमाने में जा पहुँचा।

प्राचीन पीकिंग नगरी के नूतन हिस्से में एक आलीशान कोठी जो पूर्व और पश्चिम की शिल्पकला के संगम का प्रतीक थी। उसके ड्राइंग रूम में फायर प्लेस के पास छोटी चिर्गमिंग गुड़ियों से खेलने में मशगूल थी। पपा भारतीय दर्शन की कोई किताब पढ़ रहे थे। ममी स्वेटर बुन रही थी। पपा बीच-बीच में ममी को भी कुछ कह देते थे। "वाह वा ! बहुत ही सुन्दर विचार है। सुना तुमने ? भक्त वह है जो अनिकेत है और स्थिरमति है यानी वह सतत घूमता रहता है लेकिन उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है। बहुत अच्छा !

पपा अनिकेत माने क्या ? चिंग ने यूँ ही पूछा।

'अनिकेत माने जिसका अपना कोई घर नहीं।

'तो फिर वह कहाँ रहता है ?

संसार के सारे घर उसके अपने घर बन जाते हैं। हाँ लेकिन उसके लिए पहले अपना घर छोड़ना पड़ता है।

'समझ गयी ! घर छोड़ना होस्टल में रहना नहीं न पपा ?

"हट् पगली ! घर छोड़ना यानी ममी-पपा को छोड़कर दूर कहीं चले जाना और फिर कभी लौटना नहीं।

चिंग पपा से लिपटकर बोली, 'मैं नहीं जाऊँगी! मैं तो आपके पास ही रहूँगी।

'तुम बाहर नहीं निकलोगी तो फिर चीन की सेवा कौन करेगा? तुम तो बड़ी लीडर बनोगी, खूब काम करोगी और चीन को अमेरिका जैसा खुशहाल बनाओगी न?

अमरीका जैसा नहीं, चीन जैसा, लेकिन खुशहाल!

पपा बहुत खुश हो गये। चिंग को प्यार से थपथपाते हुए वे बोले, हाँ मेरी प्यारी बिटिया, चीन सारी दुनिया से लेने योग्य सब कुछ लेगा लेकिन फिर भी चीन चीन ही रहेगा।"

'पपा, खुशहाल बनाना याने सबके लिए अपने घर जैसे अच्छे घर बनाना, दादा के गाँववालों को भी ऐसे ही अच्छे घर मिलने चाहिए, चीन के सब बच्चों को मेरे जैसा खाना मिलना चाहिए, नहीं न पपा?

पपा खुशी से फूले न समाये। उन्हें लगा कि दुनिया में कोई बुद्धिमान है तो उनकी चिंग। उसे प्यार से पुचकारते हुए बोले, 'मेरी प्यारी चिंग बहुत बड़ा काम करेगी।

ममी भी गर्व के साथ बोली, "हाँ, चिंग महान् बनेगी और उसके ममी-पपा उसे खूब-खूब प्यार करेंगे।

पपा भावुक हो गये, 'ममी-पपा नहीं, सारी दुनिया उसको प्यार करेगी। चिंग घर छोड़कर दूर-दूर चली जायेगी और दुनिया के सारे घर उसके अपने घर बन जायेंगे।

पैरों की आहट सुनकर मैंने आँसू पोंछे। देखा तो दरी आँसुओं से भीग गयी थी।

गृहिणी की प्यारभरी आवाज फिर से सुनायी दी—"मैं दो दफा देख आयी लेकिन तुम सो रही थी। सोचा कि जगाना ठीक नहीं। उठो, हाथ मुँह धो लो और भात खा लो। समय कम था, इसलिए मैं सिर्फ दाल-भात ही बना सकी।

गृहिणी मुझे रसोईघर में ले गयी। छोटी-सी पटिया और चमकनेवाली

फूल की थाली कटोरी गिलास। अभी-अभी सारे बर्तन साफ किये गये थे। खाना परोसा गया—देखा कि तीन सब्जी पकौड़ी पापड़ हलवा पूड़ी। इतने कम समय में उस बहन ने इतनी सारी चीजें कैसे बनायी होंगी।

आपने इतना सारा क्यों बनाया? आप तो कहती थीं कि सिर्फ दाल-चावल बनाया है।

"कुछ भी नहीं बना सकी। अब शाम को बनाऊँगी कूट का भरता। हरे कूट इन्हीं दिनों में तो मिलते हैं।"

मैं कुछ न समझी। यह बहन मुझे कूट खिलानेवाली है और प्यार के साथ! तीन-चार माह की यात्रा में मैं काफी हिन्दी तो बोल लेती थी लेकिन गाँववालों की भाषा समझना मेरे लिए कठिन था। मैं नहीं जानती थी कि हिन्दी भाषाभाषी प्रदेश में भी मेरी हिन्दी नहीं चलेगी। शाम के भोजन में जब मैंने कूट का भरता देखा तो मेरी सारी चिन्ता दूर हो गयी और मैंने पहली बार जाना कि कूट माने चना।

हेमन्त ऋतु में यहाँ पर शस्यश्यामला मलयजशीतला वसुधा का समस्त वैभव प्रकट होता है। हरे भरे गेहूँ कूट के कोमल पौधे पीली सरसों और नीली नाजुक कुसुमोंवाली अलसी के खेतों को देखकर मुझे याद आता था इस भारतवर्ष की पवित्र सुन्दरता की महिमा गानेवाला एक वृद्ध कलाकार, जिसे भारत महात्मा कहता है। गरीबी को मिटाने के लिए जब गांधीजी ने कहा था कि हर बगीचे में फूल के पौधों की जगह अनाज बोया जाय और पैदावार बढ़ायी जाय तब ठाकुर के शिविर ने कहा कि महात्मा तो वर्जित करते ही हैं वे क्या जानेंगे कला और सुन्दरता को।

गांधीजी जवाब देते— खेतों की अपनी सुन्दरता होती है। ठाकुर बाबा को यह भान तक नहीं था। ठाकुरवाले हेमन्त ऋतु में अगर बिहार के खेतों की सैर करते और खेतों की इस निराली सुन्दरता को देखते तो समझ जाते कि महात्मा भी अपनी सुन्दरता को भली भाँति देख पाते हैं।

चिन पपा से लिपटकर बोली "मैं नहीं जाऊँगी ! मैं तो आपके पास ही रहूँगी ।"

"तुम बाहर नहीं निकलोगी तो फिर चीन की सेवा कौन करेगा ? तुम तो बड़ी लीडर बनोगी खूब काम करोगी और चीन को अमेरिका जैसा खुशहाल बनाओगी न ?"

"अमरीका जैसा नहीं चीन जैसा लेकिन खुशहाल !"

पपा बहुत खुश हो गये । चिन को प्यार से थपथपाते हुए वे बोले "हाँ मेरी प्यारी बिटिया चीन सारी दुनिया से लेने योग्य सब कुछ लेगा लेकिन फिर भी चीन चीन ही रहेगा ।"

"पपा खुशहाल बनाना माने सबके लिए अपने घर जैसे अच्छे घर बनाना दादा के गाँववालों को भी ऐसे ही अच्छे घर मिलने चाहिए, चीन के सब बच्चों को मेरे जैसा खाना मिलना चाहिए, यही न पपा ?"

पपा खुशी से फूले न समाये । उन्हें लगा कि दुनिया में कोई बुद्धिमान है तो उनकी चिन । उसे प्यार से पुचकारते हुए बोले "मेरी प्यारी चिन बहुत बड़ा काम करेगी ।"

ममी भी गर्व के साथ बोलीं "हाँ चिन महान् बनेगी और उसके ममी-पपा उसे खूब-खूब प्यार करेंगे ।"

पपा सहज कह गये "ममी-पपा नहीं सारी दुनिया उसको प्यार करेगी । चिन घर छोड़कर दूर-दूर चली जायेगी और दुनिया के सारे घर उसके अपने घर बन जायेंगे ।"

पैरों की आहट सुनकर मैंने आँसू पोंछे । देखा तो दरी आँसुओं से भीग गयी थी ।

गृहिणी की प्यारभरी आवाज फिर से सुनायी दी— "मैं तो खाना देख आयी लेकिन तुम सो रही थीं सोचा कि जगाना ठीक नहीं । उठो हाथ मुँह धो लो और भात खा लो । समय कम था इसलिए मैं सिर्फ दाल-भात ही बना सकी ।"

गृहिणी मुझे रसोईघर में ले गयी । छोटी-सी पटिया और चमचमाती

हमारा एक पड़ाव किसी नगर में था। वहाँ पर हम एक जमींदार जगदीश बाबू के अतिथि रहे। वे विनोबाजी के बड़े भक्त थे। उन्होंने हमारे लिए हर तरह की सुख-सुविधाएँ कर दी। वे चाहते थे कि हमारी पूरी यात्रा की थकान एक दिन में मिट जाय। उनकी लड़की शीला को मेरी सेवा करने की जिम्मेवारी दी गयी थी। बड़ी प्यारी लड़की थी।

उसने मुझसे पचासों बार पूछा—"दीदी क्या लाऊँ आपके लिए? स्नान के समय जब उसने मुझे अच्छा बाथरूम और गर्म पानी की दो बाल्टियाँ दिखायी तब मैंने खुश होकर कहा 'आज जी भरकर स्नान करूँगी। बाथरूम और गर्म पानी है तो और क्या चाहिए?"

शीला को आश्चर्य हुआ "तो क्या आपको हर रोज यह नहीं मिलता है?" वह लड़की नहीं जानती थी कि उसका देश कितना गरीब है! उसने गरीबी को जाना था—स्कूल की किताबों से और दुःख को समझा था कविताओं से। वह नहीं जानती थी कि इस देश में स्नान के लिए पर्याप्त पानी मिलना दुर्लभ है। क्योंकि कई गाँवों में पीने का पानी भी दूर से लाना पड़ता है। उसने नहीं देखा था कि सर्दियों में भी कुएँ से ठंडा पानी निकालकर खुले में नहाना पड़ता है। वह कैसे जानती कि गाँव में मैं जब स्नान करती हूँ तो पचासों बहनें और बच्चे मेरी हर कृति को गौर से देखते हैं और उस पर अपनी राय भी प्रकट करते हैं 'काफी कपड़े हैं उसके पास और घड़ी भी साबुन से कपड़े भी धोती है और शरीर भी।' दारिद्र्य दुःख दैन्य उससे दूर नहीं था। वह अपने घर से निकलती और केवल दस-बीस कदम चलती तो इनके नग्न रूप अपनी आँखों से देख पाती।

राजपुत्र सिद्धार्थ के पिता की तरह हर माँ-बाप पूरी कोशिश करते हैं कि उनके बच्चों को दुःख का दर्शन न हो समाज की समस्याओं का स्पर्श न हो। शायद ही कोई होता है जो राजपुत्र सिद्धार्थ की तरह दुःख की झाँकी मिलते ही जाग जाता है। बाकी सारे माता-पिता के द्वारा बनाये गये सुखमय जीवन के कारागृह में कैद रहते हैं। और फिर बाहर के दुःखों में से पैदा होनेवाली क्रान्ति की आग में असहाय बनकर जल मरते हैं।

नया में अवश्य आप से कहूँ कि आपके नगर में जो गरीब दीन-दुःखी हैं उनकी तड़पन को देखिये निकटवर्ती देहातों में रहनेवाले भूमिहीनों की भूख को समझिये वरना उन सबका दुःख ऐसी आग पैदा करेगा जिसकी लपटों से आपका चमन झुलस जायेगा। असंख्य लोगों के दुःख की उपेक्षा कर कुछ थोड़े लोग कब तक सुख की नींद सोते रहेंगे ?

मेरे पपा यह सब जानते थे। उन्होंने अपनी अधिकतर जमीन भूमिहीनों को दे दी थी और उन सबके न्योछावर की पूँजी इकट्ठी की थी। पीकिंग-विद्यापीठ के उनके छात्र यह जानते थे। लेकिन वे पपा से पूछते "सर, सारे जमींदार आपके जैसे नहीं होते आप तो अपवाद हैं। डंडे के बिना जमींदार अपनी जमीन नहीं छोड़ेंगे। दुनिया का इतिहास यही कहता है कि अमीरों ने कभी स्वेच्छापूर्वक अपनी संपत्ति नहीं छोड़ी।

पपा जवाब देते "हिंसा से क्रान्ति करने की कोशिश में हिंसा क्रान्ति पर हावी हो जाती है। हमें क्रांति का दूसरा अच्छा मानवीय तरीका ढूँढना होगा। लाओत्से ने कहा है संसार में जो सबसे कमजोर चीज है वह सबसे मजबूत चीज पर हावी हो सकती है L पानी सबसे कमजोर है लेकिन बड़े-बड़े पहाड़ों को भी तोड़ता है। इसी तरह सौम्यता से ही बलवानों पर विजय पायी जा सकती है। और कन्फ्यूशियस ने हमें बताया है, 'जब संपत्ति का समान बँटवारा होगा तब गरीबी मिटेगी। महापुरुषों के इन विचारों में मानवीय क्रान्ति के बीज छिपे हुए हैं। लेकिन उसका तन्त्र और मन्त्र अभी तक मानव नहीं जान पाया है। वह काम आप तरुणों को करना है।

पपा के एक साथी साम्यवादी थे। पपा ने विनोद में कहा था कि "ये हैं तुम्हारे लाल चाचा। तब से मैं उन्हें लाल चाचा ही कहती थी। जापान के हमले के बाद वे प्रोफ़ेसर का काम छोड़कर 'लाल सेना' में भर्ती हो गये। जब पपा और लाल चाचा की चर्चा चलती तो घंटों बीत जाते। उस समय मैं उन चर्चाओं को समझ नहीं पाती थी। अब मुझे इतना ही याद है कि लाल चाचा कहा करते थे कि "जनरलिस्मो चॅग रिएक्शनरी

एमिमी प्रॉफ दी पीपल' है। प्रौर जब पपा मास्को ट्रायल्स कान्सप्रेट्न कैप ट्राट्स्की का जिक्र करते तब लाल बाबा का मुँह वास्तव में लाल हो जाता। लाल बाबा बच्चों को बहुत प्यार करते। वे हमेशा मुझे रूस के बच्चों की दिलचस्प कहानियाँ सुनाया करते प्रौर कहते कि 'चीन को रूस जैसा बनाना है। मैं पूछती 'क्या रूसवाले अपने जैसे ही होते हैं तो वे जवाब देते—'नहीं उनकी नाक पहाड़ जैसी होती है प्रौर आँखें गोमती के प्रवाह जैसी बड़ी-बड़ी। उनका रंग भी हमारे जैसा पीला नहीं होता तुम्हारी नानी जैसा गोरा होता है। इस पर मैं कहती 'बाबा वे हमारे जैसे नहीं हैं तो फिर हमें उनके जैसा काम क्यों करना चाहिए? फिर बाबा मुझे कहानियाँ सुनाते। 'रूस एक स्वर्ग जैसा देश है, वहाँ पर कोई गरीब नहीं है। वहाँ के सब बच्चों को तुम्हारे जैसा अच्छा खाना मिलता है, कपड़ा मिलता है प्रौर तालीम भी। रूसी मजदूर हमारे मजदूरों की तरह रिक्शा नहीं खींचते। वहाँ पर सारा काम मशीनें करती हैं।

मैं सुनाती पपा कहते हैं कि अमेरिका में भी सारे काम मशीन ही करते हैं।

फिर लाल बाबा चीख उठते 'इस तरह बीच में बोलना छोटे बच्चों का काम नहीं है। पहले सारा हाल सुन लो।' रूस प्रौर अमरीका में बड़ा अन्तर है। अमरीका में गरीबी-अमीरी का भेद है, जो रूस में नहीं है। वहाँ पर सब समान है। प्रौर सुनो वहाँ पर छोटे बच्चों को पीटा नहीं जाता उन्हें अच्छी मिठाई खिलायी जाती है बच्चे खूब मजे से खेलते रहते हैं।

मुझे दूसरी कहानी याद आती प्रौर मैं तालियाँ बजाती हुई कहती हाँ बाबा स्वर्ग की परियों की कहानी भी ऐसी है।

इस पर लाल बाबा क्यों नाराज होते थे प्रौर कहानी बन्द करके क्यों चले जाते थे यह मैं बचपन में कभी नहीं समझ पायी।

मौसा की कृपा से उस दिन मैंने खूब अच्छा स्नान किया। मेरा बड़ा मोटा शरीर गरम पानी के स्पर्श से पुलकित हो उठा। यात्रा में कपड़े पहने खुले में बदन पर पानी उँडेलने को स्नान माना जाता है। मेरे अमरीकी दोस्त सोच भी नहीं सकते कि यह भी कोई स्नान है। गर्म पानी को देखकर मेरे पैर शिकायत करने लगे 'तुमने हमें कितना चलाया अब ज़रा हमें दो लोट ज्यादा पानी दो। मैंने उनकी बात मान ली तो कंधों ने अपनी अर्जी पेश की "हम कितना बोझ ढोते हैं—कपड़े बिस्तर, चर्खा किताबें—सारा सामान हमीं को ढोना पड़ता है। पैरों को तो सिर्फ चलना पड़ता है। उनसे ज्यादा तकलीफ हमने उठायी है। मैं कंधों पर पानी डालने लगी तो दायां हाथ कहने लगा "तुमने हमसे कितना काम लिया है भूलो मत। उसकी भी बात सही थी। अमरीका के अखबारों को लेख भेजकर मैं स्वार्थ और परमार्थ दोनों साधने की कोशिश करती थी। गांधीजी की तरह दोनों हाथों से लिखने का अभ्यास मुझे नहीं था इसलिए लिखने का काम दायें हाथ को ही करना पड़ता था। उसका दूसरा भाई वहाँ चुप रहनेवाला था। उसने कहा मीलों तक की यात्रा में मैंने दो भारी थैलियों को उठाया है। मेरा हक सबसे अधिक है गर्म पानी पर। इन सबकी बातें सुनकर पीठ भी बोलने लगी "आज तक मैं मुलायम गद्दों पर सोती थी लेकिन इस यात्रा में तुमने मुझे सख्त फर्श पर सुलाया। अब ज़रा मुझ पर भी दया करो। गर्म पानी मेरी कुछ तो तकलीफ दूर करेगा। इन सबकी शिकायतें सुनकर मैं हैरान हो गयी तो पेट महोदय ने अपनी बात कह डाली— 'इस यात्रा में तुमने सबसे अधिक तकलीफ मुझे दी है। यहाँ अब तक जो जो खाया वहाँ आने से पहले कभी नहीं खाया था। कच्चा भात और कंकड़ों को हजम करने में मेरी सारी शक्ति खतम हो गयी है।"

मारे हँसी के मेरा दम फूलने लगा। मैं साथियों से कहती कि "यहाँ पर भोजन में जो कंकड़ दिखायी देते हैं उनको इकट्ठा किया जाय तो साल भर में किसी भी नदी पर बाँध बनाया जा सकता है।" मेरे

पास सिर्फ दो बाल्टी गर्म पानी था और शरीर को तो गर्म पानी में टब की आदत थी। अब इतना कम पानी इतने सारे शिकायत करनेवालों का समाधान कैसे कर पायेगा! यह मेरी समस्या थी।

स्नान के साथ ही कपड़े धोना मेरे लिए काफी सरल हो गया था। हाँ खादी की मोटी साड़ियाँ धोते समय जरूर पता चलता था कि खादी पहनना तपस्या क्यों माना जाता है? मैं जब कपड़े सुखाने जा रही थी तो मीना ने मुझे रोका आपने कपड़े क्यों धोये? धोबी से धुलवाकर शाम तक आपके पास सारे कपड़े पहुँचा देती।

कपड़े धोने तो कौन बड़ी बात हुई मेरी तो आदत बनी हुई है। मैं सब कपड़े धो लेती हूँ।

मीना की नजर मेरे हाथों की ओर थी— आपके हाथ बताते हैं कि आपकी यह आदत नहीं है।

यह सुनते ही मेरा मन अतीत में चला गया वर्तमान और भारत से भी दूर बहुत दूर।

दस-बारह साल की सिमसिम कैंप फायर की कहानी पढ़ रही थी। काम के अधिकारी उन सबको सिंहासन पर चढ़ाते जिनके हाथों पर मेहनत के निशान नहीं होते थे। दूसरों की मेहनत का फल खानेवाले आलसी अमीरों की शान उस समय खतरे में थी। मैंने अपनी हथेलियों को देखा। कामकाजी चीनी स्त्रियों की विशेषता है और मैं शहरी जमींदार की बेटी। उस वर्ग की स्त्रियों के हाथ यानी अकर्मण्यता की प्रतिनिधि हथेलियाँ। मैं तुरन्त ही [illegible] के पास गयी "कभी [illegible] के समय [illegible] हाथों पर कहीं भी मेहनत के निशान [illegible]।

[illegible]

[illegible]

मम्मी हँस रही थी "क्या होगा ? तुम्हारे पापा किसान हैं इसलिए तुम तो बच जाओगी लेकिन तुम्हारी आधी अमरीकन मम्मी को जरूर फाँसी पर चढ़ना होगा ।

मैं और डर गयी "और पपा का क्या होगा ?

'तुम्हारे पपा को भी फांसी पर चढ़ना होगा क्योंकि उन्होंने मुझसे शादी करने का घोर अपराध किया है ।

"तो क्या फिर मैं अकेली ही रहूँगी ? मैं डर के मारे काँपने लगी ।

मम्मी हँस पड़ी । प्यार से सहलाते हुए उसने कहा 'तुम महान् बनने जा रही हो न ? मम्मी-पपा को छोड़े बगैर तुम 'मादाम क्यूरी' और 'जोन ऑफ आर्क' जैसा महान् कार्य नहीं कर सकोगी । कालेज की पढ़ाई के लिए अमेरिका जाओगी तब भी मम्मी-पपा को छोड़कर ही जाना होगा ।

मैं खामोश थी लेकिन फ्रेंच क्रांति की कहानी मेरे मन को सता रही थी ।

मैंने सोचा कि पपा से पूछूँगी । उन दिनों पपा घर पर कम रहते थे । उनका सारा दिन बाहर ही बीतता । जापान ने हमारे देश पर हमला किया था और समुद्र के निकट का कुछ प्रदेश हथिया लिया था । चीन की जनता पूरी शक्ति लगाकर लड़ रही थी । जापानी सिपाहियों के अत्याचारों के किस्से जनता में आतंक नहीं साहस पैदा करते थे । पपा अपने छात्रों को देश की रक्षा में आत्मार्पण के लिए प्रोत्साहित करते । उसके साथ-साथ अमरीकी जनता की सहानुभूति और सहायता प्राप्त करने के हेतु वहां के अखबारों के लिए प्रभावशाली लेख भेजा करते । उन दिनों हमारी राजधानी नानकिंग से चुंगकिंग चली गयी थी जो सागर से दूर पहाड़ियों में स्थित एक नगर था । मम्मी भी बच्चों को फौजी तालीम देने रेडक्रास आदि कई कामों में व्यस्त रहती थी । सारा चीन जानता था कि अपने राष्ट्र के लिए यह जीवन-मरण की समस्या है । छोटे छोटे बच्चे भी अपना फर्ज अदा कर रहे थे ।

रात में मैं पपा की राह देखती रही । मेरे दिमाग में क्रांति की कहानी

मचरा रही थी । बारह बजे के बाद जब पपा घर लौटे तब उन्हें मालूम हुआ कि चिप अब तक सोयी क्यों नहीं ? मैंने उनसे पूछा पपा क्या बग़ैर कुछ लोगों को फाँसी पर चढ़ाये क्रांति हो सकती है ?

पपा बहुत थके थे उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा लेकिन कहा कुछ नहीं । मैंने दुबारा वही सवाल किया । पपा धीमी आवाज़ में बोले 'बेटा मैं नहीं जानता लेकिन शायद भारत के गांधी जानते होंगे । वे देश की आज़ादी अहिंसा के तरीक़े से हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं । उन्हींसे तुम्हें जवाब मिल सकेगा ।

मुझे सहसा याद आया कि अभी-अभी तो भारत से नेहरू यहाँ आये थे । पपा ने कहा था कि 'भारत में गांधी के बाद उन्हींका स्थान है । वे चीन से बहुत प्रेम करते हैं और चीनी जनता का उत्साह बढ़ाने यहाँ आये हैं । पपा उनसे मिले थे और बाद में उन्होंने पपा के पास एक मोटी किताब भेजी थी । पपा ने मुझसे कहा था कि 'यह उनकी आत्मकथा है । मैं इससे बहुत प्रभावित हुआ हूँ । तुम जब बड़ी होगी तब यह ज़रूर पढ़ना ।

बच्चों की ओर से मैंने नेहरू का स्वागत गुलदस्ता देकर किया था और उन्होंने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा था 'प्यारी बच्ची । कितना अच्छा होता अगर मैं उसी समय उनसे पूछती कि क्या बग़ैर क़त्ल के क्रान्ति हो सकती है ? वे ज़रूर गांधी से पूछते और जवाब देते ।

उस उम्र में हिंसा-अहिंसा के विचार को समझना मेरे लिए संभव न था । लेकिन फिर भी मेरे सामने समस्या थी कि कुछ लोगों को क़त्ल कर बाकी सारे कैसे सुखी बन सकते हैं ?

फ्रांस और रूस की क्रान्ति की कहानियाँ मुझे अच्छी लगती थीं लेकिन फाँसी आदि का वर्णन मुझे कभी नहीं भाया । मेरे बालमन की यही मनीषा थी कि किसीका भी ख़ून किये बग़ैर क्रान्ति हो किसीका भी अहित किये बग़ैर सबका हित साधा जाय ।

अवधेश बाबू के निमंत्रण पर नगर के समस्त प्रतिष्ठित नागरिक सभा में उपस्थित थे। सभा के प्रारम्भ में अवधेश बाबू बोले 'हमारा यह परम सौभाग्य है कि [illegible] जैसी विदेशी विदुषी आज हमारे नगर में आयी हैं। मैं तो मानता हूँ कि मेरी छोटी बहन आयी है। आज का दिन मेरे लिए रक्षा-बन्धन का दिन है। इसीलिए मैं इस बहन को एक सौ एकड़ भूमि की भेंट अर्पण कर रहा हूँ। तालियाँ गूँज उठी और फिर दान-पत्रों की वर्षा आरम्भ हुई। मेरे सामने डाक्टर वकील अफसर जमींदार आदि बैठे थे जो अपना-अपना दान घोषित करने लगे। सभा के अन्त में मेरे पास पाँच सौ एकड़ के दानपत्र पहुँचे। मैं सोचने लगी कि मुझे इतना दान कैसे मिल रहा है! मैं न इनके प्रदेश की न देश की। मेरा धर्म इनसे भिन्न मेरी भाषा भिन्न और फिर भी ये लोग अपनी जान से भी प्यारी जमीन मुझे दे रहे हैं—गरीबों के लिए। एक सर्वथा अपरिचित विदेशी बहन पर ये लोग इतना विश्वास कैसे रखते हैं? क्या यह विनोबा के नाम का जादू है या भारतीय सभ्यता की देन? देखनेवालों के चेहरे बता रहे थे कि उनमें से कुछ जमींदार हैं जो मजदूरों का शोषण करते हैं। कुछ डॉक्टर हैं जिनके लिए दूसरों की बीमारी ही उनका सुअवसर है जो पूरा पैसा प्राप्त होने पर ही किसीके प्राणों की रक्षा करते हैं। मेरे सामने कुछ वकील बैठे थे जिनकी आमदनी झगड़ों पर निर्भर थी और जो भोले भाले किसानों को लूटकर अपनी जेबें भरते थे। मेरे सामने कुछ सरकारी अफसर थे जो 'सेवक' कहलाते थे लेकिन मालिक से भी मालिक बन बैठे थे। कुछ राजनीतिवाले भी थे जो सेवा के नाम पर सत्ता जमाने के ख्वाब देखते थे। लेकिन इन्हींसे मुझे भूदान मिला। क्या मिला कैसे मिला?

मैंने उन्हें सुनाया कि "व्यक्तिगत स्वामित्व का विसर्जन कर सारी सम्पत्ति और भूमि भगवान् की मानी समाज की मानी है। शारीरिक और बौद्धिक श्रम का मूल्य समान है। बिना श्रम किये खाना हराम है चोरी है। समता आज का युग-विचार है।"

उन्होंने न सिर्फ यह सुना बल्कि भूदान देकर इस विचार को मान्यता भी दी और क्रान्ति का श्रीगणेश किया।

'आपके देशवाले भूदान के बारे में क्या सोचते हैं?' किसीने सवाल किया।

चूड़ीदार पायजामा, तोंद को ढकनेवाली शेरवानी पहने बड़ी-बड़ी मूछोंवाली मूर्ति देखकर मुझे लगा कि सवाल करनेवाला जमींदार होगा या वकील। कुछ देर खामोश रहकर फिर मैंने बोलना आरम्भ किया। लेकिन उन चन्द शब्दों में मैंने यांगत्सी नदी की सैर कर ली।

चीनी जन मृतकों को भी उतना ही वास्तविक समझता है जितना जीवितों को। प्राचीन चीनी साहित्य में भूतों का उतना ही स्थान है जितना जिंदा आदमी का। गरीब युवक और अमीर युवती एक दूसरे से प्रेम करते हैं, समाज के बंधन उन्हें दूर रखते हैं, वह युवती आत्म-हत्या करती है और फिर चीनी कहानी आरम्भ हो जाती है। सुन्दर युवती भूत बनकर अपने प्रिय के पास आती है, दोनों का विवाह होता है और बरसों तक दोनों साथ रहते हैं। इस प्रकार की कहानियाँ चीनी लेखक और पाठक बहुत पसन्द करते हैं। अम्मी को इनसे नफरत थी इसलिए वह मुझे ऐसी चीनी कहानियाँ पढ़ने नहीं देती थी। उसने मेरे लिए बढ़िया चित्रोंवाली कहानी की पचासों अंग्रेजी किताबें लाकर रख दी थीं। फिर भी मैं चोरी से चीनी कहानियाँ पढ़ा करती थी।

चौदहवीं का चाँद चमक रहा था और उसके साथ यांगत्सी का पानी भी। किनारे पर कई आदमी बैठे थे। सभी खामोश! उनकी आँखें यांगत्सी के निमग्न प्रवाह में बह रही चाँदनी को निहार रही थीं। मुझे कुछ डर हुआ और मैंने ऊँची आवाज़ में पूछा, 'आप कौन हैं? कहाँ से आये हैं?' मेरी आवाज़ सुनते ही एक आदमी उठ खड़ा हुआ और मरा था। बढ़ते हुए कहने लगा, 'लिन, तुमने मुझे नहीं पहचाना?'

मैं डर गयी, मेरे सामने खड़े थे एक पुराने मित्र मिस्टर वो वांगलिंग रहते थे। वे बड़े जमींदार थे, सैकड़ों एकड़ जमीन के मालिक। आज से

नहीं कई पीढ़ियों से। लाल चाचा कभी-कभी सुनाया करते थे कि वे बड़े क्रूर जमींदार हैं। मजदूरों को पीटते हैं। उनके मजदूर लाल चाचा को मानते थे इसीलिए उन्हें बहुत सताया जाता था। मैं कई बार पपा के साथ मार्गलिन गयी थी। जमींदार की पुराने ढंग की बड़ी कोठी थी। ड्राइंग रूम का सारा फर्नीचर भी पिछली शताब्दी का था। वे कन्फ्यूशियस के बड़े भक्त थे। उनका अध्ययन बहुत गहरा था। उनके पुस्तकालय में ऐसी प्राचीन किताबें थीं जो और कहीं नहीं मिलती थीं। वे पपा को कन्फ्यूशियस के विचार सुनाते 'मानव सत्य को महान् बनाता है, सत्य मानव को महान् नहीं बनाता है। सत्य मानव-स्वभाव से कहीं दूर नहीं जाता। यदि मानव-स्वभाव के विरुद्ध कोई चीज हो तो वह सत्य नहीं हो सकता। सारे ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य है—मानव का सुख।

मार्गलिन के जमींदार फिर से पूछ रहे थे "लिन तुमने अभी तक नहीं पहचाना? मेरे पुस्तकालय की किताबों में तुम अक्सर खेली थीं और तुम्हारे पपा कहा करते थे कि यह 'बाप से बेटी सवाई' बननेवाली है।

यह सुनते ही एक बूढ़ा मेरी ओर देखने लगा। मैंने उन्हें तुरन्त पहचान लिया। वे हमारी मामी के पिताजी थे शंघाई के बड़े व्यापारी। कहा जाता था कि चीन की सरकार के कई मंत्री और अफसर उन्हीं के हाथों में थे। उनका मानना था कि दुनिया में पैसे से कोई भी चीज खरीदी जा सकती है। जापानी हमले के समय वे जापान से मिले हुए थे। देश की आज़ादी के लिए मर मिटनेवाले चीनी जवानों की एक टुकड़ी को उन्होंने धोखा देकर जापानियों के हवाले कर दिया था। उन्होंने गद्दारी से लाखों रुपये कमाये थे। पपा कहते थे कि 'ऐसे गद्दार ही चीन के असली दुश्मन हैं। मामीजी के बच्चों के साथ जब वे मेरे लिए खिलौने मिठाइयाँ लाते तब पपा ममी से कहते 'चीन के भाग्य के नेता तो इनकी मुट्ठी में हैं ही। लेकिन इन्होंने चीन के कल के नेताओं को भी खरीदना शुरू किया है।

ममी कहती 'आप तो बिलकुल कम्युनिस्टों की सी बात कर रहे हैं।
लेकिन सच है न? पपा उसे चिढ़ाते।

'बिलकुल नहीं। वह आदमी बुरा है, काला बाजार करनेवाला है, गद्दार है, यह सब मैं जानती हूँ। फिर भी मुझे लगता है कि बुरे आदमी सभी बच्चों को दिल से प्यार करते हैं। बुरे-से-बुरे आदमी के दिल में भी कहीं-न-कहीं अच्छाई छिपी रहती है।

बांसखी का चमचमाता पानी सतत बहता जा रहा था। जब वे दोनों आदमी कुछ पास आये तो मुझे विश्वास हो गया कि वे जिन्दा नहीं भूत हैं। नानकिंग का जमींदार रोने लगा। "किम क्या कहूँ तुमसे? लाल सिपाहियों ने मेरी दुर्दशा कर दी। मेरे अपने ही गाँवों में मुझे ले जाकर मजदूरों से बेंत लगवाये। अन्त में पेड़ पर उल्टा लटका दिया और । जब प्राणान्त हो रहा था तब मुझे याद आये तुम्हारे पपा। उन्होंने अपनी सारी जमीन मजदूरों में बाँट दी थी। मैंने कई बार देखा था कि वे अपने मजदूरों को अपने साथ सोफा पर बिठाते। तुम्हारे ड्राइंग रूम में उन मजदूरों के साथ चाय पीना मुझे कभी भी अच्छा नहीं लगा था। लेकिन मैं चुपचाप पी लेता था। लाल सिपाही सबको बता रहे थे कि रूस में न कोई गरीब है न अमीर, सब समान हैं। चीन में भी हमें समता लानी है। जब वे मुझे बेरहमी से पीट रहे थे तब मुझे लगा कि अगर मैं भी तुम्हारे पपा की राह पर चला होता तो मेरी यह दुर्गति न होती।

बम्बई के व्यापारी बड़ी मुश्किल से बैठे-बैठे ही आगे बढ़ रहे थे, बेटा लाल सिपाहियों ने मेरे पैर काट डाले। उनकी क्रूरता से मुझे गुस्सा नहीं आया बल्कि मेरे हजारों पाप याद आये। मैंने देखा कि वे ठीक से बोल नहीं पाते थे। 'क्या कहूँ तुमसे? लाल सिपाहियों ने मेरी आधी जीभ भी काट डाली, ठीक ही किया। इस जबान से हमेशा झूठी बातें निकलती, यह सदा सत्य छिपाती रही। मैंने घरवालों को ताईवान भेजा लेकिन खुद नहीं गया। मैंने सोचा कि इन लाल सिपाहियों को मैं खरीद लूँगा। मैं नहीं जानता था कि दुनिया में कुछ ऐसे लोग होते

हैं जो खरीदे नहीं जा सकते हैं, जो विचार के लिए सब कुछ कुर्बान करते हैं। काश ! मैं यह सब पहले जानता तो कुछ कम पाप करता। अब तो मेरे लिए नरक का दरवाजा खुल गया है। हाय हाय ! वे बच्चे की तरह सिसक-सिसककर रोने लगे। मुझे याद आया वह जमाना जब वे एक तानाशाह जैसे थे। सब उनसे आतंकित रहते थे। उनकी पत्नी कहा करती थी कि "मेरा जीवन नरक है। ऐसा जीवन जीने की अपेक्षा मर जाना बेहतर है। मेरी मम्मी और पपा के लिए उनके मन में बड़ा आदर था। वे मम्मी से कहा करतीं कि "तुम्हारा पति संत है, संत। अनेक जन्मों का पुण्य इकट्ठा हो, तो ही ऐसा पति मिलता है।

यांगत्सी के विशाल प्रवाह को शून्य दृष्टि से देखनेवाले समूह की ओर इशारा करते हुए मानर्हिम के जमींदार बोले "यह हम जैसे अमीरों का समूह है जिन्हें लाल सिपाहियों ने बेरहमी से मार डाला। और वह देखो पागल जैसा खड़ा हुआ आदमी। वह कई बड़े जहाजों का मालिक था। इसी यांगत्सी में उसके जहाज घूमा करते थे।" जहाज का मालिक उठकर खड़ा हुआ और हाथ-पैर पटकते हुए बड़बड़ाने लगा "मैं मालिक हूँ। ये सारे जहाज मेरे हैं। मजदूर मेरे गुलाम हैं। मैं उन्हें मारूँगा पीटूँगा। आप कौन हैं पूछनेवाले ? मैं चाहे जैसे पैसा कमाऊँगा और वेश्याओं को दे दूँगा। मैं मालिक हूँ बड़े आये लाल सैनिक ! क्या कहा मजदूर और मालिक समान हैं ? नहीं मानोगे तो कत्ल ही जाओगे ? करो कत्ल मुझे ! बनो लाल सैनिक ! मेरे लाल खून से लथपथ लाल लाल ।"

मैंने धीरज बटोरकर बोलना प्रारम्भ किया "मैंने अभी-अभी भारत की यात्रा की है प्रभु, अमिताभ की भूमि की। वहाँ पर बौद्ध भिक्षु जैसा एक आदमी गाँव-गाँव पदयात्रा कर जमीनवालों से कहता है कि जमीन भगवान् की है सबका उस पर समान हक है आप अपनी जमीन का एक हिस्सा दान दीजिये। कैसा! जमीनवाले दान देते हैं और वह जमीन भूमिहीनों में बाँट दी जाती है। देने और लेनेवालों में प्रेम बढ़ता है।"

मानर्हिम का जमींदार चिल्लाया "यहाँ पर क्यों नहीं माँगी अभी

जमीन ? अगर माँगी जाती तो मैं कम्युनिज्म को बाद कर जरूर दान देता। फिर मेरे गाँववाले मुझे बेंतों से नहीं पीटते।

बम्बई के व्यापारी ने पूछा "व्यापारियों के लिए उस भिक्षु ने क्या कहा ?

"वह भिक्षु कहता है कि हमें समझना चाहिए कि हम अपनी संपत्ति के ट्रस्टी हैं, मालिक नहीं। और क्रान्ति के पहले कदम के तौर पर संपत्तिदान देना चाहिए। आपके परिवार में पाँच व्यक्ति हों तो दरिद्र नारायण के प्रतिनिधि के तौर पर उसे परिवार का छठा व्यक्ति माना जाय और उसका हिस्सा उसे अदा किया जाय।"

"और क्या कहते हैं वे ?"

"वे कहते हैं कि हवा, पानी और सूरज की रोशनी के समान जमीन भी भगवान् की देन है। हम जमीन के मालिक बनेंगे तो भगवान् की जगह लेंगे और अधर्म करेंगे।

जहाज के मालिक ने पूछा—"और मेरे लिए क्या कहा उन्होंने ?"

"आप अपने मजदूरों को साझीदार बनाइये और मुनाफे का समान बँटवारा कीजिये।

अगर मैं ऐसा करूँगा तो फिर मुझे गोली से नहीं उड़ाया जायेगा न ? अगर लाल सिपाही मुझे यह सारा कहते तो मैं जरूर करता।

नालगोंडा के जमींदार बोले "अगर लाल सिपाहियों ने मुझे प्रिय ऐसा कहा होता तो मैं अधिकतर जमीन दे देता। लेकिन उन्होंने मुझसे कहा कि जमीन तुमसे छीनी जायेगी। तब मुझे गुस्सा आया और मैंने कहा 'छीनना हो तो छीन लो लेकिन जब तक मैं जिन्दा हूँ तुम्हें कुछ न दूँगा।

बम्बई के व्यापारी ने पूछा "भारत के अमीर संपत्तिदान देते हैं न ?"

मैंने कहा "नहीं, बहुत थोड़े देते हैं। भूदान की अपेक्षा संपत्तिदान बहुत कम मिलता है।

वे रोने लगे। "हाय हाय ! तो फिर क्या भारत के अमीरों की भी मुझ जैसी दुर्गति होगी ? जिस भारत के अमीरों को बम्बई के करोड़पति

का संदेश सुना देना कि उस भिक्षु को भेजकर भगवान् तुम्हें बचाना चाहता है। उसकी बात मान लो और संपत्तिदान दे दो। समय रहते ही जाग उठो। मेरी छोटी बीम की यह करुण कहानी उन्हें सुना देना कि समय रहते ही जाग उठो।

गोमती का पानी अदृश्य हो गया और निकट के तालाब का पूर्णिमा के चाँद की किरणों में चमकता पानी दिखाई देने लगा। सभा चल रही थी और बड़ी तोंदवाले सज्जन ने सवाल किया था कि मेरे देशवाले भूदान के बारे में क्या सोचते हैं?

मैंने कहा 'हमें भूदान का आकर्षण इसीलिए है कि उसमें विश्व शान्ति के बीज निहित हैं। हमें न पैदावारें बढ़ाने में रुचि है न जीवन स्तर बढ़ाने में। हमारे देश में जीवन-स्तर इतना ऊँचा है कि वैभव ही हमारी समस्या बन गयी है और पैदावार इतनी अधिक होती है कि दाम स्थिर करने के लिए हजारों टन अनाज जलाना पड़ता है। हमारे पास बिजली के चूल्हे हैं पखे हैं मोटर हैं सब कुछ है। लेकिन भौतिक समृद्धि की चोटी पर पहुँचने के बाद न हमारे चित्त में शान्ति है न बुद्धि में स्थिरता न हृदय में समाधान। हमें शांति की चाह है लेकिन राह नहीं मिल रही है। भूदान भूमि-समस्या को शान्ति से हल करने का तरीका है, इसीलिए यह हमारा दिल खींच लेता है।

किसीने पूछा 'क्या यह प्रयोग सफल होगा?"

मैंने कहा यह तो मैं आपसे पूछूँगी। दान देनेवाले आप ही हैं।

भवभूति बाबू बोले हाँ हाँ मैं मानता हूँ कि यह प्रयोग जरूर सफल होगा। दान देने में हमारा हित है और लेने में भूमिहीनों का हित है। विनोबाजी हमसे जमीन लेते हैं और हमारी रक्षा करते हैं। अगर विनोबाजी का भूदान-यज्ञ नहीं चलता तो भारत कब का चीन बन गया होता।

मैंने उन्हें रोका नहीं नहीं! चीन को भारत जैसा बनना चाहिए। भारत ने आज तक चीन को कई देनें दी हैं—बुद्ध धर्म धर्मग्रंथ। और आज

पुनः चीनी किसान इस युद्धभूमि की ओर आशा की निगाहों से देख रहे हैं। 'बैर से बैर का शमन नहीं होता है निर्वैरता से ही होता है।' यह विचार आप ही ने चीन को दिया। अब आपको चाहिए कि संहारकारी हिंसक शक्तियों का मुकाबला करनेवाली अहिंसक शक्ति पैदा करें, चीन को और जगत् को फिर से एक बार शान्ति की राह दिखावें।

यह सारा कहते ही मेरा मन शान्त हो गया। भारत में मैंने कभी यह नहीं कहा था। उस दिन चर्चा बहुत अच्छी रही। उपस्थित नागरिकों ने मुझसे कहा कि आपकी बातें हमें बहुत अच्छी लगीं। अध्यक्ष बाबू विशेष प्रसन्न थे। उन्होंने मुझसे कहा 'आप जैसी दार्शनिक और लगनशील कार्यकर्त्रियाँ भूदान-आन्दोलन को अवश्य सफल बनायेंगी।"

रात में मैं सो न सकी। शीतल चंचल चाँदनी मुझे धीरे से बुला रही थी। पाँच हजार साल के इतिहास में अगणित चीनी कवियों को यही चाँदनी अपनी रश्मियों की आकर्षण-शक्ति से खींचकर चन्द्रलोक ले गयी थी। आठवीं शताब्दी का हमारा श्रेष्ठ कवि 'लि पो' तो चन्द्रमा के पीछे पागल हो गया था। किसी रमणीय पूर्णिमा की रात में कविता और मदिरा की मिश्रित मस्ती में घूमता हुआ 'लि पो' सोये घुमनों से मौन संवाद करते हुए शायद इस चाँद से ही मिलने जा रहा था कि सहसा उसने एक जलाशय देखा। शान्त सलिल के पटल पर शीत रश्मि का प्रतिबिम्ब दिखायी दिया। उसने सोचा कि मेरी उत्कृष्ट प्रीति चन्द्रमा को धरती पर खींच लायी और वह आनन्द से विह्वल हो उठा। चन्द्रमा को गले लगाने के लिए वह आगे बढ़ा और बढ़ता गया दुनिया कहती है कि वह तालाब में खो गया। चीनी कवि मानता है कि चन्द्रमा ने उसे अपने हृदय में स्थान दिया। वही शीतल चंचल चाँदनी मुझे पुकार रही थी। भारतीय पद्धति के अनुसार किसी लड़की के लिए इस वक्त अकेले घूमना अनुचित था। लेकिन मेरे लिए घर बैठना असंभव हो गया। 'लि पो' मेरे कानों में मधु गुंजन करने लगा

'भीगे पहाड़ की ढाल पर
संध्या में घर की इस राह पर
साथी था मेरा मिलाकर
देखा जो मुड़कर
घोर अंधकार में
छिपा हुआ धुँधला पथ !"

मैं बाहर निकल पड़ी। 'आप कहाँ जा रही हैं? अकेली मत जाइये। मैं भी आती हूँ।" लीला मेरे पीछे दौड़ी। बेचारी का दम फूलने लगा लेकिन मेरा ध्यान उसकी ओर न था। वह कह रही थी 'आपके आज के भाषण ने मुझे मोह लिया है। दिल चाहता है कि घर-बार छोड़कर आपके साथ घूमूँ।

जाने कहाँ से सफेद बादलों का झुण्ड आ रहा था। देखते-देखते वह चन्द्रमा पर छा गया। 'लि पो' का प्रियतम कहीं खो गया।

लीला बोले जा रही थी आपकी हर बात मैंने कंठस्थ कर ली है। आपने कहा था हमें शान्तिमय क्रान्ति करनी है। क्रान्ति का हमारा तरीका अहिंसक है, जिससे कि हमें एक के हित के लिए दूसरे का अहित नहीं करना पड़ेगा। एक साथ सबका हित सध सकेगा।

मैं खामोश रही। लेकिन मेरे अन्तर की किसी गुहा से आर्त ध्वनि निकली लीला मैंने आज जो कहा वह मैं पहले ही जानती तो जानती तो चिंगलिंग कभी चीन से अलग न होती। ●

चार

●

हेमन्त ऋतु धूप को चाँदनी बनाती है। राह चलते समय हम अनुभव करते थे कि चंडांशु हिमांशु बन गया है। लेकिन उस दिन राह तय करते हुए जब दोपहर के बारह बज गये तब धूप सताने लगी। ठीक उसी समय हमें वीरान रेतीला रास्ता काटना पड़ा। नयनसुख हरियाली कहीं नजर नहीं आ रही थी। प्यास बुझाने के लिए पानी भी न मिल सका। प्यास की तड़पन धूप की जलन और चलने की थकान एक क्षण में मिट गयी—जब सुधीर ने कहा "आज हमारा पड़ाव बोधगया में है। अब तो बुद्ध-मन्दिर का कलश भी दिखाई देने लगा। मेरे अंतःसागर में आनन्द की हिलोरें उठने लगीं। चलने की गति बढ़ गयी।

बोधिवृक्ष की छाया में मैंने रिक्त आसन देखा और सिर झुक गया पलकें झप गयीं हाथ जुड़ गये। प्राचीन बुद्ध-मंदिर के प्रांगण में उससे भी अधिक प्राचीन बोधिवृक्ष खड़ा था। मंदिर के शिखर को हलके-से स्पर्श करनेवाले कोमल पत्तों की मीठी मुस्कान चारों ओर खँडहरों का पुरातन जगत्। खुले नयन इस बाह्य सृष्टि को देख रहे थे लेकिन निमीलित नयनों को नयी दृष्टि प्राप्त हुई। सृष्टि में मृण्मय मूर्तियों की दृष्टि में चिन्मय की झलक। खुले नयनों ने रिक्त आसन देखा और निमीलित नयनों ने निहारा आसनाधिष्ठित तपोमग्न बुद्धदेव की भूमि-स्पर्श मुद्रा।

यही स्थान है जहाँ पर राजपुत्र सिद्धार्थ बुद्धदेव बने। दुनिया के कोने कोने से यात्री आते हैं इसे देखने। बोधिवृक्ष गर्व के साथ कह रहा था। भगवान् की कीर्तिगाथा का स्थान उसीके जिम्मे न था। वह जानता था। लेकिन मेरे कान उस वाणी को सुन पा रहे थे। नयनों के साथ श्रवणों का भी काम समाप्त हो गया था। बिन नयनन दर्शन और बिन

मवचन नाम-जप चल रहा था। "अमिताभ अमिताभ सद्धर्म पुंडरीक प्रज्ञा पारमिता अमिताभ।

पहाड़ों की चोटियों पर से आनेवाली चक्करदार टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी। छोटी चिर्यांलिम दादा का हाथ पकड़कर पहाड़ पर चढ़ रही थी। चोटी पर एक सुन्दर बुद्ध-मंदिर था। चिर मानती थी कि यह बुद्धदेव का घर होगा। दादाजी ने कहा 'बेटा उनका घर यहाँ नहीं। उनका घर बहुत-बहुत दूर है। उधर दक्षिण में हिमालय है और उसके भी उस पार भारत है। उसी भारत-भूमि में बोधगया है जहाँ पर बोधिवृक्ष और उसकी छाया में एक आसन' दादाजी सजल नयनों से कह रहे थे "चिर बेटा बड़े भाग्य से होता है उस स्थान का दर्शन। हम चीनी जीवनभर पुण्य-संचय करेंगे तो हमें अगला जन्म उस बुद्ध-भूमि में भारत भूमि में मिलेगा। चीनी अपने हृदय-मन्दिर में बोधिवृक्ष की छाया में बैठे हुए अर्धोन्मीलित नेत्रवाले ध्यानस्थ अमिताभ की प्रतिमा सदा के लिए प्रतिष्ठित करता है। लेकिन अपनी इन आँखों से उस प्रतिमा को कोई बड़ा भाग्यशाली ही देख सकता है। उसीके दर्शन की आस लेकर हम चीनी इस दुनिया को छोड़ते हैं और जिसने विशेष पुण्य किया हो उसे भारत भूमि में पुनर्जन्म प्राप्त होता है।

दादाजी वहाँ पर इस समय कौन रहते हैं ?

'सारे जगत् के पूर्वजन्म के पुण्यात्मा बुद्ध-भूमि में रहते हैं बेटा। मेरी माँ भगवान् से यही प्रार्थना किया करती थी कि मेरा अगला जन्म भारत में हो जिसकी मिट्टी का कण-कण अमिताभ के स्पर्श से पुनीत बन गया है।

चिर ने गर्व के साथ कहा "दादाजी मैं जाऊँगी वहाँ पर। अभी जितनी बड़ी हो जाऊँगी तो भारत की यात्रा करूँगी।

चिर का सिर प्यार से थपथपाते हुए दादा बोले हाँ बेटा जरूर जायेगी। मेरी चिर बड़ी भाग्यशालिनी है।

भाग्यशालिनी ? हाँ मैं भाग्यशालिनी हूँ। मेरे अगणित पूर्वज

कई शताब्दियां से दूर-दूर के पहाड़ों पर बसे हुए बुद्ध-मंदिरों के दर्शन के लिए लाखों मील की पदयात्रा कर चुके होंगे। उनकी यात्रा की दूरी अनेक बार पृथ्वी की परिक्रमा के बराबर हो चुकी होगी। उन मंदिरों में उन्होंने इतना धूप जलाया होगा कि उसकी सुगन्ध रोजे कयामत तक सारी पृथ्वी को सुगंधित कर सकेगी। उन्होंने बुद्ध-वाणी का अगणित बार पारायण किया होगा और अमिताभ को आर्त स्वर से इतनी बार पुकारा होगा कि भगवान् ने भी निर्वाणावस्था छोड़कर फिर से चीन में जन्म लेना चाहा होगा।

मेरे अभ्यस्त पूर्वजों की युग-युग की संचित अतृप्त अभिलाषा आज तृप्त हो गयी। उनकी कन्या बोधगया पहुँची उसने बोधिवृक्ष का दर्शन किया। बुद्ध-मन्दिर में धूप जलाया और अमिताभ की प्रतिमा को भक्ति भाव से प्रणाम किया।

अमेरिकावाले तो भौतिक और बुद्धिवादी होते हैं न? लेकिन आपमें यह श्रद्धा और भक्ति? व्यंग्य के लहजे में सुधीर ने कहा।

मैंने जवाब दिया 'हाँ निश्चय ही वे भौतिकवादी हैं और इसीलिए उनके मन में अशान्ति है, रिक्तता है।

'अब इस रिक्तता को पुरानी दकियानूस अंधश्रद्धा से भरा नहीं जा सकेगा। सुधीर ने पुन व्यंग्य किया।

"इससे कौन इनकार करेगा कि अपने दादा-परदादा जैसी अब हमारी भगवान् में श्रद्धा नहीं रहेगी। बारिश ज्यादा हो या सूखा पड़े तो वे मानते थे कि भगवान् की नाराजी प्रकट हुई और चुपचाप सहते थे। दुःख और असफलता को पूर्वजन्म के पाप का फल मानकर संतोष कर लेते थे। यह सब हमसे नहीं बनेगा। इसमें कोई शक नहीं कि हमने भगवान् को तो अपने दिल से हटा दिया पर वह जगह खाली ही रह गयी।

सुधीर, "होगी खाली लेकिन अब उस जगह पर फिर से भगवान् को बिठाया नहीं जा सकता।

ठीक है। साम्यवाद जैसा नया भगवान् उस जगह को ले लेगा। क्योंकि धर्मसत्ता पर अब पुराने भगवद्भक्तों का एकाधिपत्य नहीं रहा। आज के नये वाद भक्तों ने भी उस पर काफी दूर तक अधिकार जमा लिया है।

सुधीर 'हम न भगवान् को चाहते हैं न किसी वाद को।

"तो फिर चाहते क्या हैं यह तो बताइये। मानव-मन कभी खाली नहीं रह सकता है। मैंने आवेश के साथ उत्तर दिया।

सन् १९४५ समाप्त हो रहा था। लड़ाई में चीन को बहुत नुकसान उठाना पड़ा था। उसके बाद देश की नव-रचना करनी थी। हमारे छात्र-संघ की कार्यकारिणी की बैठक में उसी विषय पर चर्चा चल रही थी। छात्रों में अधिकतर साम्यवादी थे जिनका नेता थु था। मैंने अपने भाषण में चीनी संस्कृति का जिक्र किया और थु ने जोरदार प्रहार आरम्भ किया।

"क्या रखा है आपकी उस प्राचीन सभ्यता में? यूरोपवालों की तोपें गोला बरसाने लगीं और आपकी महान् संस्कृति नष्ट भ्रष्ट हो गयी। उनके पास मशीनगन हैं जहाज हैं विमान हैं और आपके पास क्या है?

'अपनी बात छोड़ने से तुम्हारी पूरी रक्षा होगी मुझसे ले तुम सीधे बढ़े चढ़ जाओगे' लाओत्से ने ऐसे विचार देकर इस देश को निर्वीर्य बनाया और बुद्ध की अहिंसा ने इसे पूरा तेजोहीन बना दिया। लाओत्से बुद्ध—इन सबको हटाये बगैर चीन कभी विकास नहीं कर सकता।"

मैं अहिंसा का समर्थन हिचक रूप से करने लगी जापान की आधुनिकतम अस्त्रास्त्रों से सज्जित सेना का मुकाबला कर हम किस बल पर टिक सके? हमारी प्राचीन सभ्यता के कारण हमें बल मिला और जापान हार गया।

"जरा-सा जापान हमारे विशाल देश के मुकाबले में इतना बलशाली कैसे बन गया? उसने अहिंसा निर्वैरता शान्ति आदि की डींग हाँकने

साहिस और गरीब किसान बड़ी भारी अंग्रेजी सल्तनत से मुकाबला कर सकता है। अपनी आत्मशक्ति को जगाकर देश की आजादी के लिए वह हर प्रकार की मुसीबतें झेलता है और उसकी इस तपस्या के सामने अंग्रेजी सल्तनत को भी हार खानी पड़ती है। अहिंसा के तरीके से भूमि समस्या भी हल हो सकती है। यह सब मैंने जाना लेकिन तब जब जानने और न जानने में कोई अन्तर न रहा।

हमारे पड़ाव के निकट की बहुत-सी जमीन एक जमींदार (राजा साहब) की थी। उन्होंने विनोबाजी को सौ दो सौ एकड़ का दान दिया था। लेकिन साथ मानते थे कि राजा साहब का यह दान नगण्य है। मैंने यह सुना था कि जमींदार विनोबा को दान देकर सम्मान पाते हैं और फिर निश्चिन्तता से अपने मजदूरों को चूसते हैं। मेरे साथियों को लगता था कि इस पड़ाव पर कुछ भी दान नहीं मिलेगा।

राजा साहब के पास संदेश भेजा गया कि विनोबाजी के साथी आपका दर्शन करना चाहते हैं। लेकिन उनके मैनेजर साहब की ओर से जवाब आया राजा साहब आपसे नहीं मिल सकेंगे।

किसीने कहा कि 'हम जैसे ऐरे-गैरे से वे क्यों मिलेंगे? कोई मंत्री या बड़ा अफसर आता तो झट दान दे देते।

सुधीर ने गुस्से में कहा इन जमींदारों का गरूर अब भी कायम है।

मैंने सोचा कि हमने क्या तपस्या की है? क्या सेवा की है? हमें आसानी से दान क्यों मिलना चाहिए? सुधीर ने चिढ़ाते हुए कहा 'आपने सिर झुकाकर प्रणाम किया फिर भी आपके बुद्ध भगवान् खामोश ही बैठे रहे। वे राजा साहब को सुमति क्यों नहीं देते हैं?

मुझे हंसी आयी बुद्ध भगवान् ने यह तय नहीं किया है कि उनके काम की सूचना पहले आपको दी जाय।

हमने दिनभर घर-घर जाकर प्रचार किया। एक मिनट भी आराम

नहीं किया। रात में जब मेरा थका हुआ शरीर आराम चाहता था उसी समय सूचना मिली कि मीटिंग का समय हो गया।

मीटिंग हो रही थी एक गोशाला में। वहाँ पर अलग-अलग ढंग की बदबू आ रही थी। गाँववाले जमीन पर बैठे थे। मेरे लिए एक फटी मैली दरी बिछायी गयी थी। सर्दी काफी थी सब लोग कम्बल ओढ़े थे। टिमटिमाते दीपक की धीमी रोशनी में कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। नित्य क्रम के अनुसार सभा के प्रारम्भ में प्रार्थना हुई। मेरे होंठ स्थितप्रज्ञ के लक्षणों का पाठ कर रहे थे लेकिन मन में जप चल रहा था अमिताभ अमिताभ। प्रार्थना कब समाप्त हुई और मैंने भाषण कब प्रारम्भ किया इसका मुझे कुछ पता न था। शायद मैंने उस दिन यह कहा होगा 'भगवान् बुद्ध की तपस्या भूमि में अहिंसा की शक्ति प्रकट न हुई तो और कहाँ होगी? इस भूदान-यज्ञ में छोटे बड़े सबको अपनी आहुति अर्पण करनी चाहिए। अमीर दान देते हैं लेकिन गरीब यज्ञ करते हैं। उनका भूदान आता जिगर के टुकड़े का दान। ऐसी दान में से अहिंसक शक्ति पैदा होती है।

अन्तर में जप चल ही रहा था कि एक भाई उठ खड़ा हुआ "मेरी दो कट्ठे जमीन लिख लीजिये।" प्रारम्भ होते ही दान-धारा फूट निकली। धीमी रोशनी में सुधीर और रामवृक्ष के लिए दान-पत्र लिखना मुश्किल हो रहा था। कुल दान दस बारह एकड़ से अधिक नहीं था लेकिन ऐसा एक भी भूमिवान् न था जिसने दान न दिया हो। उनमें से किसी के पास पाँच बीघे से अधिक जमीन नहीं थी। फिर भी सौ फी सदी दान मिला था। रामवृक्ष ने नारे लगाये भूमिदान यज्ञ बच्चे चिल्लाये 'सफल करेंगे'। बच्चों को गीत और नारे सिखाना रामवृक्ष का काम था। दिनभर वह बच्चों के साथ रहता था। इसलिए हमारी हर सभा सफल होती थी।

'हमारे गाँव में बिना जमीन
कोई न रहेगा कोई न होगा

बच्चा के साथ बड़े भी चिल्लाने लगे
'हमारे गाँव में दुःखी गरीब'
'कोई न रहेगा कोई न रहेगा।
कड़ाके की सर्दी में कोठीले मारे भगाने से कुछ गर्मी आयी।

उस दिन हम एक गरीब किसान के घर ठहरे थे। उसके पास सिर्फ तीन एकड़ जमीन थी जिसका छठा हिस्सा उसने दान किया। परिवार छोटा न था इसलिए उसे राजा साहब की जमीन पर मजदूरी भी करनी पड़ती थी। उसकी झोपड़ी में एक ही कमरा था और एक बरामदा। व जिस कमरे में खाना बनाते थे उसीमें खाते थे और उसीमें सोते थे। कमरे में चारों ओर धुआँ फैला था। वहाँ पर बैठना भी मुश्किल हो रहा था। रात साढ़े ग्यारह बजे भोजन आरम्भ हुआ। मैं खाना नहीं खाना चाहती थी। लेकिन गृहिणी के प्यारभरे शब्द सुनकर मैं इनकार न कर सकी। जब थाली सामने आयी तो देखा—खीर पूरी सब्जी अचार। अतिथियों के स्वागत में उसने कोई कमी न रखी थी। खीर मुझे नहीं भाती थी लेकिन बोधगया में खीर खाने में अद्भुत अनुभूति थी। कहा जाता है कि बुद्ध भगवान् ने बुद्धत्व-प्राप्ति के बाद सुजाता की दी हुई खीर ही खायी थी। कालिदास ने जिसे 'भावोत्पूर्ण जननान्तरसौहृदानि' कहा था उसीका मैंने अनुभव किया। मेरे अपरिचित पूर्वजों के सजल नयनों से मुझ पर अश्रु-वर्षा हो रही थी।

निद्रादेवी की शरण में जाते समय अन्तर में अनहद नाद गूँज रहा था अभिनाम अभिनाम। भोर होने पर भी वही नाद सुनाई दे रहा था। गृहिणी ने हमारे लिए पूरा नाश्ता बनाया। वह शायद सारी रात सोयी नहीं। सुबह होने तक न पढ़ना सम्भव था न लिखना। मैं बुद्ध-वचन याद करने लगी जो दादाजी ने मुझे सिखाये थे।

नाश्ता करने पर जब हम सामान लादकर चलने लगे तो दस-बीस कदम के बाद हम फिर से रुकना पड़ा। मैं जानता हूँ कि आपको जल्दी लिखना चाहिए लेकिन मेरा यही भावना है कि मेरा मन घर को अपनी पद भूमि से

पावन कीजिये। वह एक हरिजन था जिसकी बात न मानना असंभव था। सड़क छोड़कर हम उसके घर गये। वह घर नहीं झोंपड़ा था। हमारे स्वागत के लिए घर-आँगन लीप-पोतकर साफ किया था। वहाँ आरती का थाल लिये खड़ी थी। एक ने टीका करके आरती उतारी और पाँव पखारे। मुझे बहुत संकोच हो रहा था। गृहिणी ने मेरे पाँव छुए, तो मैंने उसे झट गले लगा लिया। उसके आँसुओं से मेरे पैर पुन धुल गये। घरवाले ने कल रात की सभा में अपनी एक बीघा जमीन का आधा हिस्सा दान दिया था। वहाँ पर हमें फिर से नाश्ता करना पड़ा।

सब लोहीजनों से विदा लेकर जब हम अगले पड़ाव के लिए रवाना हुए तब सूर्यनारायण सारी सृष्टि को आलोकित कर चुके थे। गाँव की सीमा आयी तब कुछ आवाज सुनाई दी। पीछे मुड़कर देखा तो एक घुड़सवार हमारी ओर बढ़ता हुआ नजर आया। प्रणाम करते हुए उसने कहा राजा साहब के मैनेजर बाबू आपसे मिलना चाहते हैं।

'हमसे ? आपने कुछ गलत समझा होगा' सुधीर ने कहा।

"नहीं नहीं। साहब आपकी ही बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विनोबाजी के साथी अपने यहाँ आये हैं उनको संदेश दे देना।" मैं आपको जानता हूँ। मैंने कल दीवार के पीछे खड़े होकर आपका भाषण सुना था।

हमें ताज्जुब हुआ यह सब क्या हो रहा है? साहब आपके लिए गाड़ी भेजनेवाले थे। लेकिन उन्हें पता चला कि आप सवारी पर नहीं चढ़ते हैं।

हमें फिर से लौटना पड़ा। संदेश लानेवाला दूसरी आवाज में सुना रहा था "कल रात की मीटिंग का पता चला साहब को। गरीबों के दान की खबर सुनकर वे बड़े नाराज हो गये। कहने लगे 'बने आगे दान देनेवाले। ये छोटे आदमी तमीज भी नहीं जानते हैं। राजा साहब से पहले से दान देते हैं। मर्यादा का कोई ख्याल ही नहीं रहा'।

"मुझे डर लगा कि अब दान देनेवालों को परेशान किया जायगा।

भी यह सोचे कि मुझसे भी कोई गरीब है जिसके लिए मुझे त्याग करना चाहिए। त्याग और बलिदान कल्याणकारी अहिंसा शक्ति का निर्माण करते हैं जिसका असर उन पर भी पड़ता है, जो शोषक या संपत्तिवान माने जाते हैं और उनका परिवर्तन हो जाता है। वे स्वेच्छा से स्वामित्व समाप्त करते हैं और नव-समाज की रचना के लिए सहयोग करते हैं। अहिंसा की इस प्रक्रिया को आज तक किसीने न जाना था न देखा था न समझा था।

दिल चाहता था कि अपने चीनी दोस्तों को यह सब सुनाऊँ। लेकिन मैं यह भी नहीं जानती थी कि मेरे दोस्तों में से कौन जीवित है और किसे 'बुर्जुआ' समझकर खत्म किया गया है। चीन से आखिरी पत्र आया था दो साल पहले और उसके बाद हांगकांग से लिन् ने लिखा था

'प्रिय चिगलिन

हमारे प्रिय चु ने जेल में आत्महत्या कर ली और मैं जान बचाने के लिए जैसे-तैसे हांगकांग पहुँचा।

मैं विश्वास न कर सकी। अभी अभी तो चु का पत्र मेरे पास पहुँचा था। कितना खुश था वह। उसने मुझे भी बड़े आग्रहपूर्वक वापस आने के लिए कहा था। हम दोनों के विचार कभी मेल नहीं खाते थे। इसीलिए उसका यह स्नेहभरा पत्र दिल को छू गया।

प्रिय बहन

छात्र-संघ की बैठकों में तुमसे सदा लड़नेवाला तुम्हारा भाई चु आज लिख रहा है। उस समय हमारे विचार भिन्न थे। आज हमारे संसार भी भिन्न हैं। क्या हम फिर से कभी निकट नहीं आ सकते हैं? मुझसे लड़ने के लिए तो यहाँ आओ।

मैं जानता हूँ कि तुम चीन वापस आना नहीं चाहती। तुम पर दुःख का पहाड़ ही टूट पड़ा है। यह बात मुझे अक्सर बेचैन कर देती है। शायद तुम विश्वास न करोगी लेकिन मैं केवल अपनी ही भावनाओं को नहीं

प्रकट कर रहा हूँ। तुम्हारे परिवार के सैकड़ों ज्ञात और अज्ञात स्नेही-जनों के हृदय की अनुभूति प्रकट कर रहा हूँ। उस घटना से सबके दिल को चोट पहुँची है। वह घटना हमारी नयी सरकार के लिए आरम्भ में ही कलंक का धब्बा बन गयी। बहन मैं साम्यवादी हूँ कट्टर साम्यवादी। चीनी क्रांति में वसंत के लिए आशा की किरण देख रहा हूँ। फिर भी मैं दुःखी हूँ तुम्हारे दुःख से दुःखी हूँ इसे कभी न भूलना।

बुरा न मानो। और एक बात कहना चाहता हूँ। आज चीन में प्रात-संचार हुआ है। चीन के जीवन का यह प्रभात-काल है उसका भविष्य उज्ज्वल और स्पष्ट है। नया चीन बनाने में हमारे लिए हर तकलीफ आसान बन गयी है। स्त्रियाँ हजारों साल की गुलामी से मुक्त होकर समाज के हर कार्य में उत्साह के साथ पुरुषों की बराबरी में काम कर रही हैं। चीन के नव-निर्माण में तुम सहयोग नहीं करोगी? अपनी सरकार साम्यवादी है फिर भी वह सौ फीसदी चीनी है। वह तुम्हारे जैसे देश प्रेमी का अवश्य स्वागत करेगी।

तुम्हारा भाई यु"

यु का पत्र कुछ और कह रहा था और लिन् का पत्र कुछ और। वहीं लिन ने अपनी मंगनी का नाम तो नहीं लिखा। यु कालेज-काल से ही साम्यवाद का प्रचारक था। वह क्या जेल जायगा और क्यों आत्महत्या करेगा? चीन के वसन्त का गुणगान करनेवाले इस बुलबुल को आत्महत्या क्यों करनी पड़ेगी लिन का पत्र और यु खराबी समाचार दे रहा था उसमें लिखा था बिर्गलिंग तुम्हारा कोई कसूर नहीं है। फिर भी यु के दुःखद अन्त का निमित्त तुम हो। निमित्त बन गयी। उसने तुम्हें सान्त्वना देने वाला यह पत्र लिखा और अपनी जान गँवाने में डाल दी। आज चीन के द्वारा बनायी गयी उन [illegible] की सूची में तुम्हारा नाम है। जिस पर तुम अभी [illegible] [illegible] [illegible] बन गयी हो। देश शान्ति-प्रापी से सम्पर्क [illegible] [illegible] माना गया है। [illegible] अपनाने का अपराध किया।

यह पत्र तुम्हारे पास पहुँच गया लेकिन उसी पत्र के कारण वु गिरफ्तार हो गया। उसने तुम्हें लिखा था कि 'यह तुम्हारे अनेक स्नेहीजनों की भावनाओं को प्रकट कर रहा है।' यह बात शक करनेवाली मानी गयी और पुलिसवालों ने उसे बार-बार पूछा कि उन अनेक स्नेहीजनों के क्या-क्या नाम हैं? तुम्हारे परिवार के स्नेहीजन सारे चीन में फैले हुए हैं। वु किस-किस का नाम बताता? उसने यह भी सोचा कि अगर वह डरकर किसीका नाम बता देगा तो नाहक दूसरों को सताया जायगा। इसीलिए खामोश रहा। उस खामोशी से पुलिसवालों का शक और बढ़ गया और उसे यंत्रणा देना आरम्भ किया। जब उससे यह सब सहा नहीं गया तब उसने आत्महत्या कर ली। जेल के अधिकारियों में से एक सज्जन तुम्हारे पपा के बड़े भक्त थे। वु को बचाना उनके लिए सम्भव न था लेकिन उन्होंने वु का आखिरी पत्र मेरे पास पहुँचा दिया। वु ने मुझे तुरन्त चीन छोड़ने की सलाह दी थी। तुम जानती हो कि मेरा परिवार मध्यमवर्गीय था। उनमें से कुछ क्रांति-द्रोही माने गये थे और उन्हें कत्ल कर दिया गया था कुछ ताइवान और हाँगकाँग भाग गये थे। मेरे लिए वहाँ पर एक ही आधार था—वु। वह आधार समाप्त होते ही मुझे वहाँ से भागना पड़ा।

"अब हाँगकाँग आने पर मैं पछता रहा हूँ। जान बचाने के लिए मैंने मातृभूमि को छोड़ दिया और अपनी आत्मा को बेच दिया। अब मैं किसलिए जी रहा हूँ? हाँगकाँग में मेरे जैसे सैकड़ों शरणार्थी आ रहे हैं। इनमें से बहुत थोड़े ऐसे हैं जिन्हें काम मिला वह मिला। मैं बेघर और बेकार। कभी कुछ काम मिला तो खा लिया नहीं तो भूखा रहा फुटपाथ पर ही रहा। इससे तो मौत अच्छी थी। और अब शायद मेरे लिए भी वही रास्ता है जो वु ने अपनाया था।

"हम चीनियों के लिए अब इस दुनिया में कोई स्थान नहीं रहा। न हम अपने देश में सम्मान के साथ जिन्दगी बसर कर सकते हैं न और कहीं बाइज्जत मर सकते हैं। चीन का अब कोई भविष्य नहीं। शायद अब

वह सदा के लिए मिट जायगा। बेबिलोनियन और असीरियन सभ्यताओं के समान चीनी सभ्यता भी काल का ग्रास बन जायगी और तेईसवीं-चौबीसवीं शताब्दी में कोई इतिहासकार उस धरती की खुदाई कर उन खण्डहरों में शु की मेरी और ऐसे ही अन्य साथियों के अस्थिपंजरों की खोज कर एक नयी घोषणा करेगा। यांगत्सी नदी के किनारे प्राचीन युग में एक सभ्यता का उदय हुआ था। वह सभ्यता कई शताब्दियों तक विकसित होती गयी और फिर एकाएक अस्त हो गयी। हमने जो अस्थिपंजर देखे वे इसी प्रदेश के निवासियों के रहे होंगे।

'कट चुके दो पंख मेरे
थक गया आहत हुआ हूँ
अनेक झंझावात और तबाही के
आघात सहते नीड़ खतरे में पड़ा है
इसी भय से करुण क्रन्दन कर रहा हूँ।

चीन से आया वह अन्तिम पत्र पढ़ना मेरे लिए असह्य था। गालिब कहता है कि 'दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना।' लेकिन मेरा दर्द हद से गुजरने पर बढ़ता ही जाता था। मेरे सारे स्नेहीजन मुझे भूल गये। न मेरे पास चीन से कोई पत्र आता है न मैं भेज सकती हूँ। मैं क्यों चाहती कि मेरे स्नेहीजन एक पत्र के लिए अपने को खतरे में डालें।

मेरा नाम सबसे भूल गया लेकिन मैं उसे कैसे भूल सकती हूँ। मुझे उस पुण्यभूमि में रहने का अवसर मिला। मेरे पूर्वज मानते थे कि जो चीनी पुण्य करेगा उसे अगला जन्म बुद्ध भूमि में मिलेगा। मैंने बहुत

आदि शब्दों की बिजली चमकती थी और अविरल वर्षा होती थी । शायद यह अंधेरा और यह वर्षा मुझे आखिर तक साथ देते लेकिन सुधीर ने नीरवता को भंग करते हुए कुछ कहा । उसके शब्दों ने मुझे अतीत से खींचकर वर्तमान की देहलीज पर आ खड़ा किया । 'आपसे कुछ कहना चाहता हूं । कहूं ?"

मैंने धीरे-से आंसू पोंछते हुए कहा 'हां-हां अवश्य कहिये ।

'मेरी पत्नी दीपा का पत्र आज दोपहर मेरे पास पहुंचा । वह अपनी ननद से मिलने के लिए बहुत उत्सुक है । बच्चों को छोड़कर इधर आना उसके लिए संभव नहीं है । चाहती है कि अमेरिका लौटने से पहले आप चार-छह दिन का समय उसके लिए अवश्य प्रदान करें और हमारी झोपड़ी को आपका चरण-स्पर्श मिले । बच्चे भी बुआ सुधाजी का इन्तजार कर रहे हैं । दीपा ने आपके लिए भी पत्र भेजा है ।

मैंने दीपा को कभी देखा तक नहीं था । मुझे यह भी मालूम नहीं था कि उसके कितने बच्चे हैं । फिर भी वह मेरी राह देख रही है और उसके बच्चे भी । उसने मेरे पास पत्र भेजा और अपने घर आने का प्यार भरा निमन्त्रण भेजा । मेरे पास मेरे देश से कोई पत्र नहीं आता है क्या उसका पत्र इस दर्द की दवा बनकर आया था ?

'आयेंगी न आप हमारे घर ?"

'हां जरूर आऊंगी । मैं बम्बई होकर अमेरिका जा रही हूं । आपका आश्रम बम्बई के पास ही होगा न ?'

'नहीं वहां से काफी दूर सघन पहाड़ों की गोद में है हमारा आश्रम । रेल बैलगाड़ी मोटर आदि वाहनों का उपयोग करने पर अन्त में पदयात्रा करनी पड़ेगी तब कहीं आप हमारे यहां पहुंचेंगी । आपको बहुत तकलीफ होगी ।"

'तकलीफ की कोई बात नहीं । पैदल चलने की अब मुझे आदत ही हो गयी है । समय रहा तो मैं अवश्य वहां आऊंगी । और इस बार संभव न हुआ तो अगली बार भारत आने पर अवश्य आऊंगी ।"

'यह आपका ही घर है। आप कभी भी यहाँ आ सकती हैं। लेकिन दीपा से मिले बगैर आप भारत छोड़ नहीं सकेंगी। वह बम्बई चली आयगी और आपको लिवा लायेगी।'

सुधीर से मैंने वादा तो कर लिया लेकिन उसको मैं पूरा न कर सकी। मैंने किसी से भी वादा किया था कि इस भारत-यात्रा का अन्तिम सप्ताह उसके लिए है। लेकिन उसे भी पूरा करना संभव न हुआ। बम्बई पहुँचते ही अमेरिका के मित्रों का पत्र मिला 'प्रो. केली को दिल का दौरा आ गया है। तुरन्त चली आओ। हवाई जहाज का किराया भी भेजा गया है।' मेरे दोस्त जानते थे कि मेरे पास रुपया नहीं है। भारत-यात्रा में बचा-खुचा सब कुछ समाप्त हो गया। उन सबने थोड़ा-थोड़ा पैसा बचाकर मेरे लिए भेजा था। दुःख से पत्थर बना हुआ मेरा दिल पिघल गया। दुनिया में इतने सारे स्नेहीजन मेरे लिए सोचते हैं और फिर भी मैं मानती हूँ कि मैं एकाकी हूँ, निराधार हूँ, निष्कासित हूँ। मैं कितनी कृतघ्न स्वार्थी हूँ!

दीपा बम्बई आयी थी मुझे साथ ले जाने के लिए। मैंने जब उससे कहा कि मुझे अपने कार्यक्रम में परिवर्तन करना पड़ा है इसलिए मैं उसके साथ न आ सकूँगी तो उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में उदासी छा गयी। निराश होकर उसने फिर से पूछा 'नहीं आयेंगी आप मेरे साथ? बच्चों को कितनी निराशा होगी और 'वे' क्या कहेंगे?'

उसका हाथ पकड़कर मैंने क्षमा चाही 'मैं मजबूर हूँ भाभी। मेरा मन करता था कि तुम्हारे साथ चलूँ।' उसका समाधान नहीं हुआ। उसके कंधे पर हाथ रखकर मैंने फिर से कहा 'इन्सान चाहता कुछ है और भगवान करता कुछ और है। मुझे कितना दुःख हो रहा है कैसे बताऊँ? अगली यात्रा में अवश्य आऊँगी।' दीपा ने आँसू पोंछे। 'ऐसी बात नहीं' कहा। 'यह आपका ही घर है जब आइये। लेकिन अमेरिका जाने पर आप हम गरीब देश की गरीब भाभी को भूल जायेंगी।'

'मेरा देश भी भारत जैसा ही गरीब है।' मेरे मुँह से निकल गया

और फिर मुझे भान हुआ। तुरन्त मैंने और कहा 'मैं मानती हूँ कि भारत मेरा देश है वह गरीब है फिर भी मेरा है। चार छह महीनों के बाद मैं यहाँ वापस आ जाऊँगी।

'सच ? आयेंगी ?' वीपा की आँखों में बदली छायी हुई थी जिसमें सहसा बिजली चमकी।

उसकी हिरन जैसी आकर्षक बड़ी-बड़ी काली आँखें मुझे बहुत अच्छी लगी। मैं समझ नहीं पाती थी कि इन भारतीयों को हमारे गोरे रंग का इतना आकर्षण क्यों मालूम होता है और वे अपने को काले कुरूप क्यों समझते हैं ? पश्चिमवासियों के गोरे रंग में उग्रता है भारतीयों की श्यामल कांति में सौम्यता है सुन्दरता है। लेकिन मेरी आँखों को सबसे प्रिय थी सुवर्णचंपक की कलिका-सी चीनी रमणी की कोमल कांति। बाल अरुण की किरणों जैसे हलके पीले रंगवाले चेहरे चपटी नाक और तारिकाओं जैसी चमकनेवाली छोटी-छोटी बारीक आँखें !

मानव को सबसे प्रिय है अपनी प्रतिमा। भगवान् को बनानेवाला इनसान भगवान की मूर्ति में अपनी ही प्रतिमा देखना चाहता है। मैंने बचपन से चीनी शिल्पियों के द्वारा बनायी गयी चपटी नाकवाली बुद्धदेव की मूर्ति देखी थी। इसीलिए मुझे बोधगया के मंदिर की सुन्दर प्रतिमा की ऊँची नाक अच्छी नहीं लगी। मैंने सोचा कि बुद्धदेव की नाक हिमालय जैसी ऊँची होती तो उनका विचार हिमालय को कैसे लाँघ पाता ? हिमालय जैसी नाक दोनों आँखों को भारत चीन जैसे दो पड़ोसियों के समान एक-दूसरे से दूर रखती है। दोनों आँखों के बीच नाक की दीवार न हो तो चेहरा मंगोलों के प्रवाह के जैसा आकर्षक लगता है। बड़ी विचित्र बात है कि हमारी दोनों आँखें सारी दुनिया को देख लेती हैं लेकिन एक-दूसरे को नहीं देख पातीं।

वीपा मुझे बड़ी सुन्दर लगी यद्यपि उसकी नाक पठान जैसी थी। उसको निहारते हुए मैंने कहा "तुम कितनी सुन्दर हो ?" वह खिल

खिलाकर हँस पड़ी 'आपकी आँखें खराब तो नहीं हुईं? चपटी नाकवाले इस चेहरे को आज तक किसीने सुन्दर नहीं कहा था।

तुम्हारी नाक ही तो मुझे अच्छी लगी। भारतीयों के चेहरे बड़े सुन्दर होते हैं सिवा उस नाक के जो हिमालय जैसी ऊँची होती है।

दीपा हँस रही थी 'मैंने सुना था कि विदेशियों को विचित्र चीजें पसन्द आती हैं।

तुम्हारे बच्चे भी बड़े प्यारे होंगे?

'प्यारे नहीं ऐसी ही चपटी नाकवाले हैं। सबसे छोटे प्रभात की नाक ना दिखाई ही नहीं देती। पीहर में सब उसे 'मँच काई लैक' कहते हैं।

दीपा के साथ मैंने उसके बच्चों के लिए मिठाई भेजी। वह क्या जाने कि मैंने प्रभात के लिए अधिक मिठाई क्यों भेजी?

चीन भारत दोनों जमाने से मिल रहे हैं और उनकी मित्रता बढ़ रही है। तो फिर मुझे यह बताने में क्यों झिझकना चाहिए कि मैं चीनी हूँ। मेरी पहली यात्रा में भारत में चारों ओर चीन की तारीफ चल रही थी। हर शहर में सुनाई देता था कि लाल चीन ने दो-तीन साल में अद्भुत प्रगति की है। चीन ने भूमि-समस्या हल की स्त्रियों को आजाद किया बिरमना समाप्त की भ्रष्टाचार और आतंक मिटाया। चीनी जनता में उत्साह और आनन्द की लहर दौड़ उठी है। लेकिन मुझे यह पता नहीं था कि सुधीर नन्दगामन् जैसे भूदान कार्यकर्ता भी चीनी क्रान्ति से प्रभावित है। नन्दगामन उनर की सर्दी बर्दाश्त नहीं कर पाता था। पदयात्रा म ै पानी म नहाना पड़ा और वह बीमार पड़ गया। अयवेद बाबू ने उस अपने प पर रख लिया। स्वास्थ्य सुधरने पर वह आज दोपहर से फिर हमा भाव हो गया था। नामबध ने कहा कि आज का पड़ाव अभी काफी दूर ना। आर पं ेग आर नीरव शान्ति थी। आखिर नद गायन में उस अग नारवता का भी रम करने हुए सुधीर से पूछा आ बहन म िम िराव म मगन रहना हा

दो-तीन दिनों से सुधीर तन्मयता से कुछ पढ़ रहा था। उसने बड़े जोश के साथ कहा "कमाल की किताब है यह। साम्यवादी सरकार ने चंद दिनों में जो प्रगति की है उसका बड़ा रोचक वर्णन है इस किताब में। हाँ आप अमेरिकन इसे पसन्द नहीं करेंगी। आपका देश तो लाल चीन को मान्यता तक नहीं दे रहा है। सूर्योदय के बाद भी उसने आँखें मूँद ली हैं और कहता है कि अब भी कहीं अँधेरा है।

'मैं जानती हूँ कि आप हमें कट्टर ऍटी कम्युनिस्ट समझते हैं।

सुधीर 'बड़ी अजीब बात है कि एक घटना घटने के बाद भी आप उसकी हस्ती कबूल नहीं करते हैं। आपको पसन्द हो या न हो चीन साम्यवादी बन चुका है।

मैंने कहा 'यह ठीक है कि जो चीन बन चुकी है उसका मान लिया जाय। लेकिन मैंने माना था कि भारत बने-बनाये इतिहास को मान्यता देने की अपेक्षा नया इतिहास बनाने का कार्य करेगा।

नटराजन् "यह तो हम कर ही रहे हैं। लेकिन क्या आप यह मानती हैं कि लाल चीन को मान्यता भी नहीं देनी चाहिए ?

'मान्यता अवश्य देनी चाहिए। और लाल चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ में भी स्थान मिलना चाहिए। लेकिन किसी देश की सरकार के साथ सम्बन्ध स्थापित करना एक बात है और उसके विचार को स्वीकार करना दूसरी बात।

सुधीर 'उस विचार में कुछ अच्छाई हो तो स्वीकार करने में क्या हर्ज है ?

मैं जरा क्षुब्ध हो गयी आपको साम्यवाद का विचार पसन्द है तो फिर पैदल यात्रा की तकलीफ क्यों उठा रहे हैं ? आपको न भूदान माँगना चाहिए, न बाँटना चाहिए। आप आराम से बैठेंगे तो भी साम्यवाद की 'मुक्ति-सेना' दस-पाँच साल में हिमालय लाँघकर इधर आयेगी और आपको साम्यवादी बनायेगी।"

लेकिन अब लाल साम्राज्यवाद आपसे दूर नहीं रहा। उसने हिमालय के उस पार तिब्बत में अपने पैर जमा लिये हैं।

नटराजन् : "तिब्बत चीन का ही हिस्सा है। चीनियों ने वहाँ साम्राज्य नहीं जनता का राज्य स्थापित किया है।"

मैं : 'जरा तिब्बतवासियों से पूछ लीजिये।'

सुधीर : क्या आप चाहती हैं कि तिब्बत में हमेशा रूढ़िग्रस्त दकियानूस लामा शासन-पद्धति ही चले? वहाँ पर कोई सुधार न हो?"

मैं : 'मैं यही चाहती हूँ कि तिब्बतवासी यह तय करें कि वहाँ पर क्या चले? क्रांति कभी लादी नहीं जा सकती शस्त्र के बल पर तो कदापि नहीं। तिब्बत में क्रांति तभी होगी जब तिब्बती जनता क्रांति चाहेगी। वैसे तो अंग्रेज भी कहा करते थे कि भारत पिछड़ा हुआ देश है हम उस पर राज उसीकी भलाई के लिए कर रहे हैं! क्या आप उनका यह दावा मंजूर करते? फिर आप यह क्या चाहते हैं कि तिब्बत चीन का यही दावा मंजूर करे?

सुधीर : अंग्रेज और चीनी कम्युनिस्टों में जमीन-आसमान का अंतर है। अंग्रेज साम्राज्यवादी हैं।

मैंने सहज भाव से कहा : आपने लाल साम्राज्यवाद का असली रूप निकट से नहीं देखा। मगर भगवान् चाहेगा तो तिब्बत तक पहुँची हुई लाल चीन की मुक्ति-सेना हिमालय लाँघकर इधर आयेगी और फिर आप लाल साम्राज्यवाद को जानेंगे।

उस दिन मैंने वह सारा वक्त तो दिया लेकिन बाद में अकारण बेचैनी मालूम होने लगी। आखिर मैंने मन ही मन बुद्धदेव से प्रार्थना की

जन्मभूमि (भारत) और बौद्ध भूमि (चीन) की पुरानी मैत्री युग युगों तक अमर रहे।

पाँच

●

इन्सान कई संकल्प करता है जिनमें से कुछ को भगवान् पूरा करता है लेकिन कुछ अपूर्ण ही रहते हैं। शायद इसलिए कि यदि उसकी (इन्सान) सोची हुई हर बात पूरी हो जाय तो वह भगवान् को भूल ही जायगा। भारत-यात्रा का मेरा संकल्प सरलता से पूरा हो गया। अमेरिका छोड़ते समय मैं कहा करती थी कि मैं वहाँ पर कोई अपेक्षा लेकर नहीं जा रही हूँ। लेकिन दिल के किसी कोने में कोई चाह छिपी होगी जिसे भगवान् ने ढूँढा और उसीने उसे पूरी भी कर दिया। भारतवर्ष की यात्रा के बाद जब मैं अमेरिका लौटी तब मेरे सारे साथी कहने लगे कि रिटा में बहुत परिवर्तन हो गया है।

मेरे मित्र जिम् का छोटा भाई कोरिया की लड़ाई में गोली का शिकार बना था। चौबीस साल के युवक की मृत्यु से उसके घर पर उदासी छायी हुई थी। जब मैं जिम् के माता-पिता को सांत्वना देने के ख्याल से मिलने गयी तब उसके पिताजी ने दुःख के आवेग में कहा 'रिटा तुम्हारे चीन ने मेरे बच्चे को मार डाला।' मैंने सिर झुकाकर कहा 'जी मेरा चीन अपराधी है। उसके लिए आप मुझे चाहे जो सजा दीजिये।' मेरे शब्दों से उन्हें वास्तविकता का भान हुआ। 'मैं जानता हूँ बेटा कि तुम्हारा कोई कसूर नहीं है। लेकिन इन्सान दुःख में पागल बन जाता है। मुझे क्षमा करो' 'क्षमा करो।'

मैंने कहा 'क्षमा तो मैं चाहती हूँ। मैं साम्यवादी नहीं हूँ लेकिन मेरे देश के समस्त पाप-पुण्यों के लिए मैं भी जिम्मेवार हूँ। हाँ इस लड़ाई में कई अमेरिकन युवक चीनी गोली के शिकार बने लेकिन उधर चीनी युवक भी मारे गये जिनके पिता शोक कर रहे होंगे।

उन्होंने दर्दभरी आवाज में कहा "मेरी ही तरह उधर चीनी पिता भी शोकसन्तप्त होंगे। वे भी मेरी ही तरह चाहते होंगे कि युद्ध सदा के लिए बन्द हो जाय।"

मैं बोल पड़ी "जब सारी दुनिया चाहती है कि युद्ध बन्द हो जाय तो फिर युद्ध होता क्यों है? शान्ति चाहनेवाले सारे मानव मूक हैं, शक्तिहीन हैं और युद्ध करनेवाले मुट्ठीभर राजनीतिज्ञों के हाथों में सारी सत्ता केन्द्रित हो गयी है। अगणित मानवों की यह उत्कट इच्छा जब शांति की शक्ति पैदा करेगी तभी युद्ध समाप्त होगा। सामान्य नागरिक आज अपने को शक्तिहीन महसूस करता है लेकिन उसके अन्तर में आत्म शक्ति छिपी हुई है। उस शक्ति को जगाया जाय तो युद्ध को पैदा करने वाले सत्ताधारियों, पूंजीपतियों और शस्त्रधारियों की एक न चलेगी।"

"बेटा, यह सारा ज्ञान तुमने कहाँ पर हासिल किया?"

"गांधी के भारत में।"

मैं बहुत पछता रही थी कि उस शोकाकुल पिता के सामने मैंने भाइक दर्शन की बात कही। लेकिन जिम् ने उसके लिए मुझे धन्यवाद दिया। उसने कहा "पिताजी ने अभी दिन गांधीजी की और भारतीय दर्शन की बहुत सारी किताबें मँगवायीं। वे बार-बार कहते हैं कि भगवद्गीता और गांधी की आत्मकथा पढ़ने से उन्हें शांति मिली। पिताजी का दुःख तुमने ही मिटाया। मैं बड़ा कृतज्ञ हूँ।"

जिम् ने कहा "भारत-यात्रा से तुममें बड़ा परिवर्तन हुआ है। मेरी प्रिय सहेली हेलन भी यही कह रही थी।"

मेरे जीवन के दुःखदायी दिनों में हेलन और बिली मेरे साथ थीं। शायद इसीलिए उनके प्रति मेरा विशेष स्नेह रहा होगा। हेलन और बिली में दो ध्रुवों का-सा अन्तर था। बिली को अमेरिकी जीवन पसन्द था तो स्वयं अमेरिकी होते हुए भी हेलन को भारत का आकर्षण था। 'भारत की विदेश-नीति' पर थीसिस लिखने से हेलन पर भारत का बहुत असर हुआ। जिस दिन बिली सुन्दर पिक्चर में जाने के लिए आग्रह करती

उसी दिन हेलन किसी लेक्चर का जिक्र करती । 'रिटा आज का पिक्चर तुम जरूर पसन्द करोगी । उसमें एक भी वाहियात बात नहीं है ।' जिनी मुझे एक ओर खींचती और हेलन दूसरी ओर । 'आज शाम को एक बड़े विद्वान् भाषण देंगे । विषय है राष्ट्रसंघ और विश्व-शांति' । जिनी अक्सर मुझे कहती कि 'तुम्हें न जैज बाजा पसन्द न नाचना-गाना न खाना-पीना । फिर तुम अमेरिका आयी ही क्यों ?' अमेरिकी जीवन को मैंने जिनी के द्वारा अधिक समझा था । मेरी दुनिया अलग थी । मैंने अपने विद्यापीठ के मित्रों की सहायता से 'फ्रेण्ड्स ऑफ एशिया लीग' की स्थापना की थी । एशिया और अमेरिका को निकट लाने का वह एक नम्र प्रयास था । मेरा अधिकतर समय लिखने-पढ़ने और चर्चा में बीतता । जिनी इन सबको बिल्कुल बेकार तो नहीं मानती थी लेकिन खास काम का भी नहीं मानती थी । कभी-कभी मुझे जिनी के दोस्तों के गुट में शरीक होना पड़ता तब मैं उनके साथ ताश खेलती और भी खेल खेलती लेकिन उनके साथ सिगरेट या शराब पीना मेरे लिए संभव न था । जिनी के दोस्त मानते थे कि शराब पीने से खेलने का मजा और बढ़ता है । मैं इन सबसे अछूती थी इसीलिए उन्होंने मुझे खिताब दिया था 'आधुनिक संत' । गांधीजी की किताबें पढ़ने से मेरा मांसाहार छोड़ना उनके लिए मजाक का विषय बन गया था । कभी-कभी मुझे ताने सुनने पड़ते कि 'साग-सब्जी तो जानवर खाते हैं इन्सान नहीं ।' 'हम तो मानते थे कि चीनी सब कुछ खा सकते हैं सिवा इन्सान के ।' हँसी-मजाक में जीवन बितानेवाली यह टोली मेरी बड़ी इज्जत करती है यह जब जिनी ने मुझे सुनाया तो मैंने कहा 'अब मजाक की हद हो गयी ।'

इस बार जिनी यहाँ पर नहीं थी इसलिए हेलन का ही राज था । दर्शन के साथ राजनीति भी मेरा प्रिय विषय था । हम दोनों की चर्चा घंटा तक चलती । हेलन कहती 'भारत की तटस्थता शांति और मैत्री की विदेश-नीति किसी व्यक्तिविशेष या दलविशेष की नीति नहीं है वह भारतीय प्राचीन परम्परा की परिणति है । अमेरिका के विदेश-मंत्रालय

में कोई काम लेकर भारत आने के सपने वह बराबर देखती थी। जब हसन ने मुझसे कहा "भारत-यात्रा में तुम्हारा पुनर्जन्म हुआ है तो मैं काफी देर तक उस पर सोचती रही।

प्रोफेसर केनी जो रोग-शय्या पर लेटे-लेटे यही कह रहे थे "मुझे बड़ी खुशी हो रही है कि तुममें परिवर्तन हो गया है। तुमसे मैं बड़ी-बड़ी अपेक्षाएँ रखता हूँ। भारत तुम्हें आशा की किरण दिया गया और अब तुमने बीते हुए जमाने के लिए दुःख के आँसू बहाना छोड़कर नये युग के निर्माण का कार्य शुरू किया है। मैं किन शब्दों में व्यक्त करूँ कि इससे मुझे अत्यन्त समाधान हो रहा है।

नर्स ने इशारा किया कि अधिक बोलने से उन्हें तकलीफ होगी। इसलिए मैंने उन्हें भारत-यात्रा के अनुभव सुनाना प्रारम्भ किया।

उनकी हीरक जयन्ती का समारोह हम मना नहीं सके। उनकी हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती गयी। मरने से आठ दिन पहले उन्होंने सब छात्रों को अपने पास बुलाया और आखिरी उपदेश दिया

"विज्ञान भौतिक दूरी को समाप्त कर रहा है लेकिन मानसिक दूरी कम करने की कला विज्ञान के पास नहीं है। भारत-चीन जैसे प्राचीन देश ही आपको यह कला सिखायेंगे। ऐसा कभी न कहना कि एशिया पिछड़ा हुआ है। आपके पास विज्ञान है तो उनके पास दर्शन है। दोनों में लेन-देन होना चाहिए। सौभाग्य की बात है कि अपने विद्यापीठ में एशिया-अफ्रीका के छात्र आ गये हैं। वे सारे मिल-जुलकर प्रेम से रहना सीखेंगे तो जगत् को भी प्रेम से एक बनायेंगे। हमारी रिटा अभी भारत-यात्रा कर आयी है। उसने वहाँ पर बहुत कुछ सीखा है। उससे वह ज्ञान लीजिये जो उसके पास है। एक-दूसरे के विचार समझने की कोशिश करेंगे और सारे जगत् को स्नेह-सूत्र से जोड़ने का काम करेंगे तो मैं मानूँगा कि मेरे छात्रों ने मेरे लिए सब कुछ किया।

उनकी ममतापूर्ण आँखों की प्रतिमा हम सबकी आँखों में दिखाई दे रही थी। बड़ी-बड़ी वर्षा भी प्रारम्भ हो गयी। आलोचनाओं और आम

काम के लिए अपना सारा जीवन समर्पित करनेवाले एक तपस्वी हमसे बिदा ले रहे थे। उसी दिन उन्होंने मुझसे कहा "मैं जानता हूँ कि तुम्हें डिग्री की कोई चाह नहीं है। फिर भी मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा थीसिस का काम पूरा हो जाय।" उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार मुझे थीसिस के लिए वहीं पर रहना पड़ा। भारतीय स्नेहीजनों से मैंने कहा था कि मैं चार-छह महीने में वापस आ जाऊँगी। लेकिन मैं पूरे ढाई साल के बाद भारत आ सकी।

उस समय पढ़ाई में मेरा दिल नहीं लगता था। बचपन में मैं पढ़ने में इतनी एकाग्र हो जाती थी कि ममी पूछती "चिन तुम क्या कर रही हो? पढ़ाई या ध्यान?" पपा की लाइब्रेरी में सैकड़ों किताबें थीं। शीशेवाली आलमारी में रखी हुई किताबों को देखकर मेरा मन नाच उठता था। दिल कहता था कि सारी किताबों को पढ़ डालूँ। जब से मेरा वर्णमाला से परिचय हुआ तभी से उन किताबों के नाम पढ़ती रही। और कुछ साल बाद जब मैंने अंग्रेजी की किताबों को पढ़ना शुरू किया तो एक-एक पन्ना पढ़ने में मुझे पचासों बार डिक्शनरी देखनी पड़ती। शायद बारह साल की थी तब मैंने सारा चीनी कथा-साहित्य पढ़ डाला। क्या समझ पायी थी भगवान् जाने! पपा से मिलने लेखक प्रोफेसर, नेता आदि कई लोग आया करते। उनकी चर्चाओं में जिन किताबों का जिक्र आता उनको ढूँढकर मैं जैसे-तैसे पढ़ लेती। चीन के चोटी के साहित्यिकों में पपा का स्थान था। जब मैंने अमेरिका में कॉलेज में प्रवेश किया तो पहले ही दिन हमारे प्रोफेसर ने सबसे कहा "खुशी की बात है कि चीन के एक महान् विचारक की कन्या हमारे कॉलेज में भर्ती हुई है। उससे आप चीन की सारी जानकारी ले लीजिये और चीन-अमेरिका की मैत्री बढ़ाइये।"

चीन के उज्ज्वल इतिहास और महान् भविष्य का जो चित्र पपा खींचा करते थे उसने मेरे जैसे कई बाल-मनों को प्रभावित किया था। घर पर अक्सर चर्चा चलती जिसमें पपा कहते थे कि चीन पर आक्रमण कर

विजय प्राप्त करनेवाले सब आक्रामकों को चीनी सभ्यता ने हजम कर लिया। आक्रामक चंद दिनों में ही चीनी बन गये और यहाँ के सामाजिक जीवन में घुल-मिल गये। इस पर कोई कहता 'अब वे दिन लद चुके हैं। हमें पश्चिम के प्रजातांत्रिक ढाँचे को अपनाना होगा। इस विज्ञान युग में हमारी प्राचीन सभ्यता नहीं टिक सकेगी। पश्चिम से स्वतंत्रता समता बंधुता जैसे विचार आयेंगे तो अब चीनी युवक पहले की तरह माता-पिता की बात नहीं मानेंगे स्त्रियाँ गुलामी पसन्द नहीं करेंगी।

पक्ष 'स्त्री-पुरुषों के समान अधिकार व्यक्तिगत स्वतन्त्रता आदि को हमें अवश्य स्वीकार करना चाहिए। स्त्रियों की गुलामी व्यक्ति स्वातन्त्र्य का अभाव आदि पर प्रहार करने से चीनी सभ्यता निखर उठेगी।

पक्ष के दूसरे मित्र कहते नहीं-नहीं इससे तो चीनी सभ्यता मिट जायगी। कन्फ्यूशियस की दी हुई समाज-व्यवस्था की बुनियाद ही सम्मिलित परिवार है जिसमें बड़े-बूढ़ों की सत्ता चलती है। कन्फ्यूशियस लाओत्से और बुद्धदेव के सारे विचारों को अपनाये बिना हम विकास नहीं कर सकेंगे।

पक्ष "विज्ञान और साम्यवाद उन सभ्यताओं पर प्रहार कर सका जिनकी जड़ें गहराई तक नहीं गयी थीं। लेकिन अपने समस्त विजेताओं पर विजय पानेवाली हमारी सभ्यता विज्ञान और साम्यवाद पर भी अपना रंग चढ़ायेगी। कन्फ्यूशियस के कुछ विचार छोड़ने लायक हैं लेकिन उनकी समाज-व्यवस्था में कई ऐसे तत्त्व हैं जो अमर हैं। परिवार सभ्यता की जड़ है। परिवारों की रचना में सुधार कीजिये लेकिन कोई विचार चीनी परिवारों पर प्रहार नहीं कर सकेगा और इसीलिए चीनी सभ्यता को भी नहीं उखाड़ सकेगा। लाओत्से ने हमें जीवन का मार्ग बताया। बुद्ध भगवान् पैदा हुए भारत में पर अमर हुए चीन में। उनकी महिमा और शान्ति हमारे रग रग में समायी हुई है।

"यह शान्ति अन्याय और शासन पर आधारित है—पक्ष उन्हें समझाते 'हमारा सामाजिक जीवन शोषण पर नहीं सद्भाव पर

आधारित है। दूसरों को जीने का अवसर देते हुए जीना हमारी जीवन कला की विशेषता है।"

पपा के कुछ मित्र मानते थे कि चीन को यूरोप जैसा बनना होगा तो दूसरे कुछ मित्र मानते थे कि रूस जैसा बनाना होगा। पपा अकेले, थे जो कहते थे कि दोनों के पास जो लेने लायक होगा वह चीन अवश्य लेगा लेकिन चीन चीन ही रहेगा।" पपा के विचार की हार इसलिए नहीं हुई कि वे अकेले थे बल्कि इसलिए हुई कि उनकी प्रिय चीनी सभ्यता में वह ताकत नहीं थी जिससे वह चीन के सामने खड़ी विकराल समस्याओं को हल कर सके। मैं जानती थी कि राष्ट्र के इतिहास में दस-बीस साल का कोई हिसाब नहीं रहता। लेकिन उस हार के कारण मैं दुखी हुई।

मिमी के घर पर एक दफा एक विचित्र हैटवाले सज्जन आये थे। मिमी ने कहा कि उस हैट का नाम है, पगड़ी। वे सज्जन मिमी की माँ के कोई दूर के रिश्तेदार थे। मिमी की माँ का गुजराती से शादी करना उनकी निगाहों में बहुत बड़ा अपराध था। इसलिए कई सालों से वे मिमी के घर नहीं आते थे। मिमी ने कहा कि वे एक बड़े विद्वान् हैं।

वे सज्जन मिमी की माँ को सुना रहे थे "*हमारी सभ्यता सबसे ऊँची* है, क्योंकि हमारी प्रार्थना है—'सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु' हमारी दृष्टि है—'वसुधैव कुटुम्बकम्' और हमारी आकांक्षा है—'अहं ब्रह्मास्मि'।"

मेरा मन कह रहा था कि अगर आपके इस दर्शन में भूमि-समस्या को हल करने की ताकत नहीं है, गरीबी और विषमता को मिटाने की योजना नहीं है युद्धग्रस्त जगत् को शांति की राह दिखाने की क्षमता नहीं है तो आपका सारा दर्शन बालू की भीत की तरह बह जायगा।

मैं खामोश होकर सुन रही थी। मिमी की माँ ने कहा: "खाली दर्शन से क्या होगा? उधर अमेरिका अणु के गर्भ में छिपी हुई शक्ति को इस्तेमाल कर रहा है और हमारे पास धन-शक्ति के अलावा और कोई ताकत नहीं तो हम कैसे टिक पायेंगे?

वे सज्जन सारे शास्त्र जानते थे। उन्होंने तुरन्त कहा 'पश्चिम के मनुवैज्ञानिक अभी तक सृष्टि की उत्पत्ति की पहेली को नहीं समझ पाये हैं लेकिन हमारे नासदीय सूक्त में जो कि हजारों साल पहले लिखा गया था—उस पहेली को हल किया गया है। उसमें कहा है 'सृष्टि के आरम्भ में न दिन था न रात। वह एकमात्र तत्त्व स्पंदन कर रहा था।

मुझे लाओत्से के वचन याद आये। लाओत्से ने कहा है 'वह अनामिक तत्त्व स्वर्ग और पृथ्वी की जड़ है।' 'ताओ सर्वव्यापी है, उसका पैदा किया हुआ विश्व विनाशी है, लेकिन वह अविनाशी है।' 'मैं नहीं जानता कि वह किसका पुत्र है, वह ईश्वर से भी अधिक पुरातन है।

मैंने सुना था कि लाओत्से जिसे 'ताओ' कहता है, उसीको वेदान्ती 'ब्रह्म' कहते हैं। वेदों में 'तायन' शब्द है। तायन और ताओ एक ही धातु के दो भिन्न-भिन्न रूप हैं।

वे सज्जन कह रहे थे 'गीता के बताये हुए निष्काम कर्मयोग के मार्ग को आज तक किसीने नहीं अपनाया है। कर्म का फल छोड़नेवाले को अनन्त पद प्राप्त होता है। मानव जब यह जानेगा तब उसे शांति का पथ मालूम हो जायगा।

मुझे फिर से याद आया लाओत्से। "ज्ञानी फल की अपेक्षा नहीं करता है। इसीलिए उसके फल को कोई छीन नहीं सकता है। कृति के बिना (निष्काम) कर्म करो तो सारे जगत् में शांति हो जायगी।

वे सज्जन और बोले "पश्चिमवाले समझते हैं कि सारा ज्ञान हमारे पास है, लेकिन वास्तव में वे कुछ नहीं जानते। केनोपनिषद् में कहा है

> 'यस्यामतम् तस्य मतम्। मतम् यस्य न वेद सः
> अविज्ञातम् विजानताम् विज्ञातम् अविजानताम्'।"

वे सज्जन हिन्दू-दर्शन को बता रहे थे और मेरे मन में लाओत्से के 'ताओ तेह किंग' के पन्ने एक के बाद एक उमड़ रहे थे। "जो ताओ को

जानते हैं, वे पंडित नहीं होते । जो शास्त्रों को नहीं जानते वे पंडित होते हैं ।"
वे सज्जन कहते जा रहे थे लेकिन मेरा ध्यान दूसरी ओर था । आखिर में जब उन्होंने कहा भारत की श्रेष्ठ सभ्यता कभी हार नहीं जायेगी ? तब मैंने मन ही मन उनसे पूछा तो फिर लाओत्से की हार क्यों हुई ? जो दर्शन धर्मग्रंथ और मंदिरों तक सीमित है जीवन में नहीं है वह उसी तरह उड़ जायगा जैसे आँधी में सूखे पत्ते उड़ते हैं । सबके सुख के लिए केवल प्रार्थना करने से काम नहीं चलेगा उसके लिए यत्न करने होंगे । सारी वसुधा का एक कुटुम्ब बने इसके लिए आवश्यक है कि प्रथम जीव का परिवार बनाया जाय । मेरा गरीब पड़ोसी मेरा अपना ही रूप है उसका सुख-दुःख मेरा सुख-दुःख है । 'संपति सब रघुपति कै आही' इसलिए वह सबकी है यह मानकर स्वामित्व-विसर्जन किये बगैर अपनी ऊँची सभ्यता नहीं टिक सकेगी । इसको ये लोग कब जानेंगे ? क्या मेरे देश में यह अनहोनी घटना इसीलिए हुई कि भारतवाले यह सब समझें बूझें और जानें ।

'रात्रि की कालिमा से रँगे हुए बादल
गरजते हैं बरसते नहीं
जलता हूँ देखता हूँ मध्यम नहीं
मौन होकर बस सहन करता हूँ ।

तीन हजार साल पहले यह चीनी कवि मेरी हृदय-व्यथा कैसे जान गया था ?

अध्ययन के कारण मुझे चीनी दर्शन की गहराई में उतरना पड़ रहा था । अन्य दर्शनों के साथ बौद्ध दर्शन की तुलना कर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालने का मेरा कार्य सतत चल रहा था । लेकिन मैं उसी दर्शन को भूलती जा रही थी जिसे लिपिबद्ध कर रही थी । मैं अपने को उस कारागृह में बन्द पाती थी जिसका मैंने स्वयं निर्माण किया था । भारत यात्रा में मैंने सोचा था कि उस कारागृह की दीवारें ढह चुकी हैं—लेकिन

यहाँ आने पर मुझे पता चला कि दूसरे के कारागृह से मुक्त होना बड़ा सरल है। लेकिन अपने विचारों और भावनाओं के तंतुओं से बने हुए कारागृह से मुक्ति पाना बहुत कठिन है। मैं यह जानना चाहती हूँ कि उस कारागृह का निर्माता कौन था ? मैं या मेरी किस्मत ?

भारत में सब जगह लाल चीन की तारीफ होती थी जो मुझे बेचैन करती थी और अमेरिका में उसकी निन्दा जिससे मेरी बेचैनी और बढ़ती थी। भारत मानता था कि चीन ने वह काम किया जो भारत नहीं कर पाया इसीलिए लाल चीन के प्रति भारत में विशेष इज्जत थी। अमेरिका मानता था कि चीन ने वह काम नहीं किया जो अमेरिका चाहता था। इसलिए वह चीन को नफरत की नजरों से देखता था। दुनिया को अध्यात्म-विद्या का पाठ पढ़ानेवाला भारत चीन की ओर इसलिए आकर्षित था कि चीन ने तेजी से भौतिक प्रगति की है, और भौतिकवादी अमेरिका इसलिए दुःखी था कि चीन में प्राचीन सभ्यता मानवीय मूल्य और स्वतंत्रता नहीं रही। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' कहनेवाले भारत को गर्व था कि चीन जैसा एशियाई राष्ट्र शक्तिशाली बन रहा है और दुनिया से अलग रहने की नीति अपनानेवाले अमेरिका को इसलिए चोट पहुँची थी कि पूरब के एक प्राचीन राष्ट्र में प्रजातंत्र नहीं रहा। दैव की यह विचित्र लीला देख मुझे लगा कि चीन को न वे समझ पाते हैं जिनके मन में प्रीति है न वे जान पाते हैं जिनके मन में भीति है। आखिर कौन समझ पायेगा कि मेरा चीन क्या है ?

लेकिन ऐसा सोचकर क्या मैं भारत पर अन्याय नहीं कर रही हूँ ? लाल चीन में जमीन की मालकियत समाप्त हुई। मालिक-मजदूर के भेद मिटे समाज में अद्भुत चैतन्य का संचार हुआ सारी जनता एक विचार के आधार पर एक हो गयी इसकी ओर भारतीय विस्मित और आशा की निगाह से देखता है तो उसमें कौन-सी बुरी बात है ? लेकिन मैं चाहती हूँ कि दूसरों का गुण-गान करने की अपेक्षा भारत ऐसा काम करे जिससे दूसरे उसका गुण-गान करें।" विनोबा सतत पैदल घूमकर गाँव-गाँव जाकर कहते हैं कि "या तो हम दुनिया को आकार देंगे या दुनिया हमको

आकार देगी। सब देशों के बीच कोई दीवार नहीं रहेगी। हम अहिंसा के तरीके से भूमि-समस्या हल करेंगे तो दुनिया को आकार दे सकेंगे।"

"मैं चाहती हूँ कि सारा भारत इस पुकार को सुने। जैसे बौद्ध भिक्षु प्रेम ज्ञान और तपस्या के अस्त्र लेकर हमारे पास आये और उन्होंने हमारे दिलों को जीत लिया वैसे आज फिर से भारतीय ज्ञानी–तपस्वी हमारे पास आयें और हमें सर्वोदय की दीक्षा दें। भारतीयों को चाहिए कि वे चीन जाकर वहाँ की जनता से कहें कि 'बन्दूक और डंडे जैसे पुराने दकियानूस साधनों के द्वारा क्रांति नहीं हो सकती। इस अणु-युग में क्रांति का नया तरीका अपनाना होगा। हिंसा शत्रु को समाप्त करती है अहिंसा उसे परिवर्तित करती है।' "मैं चाहती हूँ कि गांधी के देशवाले कार्ल मार्क्स के भक्तों को सुनायें कि 'आपका सौ साल पुराना विचार आज काम नहीं देगा। आपने जगत् के समस्त मजदूरों की भलाई चाही लेकिन हम समस्त मानव ही नहीं भूतमात्र की भलाई चाहते हैं।' लेकिन भारत यह सब कह रहा है कर रहा है? इसीलिए तो मैंने भारत की सेवा करने का निश्चय किया था।

मेरे कई संकल्प थे जिनमें से अधिकांश अपूर्ण ही रहनेवाले थे। बचपन में मैं घर पर अकेली थी। शायद इसीलिए मैं कल्पना-जगत् में रहा करती थी। चीन-जापान युद्ध की प्रभावशाली घटना मेरे बाल-मन को आकार दे रही थी। उस समय जापान एक शक्तिशाली राष्ट्र था जिसके पास आधुनिकतम अस्त्रास्त्रों से सुसज्जित स्थल वायु और जल-सेना थी। चीन के पास था स्वातंत्र्य की रक्षा का संकल्प और उसके लिए सब कुछ न्योछावर करने की आकांक्षा। और अपनी इसी शक्ति से चीन जापान का मुकाबला कर रहा था। जापान ने समुद्र किनारे काफी हिस्से पर कब्जा कर लिया था। परिस्थिति अत्यन्त प्रतिकूल थी फिर भी चीन आशा करता था कि इस लड़ाई में हमारी विजय होगी और फिर चीन का सारा नक्शा बदल जायगा। मैं मानती थी कि नये चीन के

निर्माण का काम हमारी पीढ़ी को करना है। मैंने ममी से पूछा 'ममी मेरी सहेलियों के आठ-दस भाई-बहनें हैं फिर मेरे क्यों नहीं ?' ममी का जवाब मैं कभी न भूलूंगी।

उसने कहा 'चीन के सारे बच्चे तुम्हारे अपने भाई-बहन हैं। अपने त्याग और बलिदान से युद्ध में विजय प्राप्त करना हमारी पीढ़ी का काम है। लेकिन उसके बाद तुम्हारा काम है अपने सब भाई-बहनों को सुखी बनाना।

मैं मानती थी कि चीन के भविष्य के निर्माण का दायित्व मुझे उठाना होगा। मैं अपने सहेलियों से कहती कि 'हमें महान् कार्य के लिए प्रस्तुत होना होगा। अपने देश में स्वर्ग लाना है। फिर न कोई गरीब रहेगा न भूखा। सब बच्चे पढ़ेंगे और लड़कियाँ तो सबसे आगे बढ़ेंगी। अब राज्य हमारा ही होगा।

मेरी सहेलियाँ सोचती कि शायद जनरलिस्मो के बाद उनकी चिमलिंग ही देश की प्रधानमंत्री बनेगी। हमने एक बार मादाम च्यांग को चिट्ठी लिखी थी कि हम सारी छोटी लड़कियाँ अपना बलिदान करने के लिए तैयार हैं। हमारी टोली को मोरचे पर भेजा जाय। उनका जवाब आया कि मेरी ममी की सलाह से काम किया जाय। उस समय ममी महिला-संगठन की एक प्रमुख कार्यकर्त्री थी। उसने हमें छोटे-छोटे काम दिये और हम बच्चियों ने सोचा कि जापान की हार हम पर निर्भर है।

युवकों में जान फूंकने का काम पापा की एक विशेषता मानी जाती थी। उनके छात्रों ने मोरचे पर बड़ी वीरता दिखायी थी। युवक मानते थे कि उनके जैसी प्रेरणा और कोई नहीं दे सकता है। उनके कुछ वचन उस समय सारे देश में लोकप्रिय बन गये थे।

'यह युद्ध चीन-जापान का युद्ध नहीं है दो शक्तियों—सृजन और संहार—के बीच चल रहा है। जापान की विजय हुई तो सारे जगत् में संहारकारी शक्ति का ताण्डव आरम्भ होगा। स्वतन्त्रता समता प्रजातंत्र शान्ति आदि सारे जीवन-कुसुम नष्ट किये जायेंगे। चीन अपनी रक्षा के

लिए ही नहीं बल्कि सारी दुनिया की स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहा है। हम जापान की भी भलाई चाहते हैं। दुर्भाग्य से आज जापानी जनता एक दुष्ट तानाशाही की महत्त्वाकांक्षा का शिकार बन रही है। हम जापान को मुक्ति के लिए लड़ रहे हैं। हमारे बलिदान से दुनिया बचेगी।
उन्हीं दिनों जब पपा को प्रोफेसर का काम छोड़कर मंत्री बनना पड़ा तब उनके देश-विदेश के मित्रों को बड़ी खुशी हुई कि एक विचारक और साहित्यिक चीन का शिक्षामंत्री बन रहा है। लेकिन उस खुशी में पपा स्वयं शामिल न हो सके। उनका सबसे प्रिय काम था अध्ययन और अध्यापन और दूसरा खेती। चीन की समाज-व्यवस्था में प्रथम स्थान विद्वान् का है और दूसरा किसान का। चीनी जीवन-मूल्य उनके हृदय की गहराई में भी पहुँच चुके थे।

लेकिन ममी बहुत प्रसन्न थी। उसी दिन उसने मुझसे अपने दिल की बात बतायी "चिम तुम नहीं जानती कि जब मैंने तुम्हारे पपा के साथ शादी करना तय किया तब हमारे परिवार में मानो वज्रपात ही गया था। हमारे परिवार पर पश्चिमी सभ्यता का जबर्दस्त असर था और तुम्हारे पपा तो किसान के बेटे यानी मेरी माँ की नजरों में गँवार। तुम्हारे दादाजी के पास काफी जमीन थी फिर भी वे सोलहवीं शताब्दी में रहते थे। उनका पुराने ढंग का जीवन मेरे लिए सर्वथा भिन्न था। मैं समझ नहीं पाती थी कि उन्होंने तुम्हारे पपा को पढ़ाई के लिए अमेरिका कैसे भेजा? तुम्हारे दादाजी के घर पर शायद ही कोई अंग्रेजी जानता होगा। हम दोनों ने अमेरिका से ही अपने संकल्प की सूचना दी और दोनों के परिवारों में भूकम्प आ गया। मेरी माँ चाहती थी कि उसकी बेटी अमेरिका में बस जाय। वह कभी सोच भी नहीं सकती थी कि उसकी बेटी एक गँवार किसान चीनी परिवार में शादी करेगी। और उधर तुम्हारी दादीजी दुःखी थी कि आधी अमेरिकन ईसाई बहू घर में आ रही है, जो न सास श्वसुर के सामने झुकना जानती होगी न घर-गृहस्थी जानती होगी"। उस समय तुम्हारे पपा 'हिरो दम्पत्य' थे। वे कॉलेज में अंग्रेजी

बोलते तो हम सब मजाक करते कि 'ये चीनी युवक बोलते हैं चीनी और कहते हैं कि हम अंग्रेजी बोल रहे हैं। हमारे घर पर सिवा नौकरों के और किसीसे चीनी नहीं बोली जाती थी। फिर तुम्हारे पपा ईसाई भी नहीं थे बौद्ध थे। माँ ने पूरी कोशिश की कि हमारी शादी न हो।

'आज वे सारे दृश्य याद आ रहे हैं। आज मेरी माँ होती तो देखती कि उसने जिस युवक को गँवार, असंस्कृत मानकर उससे नफरत की थी वही आज इस देश का शिक्षामंत्री बन गया। अपनी बेटी का चुनाव गलत नहीं था इतना देखने के लिए तो माँ जिन्दा रहती!

ममी की बातें मैं उस समय समझ न सकी। मेरे मन में कुछ अलग विचार उठ रहे थे। मैंने ममी से कहा 'ममी तुम शादी नहीं करती तो अच्छा होता। ममी हँस पड़ी 'बस अब तुम ही बाकी थी यह कहने को।"

'ममी तुम शादी नहीं करती तो चीन के सब बच्चों की चिन्ता करती। आज तुम अकेली चिम को ही प्यार करती हो।

मुझे प्यार से सहलाते हुए ममी ने कहा 'ममी-पपा जो नहीं कर पाये वह सारा काम उनकी चिमलिंग करनेवाली है। वह किसी एक परिवार की नहीं सारे जगत् की चिन्ता करनेवाली है।

मैं ममी की बात को सदा याद रखती थी। उस समय लड़ाई खत्म हो रही थी। ममी मुझे पढ़ाई के लिए अमरिका भेजना चाहती थी। लेकिन मैंने गम्भीरता से कहा "चीन की ऐसी नाजुक हालत में मैं उसे नहीं छोड़ूँगी।"

ममी ने कहा 'अब तो चीन की विजय निश्चित है। इस लड़ाई में चीन तहस-नहस हो गया है। उसका नवनिर्माण करना है उस काम के लिए ज्ञान चाहिए केवल भावना पर्याप्त नहीं है। तुम अमेरिका जाकर ज्ञान हासिल करोगी तो वापस आकर चीन की अच्छी तरह सेवा कर सकोगी और चीन को वह सब दे सकोगी जिसकी उसे आवश्यकता है।

चीन को जिस चीज की आवश्यकता थी वही शायद मेरे पास न था। क्या इसीलिए चीन ने मुझे कभी वापस नहीं बुलाया? आखिर चीन क्या चाहता था?

●

छह

●

भारत लौटने पर मैंने सुना कि पृथ्वी की परिक्रमा करने से बड़ा पुण्य हासिल होता है। लेकिन मैंने कोई पुण्य-संचय के ख्याल से पृथ्वी की परिक्रमा नहीं की थी। अमेरिका जाते समय मैंने हवाई जहाज से अटलांटिक महासागर पार किया था और वापसी में प्रशान्त महासागर की लहरों की लीला देखती हुई लौटी थी। मैंने सबसे कहा कि आने-जाने में एक ही रास्ता अच्छा नहीं लगता है। इसीलिए मैंने दो अलग रास्ते लिये और अनायास सारी पृथ्वी की परिक्रमा हो गयी। लेकिन क्या वह पूर्ण सत्य था? वापसी में मैंने चन्द घण्टे हवाई द्वीप में बिताये थे। अमेरिकावाले मानते हैं कि 'हवाई' माने धरती का स्वर्ग। लेकिन मेरा मन क्या उस स्वर्ग की सुन्दरता का स्वाद चख सका था? टोकियो की सड़कों पर घूमते समय न मुझे लड़ाई याद आयी न जापान का विस्मयकारी पुनर्निर्माण। यद्यपि लड़ाई में जापान का बहुत नुकसान हुआ था तथापि जापानियों ने अपनी मेहनत से कुछ ही वर्षों में जापान का नवनिर्माण कर डाला था। और जापान की उस विशाल बुद्ध-मूर्ति को प्रणाम करते समय मैं क्या सोच रही थी? उस समय मेरे मन में भक्ति थी या भयंकर अशान्ति?

हमारा जहाज कलकत्ता पहुँचा तब मैंने देखा कि रामसुन्दर बाबू और सावित्री देवी मेरा स्वागत के लिए उपस्थित थे। कस्टम के झंझट से मुक्त होने में कुछ घण्टे लगे लेकिन वे इतनी देर तक इन्तजार करते रहे। उनके साथ दस पांच और भी अपरिचित लोग फूल माला लिये थे। नानाजी ने मेरा पहने पर गले में माला डाली और

कहा 'बेटी जब बहुत दिनों के बाद अपने माँ-बाप के घर लौटती है तो वे (माँ-बाप) खुशी से फूले नहीं समाते।"

कस्टम्स अफसर ने मुझसे राष्ट्रीयता के बारे में पूछा। पासपोर्ट बताते हुए मेरे मुँह से निकल पड़ा 'चायनीज'। अफसर ने देखा पासपोर्ट पर अमेरिका का नाम था। उसके मन में कुछ शक पैदा हुआ होगा। मैंने तुरन्त कहा 'मैं पैदा हुई चीन में लेकिन नागरिक हूँ अमेरिका की।' भारत में पहली बार मैंने यह बात कही थी। उसने मेरी ओर शंका की निगाहों से देखा जरूर, लेकिन मुझे रोका नहीं। शायद वह जानता होगा कि उसकी सरकार का चीन परम मित्र है या शायद उसका भारतीय मन कहता होगा कि महिला को सताना ठीक नहीं। जब मैं वहाँ से निकली तब मुझे अकारण भय-सा मालूम हुआ। वास्तव में उस समय किसी भी चीनी के लिए भारत में कोई खतरा नहीं था। 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के नारे गली-गली गुंजायी दे रहे थे। दोनों देशों में सांस्कृतिक मिशनों का आदान-प्रदान चल रहा था। चीनी मिशनवाले वापस लौटने पर भारत के बारे में क्या कहते इसकी मुझे कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन भारतीय जब चीन से लौटते तो उसके गुणगायक बनकर। चीन की तारीफ करते-करते वे कभी अघाते नहीं यह मैं जानती थी। तो फिर मेरे मन में यह भय क्यों पैदा हुआ?

फूल-मालाएँ मेरे गले में दस-बीस डाली गयीं और फिर चाचाजी ने चाची से कहा 'लड़की का मुँह मीठा करो।' चाचीजी के स्नेह की अद्भुत मिठास से पेड़े अत्यन्त मधुर बन गये। मैं खाती गयी और चाची मुझे खिलाती गयी। उनके साथ आये हुए अन्य सज्जनों के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं मिली। यहाँ परिचय कराने की कोई विधि या रिवाज ही नहीं है। हाँ! अब कुछ थोड़े शिक्षित लोगों में इसकी परम्परा शुरू हो गयी है। चाचाजी ने मेरे हाथ से सूटकेस छीनते हुए कहा "चलो अब घर चलेंगे।

मैं समझ नहीं पायी कि ये कहाँ के रहनेवाले हैं, फिर इनका घर कलकत्ते

में कहाँ से ? एक बड़ी बिल्डिंग की तीसरी मंज़िलवाले छोटे-से फ्लाट में हमने प्रवेश किया और गृहिणी ने जब चाचीजी को पुकारा 'भाभी' तब मैं जान गयी कि यह घर चाचाजी की बहन का है। बहन भाई की शकल मिलती नहीं थी। दूसरे दिन मैंने बूआजी से पूछा "चाचाजी आपसे छोटे हैं या बड़े ?" बूआजी ने कहा 'वह उम्र में छोटा है, लेकिन अक्ल से बड़ा है। पढ़-लिखकर वह ज्ञानी बन गया और मैं मूरख ही रही।

आप कितने भाई-बहन हैं ? मैंने पारम्परीय ढंग से पूछा।

बूआजी 'हम आठ हैं। मेरा छोटा भाई और रामसुन्दर साथी हैं। रामसुन्दर की माताजी हमारे पिताजी के अपने चाचा की लड़की हैं।

मैं उलझन में पड़ गयी। अमेरिका में मेरी अपनी मौसी हैं। लेकिन मैं सिर्फ दो-चार दफा उसके घर गयी थी। कभी-कभी उसका लड़का मेरे पास क्रिसमस ग्रीटिंग कार्ड भेजता है। बस यही है हमारा अपनी मौसी से सम्पर्क और भारत में ? चाचाजी कह रहे थे "यह अपना ही घर है। बूआजी को बता देना तुम क्या पसन्द करोगी ? वे बहुत बढ़िया खाना पकाती हैं।

'बताने की क्या ज़रूरत ? मैं सब जानती हूँ। आज मैंने वही बनाया है, जो-जो चीज़ें इसे पसन्द हैं—पूड़ी कचौड़ी पुलाव सब गरम-गरम तैयार है और तो उसे भाती ही नहीं इसलिए नहीं पकायी। चाचीजी ने पूरे उत्साह से कहा।

तीन साल पहले बिहार की पदयात्रा में हम तीन-चार माह साथ रहे। लेकिन इतने दिनों बाद भी मेरी पसन्द की सब चीज़ें चाचीजी को याद हैं।

जहाज़ जब हांगकांग से विदा हो रहा था तब मेरे अन्तर में यह भावना आयी थी इस जगत् में कोई अपना नहीं।" उस समय क्या मैं कृतघ्न बन गयी थी ?

मातृभूमि के दर्शन के लिए मैंने अमेरिका से लौटते समय प्रशान्त

महासागरवाला मार्ग लिया था। हॉगकांग पहुँचने पर मैंने उस सागर को अपनी आँखों में भर लिया जो चीन की भूमि को स्पर्श कर रहा था। मैं उस आकाश को देख रही थी जो चीन की भूमि पर कृपा-वृष्टि करता था। मेरे शरीर को पुलकित करनेवाली हवा चीन के विशाल आँचल से गुजरती हुई आयी थी। और मैं सब कुछ भूल गयी।

हॉगकॉंग पर आज भी अंग्रेजों की हुकूमत है जो चीन की आँखों की किरकिरी बना हुआ है। यूरोपियनों की सत्ता को समाप्त कर पूरे चीन को एक संगठित राष्ट्र बनाना पपा की पीढ़ी का सपना था। युद्ध समाप्त हुआ। जापान की हार हो गयी लेकिन हॉगकॉंग आजाद न हो सका। इतने छोटे छोटे टुकड़े हॉगकॉंग और मकाव (जो पुर्तगाल के कब्जे में था) को आजाद किये बगैर चीनी देश-भक्त चैन की साँस नहीं ले सकेंगे।

लेकिन हॉगकॉंग गुलाम था इसीलिए मैं वहाँ जा सकती थी। अगर वह भी आजाद हो जाता तो? मैं चीन की भूमि के निकट भी नहीं जा पाती। दैवगति विचित्र है। हॉगकॉंग की गुलामी से मुझे यह लाभ हुआ। बेचैन हो मैंने इधर-उधर देखा। एक आदमी पीठ पर बोझ लादे कहीं जा रहा था। उसकी झुकी हुई पीठ और लड़खड़ाते कदम बता रहे थे कि वह अभी-अभी मजदूर बना है। उसके मैले-चिथड़े कपड़े बिखरे बाल और लम्बे शरीर के बावजूद मुझे वह सामान्य मजदूर नहीं मालूम होता था। दस-पाँच कदम चलने पर उसने बोझा नीचे पटक दिया और आराम करने लगा। मैं जोर से चिल्लायी 'लिन्' ' उसने मुड़कर देखा और तेजी से दौड़कर मेरे पास आया। रंगून के बाद मैंने साड़ी पहनने का वादा था। उस समय मेरी पश्चिमी पोशाक थी इसलिए उसने मुझे तुरन्त पहचाना और आनन्द से विह्वल होकर चिल्लाया 'चिर्नलिम'।

हाँ वह लिन् ही था। हमारे छात्र-संघ का मंत्री जो चीन के एक उच्च मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुआ। छात्र-जीवन में पढ़ाई की अपेक्षा उसका ध्यान साहित्य की ओर अधिक रहा। उसका अधिकांश समय कविता और

जीता व कल्पना-लोक में ही जीता था। हम अक्सर उसका मजाक उड़ाते हुए कहते — शेक्सपियर ने कहा है कि शायर, आशिक और पागल तीनों एक जाति के हैं। आगामी हमसे के कारण उस भावुक कवि की भी राजनीति सीख ले गयी। वह छात्र-संघ का एक उत्साही कार्यकर्ता बना लेकिन राजनीतिज्ञ न बन सका। कवि ही रहा। न उसका साम्यवाद के प्रति विशेष आकर्षण था न प्रजातंत्र के प्रति। दोनों गुटवाले छात्रों से उसका अच्छा सम्पर्क था। इसीलिए वह सर्वानुमति से छात्र संघ का मंत्री बना था। जिसने कागज-कलम के अतिरिक्त कभी कोई बोझ नहीं ढोया था हमेशा चाँद-सितारे, फूलों के काव्य लोक में रहा वही लिन् आज यह बोझ क्यों ढो रहा है? "उसकी बारीक आँखों में निराशा छायी हुई थी। लिन् तुम्हारी यह क्या हालत हो गयी? ऐसा क्यों हुआ? "और तुमने मुझे कुछ भी नहीं लिखा। मेरे पास तुम्हारा एक ही पत्र आया था जिसके साथ चु का भी पत्र था। लेकिन उसके बाद न तुमने भेजा न अपना पता ही दिया। मैं तुम्हें लिखती भी कैसे

लिन् की निराशा उसके एक-एक शब्द से प्रकट हो रही थी "कोई निश्चित पता हो तब न लिखता। फुटपाथ पर रात बिताकर दिनभर मजदूरी की तलाश में सड़कों और गलियों की धूल फाँकनेवाला आदमी अपना पता क्या दे?

तुम कम-से-कम एक चिट्ठी तो लिखते

चिंगलिंग तुम क्या जानोगी कि चिट्ठी अमेरिका भेजना मेरे लिए सम्भव नहीं। दिनभर पसीना बहाने के बाद भी वहाँ पत्र भेजने लायक पैसे मुझे नहीं प्राप्त होते।

तुम्हें और कोई काम नहीं मिला?

कैसे मिले? एक काम के लिए सैकड़ों अर्जियाँ आती हैं। चीन से अब भी शरणार्थी आ ही रहे हैं। इस छोटे-से होंगकोंग में इन सबको क्या

काम मिल सकता है ? हमारे लिए दो ही रास्ते हैं चीन में गुलाम बनकर जीना या बाहर कुत्ते की मौत मरना ।

मैं बर्दाश्त न कर सकी 'नहीं-नहीं ऐसा मत कहो । मैंने भारत से एक विद्या हासिल की है, जिसके बल पर हम कहीं भी इन्सान बनकर जी सकते हैं और इन्सान की मौत मर सकते हैं ।

'अब अपने देश के लिए कोई विद्या काम की नहीं रही । समय रहते कुछ हो पाता लेकिन अब कुछ न होगा । अपनी पीढ़ी इसी तरह सड़ गलकर समाप्त हो जायगी ।

मैंने आवेश के साथ कहा "कमजोर आदमी भी आत्मशक्ति जगाकर चाहे जिस ताकत का मुकाबला कर सकता है । हर किस्म के अन्याय का मुकाबला अहिंसा से किया जा सकता है । भारत में इस शक्ति का बराबर विकास हो रहा है और उसीसे जगत् के समस्त पीड़ितों की मुक्ति का मार्ग खुल जायगा ।"

लिन् 'दूसरों के लिए खुलेगा अपने लिए नहीं ।

चीनियों का दर्द भी गुरु और दास का सहारा लेता है । लिन् एक प्राचीन लोकप्रिय संगीत का अंश गुनगुनाने लगा

> 'चारों ओर है जुल्म और भय
> आपत्तियों के प्रवाह चारों सागरों की ओर बढ़ रहे हैं
> साहस भी डर से काँप रहे हैं
> और लोकोद्धारक आक्रन्दन कर रहे हैं
> धर्मग्रन्थों को जलाया जा रहा है
> पण्डितों का जीते-जी दफन हो रहा है
> सारा ज्ञान नष्ट-भ्रष्ट हो रहा है
> धर्म-व्यवस्था विच्छिन्न हुई है
> राज्य सत्ता कल्पित हुए हैं
> और सारी परम्पराओं का अन्त हुआ है ।

मैंने फिर अपनी रुकी बातें शुरू कीं : 'मिन् ! हिरोशिमा और नागासाकी पर एटम बम गिरा तो क्या उससे सिर्फ उन्हीं शहरों का नुकसान हुआ ? अगर उसके कारण सारी दुनिया को तकलीफ हुई तो भारत में अहिंसा के अणु-विस्फोट का जो प्रयोग चल रहा है उससे दुनिया को बचाने वाली तारक शक्ति क्या नहीं पैदा होगी ?"

मिन् ने बीच में रोकते हुए कहा : 'मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि तुम भविष्य को अब भी आशाभरी निगाहों से देख रही हो। तुम्हें कितनी यातना सहनी पड़ी है। मैं सोचता था कि मेरी पीठ केवल झुकी है तुम्हारा तो मन ही मर चुका होगा।

'मानव मन बड़ा पराक्रमी होता है मिन् ! वह मृत्यु पर भी विजय पा सकता है।

मिन् : मेरा अन्दाज था कि तुमने मु का ही रास्ता अपनाया होगा। जीवन का मूल ही समाप्त हो जाय तो इन्सान फिर किसलिए जिन्दा रहेगा ?"

सचमुच सब कुछ समाप्त हो गया था। इसीलिए मैंने फिर से नया आरम्भ किया है। अब मैं नयी आशा लेकर अपने जीवन के साथ जगत् को भी आकार देने का काम कर रही हूँ।

कमाल है मैंने तो मान रखा था कि हमारे शब्दकोष में 'आशा' शब्द अब सदा के लिए मिट गया।

तुम विश्वास नहीं करोगे लेकिन मैंने देखा कि चीन की प्रगति का भारत पर बड़ा असर हुआ है। मैंने जगह-जगह सुना कि एशिया के लिए चीन ने एक नयी आशा पैदा की है और भारत के नेतागण चीन की बड़ी तारीफ किया करते हैं।

मिन् : आरम्भ में मैं भी यही मानता था। लाल सरकार की स्थापना के बाद जनता में कितनी खुशी और उत्साह था, तुमने नहीं देखा। हजारों किसान स्वेच्छा से श्रम-दान करते थे। चीन युद्ध नहीं चाहता था। साम्यवादियों ने उसे शान्ति दी। चीन अकाल नहीं चाहता था, उन्होंने सबको रोटी देने का आश्वासन दिया। चीन भ्रष्टाचार से ऊब गया था।

उन्होंने भ्रष्टाचार को समाप्त किया। बुरा मत मानो। पर तुम्हारे पपा जिस सरकार के मंत्री थे वह सरकार जनता को शान्ति न दे सकी न रोटी न अच्छा कारोबार। इसीलिए तो तुम्हारे पपा ने त्यागपत्र दिया था न? उस समय मु के जैसा मैं भी सोचता था कि च्यांग की हुकूमत अब चीन की भलाई नहीं कर पायेगी। वह हुकूमत नहीं रही। लेकिन उसके बाद जो हुकूमत आयी उसने शान्ति तो दी लेकिन जेल की। और रोटी भी दी लेकिन आधी। इस पर भी हमें सन्तोष था। लेकिन यह हुकूमत हमें इन्सान की जिन्दगी नहीं जीने देती। क्या ऐसा कोई तरीका नहीं है, जिसके जरिये अमन भी कायम रहे और स्वतंत्रता भी बनी रहे? सबको भरपेट रोटी भी मिले और मानवीय मूल्य भी कायम रहें?"

"यही तो मैं कह रही थी। भारत में जो सर्वोदय का विचार पैदा हुआ है उसमें शान्ति भी है और क्रान्ति भी। अहिंसा के तरीके से स्वामित्व विसर्जन करने पर सबको रोटी भी प्राप्त हो सकती है और व्यक्ति की स्वतंत्रता भी कायम रहती है। उसी तरीके से हमें अपने देश की समस्याओं को भी हल करने की कोशिश करनी है।"

"तुम्हें करनी है मुझे नहीं। पीठ के बोझ से मेरी समस्त भावनाएँ भावुकताएँ भी दब गयी हैं।

मैंने तय किया कि लिन् को कोई अच्छा-सा काम दिलाने के लिए पूरी कोशिश करूँगी। लेकिन मुझे विशेष कुछ करना नहीं पड़ा। दो-चार परिचित सज्जन मिले और उनकी सहायता से लिन् को एक समाचार पत्र के कार्यालय में काम मिल गया। बोझ पटककर उसने फिर से अपनी प्रिय लेखनी उठायी।

हांगकांग में मैं तीन दिन इधर उधर भटकती रही। कई परिचित व्यक्ति और रिश्तेदार मिले। हर आदमी ने अपनी करुण कहानी सुनायी और हर कहानी का अन्त इस वाक्य में हुआ "चीन की किस्मत फूटी है। अब हमारे लिए कोई भविष्य नहीं। बातचीत में उन सबकी हिम्मत

देती लेकिन भीतर से मेरी सारी शक्ति समाप्त होती जाती। मैं मानने लगी कि इस दुनिया में हमारा अपना कोई नहीं है।

बुआजी के घर में सारी कहानियाँ याद आतीं और मैं सोचती कि भारतीयों की स्नेह-वर्षा के बावजूद मैं मानूँगी कि इस जग में अपना कोई नहीं तो मैं कितनी कृतघ्न साबित होऊँगी। मेरी चीनी सभ्यता ने तो मुझे सिखाया था कि मानव-जीवन कमल-पत्र के जल-बिन्दु जैसा चपल, अस्थिर, प्रवाहमान है। इसीलिए सुख के कुछ क्षण भी बड़े मूल्यवान हैं। उनका संचय करना चाहिए।

बुआजी के छोटे-से घर में मेरे लिए कोई अलग कमरा न था। जिस कमरे में मैं लिख रही थी उसी कमरे में पड़ोस की तीन-चार बहनों के साथ बुआजी और चाचीजी बातचीत कर रही थीं। मैं चाहती थी कि उस ओर ध्यान न दूँ लेकिन वे दोनों मेरी ही तारीफ कर रही थीं। इसलिए मेरा ध्यान बार-बार उधर चला जाता।

चाचीजी सुना रही थीं — "न यह अपने देश की न धर्म की। लेकिन हमसे ज्यादा भारतीय है। पहले हम यह सोचते थे लेकिन यह कभी नहीं बदली थी। गाँव के हरिजनों के घर जाना मेरे लिए अब भी मुश्किल हो जाता है लेकिन यह बच्ची उनके घर जाती है, उनके बच्चों को नहलाती है, उनके साथ [illegible] है। आप नहीं जानतीं इसका देश स्वर्ग है स्वर्ग। लेकिन उस स्वर्ग को छोड़कर चली यहाँ तकलीफ उठाने आयी। धन्य [illegible] भाग हैं।"

[illegible] सुनकर मैं [illegible] कि मैंने कोई त्याग नहीं किया है। मैं [illegible] हूँ जिसमें मुझे आनन्द आ रहा है। किसीके लिए शराब [illegible] आनन्द [illegible] है या किसीको मंदिर जाकर माला [illegible]। भजन-कीर्तन और मेलेवालों जैसा दिखाने [illegible] हासिल होता है उसीके लिए मैं [illegible]

[illegible]

दिलाती है। मैं तो अक्सर कहती हूँ कि इतनी भारी तपस्या करने पर भगवान् उसे चाहे जो फल देगा। —चाचीजी ने कहा।

मैं कहना चाहती थी कि तपस्या करने के बाद कोई फल नहीं मिलता है, तपस्या करने में ही सारा फल है। यानी आनन्द है। आखिर मैं करती क्या हूँ? बस यही कि जरा पैरों को चलाती हूँ। हाथों से मोटी चादर घुमाती हूँ पेट को मक्खन फल अपने न देकर मोटा चावल देती हूँ और जरा देह को सर्दी धूप और वर्षा का मजा चखाती हूँ। बस इस थोड़े से में सब कुछ पाती हूँ। जीवन का सत्य देख लेती हूँ। बड़ा सस्ता सौदा है यह।

बुआजी "भाई बता रहे थे कि इनके देश में न चूल्हा जलाना पड़ता है न कुएँ का पानी खींचना पड़ता है। झट बटन दबाया और पट काम हो गया। आप ही बताइये कि कलकत्ते में हमें बिजली और पानी की सुविधा मिलती है तो क्या कलकत्ता छोड़ने का मन होगा?

बुआजी की पड़ोसिन सिर हिलाती हुई बोली कभी न होगा। मेरी ससुराल उधर गाँव में है। वहाँ पर दो दिन बिताना भी मुश्किल हो जाता है।

मैंने उस चर्चा में हिस्सा नहीं लिया। मेरा सिगरेट का नाटक चलता रहा। लेकिन मेरा मन कहता था कि 'मुझे उस देश के मुलायम गद्दे गद्दों से अच्छे-खासे कालीन चूमने से दूसरी किसी दुनिया में मेरे स्वजन ठंड से ठिठुर रहे हैं धूप में झुलस रहे हैं यह स्मृति वातानुकूलित कमरा में भी मुझे बेचैन कर देती थी। ये लोग भला इसे क्या जानें?"

'और आप तो प्राचीन गार्गी-मैत्रेयी जैसी हैं! विदेशी हैं फिर भी हिन्दी में भाषण देती हैं। सारा भारत दर्शन जानती हैं। हम संस्कृत नहीं जानते लेकिन इसे कितने सारे संस्कृत के श्लोक याद हैं? और यह भगवान् की वाणी गीता भी जानती है। विनोबाजी अक्सर इससे कहते हैं कि सात समुन्दर पार कर आयी हुई यह गोरी लड़की कितनी

सदन के साथ काम करती है। चाचीजी तारीफ के पुल बाँध रही थीं और अन्य महिलाएँ मुझे निहार रही थीं।

विनोबाजी भी नहीं जानते हैं कि मैं कोई सात समुन्दर पार करके नहीं आयी हूँ, सिर्फ हिमालय लाँघकर आयी हूँ। सद्धर्मपुंडरीक प्रज्ञा पारमिता ध्यान आदि शब्द मैंने बचपन में सुने हैं। मानव-जीवन दुःख से भरा है उसका कारण तृष्णा है। तृष्णा-त्याग से दुःख-मुक्ति होती। मध्यम मार्ग का अनुसरण करके निर्वाण-पथ पाया जाता है, यह सारा भारतीय दर्शन मेरे रग रग में समाया हुआ है। सुजाता संघमित्रा सुप्रिया आदि सभी हमारी बचपन की सहेलियाँ हैं। मैं उन्हीं की भाषा बोल रही हूँ उन्हीं के जैसा काम कर रही हूँ। इसमें कौन-सी विशेषता है?

आखिर मेरा मौन टिक न सका। चाचीजी ने कहा 'ये बहनें तुमसे बोलना चाहती हैं।' मैंने कलम रख दी।

एक युवती ने कहा 'आपके देश की महिलाओं के बारे में कुछ कहिये न'।

एक प्रौढ़ महिला ने पूछा 'क्या आपके देश में बहुएँ ससुर से बोलती हैं?'

'हाँ बोलती हैं और ससुर के साथ घूमने भी जाती हैं।' मैंने जवाब दे दिया। लेकिन मन ही मन कहा 'मेरे देश की बहुएँ ससुर के साथ नहीं घूमती हैं वे आपके जैसी ही घर की चहारदीवारी के भीतर बन्द हैं—यहाँ पहले भी। अब मैं नहीं जानती हूँ कि वे क्या करती हैं।'

प्रौढ़ स्त्री ने कहा 'हमारे देश में भी अब औरतें चाहे जो कर रही हैं। सारी परम्परा ही खत्म हो रही है।'

मैंने पूछा 'परम्परा माने क्या? औरतें पढ़-लिखकर सयानी बनेंगी तो उसमें क्या नुकसान है?'

तरुणी ने अपनी राय जाहिर की और मैंने जान लिया कि वह उस प्रौढ़ा की लड़की है बहू नहीं। 'कोई नुकसान नहीं है। जमाना बदल रहा है हम भी बदलना होगा, बढ़ना होगा।'

लमन के साथ काम करती है। चाचीजी तारीफ के पुल बांध रही थीं और अन्य महिलाएँ मुझे निहार रही थीं।

त्रिलोकाजी भी नहीं जानते हैं कि मैं कोई सात समुन्दर पार करके नहीं आयी हूँ सिर्फ हिमालय लाँघकर आयी हूँ। सद्धर्मपुंडरीक प्रज्ञा पारमिता ध्यान आदि शब्द मैंने बचपन में सुने हैं। मानव-जीवन दुःख से भरा है उसका कारण तृष्णा है। तृष्णा-त्याग से दुःख-मुक्ति होगी। अष्टांग मार्ग का अनुसरण करके निर्वाण-पद पाया जाता है, यह सारा भारतीय दर्शन मेरे रग रग में समाया हुआ है। सुजाता संघमित्रा सुप्रिया आदि सभी हमारी बचपन की सहेलियाँ हैं। मैं उन्हीं की भाषा बोल रही हूँ उन्हीं के जैसा काम कर रही हूँ। इसमें कौन-सी विशेषता है?

आखिर मेरा मौन टिक न सका। चाचीजी ने कहा 'ये बहनें तुमसे बोलना चाहती हैं। मैंने कलम रख दी।

एक युवती ने कहा आपके देश की महिलाओं के बारे में कुछ कहिये न!

एक प्रौढ़ महिला ने पूछा क्या आपके देश में बहुएँ ससुर से बोलती हैं?

हाँ बोलती हैं और ससुर के साथ घूमने भी जाती हैं। मैंने जवाब द दिया। लेकिन मन ही मन कहा 'मेरे देश की बहुएँ ससुर के साथ नहीं घूमती हैं वे आपके जैसी ही घर की चहारदीवारी के भीतर बन्द हैं—नहीं पहले थीं। अब मैं नहीं जानती हूँ कि वे क्या करती हैं।

प्रौढ़ स्त्री ने कहा हमारे देश में भी अब औरतें चाहे जो कर रही है। सारी परम्परा ही खत्म हो रही है।

मैंने पूछा परम्परा माने क्या? औरतें पढ़-लिखकर कमाती बनेंगी तो उसमें क्या नुकसान है?

मामी ने अपनी राय जाहिर की और मैंने जान लिया कि वह उस प्रौढ़ा की तरफी है वह नहीं। कोई नुकसान नहीं है। जमाना बदल रहा है हम को बदलना होगा पड़ना होगा।

मन उनसे कह रहा था — 'लड़की अकेली कैसे जायगी ?' आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के किनारे किसी पड़ाव पर जब हम विनोबाजी से मिले तब बाबाजी ने उनसे कहा — 'अब आपकी लड़की आपके पास पहुँच गयी। मेरा काम पूरा हो गया।'

मैंने सुना था कि आंध्र प्रदेश में कम्युनिस्टों का विशेष प्रभाव है। लेकिन मैंने देखा कि आंध्र और बिहार की जनता में कोई अन्तर नहीं है। आंध्र की जनता उसी तरह उत्साह और प्रेम से विनोबाजी का स्वागत करती थी, उनका विचार सुनती थी। दान-पत्रों की संख्या इधर कम जरूर थी लेकिन और सब वही था। जनता का मानस सर्वत्र एक-सा ही होता है। अहिंसक क्रांति के विचार का स्वागत आंध्र की जनता बड़े प्रेम से कर रही थी। हाँ, एक बात अलग थी। जब हमारी ट्रेन विजयवाड़ा पहुँची तब निकटवर्ती पहाड़ पर हँसिया-हथौड़े का चिह्न खुदा हुआ नजर आया। यद्यपि मैंने वहाँ पर कम्युनिस्टों का विशेष प्रभाव नहीं देखा फिर भी प्रभाव का कारण देखा।

उत्तर में बहुत विषमता है लेकिन दक्षिण में वह ज्यादा खलती है। बिहार में भी यह दृश्य दिखायी देता था कि किसी एक के पास सैकड़ों एकड़ जमीन है तो किसीके पास कुछ भी नहीं। लेकिन जीवन-स्तर में मैंने विशेष अन्तर नहीं देखा। भूमिवानों के घर काफी बड़े होते हैं, जगह जगह अनाज के ढेर पड़े हुए दीखते हैं। लेकिन मेरा यह अक्सर अनुभव रहा कि किसी अच्छे घर में प्रवेश करने पर आँगन में चारपाई पर मैली साड़ीवाली दस-पांच महिलाएँ बैठी हुई दिखायी देतीं। पास में नंगे बच्चे खेलते हुए नजर आते। मेरे सामने समस्या उपस्थित हो जाती कि इन महिलाओं में से कौन मालकिन होगी और कौन नौकरानी ? कभी कभी मैं साड़ी व गहने पहनी हुई महिला को मालकिन समझकर प्रणाम करती और अभी बातें करना शुरू करने लगती। काफी देर के बाद मैं समझ पाती कि मैंने नौकरानी को प्रणाम किया था। वहाँ पर चाहे गरीब [illegible] हो या अमीर हो, घर का भोजन मिलता [illegible] पानी में एक

नटराजन् की बातें मैं भूली नहीं थी फिर भी उस बार में मुझे अच्छा लगा। श्री रेड्डी के सुपुत्र राधाकृष्णन् अभी अभी अमेरिका से लौटे थे। उनके साथ घंटेभर बातचीत करने से मुझे अमेरिका ही जाने का आनन्द मिला। मैं अमेरिकन थी इसीलिए उस बार में मेरा विशेष सम्मान किया गया। श्री रेड्डी ने बड़ा आग्रह किया कि उनके साथ खाना खाऊँ। साथियों को छोड़कर अलग खाना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था फिर भी टेबल पर बिछायी गयी सफेद चादर, विशेष काँटे-चम्मच आदि पश्चिमी ढंग की चीजों को देखकर तबीयत खुश हो गयी।

"भारतीय भोजन आपको पसन्द नहीं होगा?" श्री रेड्डी को मैंने जवाब तो दे दिया "नहीं-नहीं मैं बहुत पसन्द करती हूँ" लेकिन जब टेबल पर पश्चिमी खाना आया तो परिचित वस्तुओं का स्वाद ही कुछ और था। तीसरे कोर्स के समय मुझसे रहा न गया और मैं बोल गयी "बढ़िया खाना है यह।" उसके बाद जो चर्चा चली उसके कारण सारा मजा किरकिरा हो गया।

श्री रेड्डी ने कहा "कम्युनिस्टों के भड़काने से इन दिनों मजदूर काम ही नहीं करते हैं। मेरे कारखाने में मजदूरों के लिए मुफ्त चिकित्सा का इन्तजाम है उनके बच्चों की चौथे दर्जे तक की पढ़ाई की व्यवस्था है। फिर भी एक मजदूर ने कहा 'हमारे बच्चे अमेरिका कहाँ जा पाते हैं। हमारा [illegible] भी नहीं किया जा रहा है।' मानो अब वे हमारी बराबरी करना चाहते हैं। गुस्ताखी की हद हो गयी।"

अमेरिका से दीक्षा लेकर आया हुआ राधाकृष्णन् पिता की बातों में हाँ में हाँ मिलाते हुए बोला "जब तक कम्युनिज्म खत्म नहीं होता है दुनिया चैन की साँस नहीं ले सकती। कम्युनिस्ट देशों में कोई स्वतंत्रता नहीं है। सरकार के खिलाफ बोलनेवालों को खत्म कर दिया जाता है। कम्युनिज्म का हर तरह से विरोध करना चाहिए।"

राधाकृष्णन ने अमेरिका जाकर श्रम-प्रतिष्ठा नहीं सीखी थी। अमेरिका हर [illegible] का भी सम्मान करता है सामाजिक क्षेत्र में समानता

है मालिक अपने नौकर से सभ्य व्यवहार करता है यह सब उसने नहीं पाया था। केवल अमेरिका के फैशन्स और कम्युनिज्म का विरोध भी पाया था। मुझे लगा कि वह भारतीय छात्रों का प्रतिनिधि है। मैंने जरा तीव्रता से कहा जहाँ पर दारिद्र्य और विषमता है वहाँ कम्युनिज्म जरूर फैलेगा।

मी रैड्डी "विनोबाजी का विचार अच्छा है कि गरीबों पर दया कीजिये। मैंने भी बीस एकड़ का दान दिया है।

मैं आप विनोबा-विचार शायद ठीक ढंग से नहीं जानते। विनोबाजी तो व्यक्तिगत स्वामित्व का विसर्जन चाहते हैं और यह भी चाहते हैं कि गरीबी और अमीरी का भेद ही मिट जाय।

राधाकृष्णन् अपना अमरिका में कोई गरीब नहीं है। मेरे एक मित्र का ड्राइवर अपनी मित्र की कार लेकर उसके घर जाता था और दिन भर उसकी गाड़ी चलाता था। शाम को वापस लौटते समय अपनी गाड़ी में जाता था।

मैंने तुरन्त कहा अगर हम चाहते हैं कि भारत से गरीबी मिट जाय तो अमीरों को चाहिए कि वे अपनी मालकियत छोड़ दें।

राधाकृष्णन् ने वही तर्क पेश किया जो शिक्षित लोग अक्सर करते हैं। 'विनोबाजी गरीबी का बँटवारा कर रहे हैं। औद्योगीकरण होगा पैदावार बढ़ेगी तो गरीबी की समस्या स्वयं ही अच्छी हो जायगी। मशीन पर देश तो अभी तक बेकारी भी नहीं से बच रहा है। ट्रैक्टर इस्तेमाल किये बिना पैदावार कैसे बढ़ेगी?

मैंने कहा अमेरिका में फी आदमी बारह एकड़ जमीन है और भारत में सिर्फ तीन एकड़। यहाँ पर आप ट्रैक्टर चलायेंगे तो बेकारी बढ़ेगी। हाँ पड़ती जमीन तोड़ने के लिए ट्रैक्टर का उपयोग किया जा सकता है।

राधाकृष्णन् बेकारी बढ़ेगी तो बेकारों को कारखानों में काम दिया जायगा।

मैं भविष्य की बात छोड़ दीजिये। अभी आज अपने देश में

बेचारों का काम न रहे ? आज क्या किया जा सकता है यह सोचिये। शायद आप छोटे उद्योगों को बढ़ाये बिना काम नहीं चलेगा। और ट्रैक्टर आप बाहर से लायेंगे तेल और पम्प सब बाहर से लायेंगे तो क्या यह गरीब देश इस भार को वहन कर सकेगा ?

रेड्डी — हमें तो ट्रैक्टर से बड़ा लाभ हुआ। पैदावार भी बढ़ी और मजदूरों की तकलीफ भी मिटी। मजदूरों पर देखरेख करना दिन-ब-दिन मुश्किल हो रहा है।

मैं — दूसरों की जमीन पर काम करने में उन्हें क्यों उत्साह मालूम होगा। उन्हें जमीन दे दीजिये तो फिर वे अपनी जमीन में पूरे दिल से काम करेंगे।

राधाकृष्णन् — इससे तो जमीन के टुकड़े हो जायेंगे। अनइकानोमिक होल्डिंग (असामकारक कृषिस्वामित्व) हो जायगा।

तो फिर सहकारी खेती कीजिये।

नहीं-नहीं उससे तो कम्युनिज्म आयेगा। व्यक्ति की स्वतन्त्रता नहीं रहेगी।

मैंने मन-ही-मन कहा — कम्युनिज्म आपकी ही करतूत के कारण आयेगा। मुझे याद नहीं कि मैंने उस पर क्या जवाब दिया लेकिन इतना याद है कि उसके बाद मेरी प्लेट में जो पुडिंग आया वह मुझे भाया नहीं।

भोजन के बाद राधाकृष्णन् मुझे अपने भवन के एक छोर पर ले गया। हमारी कोठी में सबसे अच्छा यही कमरा है। यहाँ से लेटे-लेटे सागर की शोभा दिखती है। आपका बिस्तर तैयार है थोड़ा आराम कर लीजिये।

राधाकृष्णन् चला गया और मैं लेटे-लेटे सागर की लहरों का खेल देखने लगा। भरी दुपहरी में सागर का नीला पानी सूर्य-किरणों के साथ क्रीड़ा कर रहा था। छोटी छोटी किश्तियाँ डगमगाती हुई आगे बढ़ रही थीं। किनारे पर रेत और नारियल के सीधे वृक्षों की कतार खड़ी थी। यह सुन्दर दृश्य देखकर मुझे नींद नहीं आयी। मैंने बचपन में कहानी पढ़ी थी जिसकी नायिका राजकुमारी लाल गद्दे पर सोयी थी। लेकिन

हुआ। ड्राइवर ने मुझसे कहा "मैंने सुना था कि अपने मंत्रिमंडल में केवल आपके पिताजी ही ऐसे हैं जो गरीबों के हितचिंतक हैं। अब मैंने उसे मान लिया है।

मेरी सहेली का भाई बगलवाले कमरे से भाग-भागकर बोला 'अमेरिका के पिट्ठू अब खूब समझ लें कि उनके दिन लद चुके हैं। मैंने उसे बुलवाया और उसके साथ चर्चा की। उस चर्चा में मैंने बड़ी भयंकर बातें सुनी। सरकार की फौज के कई सिपाही और अफसर 'लाल सेना' से मिले हुए हैं। अपना उल्लू सीधा करने के लिए व्यापारी न देश की चिन्ता करते हैं न समाज की। भ्रष्टाचार इतना बढ़ा हुआ है कि उसके पाप का बोझ इस सरकार को मिटा देगा। माइट क्लब में अनीति का बाजार चलता है। अधिकतर युवक दिल से 'लाल सेना' की विजय चाहते हैं। यह सारा सुनकर मेरा सिर चकराने लगा।

वापसी में ड्राइवर ने कहा "सब कहते हैं कि हम लाल सेना का स्वागत कर रहे हैं। मैं चौंक पड़ी। मैंने पूछा 'लाल सेना में लोगों का आकर्षण क्यों है?

सुना है कि वे गरीबों को जमीन देते हैं मालिक-मजदूर के भेद को समाप्त करते हैं। सारे शहर में ही नहीं गाँव-गाँव में भी लोग जानते हैं कि लाल सेना गरीबों के हित के लिए काम करती है।

मैंने कहा झूठ सफेद झूठ। लाल सेना के ये सारे झूठे वादे हैं। गरीब नाहक उससे आकर्षित हो उनके लिए अपनी बलि चढ़ा रहे हैं।

बहनजी हम गरीबों को आज ही बलि चढ़ाया जा रहा है। इससे अधिक खराब हालत क्या होगी?

मैंने हमदर्दी से पूछा मालिक अच्छा व्यवहार नहीं करते?

क्या कहूँ आपसे? ये मालिक कुछ बेहतर हैं हर माह तनख्वाह तो देते हैं। गाँव के मेरे मालिक दिन रात मुझसे काम लेते थे लेकिन तनख्वाह देते समय पीछे हटते थे। आप क्या जानेंगी हम गरीबों का दुःख? मेरे दो बच्चे लड़कपन सिर्फ इसीलिए मर गये कि मैं उनके इलाज का कोई

इन्तजाम न कर सका । मेरी पहली स्त्री को सरकारी सिपाही मेरे सामने उठा ले गये । दूसरी रोगग्रस्त होकर चल बसी । अब ये तीसरी है ।

मेरे दिल पर चोट लग चुकी थी । फिर भी मैंने कहा 'ऐसी हालत अब न रहेगी । लड़ाई के दिनों में हम सबको बहुत तकलीफ उठानी पड़ी । लेकिन अब धीरे-धीरे सब कुछ ठीक हो जायगा ।

ड्राइवर 'क्या ठीक होगा ? गाड़ी पुरानी हो गयी तो यह नयी गाड़ी लायी गयी जैसे नयी हुकूमत भी आनी चाहिए । आज की हुकूमत इतनी खराब है कि और कोई भी हुकूमत इससे बेहतर साबित होगा ।

मैं खामोश थी । उसने फिर से कहा 'नाराज तो नहीं हुई आप ? साहब से कुछ न कहियेगा । मैं आपके पैर पकड़ता हूँ । लाल मेमा के आने तक मेरी जिन्दगी साहब की कृपा पर ही निर्भर है ।

'मैं क्यों नाराज होऊँगी ? तुमने मुझे आज जीवन का एक पाठ पढ़ाया है । गाड़ी घर पहुँची तो मुझे ख्याल आया कि मामीजी ने मुझसे जल्दी आने के लिए कहा था । शाम को उनके यहाँ एक बड़ी शानदार दावत थी । मैं अमेरिका जानेवाली थी इसलिए अतिथियों के स्वागत की जिम्मेदारी मुझे दी गयी थी ।

दरवाजे के पास पन्द्रह-बीस गाड़ियाँ खड़ी थीं । मेहमान आ रहे हैं और मैं गायब हूँ । पाँच-दस मिनट में तैयार होकर मैं बाहर आयी तब भी गाड़ियों की संख्या बढ़ती ही जा रही थी । गोरे और चीनों का मिश्रित समाज इकट्ठा हो रहा था ।

'हलो रिटा माई डियर' मामीजी की कैंच पड़ोसिन मुझे बुला रही थी । उसके चारों और अंग्रेजी इत्र की खुशबू फैली हुई थी । "अब तो वह लड़की नहीं रही अच्छी युवती बन गयी है । मैंने जब तुम्हें देखा था तब तुम छोटी थी । मामाजी के एक मित्र कह रहे थे । दूसरे मित्र ने उनका साथ दिया "जब तुम बच्ची थी तो कुछ तो चीनी लगती थी लेकिन अब पूरी अमरिकन बन गयी हो ।

मैंने विनोद में कहा 'तो क्या यह कोई मेरा कसूर है कि मेरी धमनियों में आधा अमेरिकन खून है ? सब खिलखिलाकर हँस पड़े ।

'दिल जरा बड़ा तो था । सबके पास ड्रिंक्स पहुँचे हैं या नहीं ? — मामीजी का आदेश हुआ और मैं सबके पास बारी-बारी से जाने लगी । हरियाली पर कई टेबल रखे थे । बिजली की चकाचौंध आँखों पर अत्याचार कर रही थी । अमेरिकी पड़ोसिन ने मामीजी से कहा मिसेस गुप्त आपके घर आने से लगता है कि जैसे हम अपने अमेरिका में ही हैं । आपके पास तो सारे लेटेस्ट रेकार्ड्स् हैं । मामीजी ने अभिमान के साथ कहा हाँ-हाँ मेरे पास वे सब रेकार्ड्स हैं जो इस समय अमेरिका में प्रसिद्ध हैं । आप और क्या सुनना चाहती हैं ?

फ्रेंच पड़ोसिन की ओर मुड़कर उन्होंने कहा "उस टेबल के निकट फ्रेंच रेकार्ड्स बजाये जा रहे हैं । आप उधर जायेंगी तो आपको लगेगा कि आप अपने देश पहुँच गयीं ।

दूसरे टेबल के पास चार-पाँच सज्जन चर्चा कर रहे थे उनके हाथों में गिलास थे ।

'कहते हैं कि लाल सेना पीकिंग की ओर बढ़ रही है । 'पहुँची होगी । हमारी फौज उसे देखते-देखते पछाड़ देगी ।

'मतलब हमारा अमेरिका आपके साथ है इसलिए आप निश्चिन्त रह सकते हैं ।

अमेरिका होगा आपके साथ लेकिन क्या चीनी जनता भी है आपके साथ ? मेरी बात सुनकर सभी चौंक पड़े । किसीने पाइप रखकर कहा हो हो इस दिना अच्छे घर के युवकों को भी कम्युनिज्म के शैतान ने प्रभावित किया है ।

मैं किसी भी शैतान से प्रभावित नहीं हूँ । लेकिन हमें इसकी ओर ध्यान देना ही पड़ेगा कि चीनी जनता क्या चाहती है ? इस सरकार के बारे में वह क्या मानती है ?

तुम्हारे पापा से कह दो। सरकार उनकी है। हम तो भई बिजनेस वाले हैं। अपने धंधे के सिवा और कुछ नहीं जानते।

चर्चा को अधिक बढ़ाना उचित न था। मैंने उनसे आग्रहपूर्वक कहा कि "मिसेज के साथ न्याय कीजिये" और मैं आगे बढ़ी। तीसरे टेबल के पास औरतों का गुट था।

"पूरे दो सौ डालर दिये इस सेट के लिए एक पाई भी कम नहीं। बड़ी मुश्किल से मिलता है ऐसा स्टोन।"

"हमारा कुत्ता कभी बेड छोड़ता ही नहीं! एक सप्ताह भूखा जाय तब कहीं खाता है।"

"यह चीनी कुत्ता रहा है न?" सब खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

"मेरा बेटा अभी-अभी भारत से लौटा है। यह नेकलेस वहीं से लाया है। भारत की रानियों के गले में ही नेकलेस दिखायी देगा।"

प्रजातन्त्र के नाम से चीन के सम्राट् का स्थान समाप्त करने में उनकी ही गई है।

"कल पिक्चर चलना है न? सुना है कि उसकी हीरोइन चीनी शामिल है।"

मेरा सिर चकराने लगा। लेकिन सभ्यता के ख्याल से मुझे वहाँ पर बैठना पड़ा। ड्राइवर की बात याद आयी "इस राज्य से और कोई भी राज्य बेहतर होगा।"

मार्शलिंग पहुँचने पर देखा कि मम्मी-पापा भी बेचैन हैं। पापा त्यागपत्र देने का सोच रहे हैं। मम्मी उन्हें मना रही थीं "आपके जैसे सज्जन सत्ता त्याग करेंगे तो सारी सत्ता दुर्जनों के हाथ में चली जायगी।"

पापा ने याद करते हुए कहा "मैंने सत्ता को इसलिए स्वीकार किया था कि जनता की कुछ सेवा कर सकूँ। लेकिन मैं देख रहा हूँ कि मेरे साथियों में जनता की भलाई का कोई ख्याल नहीं है। अमेरिका से आये हुए हथियारों और पैसों के बल पर हम इस गृह-युद्ध में आसानी से विजय

पा लेंगे और फिर अपना भोग-विलास चलता रहेगा यही व सोचते हैं। जनरलिस्मो काफ़ी कोशिश कर रहे हैं लेकिन वे भी उचित नीति नहीं अपना रहे हैं। जब मैं कुछ कर ही नहीं पा रहा हूँ तो फिर यह मंत्रि-पद किस काम का ?

ममो 'आप नाहक निराश हो रहे हैं। हमेशा यही हालत नहीं रहनेवाली है। हमने जापान का मुकाबला किया तो क्या अब लाल सेना का मुकाबला नहीं कर सकेंगे ? जरा सब्र कीजिये। लाल सेना को हम येनान के उस पार भगा देंगे और फिर जनता की भलाई का चाहे जितना काम करते रहिये। पपा खिड़की के पास खड़े थे उनकी निराश आँखें आसमान की ओर थीं। वे धीरे-धीरे बोलने लगे 'साम्राज्यवादी जापान का मुकाबला करना आसान था। उस समय जापान बुराई का प्रतीक था और हम आजादी की रक्षा के लिए अपनी सारी शक्ति लगाकर लड़ रहे थे। लेकिन अब हमें उस ताकत का मुकाबला करना है जो जनता की भलाई का दावा करती है। लाल सेना को मुक्ति-सेना माना जाता है। *जनता लड़ाई नहीं चाहती और यह भी नहीं मानती कि इस गृह-युद्ध में* उसे किसलिए कुर्बानी करनी है।

ममी 'आप क्या कह रहे हैं ? क्या हम प्रजातंत्र के मूल्यों की रक्षा के लिए नहीं लड़ रहे हैं ?"

पपा वे मूल्य हमारे लिए हैं आम जनता के लिए नहीं। आम जनता रोटी चाहती है शान्ति चाहती है। ऐसी सरकार चाहती है जिसमें भ्रष्टाचार न हो। शायद हम उसे न रोटी दे पायेंगे न शान्ति और न भ्रष्टाचार को मिटा सकेंगे।"

'आठ साल की लम्बी लड़ाई के बाद हमने अभी-अभी राष्ट्र निर्माण का काम उठाया है। उसके लिए कुछ तो समय लगेगा।

पपा समय लगे हो लग जाय। लेकिन जनता को यह महसूस होना चाहिए कि यह सरकार हमारी भलाई चाहती है और उसके लिए

कुछ कर रहा है। हाँ और हम जनता को रोटी देंगे शान्ति देंगे भ्रष्टाचार का निर्मूलन करेंगे तो भी लाल सेना के सामने नहीं टिक पायेंगे। क्योंकि हम भी नहीं जानते कि हम किसलिए लड़ रहे हैं तो जनता क्या जानेगी?

पपा की निगाहों अभी बारीक आँखों में अनायास उदासी छायी हुई थी। मुझसे यह देखा न गया। मैंने धृष्टता कर कहा 'आप ही कहा करते थे कि मनुष्यता मन ने हमें प्रजातन्त्र राष्ट्रवाद और समता का जो विचार दिया है वही हमारा असली बल है। कन्फ्यूशियस लाओत्से और बुद्ध भगवान् की दी हुई यह सभ्यता कभी किसीके सामने हार नहीं जायेगी।

वात्सल्य भाव से मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए पपा अधिक उदास होकर बोले 'हाँ बेटा! मैंने यह सब कहा था। लेकिन आज मैं देख रहा हूँ कि लाओत्से और कन्फ्यूशियस साम्यवाद के सामने नहीं टिक पा रहे हैं। शान्ति सन्तोष करुणा आदि शब्दों का जप करने से अब काम नहीं चलेगा। उन शब्दों की शक्ति प्रकट होनी चाहिए। उधर भारत में गांधी कुछ हद तक यह काम कर रहे हैं। अगर चीन में भी कोई गांधी पैदा होते तो शायद चीनी सभ्यता टिक पाती।

स्वतन्त्र भारत के सार्वभौम संसद् के एक सदस्य की उस शानदार कोठी के सबसे सुन्दर कमरे में मखमल गद्दे पर मैं लेटी थी और सागर की लहरों के साथ लहरानेवाली खिड़कियों का नृत्य भी देख रही थी। सागर में लहरें उठती थीं और आसमान का प्यार ऊँची उठान लेकर किनारे पर आकर समाप्त हो जाती थीं। मेरे मन के सागर में भी विचारों की लहरें उठ रही थीं।

गांधीजी ने 'यंग इंडिया' पत्रिका में कहा था 'मैं इसीलिए स्वराज्य चाहता हूँ कि बिना उसके भारत के गरीबों की भलाई न हो सकेगी।

स्वराज्य मेरे लिए साध्य नहीं साधन है। इस देश के गरीबों की गरीबी मिटे और भारत सारी दुनिया की सेवा कर सके इसीलिए मैं स्वराज्य चाहता हूँ। गांधीजी का स्मरण होते ही मुलायम गद्दा काँटोंवाला बिस्तर बन गया और मुझे चुभने लगा। उस पर सोना मेरे लिए कठिन हो गया। लहरों का निष्फल खेल चल रहा था। आसमान की ओर दौड़नेवाली एक लहर सागर में लीन हो जाने के पहले मुझसे पूछ रही थी "जिस देश में गांधी पैदा हुए, क्या वह भी बचनेवाला है? ●

सात

मैं दक्षिण की यात्रा के समय सागर की ऊर्मियों का उल्लास-नृत्य बराबर देखती थी। भारतीय दार्शनिक मानव-जीवन को सागर की चंचल लहरों जैसी काव्यमय उपमा देकर यह कोशिश करते हैं कि मनुष्य का मन नश्वर जीवन के क्षणास्थायी सुखोपभोगों से दूर हट जाय। मगर कोई चीनी कवि यह सुनेगा कि मानव-जीवन उन ऊर्मियों जैसा है जो गगन की ओर दौड़ती हैं और फिर उसी सागर में लीन हो जाती हैं तो वह उन ऊर्मिमालाओं के साथ भाव-विचारों के गगन में विहार करना चाहेगा तरंगों की छप-छप में अपना स्वर मिलाने उन सप्तजीवी अमित फेन के चित्र खींचने और फेनमंडलयुक्त तरंगों को काव्य में स्थापित करने के लिए मचल उठेगा। वह सोचेगा भी नहीं कि मानव-जीवन उन ऊर्मियों जैसा क्षणस्थायी है। कन्फ्यूशियस से किसीने पूछा 'मृत्यु माने क्या?' उन्होंने मुस्कराते हुए जवाब दिया 'मैं जीवन को ही नहीं जानता तो मृत्यु को कैसे जानूं?' जीवन हमारे लिए काव्य है और मृत्यु पीड़ा। जीवन पर विभोर का रंग चढ़ाने का प्रयास तो है ही पर हम मृत्यु पर भी शिंगार का रंग चढ़ाते हैं। हमने कभी यह जानने की कोशिश नहीं की कि मृत्यु का रहस्य क्या है? क्या इसीलिए आज हम मृत्यु के शिकार बन रहे हैं?

मेरे लिए यह आश्चर्य की बात थी कि भारत का अनपढ़ किसान विनोबाजी के विचारों को कैसे ग्रहण कर पाता है? विनोबाजी बोलते हैं 'वेदों में कहा है 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'—धरती हमारी माता है और हम सब उसकी सन्तान हैं। हम भूमि के मालिक नहीं हो सकते। आप अपने आपको जमीन का मालिक मानते हैं तो क्या इस दुनिया

का त्याग करते समय अपनी जमीन साथ ले जायेंगे ? सच्चा भक्त वही है जो अपना सर्वस्व प्रभु को समर्पित करता है । नारायण की उपासना यानी नर-समुदाय में काम करनेवाले भगवान् की उपासना । यानी समाज-सेवा ।

गीता में आत्मौपम्य की बात कही है । मेरे पड़ोसियों का सुख-दुःख ही मेरा सुख-दुःख है । अपने भूमिहीन पड़ोसी के लिए भूदान देना हमारा धर्म है, ऐसा मानने से आत्मौपम्य की अनुभूति की जा सकती है । मैंने उत्तर भारत की यात्रा में देखा था कि गाँववाले न सिर्फ उस विचार को समझते हैं बल्कि उस पर अमल भी करते हैं । दक्षिण में भी देख रही थी लेकिन यह समझ नहीं पाती थी कि यह सब कैसे हो रहा है ? मेरे लिए यह एक पहेली थी कि विनोबाजी प्राचीन धर्म-ग्रन्थों के वचनों के आधार पर व्यक्तिगत मालकियत का विसर्जन, सामूहिक मालकियत की भावना, उत्पादन का समानीकरण आदि आधुनिक क्रांतिकारी कार्यक्रम कैसे चला रहे हैं । हरि की इच्छा, राम-नाम, हृदय-परिवर्तन आदि के साथ वे यह भी कहते हैं कि मेरा विचार आपको जँचा हो तो उसकी स्वीकृति रूप में भूदान दीजिये । अगर नहीं जँचा तो मत दीजिये । प्राचीन विचारों के साथ अर्वाचीन वैज्ञानिक विचार का समन्वय वे कैसे कर रहे हैं, यह भी मेरे सामने एक समस्या थी । भूदान के आँकड़ों से वे आन्दोलन की सफलता नहीं नापते । कार्यकर्ताओं की चित्तवृत्तियाँ कितनी शान्त हुईं, झगड़े आदि कितने कम हुए, दाता-आदाताओं की कितनी चित्त-शुद्धि हुई, समाज में प्रेम-भाव और सद्भाव कितना बढ़ा, इस सबसे वे सफलता को नापते हैं । यह भी देखा था लेकिन समझा नहीं था । वैर से वैर का शमन नहीं हो सकता है, निर्वैरता से ही होता है, यह बुद्ध-वचन मैंने सुना था । द्वेष का शमन सज्जनता से करो । प्रेम आत्मसंयम से विजय पाता है और रक्षा भी करता है, जैसे बाइबिल के वचन भी मैंने बार-बार पढ़े थे । इसीलिए विनोबाजी की अहिंसा को मैं समझ पाती थी ।

इसलिए मैंने सोचा कि उनसे चर्चा करके और अधिक समझने की

कोशिश करते। लेकिन एक दिन उन्होंने प्रवचन में कहा "अहिंसा का अधिष्ठान है—वेदान्त जो कहता है कि एक ही आत्मा सर्वत्र व्याप्त है। वेदान्त के आधार के बिना अहिंसा टिक नहीं सकती। कुछ क्षीण विचार होते हैं और कुछ अक्षीण। प्रतिक्रियात्मक विचार क्षीण विचार है, जैसे साम्यवाद जो पूंजीवाद की प्रतिक्रिया है। सर्वोदय का विचार एक अक्षीण विचार है, क्योंकि वह स्वयंभू है, प्रतिक्रियात्मक नहीं है। उसकी जड़ें भारत-भूमि के तत्त्वज्ञान की गहराई में जा चुकी हैं। क्षीण विचार बरसात के प्रवाह के जैसा कुछ समय तक बहुत वेग से बहता है, लेकिन फिर क्षीण हो जाता है। अक्षीण विचार उस नदी के जैसा होता है, जो गहरी होती है और सतत बहती रहती है। मैंने सुना और मुझे लगा कि कोई जटिल पहेली हल हो गयी।

हॉगकॉग में मित्रों से बातचीत करते समय मैं अनुभव कर रही थी कि जीवन की पहेली अब भी कायम है। सिंगापुर से मेरे साथ यात्रा करनेवाले उस इंडोनेशियन युवक से बात करते समय भी मैंने यही महसूस किया था। उस युवक का नाम था 'सतन्' जो भारतीय नामों से मिलता-जुलता था। मैंने सुना था कि इंडोनेशिया की सभ्यता पर भारत का विशेष प्रभाव है। सतन् उस बारे में अधिक न कह सका। इंडोनेशिया के प्राचीन ग्रंथों की जानकारी देते हुए उसने कहा "रामायण और महाभारत हमारे बड़े प्रिय ग्रंथ हैं।"

मैंने कहा "ये तो भारतीय ग्रंथ हैं।

सतन् "नहीं-नहीं इंडोनेशियन हैं। रामायण और महाभारत की कहानी भारतीयों ने हमसे जानी। राम लक्ष्मण सीता द्रौपदी भीम आदि सब इंडोनेशिया के हैं। यह सुनकर मुझे बड़ा मजा आया। हम चीनी भी तो मानते हैं कि बुद्धदेव हमारे जैसे थे। भारतीय शिल्पी बुद्ध-मूर्ति बनाते समय भूल जाते हैं कि उनकी नाक चपटी थी।

सतन् बड़ा बातूनी था लेकिन सरल प्रामाणिक और बुद्धिमान् था।

अपने देश की अधिक जानकारी देते हुए उसने कहा "हममें कुछ की आँखें रूस की ओर निहार रही हैं और कुछ की अमरिका की ओर।

मैंने सोचा अपनी ओर कोई नहीं देखता। स्वरूप को देखे और जाने बिना इन्सान कैसे आगे बढ़ सकता है?

असलम् बतलाता जा रहा था "हमारा देश बहुत पिछड़ा हुआ है। वैसे तो पूरा एशिया ही अभी बहुत पीछे है, केवल चीन को छोड़कर।

मैं: एशिया की प्राचीन सभ्यता का हमें बड़ा आकर्षण रहता है।

असलम्: अमेरिकावाले कुछ प्राचीन खंडहर देख लेते हैं, दो-एक किताबें पढ़ लेते हैं और मान लेते हैं कि एशिया की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का दर्शन हो गया, लेकिन वे क्या जानें कि एशिया में कितनी अज्ञानता, रूढ़िवादिता और गरीबी है। मेरा तो इधर रहने को दिल नहीं करता। यूरोप को देख लेने के बाद तो दोनों का अन्तर साफ-साफ मालूम होता है। मैं मानता हूँ कि औद्योगीकरण के बिना एशिया का विकास कभी नहीं होगा।

मैंने पूछा: यूरोप के औद्योगीकरण के साथ यूरोप के युद्धों को भी आप अपनायेंगे?

असलम् को हँसी आ गयी। अगर यू. एन. ओ. में भाषण करता होता तो कहता कि सारी दुनिया शान्ति चाहती है, लेकिन बात ऐसी है कि युद्ध से विकास भी होता है। दो महायुद्धों के बावजूद यूरोप कितना आगे है और हम अपनी प्राचीन सभ्यता से चिपके हुए हैं।

क्या आप मानते हैं कि यूरोप का अनुकरण करने से ही एशिया का विकास हो सकेगा?

नहीं। अगर अनुकरण ही करना है तो हमें चीन का करना चाहिए, यद्यपि हम चीन की लाल सरकार के सभी तरीके नहीं पसन्द करते। उसने चन्द गलत काम भी जरूर किये हैं, लेकिन बावजूद इसके चीन की प्रगति अद्भुत है, इसमें कोई शक नहीं।

भारत में भी मैंने यही सुना था। मेरे अन्तर में इतिहास के पन्ने

फड़फड़ा रहे थे। जिन देशों ने संस्कृति का प्रथम प्रभात देखा था उन्हीं-को देखते-देखते यूरोप का गुलाम बनना पड़ा। एशिया की प्राचीन संस्कृति पश्चिम के शस्त्र-बल और यंत्र-बल का मुकाबला नहीं कर सकी। इस घटना का एशिया के मानस पर जबर्दस्त आघात हुआ। कभी-कभी भयंकर आघात से स्मृति मिट जाती है। उसे याद नहीं रहता कि वह कौन है! एशियाई तरुण की स्मृति भी पराजय की चोट खाकर नष्ट हो गयी है। वह अपने को पिछड़ा हुआ समझ रहा है और विशेषतः यूरोप का अंधानुकरण कर रहा है। पश्चिमी पैमाने में आज चीन तेजी से अपना विकास कर रहा है। इसीलिए उसके मन में आज चीन के प्रति आकर्षण है। एशियाई राष्ट्रों की प्रथम परिषद् में गांधीजी ने कहा था "हमारे द्वार सदा खुले रहेंगे। दुनिया से हम वह सब लेंगे जो लेने योग्य है। और दुनिया को वह देंगे जो हमारे पास है। मुझे विश्वास है कि अपनी संस्कृति की ताकत से हम पश्चिमवालों के हृदय पर विजय पा सकेंगे। वह विजय ऐसी होगी जिससे पश्चिमवालों को भी खुशी होगी।" गांधीजी का यह विश्व-विजय का विचार जब भारत ही भूल रहा है तो एशिया के देश उसे क्यों न भूलेंगे।

नान् इंडोनेशिया के विदेश-विभाग में एक अफसर था। भारत-स्थित अपने देश के दूतावास में वह अपना स्थान लेने जा रहा था। उसने मुझसे अमेरिका के बारे में बहुत कुछ पूछकर जान लिया और अन्त में निराशाभरी आवाज में कहा "मैंने अभी-अभी विदेश विभाग में काम लिया है। इसलिए मेरे नसीब में एशिया के बेकार देश ही रहेंगे। दस-बीस साल काम करने के बाद फिर बुढ़ापे में मुझे यूरोप या अमेरिका के दूतावास में भेजा जायगा। मैं किसी बड़े आदमी का भाई भतीजा भी नहीं हूँ। मेरे एक साथी की पहली ही नियुक्ति लन्दन के दूतावास में हुई क्योंकि वह बड़े आदमी का रिश्तेदार है। अपनी-अपनी किस्मत है।"

नान् को बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने मेरी भारत-यात्रा का उद्देश्य जाना। उसने गांधीजी का नाम सुना था लेकिन विनोबा का नहीं।

अमेरिका के हमारे विद्यापीठ में हाल ही में एक परिसंवाद हुआ था जिसमें 'अहिंसक दर्शन' पर चर्चा हुई थी। हिन्दुस्तान से हजारों मील दूर अमेरिका के विद्यापीठ में कोरे विचारक जिनको इस देश से कोई वास्ता नहीं है विनोबाजी के कार्य का मूल्यांकन करते हैं और उसमें उन्हें आशा की किरण दिखाई देती है। और भारत के दूतावास में काम करने वाला एक एशियाई तरुण विनोबा के बारे में कुछ भी नहीं जानता। क्या हम एशियाई उसी चीज को स्वीकार करनेवाले हैं जो पश्चिम से आती है? 'मेरे पास अमेरिकन टाइम' का एक पुराना अंक था जिसके मुखपृष्ठ पर विनोबाजी का चित्र था और उसके नीचे लिखा हुआ था 'मैं प्रेम से लूटने आया हूँ।' उसी अंक में विनोबाजी के भूदान पर एक अच्छा लेख भी छपा था। मैंने लसन् को वह दिखाया। लेख पढ़ने के बाद उसने कहा 'अपने काम की ठोस व्यवस्था करने के बाद कभी विनोबा से मिलने आऊँगा। उनका पता दे दीजिये।"

आईन्स्टाईन ने जब गांधीजी के बारे में कहा कि 'आगे आनेवाली पीढ़ी विश्वास नहीं करेगी कि गांधी जैसा व्यक्ति हाड़-मांस का पुतला बनकर इस धरती पर आया था' तब हमने माना कि गांधीजी महान् थे। टाइम' ने विनोबा की तारीफ की तब हमने जाना कि विनोबा अच्छा काम कर रहे हैं। शायद इसीलिए कहा जाता है कि एशिया पिछड़ा हुआ है।

यथा जिसको प्राप्त नहीं कर सके थे लिन् जिसकी खोज न कर सका था लसन् को जिसको खोज करने की इच्छा भी नहीं हुई थी मैं जब उसको प्राप्त कर सकी तो एक अकल्पनीय आनन्द की अनुभूति हुई। इन्सान चाहता है कि स्वर्ग के सुख में और नर्क के दुःख में कोई साथी हो। धरती का यह कारण जीवन मानो ही अकेले कट जाय। लेकिन सुख-दुःख दोनों दिल में समा नहीं पाते। दिल का द्वार खोलकर बाहर निकल ही आते हैं। मेरी उस अनुभूति को मेरे उस समय के साथी सुधीर सरस मटगांवकर आदि कोई नहीं समझ पाते। इसीलिए लिखने बैठ गयी।

"प्रिय हेलन

छह साल पहले की वह उदास सन्ध्या तुम्हें याद है ? दिन बीतते जा रहे थे लेकिन घर से कोई चिट्ठी नहीं आ रही थी । अमेरिका के समाचार पत्रों से चीन की सही खबरें नहीं मिल पाती थीं । इसलिए मेरा दिल किसी चीज में नहीं लग रहा था । दिन-ब-दिन बेचैनी बढ़ती जा रही थी । आसमान में बदली की लहरें बह रही थीं और उसके साथ मेरी उदासी थी । तुमने मेरे कमरे का दरवाजा खटखटाया । तुम एक समाचार-पत्र लायी थी और तुम्हारे छलकते आँसू उस पर टपक रहे थे । मैंने वह समाचार-पत्र छीन लिया और"

हेलन उसके बाद "उसके बाद की घटनाओं को शायद तुम भूल गयी होगी । लेकिन मैं कभी नहीं भूल सकती । तुमने मेरे लिए सब कुछ किया था ।

"और उसके बाद जब मैं पहली दफा भारत के लिए रवाना हो रही थी तब सारे दोस्त सवाल पूछ-पूछकर मुझे सता रहे थे । लेकिन तुम मेरी ओर से जवाब देती जा रही थी 'भारत पहुँचने पर रिटा सब प्रश्नों के उत्तर दे देगी । तुम यह सब यों ही कह रही थी या सचमुच भविष्य का पर्दा हटाना जानती थी ।

आज मैं सबके प्रश्नों का उत्तर देनेवाली हूँ क्योंकि मैंने सब प्रश्नों का उत्तर जान लिया है ।

बिना बुनियाद का मकान नहीं टिकता है बिना अधिष्ठान के जीवन नहीं टिकता है । चीन के पास अधिष्ठानरूपी दर्शन नहीं है शायद किसी भी देश के पास नहीं है । हमारे प्रजातन्त्र के विचार की भी कोई मजबूत बुनियाद नहीं है । साम्यवाद एक समग्र जीवन-दर्शन है, जिसका एक अधिष्ठान है जिसके पास जीवन के हर पहलू को छूनेवाला समग्र विचार है । उस विचार को अमल में लाने की सुगूढ़ सुबद्ध सुनियमित पद्धति है और उसके निर्माता—कार्ल मार्क्स का आश्वासन भी है 'आपको सारे जगत् पर विजय प्राप्त करनी है । जगत् के सबसे बड़े देश पर उसका

आधिपत्य जम गया और दुर्भाग्य से यही मेरा देश था। परिणामों की भयानकता जितनी अधिक होती है, उतनी ही तीव्रता से कारणों की खोज होती है।

मैंने भारत में सुना 'साम्यवाद का वैज्ञानिक वस्तुवाद (Dialectical Materialism) का अधिष्ठान विज्ञान और वेदान्त के दोहरे हमले से हिल चुका है उसका जीवन-दर्शन एकांगी और सदोष है जिसमें मानव के आध्यात्मिक विकास का ख्याल नहीं किया गया है। विचार को अमल में लाने की उसकी पद्धति गलत है, क्योंकि साध्य-साधन-शुचिता की बात उसमें नहीं है।

मैंने यहाँ पर यह भी जाना कि दो ही ऐसे विचार हैं जिनके पास समग्र जीवन-दर्शन है—साम्यवाद और सर्वोदय। सर्वोदय का अधिष्ठान है वेदान्त यानी चैतन्य तत्त्व। जो सृष्टि के मूल में है जो आदि मध्य और अन्त में भी है। वह जीवन के हर पहलू को छूकर मानव के सर्वांगीण विकास की ओर ध्यान खींचता है। विचार को अमल में लाने की अहिंसक पद्धति भी उसके पास है जिसमें शुचिता है और शक्ति भी है। सर्वोदय का विचार भारत में जड़ पकड़ रहा है। विनोबाजी कहते हैं कि अन्तिम संघर्ष होगा साम्यवाद और सर्वोदय का जिसमें विजय सर्वोदय की होगी क्योंकि ऋषि-मुनियों का आश्वासन है कि सत्यमेव जयते।

नया विचार प्राप्त होने पर वह आचार में परिणत होता है और फिर उसके प्रचार से फिर सचार प्रारम्भ होता है। विचार आचार सचार और प्रचार में क्रान्ति की प्रक्रिया निहित है।

प्रारम्भ में मैंने निःशस्त्र प्रतिकार पद्धति की महिमा जानी और 'कैसे' का जवाब मिल गया। उसमें काफी सन्तोष हासिल हुआ। 'क्यों' का जवाब तब मिला जब मुझे वेदान्त-विचार का अधिष्ठान ज्ञात हुआ। सवाल दो मैंने मान जान लिया सब उत्तरों का उत्तर हासिल हुआ।

सब जान लिया तब मैंने मान लिया था कि मुझे सीधे मार्ग

सत्य का साक्षात्कार हो गया। निर्वाण की अविकल अविचल अलभ्य शान्ति अब बहुत दूर नहीं है। लेकिन काल-चक्र घूमता गया और कुछ समय बाद मैंने पाया कि मैं तीसरे आर्य सत्य तक ही पहुँची हूँ। दुःख मुक्ति का मार्ग मैंने ढूँढ़ लिया है। अब सिर्फ चलना बाकी है। लेकिन तीव्र गति से दौड़नेवाला काम कहता जा रहा था तुमने सिर्फ दूसरे आर्य सत्य को समझा है। दुःख का मूल कारण तृष्णा है यह तुम्हें मालूम है लेकिन उसके बाद न भूतो न भविष्यति' जैसा कुछ हुआ। गीता में कहा है कि स्थिरता की विभूति है—हिमालय लेकिन वह भी स्थिर, अचल अडिग न रह सका और उसके साथ जीवन की बुनियादें भी ढहने लगीं। मेरे पास केवल प्रथम आर्य सत्य दुःख का ज्ञान रह गया।

उस समय भारत भूल गया था कि 'लाल चीन' के पहले पद का दूसरे के साथ कोई ताल्लुक नहीं है और भारत चीन की प्राचीन मैत्री के भावी 'लाल चीन' का अनुकरण नहीं है। उन दिनों चीन के प्रधानमंत्री की भारत-यात्रा चल रही थी और उनके स्वागत में 'हिन्दी चीनी भाई भाई' का जब शोर चल रहा था। 'चीनिया तेरे दरसन की प्यासी' जैसे भक्ति भाव से भारत सरकार की तरफ से हमारे प्रधानमंत्री का स्वागत जगह जगह किया जा रहा था। उनके दैनंदिन कार्यक्रम का लम्बा बयान प्रति दिन यहां के अखबारों में प्रकाशित होता। सुधीर भट्टाचार्य जैसे मेरे साथी भी बड़े चाव से उसे पढ़ते। बिहार की यात्रा के बाद सुधीर ने अपने प्रदेश में भूदान का काम प्रारम्भ किया था। लेकिन उस समय किसी मीटिंग के लिए वह विनोबाजी के पास आया था। बिहार की यात्रा में वह कहा करता हमारे महाराष्ट्रवाले अपने को बड़े बुद्धिमान समझते हैं। बिहार के मोटे-भारी किसान चाहे जितना भूदान दें लेकिन हमारे परमानन्द प्रदेश में शायद उतनी जमीन भी नहीं मिलेगी जो टॉलस्टॉय की कहानी के अनुसार हर मानव को मिलनी चाहिए। दो-तीन

साम अपने प्रदेश में काम करने पर सुधीर ने अनुभव किया कि वहाँ पर भी जमीन मिलती है। जब उसने गर्व के साथ यह समाचार सुनाया तब विनोबाजी ने कहा 'मानव-हृदय सर्वत्र समान है जगाने पर वह जग जाता है। हाँ जगानेवाले ही बहुत कम होते हैं। मेरा विश्वास था कि ज्ञानदेव और तुकाराम की पावन भूमि इस क्रांति-कार्य में कभी पीछे नहीं रहेगी।

सुधीर ने वही सवाल किया जिसे मैं टालना चाहती थी "चीन के प्रधानमंत्री की भेंट के बारे में आपकी क्या राय है? क्या आप पंचशील के समझौते को ऐतिहासिक महत्त्व नहीं देते?

विनोबाजी का जवाब हम न सुन सके क्योंकि भोजन की घंटी बज चुकी थी। भोजन के समय सुधीर ने वही चर्चा चलायी। केले के पत्ते पर भात के ढूह पर साबार डाल मैं उसे मिलाने की कोशिश कर रही थी। दूसरे दोने में साबदाने की खीर थी जो सुधीर को पंचशील से भी अधिक आकर्षक मालूम हुई। उसने पूछा "यह क्या चीज है?"

नटराजन् पायसम्—अतिथियों के लिए खासकर बनाया जाता है।

"तो क्या आपने समझा है कि सारे अतिथि बीमार होते हैं? हम तो केवल बीमारी में ही यह खीर खाते हैं और वह भी मजबूरी से।" सुधीर हँस पड़ा।

उसके बाद उसने फिर से चीन की रट लगानी शुरू की "जो मानते थे कि लाल चीन रूस के पीछे चलकर लकीर का फकीर बनेगा उनको जोरदार धक्का लगा होगा पंचशील के करार से। आपको समझना चाहिए कि चीन एशियाई देश है इसलिए उसका साम्यवाद भी अलग ढंग का होगा। साम्यवाद के द्वेष में अंधे हुए आप लोग इसे कैसे देख पायेंगे?"

मैं केवल द्वेष के कारण ही नहीं प्रेम के कारण भी तो इंसान अंधा बनता है।

सुधीर : 'इतने प्राचीन पड़ोसियों में प्रेम नहीं होगा तो और क्या होगा ?

सुधीर के पास जो समाचार-पत्र था उसके मुखपृष्ठ पर चीन और भारत के प्रधानमंत्रियों का हाथ मिलाते हुए एक चित्र था। सुधीर ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा "आपको डर है कि पचास करोड़ की आबादीवाला चीन और चालीस करोड़वाला भारत एक हो जायगा तो आपकी कुछ न चलेगी।

नटराजन् 'मैं लाल चीन का समर्थक नहीं हूँ लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि लाल चीन ने कुछ बातों में गजब का काम किया है। चीन के प्रधानमन्त्री अच्छी अंग्रेजी जानते हैं फिर भी भारत में वे चीनी ही बोलते हैं और दुभाषियों की मदद से काम चलाते हैं। दुःख की बात है कि हमें उनसे सीखना पड़ रहा है कि अपनी भाषा की इज्जत करनी चाहिए। अंग्रेज कब से चले गये लेकिन अभी तक इस देश की जबान पर अंग्रेजी ही प्रतिष्ठित है।

सुधीर "इसके लिए आप दक्षिणवाले जिम्मेवार हैं। अंग्रेजी आप ही की बदौलत टिकी हुई है।"

नटराजन् और उसकी वजह है आप उत्तरवालों की गलत नीति। आप जबरदस्ती से हिन्दी लादना चाहते हैं इसीलिए हम उसका विरोध करते हैं। हमारा किसान न अंग्रेजी जानता है न हिन्दी। हम यही चाहते हैं कि हमारे प्रदेश का कारोबार तमिल में चले।

सुधीर का मन जल रहा था "आपने उस अंग्रेज लेखक की किताब नहीं पढ़ी ? उसने लिखा है कि चीन ने नये क्रान्ति-शास्त्र का निर्माण किया। कार्ल मार्क्स मानता था कि क्रान्ति का नेता बनेगा शहर का मजदूर क्योंकि किसान क्रान्तिकारी नहीं होते। लेकिन माओ ने कहा कि चीनी क्रान्ति का नेता किसान बनेगा क्योंकि चीन कृषि-प्रधान देश है। लेखक कहता है कि स्टालिन ने आखिर तक चीनी साम्यवादियों को मदद नहीं दी लेकिन जब उसने देखा कि चीन में किसानों ने क्रान्ति कर डाली तब

यह चीन के साथ हो गया। मैंने यह भी पढ़ा है कि चीन में रूस के जैसी सामूहिक खेती जबर्दस्ती से नहीं लादी गयी। साम्यवादी सरकार ने पहले ज़मीन का बँटवारा किया फिर सहकारी खेती के विचार का खूब जोरदार प्रचार किया और किसानों ने खुशी से सहकारी खेती को स्वीकार कर लिया।

मैंने भी यह सब पढ़ा था। फिर भी मुझे लगता था कि भारत बहुत बड़ी गलतफहमी में है। समाचार-पत्र के छपे हुए चित्र में चीनी प्रधानमन्त्री की बारीक आँखें कह रही हैं कि हमने भारत को खूब उल्लू बनाया।

मुखोर ने जान-बूझकर नारा लगाया 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई'। मैं सोचने लगी कि क्या वास्तव में हम भाई-भाई नहीं हैं? सैकड़ों बरस पुरानी है हमारी दोस्ती। तो क्या भारत और चीन को धर्मसूत्र से जोड़ने वाले बुद्धदेव इस नारे को सुनकर खुश न होंगे?

मैं कैसे जानती कि बुद्धदेव क्या सोचते होंगे? किन्तु मेरे हृदयस्थ बुद्धदेव के नयनों में विरसता छायी हुई दिखाई दी। हम चीनी बड़े व्यावहारिक हैं। किसी भी दर्शन को हमने अपना रूप दे दिया है। बौद्ध दर्शन को हमने जो व्यावहारिक रूप दिया उससे वे कभी दुःखी नहीं हुए। कन्फ़्यूशियस और लाओत्से के साथ बैठने में उन्हें विषाद नहीं बल्कि संतोष हुआ। फिर आज वे दुःखी क्यों हैं? भगवान् बुद्ध की पचीस सौ साल की जयन्ती भी आज मनायी जा रही है। समस्त बौद्ध देशों के यात्री [illegible] बुद्ध भूमि की यात्रा करने आ रहे हैं। इस पावन-वेला में पंचशील का बार बार उच्चार हो रहा है तो बुद्धदेव को प्रसन्नता होनी चाहिए थी। लेकिन मैंने देखा उनके नयनों में जो प्रसन्न स्मित दिखायी देता था वह छिन गया है और किसी अज्ञात चिन्ता का भाव उन्हीं आँखों में [illegible] रहा है। क्या मैं उनमें अपनी ही आँखों की परछाईं देख रही थी?

हमारा रास्ता [illegible] में चल रहा था और दक्षिण प्रदेश का पश्चिम

भाव उसे पावन बना रहा था। नटराजन् के गाँव में तो सारी यात्रा पर चार चाँद लग गये। उस दिन उस भव्य स्वागत-समारोह में मुझे बुद्धदेव के विरगम नेत्रों का विस्मरण हो गया। विनोबाजी ने जब उस गाँव में प्रवेश किया तो उन पर लगातार फूलों की वर्षा होती रही और हमारी राह पर फूल बिछ गये। पूरे गाँव में बन्दनवार लगे हुए थे हर घर के सामने सुन्दर अल्पना मंगल कलश दीपमाला और आरती का थाल लिये गृहिणी। जिस आदमी ने विनोबाजी को सूत की माला पहनायी उसका काले रंग का खुला बदन और उस पर भस्म की रेखाएँ, चंदन-तिलक आदि देखकर मुझे लगा कि क्या मैं हिपोपोटेमस जैसा कोई विचित्र जानवर देख रही हूँ? इस प्रदेश की भयानक गर्मी में लुंगी पहनना बड़ा आरामदेह मालूम होता होगा। फिर भी केवल लुंगी पहनकर खुले बदन से अतिथि का स्वागत करना मुझे बड़ा विचित्र मालूम हुआ। अमेरिका में ऐसा करनेवाले को पागलखाने में भर्ती किया जाता।

बाद में जब नटराजन् ने परिचय कराया कि ये उसके पिताजी हैं तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने यह भी बताया कि मेरे पिताजी कट्टर ब्राह्मण हैं। आज तक उन्होंने भूदान नहीं दिया था। उनकी शर्त थी कि उनकी जमीन हरिजनों को नहीं मिलेगी तो वे दान दे सकते हैं। इस प्रकार के दान स्वीकार करना हमारे सिद्धान्त के खिलाफ था। इसीलिए अब तक मैं दूसरों से दान हासिल कर सका था लेकिन अपने पिता से नहीं और इनकी वजह से कभी-कभी मेरी जबान बन्द हो जाती थी। आज उन्होंने खुद छठे हिस्से का दान दिया और विनोबाजी का आगमन सफल हो गया।

नटराजन् के घर की महिलाओं में न कोई हिन्दी जानती थी न अंग्रेजी। इसलिए मुझे इशारों की विश्व भाषा का प्रयोग करना पड़ा। गहरे रंग की दस चमचमाती रेशमी साड़ियाँ और नाक के दोनों ओर हीरे की नथ पहनी हुई महिलाएँ, गहना पहने लड़कियों की काजल से और भी अधिक काली बनायी गयी आँखें बहुत ही सुन्दर दिखायी दे रही थीं। उनके बाल

फूलों के गजरों से सजाये गये थे । सब बहनें मुझे आकर्षक दीख रही थीं । नटराजन् की पत्नी पार्वती और अम्मा प्रेम से आतिथ्य-सत्कार कर रही थी । खाने के समय पार्वती ने मेरी थाली में घी में डूबी हुई इडली रखी और अम्मा ने दो-तीन दफा पोंगल परोसा । वह सारा हजम करने में मेरी हालत हो गयी । उन सबके अन्दर मेरे लिए विशेष आदर था क्योंकि उनकी नजरों में मैं सुदूर देश से आयी हुई गोरी लड़की थी । अमेरिका में कोई मानता नहीं था और भारत में कोई जानता नहीं था कि मेरा रंग पीला है । वर्णभेद का जहर अमेरिकन समाज की नस-नस में फैल गया है । भारत में गोरे रंग का आकर्षण बहुत है लेकिन काले रंग के प्रति घृणा नहीं ।

नटराजन् इससे सहमत न हो सका । उसने कहा 'इस देश में काली लड़कियों की शादी तय करना बड़ा कठिन हो जाता है ।'

मैंने कहा 'होगा कठिन लेकिन हमारे अमेरिका में तुम्हारे जैसे दम्पति शायद ही कहीं दिखाई देंगे । वहाँ पर काले और गोरों की दो दुनिया है ।'

वह हँस पड़ा । वह काला था और उसकी पत्नी पार्वती गोरी । और सुधीर गोरा तो शोभा साँवली । नटराजन् ने और कुछ सुनाया 'हमारे यहाँ रंगभेद नहीं है लेकिन जातिभेद है । अब भी हमारे गाँव में हरिजनों और सवर्णों के कुएँ अलग-अलग हैं । गर्मी में हरिजनों का कुँआ सूख जाता है और उनको बहुत तकलीफ सहनी पड़ती है । मेरे दादा के जमाने में तो हरिजनों की हालत और भी बदतर थी । दादा जिस सड़क से गुजरते थे उसके निकट जाने की हिम्मत भी कोई हरिजन नहीं कर सकता था । दादा हरिजनों की परछाईं भी नहीं देखते थे ।'

नटराजन् जैसे आदमी की आत्म-परीक्षण-वृत्ति बड़ी अच्छी है । हम अपने दोष देखते ही नहीं तो उन्हें हटा कैसे पायेंगे ?

दिन भर मैं पार्वती और शोभा की भाषा समझती रही सुनती रही वह बारबार [illegible] मजाक न कीजिये । वह मुझसे बात करना चाहती

थी। दोपहर को जब उसने देखा कि सास-ससुर आसपास कहीं नहीं हैं तब मुझसे बात करना शुरू किया। नटराजन् ने दुभाषिये का काम किया। 'अच्छा है' और 'पर्वा नहीं' से अधिक हिन्दी वह नहीं जानती थी। मेरा तमिल का ज्ञान खाने की चीजों तक ही सीमित था। मैं नहीं जानती थी कि सिर्फ हिन्दी का ज्ञान इस देश में विशेष काम का नहीं है।

पार्वती धीमी आवाज में बोल रही थी "मैं चाहती तो हूँ कि कुछ काम करूँ। लेकिन मेरे लिए यह सम्भव नहीं कि मैं आपके जैसी पदयात्रा करूँ। घर पर अभी सास-ससुर हैं छोटे-छोटे बच्चे हैं। मैं कैसे बाहर निकल सकती हूँ? बताइये मैं क्या कर सकती हूँ?"

अनुवाद करने पर नटराजन् ने मुझसे कहा "इसे अच्छा उपदेश दीजिये। मैंने जब ऑफिस छोड़कर भूदान का काम शुरू किया तब यह नाराज हो गयी थी। शायद पार्वती कुछ-कुछ इंग्लिश जानती होगी। उसने तुरन्त कहा "मैं क्या जानती थी कि ये क्या काम करते हैं? नौकरी छोड़ने पर इन्होंने मुझे इस देहात में ला पटका और स्वयं बाहर घूमने लगे।

वास्तव में नटराजन् ने गलती की। आपस सलाह करने के बाद उनको भूदान का काम उठाना चाहिए था।"

नटराजन् ने कहा "यह कहाँ चाहती थी शहर का सुविधापूर्ण जीवन छोड़कर तपस्या करना?

पार्वती ने जवाब दिया "आप बाहर घूमते हैं और सारी दुनिया को विचार समझाते हैं। घर पर भी एकाध भाषण देते तो मैं तैयार हो जाती। लेकिन आपका घर की तरफ ध्यान ही कहाँ है?

अम्मा को देखकर पार्वती झट भीतर चली गयी। गहरे हरे रंग की रेशमी साड़ी पहने स्थूल शरीरवाली अम्मा गजगामिनी की तरह आ रही थीं। उन्होंने जब तमिल में गड़गड़ाहट आरम्भ की तो मुझे लगा कि वे गुस्सा कर रही हैं।

नटराजन् के अनुवाद करने पर पता चला कि वे बड़े प्यार से बोल

के ड्राइंग रूम में सोफा पर बैठी आसमान की साड़ी पहनी हुई (जो पहनना न पहनना एक-सा था और जिसने अपने चेहरे की काफी पुताई कर रखी थी) एक बहन ने पर्स को घुमाते हुए यह सवाल किया था स्कूल में भूगोल की परीक्षा के लिए चीन के नदी-पहाड़ों को याद करनेवाली लड़कियों ने भी यही पूछा था । और जिस वक्त जो जवाब सूझता था मैं देती गयी । अम्मा की गहरे हरे रंग की वह साड़ी हरियाली बनकर मेरा ध्यान खींच रही थी मुझे स्मरण हुआ चीनी रेशम जिसका स्पर्श कोमल हरी घास के मैदानों में बिखरी शबनम जैसा है और उस पर बने चित्रों का जो छाया की परछाइयाँ को अपनी चमक आँखों में सजा लेते हैं । सौन्दर्य की अनुभूति आह्लादकारी होती है लेकिन मुझे उस दिन की अनुभूति से प्रथम आर्य सत्य का स्मरण हुआ ।

चीन-जापान का युद्ध चल रहा था । हमारे लिए सबसे कठिन समय आया । चुंकिंग पर भी बम गिराये जा रहे थे । बमवर्षा के कारण उजड़े हुए लोगों की सहायता करनेवाले संगठन का दायित्व अमी पर था । उन दिनों अमी-अपा इतने व्यस्त रहते थे कि मैं उनका दर्शन भोजन के टेबुल पर ही कर पाती थी । अमी आँखों देखा हाल सुनाती और आखिर में कहती "हर आदमी कहता है कि जापानी बमों से हमारे मकान ध्वस्त होंगे लेकिन हमारे संकल्प कदापि नहीं ।

इस पर पपा कहते 'इन्सान यह कब जानेगा कि जगत् के समस्त शस्त्रों में वह शक्ति नहीं है जो किसी दिल पर विजय पा सके । चर्चाओं में कभी-कभी भारत का जिक्र आता । एक बार पपा सुना रहे थे 'नतरसिसमों के कई टेलेग्स (तरिद)आ चुके हैं प्रेसिडेंट रूजवेल्ट के पास । उनका कहना है कि भारत को आजादी मिलनी चाहिए । कम-से-कम भारत में प्रातिनिधिक सरकार तो बननी ही चाहिए । प्रेसिडेंट रूजवेल्ट भी उनसे सहमत हैं । वे पूरी कोशिश कर रहे हैं चर्चिल पर दबाव डालने की । लेकिन चर्चिल किसीकी एक नहीं सुन रहे हैं और अपनी साम्राज्य वादी नीति से चिपके हुए हैं ।"

ममी : 'जापान इतनी गति से आगे बढ़ रहा है, इसका यही कारण है कि यूरोपवाले अभी तक दकियानूस साम्राज्यवादी नीति को छोड़ नहीं रहे हैं। आश्चर्य की बात है कि इंग्लैण्ड की सरकार यह भी नहीं समझ रही है कि इस समय भारत को आजादी देने से वे भारत की सहानुभूति हासिल करेंगे और उसके बल पर जापान का मुकाबला कर सकेंगे? क्या वे स्वार्थ को भी नहीं पहचान पाते?

पपा : और उधर गांधीजी ने अंग्रेजों से कहा है कि स्वराज्य न मिला तो वे अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन आरम्भ करेंगे। कम्युनिस्टों उनके पास भी संदेश भेज चुके हैं कि जरा सब्र कीजिये, आन्दोलन आरम्भ न कीजिये। मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ। हाय बड़े बुरे दिन आ रहे हैं।"

उन्हीं दिनों किसी सरकारी काम से पपा को अचानक भारत जाना पड़ा। जाते समय उन्होंने ममी से कहा : "जिन को अमेरिका भेजे जाओ। रोजाना बम गिर रहे हैं, फिर उसकी पढ़ाई कैसे होगी?

ममी ने दृढ़ता से कहा : 'उसे यहीं पर सर्वोत्तम तालीम मिलेगी। सारा ज्ञान क्या किताबों से ही हासिल होता है? चीन के बुरे दिनों में वह यहीं पर रहेगी, तो जीवन से शिक्षा पायेगी, उसका गुण-विकास होगा। मैं यहाँ से हटनेवाली नहीं हूँ।

पपा : तुम रहो, पर जिन को तो भेजो। वह उधर खतरे से बाहर रहेगी, तो हम भी निश्चिन्त होकर अपना काम कर पायेंगे।

ममी ने अपना निर्णय बता दिया : 'जिन खतरेवाली जिन्दगी को छोड़ेगी, तो अपना स्वत्व खोयेगी।

पपा लाचार थे और फिर लड़ाई समाप्त होने तक उन्होंने कभी मुझे अमेरिका भेजने की बात नहीं की।

अपनी एक किताब के निवेदन में पपा ने लिखा है : 'राह चलते समय में कभी-कभी थक जाता हूँ, तो मेरी पत्नी मुझे बचा लेती है। मैं हिम्मत हारता हूँ, तब वह मुझे हिम्मत देती है। मैं धीरज खो बैठता हूँ, तब वह मुझे

धैर्यवान बनाती है। माया-ममता के मोहावरण से जब मेरी आँखें कमजोर हो जाती हैं तब वह मेरा पथ प्रदर्शन करती है।

सर्वं वस्तु वशात्, अगाद् स्मृतिपर्मं कारणाय तस्मै नमः।" अतीत और वर्तमान को विस्मृति के आवरण से ढाँकता हुआ भविष्य की ओर दौड़नेवाला काल भी कुछ स्मृतियों को मिटा न सका। वह भी एक अमिट स्मृति थी। उस समय अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को समझना मेरे लिए संभव नहीं था। फिर भी कहा गया है कि संगीतज्ञ का बच्चा रोता भी है तो ताल सुर के साथ। सन् १९४२ के अगस्त की उस अँधेरी रात में पपा ने जो कहा था आज भी वह ज्यों-का-त्यों सुनायी देता है। उस दिन कासे बादलों से घिरे आसमान की तरह पपा की बारीक आँख भी गम्भीर थी। 'गांधी ने अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन छेड़ दिया' —पपा के शब्द सुनते ही ममी चौंक पड़ी। अब क्या होगा?

पपा खिन्न होकर बोले अब यह लड़ाई चलती ही रहेगी। भारत की कांग्रेस पार्टी की माँगें बिलकुल उचित थीं। कांग्रेस का कहना था कि हमारी जनता को जब तक यह महसूस नहीं होगा कि लड़ाई में हिस्सा लेना उसका फर्ज है तब तक वह दिल से न लड़ेगी। जापान का मुकाबला करने के लिए जनता में जोश पैदा हो इसीलिए वे आजादी चाहते हैं। इंग्लैण्ड बुद्धिमानी से काम करता तो भारत की चालीस करोड़ जनता जापान के खिलाफ खड़ी हो जाती। फिर जापान अधिक समय तक नहीं टिक पाता। लेकिन भारत की आजादी की माँग को ठुकराकर इंग्लैण्ड ने जापान से बचाव अपने ही खिलाफ चालीस करोड़ की ताकत खड़ी कर दी। हम जानते हैं कि एक व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है लेकिन एक राष्ट्र ही नहीं मित्र राष्ट्रों का पूरा गुट सामूहिक आत्महत्या कर सकता है यह हमने कभी नहीं सोचा था। जनरलिस्मो की सारी कोशिश बेकार गयी। प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट सफल न हो सके। वह मानता चर्चिल की भूल है कि स्वतन्त्रता की भक्ति पर प्रहार कर वे लड़ाई जीत सकते हैं।

ममी ने पूछा 'जापान भारत पर हमला करेगा तो गांधी क्या करेंगे?

पपा वे क्या कर सकते हैं ? शंघाई ने तो उन्हें जेल में बन्द कर रखा है। भारत की जनता नहीं मानेगी कि इंगलैण्ड और जापान चार बार चोर मौसेरे भाई हैं। दोनों में कोई अन्तर नहीं है। यूरोपवासों की यह दमन नीति है जो जापान को प्रश्रय प्रदान कर रही है और 'एशिया एशियाइयों के ही लिए' जैसे जापान के नारे एशियाइयों को प्रभावित कर रहे हैं। एशियावासियों को इंगलैण्ड आदि राष्ट्रों के प्रजातंत्र स्वातंत्र्य समता बंधुता जैसे विचारों का कोई दर्शन नहीं हो रहा है। उन्हें सिर्फ गोरों का साम्राज्यवाद ही दिखाई दे रहा है। जापान ने कितनी आसानी से पूरे प्राच्य एशिया पर कब्जा कर लिया। फिर भी इन गोरे साम्राज्य वादियों की आँखें नहीं खुल रही हैं। हमने गत बीस वर्षों में दो विश्व-युद्ध देखे। हमने माना था कि हमारी तकलीफ और तपस्या नयी दुनिया का निर्माण करेगी और फिर चिन की पीढ़ी सुख-शान्ति से रहेगी। लेकिन शायद और एक पीढ़ी का बलिदान होगा तब कहीं इन्सान की अक्ल पर जमी पर्त हटेगी।

ममी ने तुरन्त कहा 'बलिदान में ही तो समाधान है। सुखमय जीवन छोड़कर किसान-मजदूरों का संगठन करने में आपको समाधान प्राप्त हुआ। फिर चिन को कोई उससे भी अच्छा समाधान क्या नहीं मिल सकता है? हमारी सारी शक्ति लड़ाई जीतने में समाप्त हो जायेगी। चिन की पीढ़ी को शान्ति की प्रस्थापना करनी होगी। लड़ाई में शहीद बनना आसान है, शान्ति के लिए जीना कठिन है।

पपा उदास होकर बोले 'इससे बढ़कर खुशी की बात और क्या हो सकती है कि हमारी चिन के लिए आसान मृत्यु नहीं कठिन जीवन है। लेकिन कभी-कभी मुझे डर लगता है कि कहीं उसको भी हमारे जैसी आसान मृत्युवाला मार्ग ही न लेना पड़े।

अपनी प्यारी चिन को कठिन जीवन का सौभाग्य प्राप्त हुआ यह देखकर ममी-पपा की आँखों से आँसू छलकने लगे।

नटराजन् से मुझको दक्षिण की सारी जानकारी मिलती रही। कई पड़ावों पर वह मुझे हरिजन बस्तियों में ले जाता और उनकी वर्तमान कहानियाँ सुनाता। 'मैंने जब पहले-पहल हरिजनों की बस्ती में जाना प्रारम्भ किया तब हमारे घर पर मानो बम गिर गया था। बगैर स्नान किये मैं घर में प्रवेश नहीं कर सकता था। विदेश जाने के लिए पासपोर्ट की आवश्यकता होती है। स्नान हमारे घर का पासपोर्ट था। यह सब सुनकर मैं दंग रह गयी। दक्षिण के ब्राह्मणों का कट्टरपन आज तक ब्राह्मणेतरों के साथ किया हुआ उनका अन्याय और उसकी वर्तमान प्रतिक्रिया आदि की विस्तृत जानकारी उसने मुझे दी। आज हमारे प्रदेश में मंत्री पद या अन्य उच्च पद से ब्राह्मणों को हटाने का कार्य चल रहा है। ब्राह्मण-द्वेष इतना बढ़ गया है कि कई कालेजों में ब्राह्मण छात्रों को प्रवेश नहीं मिलता।

जिमी के छोटे भाई की दु:खदायी मृत्यु के बाद उसके पिताजी ने जो कहा और फिर हमारी जो चर्चा हुई, वह सब याद आया। जिमी अक्सर मुझसे पूछता : "मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि लाल चीन अमेरिका को दुश्मन क्यों मानता है? गत शताब्दी में जब यूरोप के कई राष्ट्र चीन का आर्थिक शोषण कर रहे थे तब अमेरिका उनके गुट से अलग रहा। चीन की एक इंच भूमि पर अमरिका ने अपना दावा पेश नहीं किया। चीन की उसने हर तरह से सेवा ही की है। अमेरिकन मिशनरियों ने तो चीन की सेवा में अपनी जिन्दगी खपा दी। चीनी छात्रों को अमरिका में तालीम मिली। जापान के हमले के बाद अमेरिका ने हमेशा चीन का पक्ष लिया। इस बार भी आज चीन अमेरिका को अपना पहला दुश्मन समझता है और अन्य यूरोपीय राष्ट्रों को नहीं। कितनी विचित्र बात है यह!

जिमी बोल रहा था इसलिए मैंने चुपचाप सुन लिया। इस लड़ाई में अमरिका ने उधर जापान और जर्मनी पर विजय प्राप्त की और इधर चीन जैसे पुराने मित्र देश की मित्रता खो दी। यह सब मेरे लिए विस्मय

कारी था। लेकिन नटराजन् की दी हुई जानकारी से मुझे कुछ राहत मिली और मैंने जिमी को पत्र लिख डाला।

प्रिय जिमी

हम अक्सर चर्चा करते थे कि हमारे देशों में इतना झगड़ा क्यों बढ़ा ? अक्सर अपनी यह चर्चा चक्र की तरह वृत्ताकार चक्कर काटती रहती थी। भारत के पुराणों में एक कहानी है। उसमें एक ऐसे राक्षस का वर्णन है जिसके कई सिर थे। उस राक्षस के सिरों को अलग-अलग काटना बेकार था। क्योंकि राक्षस की गर्दन काटने पर सभी सिर एक साथ गिर पड़ते।

भारत में ब्राह्मण नाम की एक जाति है जिसका स्थान समाज-व्यवस्था में सबसे ऊँचा है। पाँच हजार साल से समाज पर उनका नैतिक आधिपत्य कायम है। प्रारम्भ में जब ब्राह्मणों का जीवन त्याग और तपस्यापूर्ण था तो समाज में शान्ति थी लेकिन आगे चलकर वे सत्ता और संपत्ति के पास पहुँचे। विद्या उनके पास थी ही। धीरे-धीरे उनमें अभिमान और अहंकार भर गया और अपनी श्रेष्ठता का गलत अहसास पैठ गया जिसके कारण वे सारे समाज से अलग हो गये। किसीका छूआ पानी भी वे नहीं पीते थे। इस परिस्थिति ने एक संघर्ष पैदा किया। ब्राह्मणों के प्रति द्वेष फैलने लगा और आज उसने विकृत रूप ले लिया है। आज भी ब्राह्मणों के पास विद्या है संस्कृति है धर्म है। वे अपने आपको श्रेष्ठ मानते हैं। उनका यह खयाल बिलकुल गलत नहीं है। लेकिन ब्राह्मणेतर समाज जो कि संख्या में अधिक है उनके खिलाफ खड़ा हो रहा है। ब्राह्मणों ने आज तक उसकी उपेक्षा की। आज उसकी प्रतिक्रिया इतनी तीव्र है कि ब्राह्मणों के गुण भी दूसरों को नहीं दिखायी दे रहे हैं।

तुम कहोगे कि अमेरिका चीन के सवाल से इन ब्राह्मणों का क्या ताल्लुक है। लेकिन अगर इन ब्राह्मणों के स्थान पर यूरोप-अमरिका के विकसित देशों और ब्राह्मणेतरों के स्थान पर एशिया-अफ्रीका के अविकसित देशों को रखकर सोचो तो सब कुछ स्पष्ट हो जायगा। और तुम समझ सकोगे

कि जगत् को प्रजातंत्र समता और विज्ञान जैसी अनमोल देन देनेवाले पश्चिमी लोगों के प्रति आज हमारे देशों में यह द्वेष का जहर क्यों फैला है ?

विद्या विज्ञान सत्ता संपत्ति या संस्कृति की श्रेष्ठता के कारण जिन्हें इतिहास की प्रक्रिया में कुछ अधिकार (Privilege) हासिल हुए हैं वे स्वेच्छा से उन अधिकारों का समर्पण कर उपेक्षितों की सेवा में लग जायेंगे तो अनेक मुँहवाले उस राक्षस की गर्दन ही कट जायेगी । अन्यथा कुछ गोरों के द्वारा हुए शोषण के कारण समस्त गोरों के खिलाफ ईर्ष्या-द्वेष की आग भड़क उठेगी । कुछ ब्राह्मणों के अहंकार के कारण समस्त ब्राह्मणों को तकलीफ होगी । कुछ जमींदारों के किये हुए पापों के कारण सारे जमींदार कत्ल हो जायेंगे । अपहरण को टालना है तो अपरिग्रह को मानकर स्वेच्छा से स्वाधिकार समर्पण करना चाहिए ।

यूरोप-अमरिका अधिक विकसित हैं । इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्होंने पुरुषार्थ और पराक्रम से अपना विकास किया है, लेकिन चूँकि अधिक विकसित हैं इसीलिए दूसरों पर सत्ता चलाना चाहेंगे तो अब काले पीले और साँवले उसे बर्दाश्त नहीं करेंगे । यूरोप के अधिकतर राष्ट्रों ने अपने साम्राज्य को विसर्जित किया फिर भी आज अमेरिका में इतनी अधिक पैदावार होती है कि वहाँ पर दाम स्थिर करने के लिए हजारों टन अनाज जलाया जाता है और इधर एशिया में हजारों लोग मौत के शिकार बनते हैं सिर्फ इसीलिए कि उन्हें भर पेट रोटी नहीं मिल पाती । बिजली आपकी दासी बनी है आप उसे हर छोटे-मोटे कामों में इस्तेमाल करते हैं और इधर वह हमारे सिर पर गिरती है । हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं और आपके पास भोग-विलास के साधन जरूरत से भी ज्यादा हैं । फिर हम आपसे ईर्ष्या करते हैं उसमें से द्वेष पैदा होता है फिर संघर्ष युद्ध और सर्वनाश ।

इधर भारत के भूमिवान स्वेच्छा से भूदान देकर भूमिहीनों का प्रेम हासिल कर रहे हैं संघर्ष को मिटा रहे हैं । उसी तरह यूरोप-अमरिका के वैभव-संपन्न लोग वैभव के कुछ अंश का समर्पण कर एशिया-अफ्रीका की

सभा में लग जायेंगे तो लड़ाई की जड़ ही उखड़ जायेगी। तुम पूछोगे कि क्या यह सम्भव है? मैं तुमसे पूछूंगी कि क्या यह कभी संभव माना गया था कि भूमिवान स्वेच्छा से जमीन की मालकियत को मिटायेंगे।

एशिया-अफ्रीका के राष्ट्रों को आप सेना के बल पर नहीं सेवा के बल पर जीत सकेंगे। शस्त्रास्त्र देकर नहीं स्नेह देकर उन्हें मित्र बना सकेंगे। आप अपना सारा भोग विलास चलाते रहेंगे और बची-खुची चीजें अभिमान पूर्वक हमें देकर हमारी सहानुभूति नहीं हासिल कर पायेंगे। अपनी आवश्यकताओं को घटाकर कुछ त्याग कर बची हुई संपत्ति का दान करेंगे तो हमारे हृदय में स्थान पायेंगे। स्वेच्छापूर्वक स्वाधिकार-समर्पण पूर्व-पश्चिम के द्वैत को मिटा देगा और सब समस्याओं की समस्या हल हो जायेगी। ●

आठ

•

मैं जब छोटी थी तभी से यह महसूस करती थी कि हमारी इस एक दुनिया में कई दुनियाएँ समायी हुई हैं जिनका एक-दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस यात्रा में मैंने इसे तीव्रता से अनुभव किया। अन्य मित्रों के साथ मैं भी कहा करती थी कि हम चीनी हैं हम एशियाई हैं पर एशिया की बात तो दूर की है इस चीन के मानी क्या? एक चीन में कितने प्रकार की अलग-अलग दुनिया हैं? एक छोटे-से देहात में भी कितनी हैं? क्या दादाजी और उनके नौकरों की दुनिया एक थी? एक देश एक भाषा एक प्रदेश और एक ही मानव वंशवालों की दुनिया भी कितनी अलग अलग? फिर गाँव और शहर चीन और अमेरिका फ्रांस और गोरों की दुनिया अलग अलग क्यों न होगी? हम बड़े जोर से चिल्लाते थे कि परदेशवाले चीन का शोषण करते हैं लेकिन हम यह नहीं देख पाते थे कि हम स्वयं अपने गाँववालों का शोषण कर रहे हैं। पूर्व-पश्चिम को निकट लाने की कोशिश करनेवालों को अपने गाँवों की बिखरी हुई भिन्न दुनिया को निकट लाने की कोई चिन्ता नहीं रहती। समस्त एशिया को मुक्त करने का दम भरनेवाली मुक्ति-सेना ने सर्वप्रथम अपने देश की स्वतन्त्रता का नाश किया। क्या इस पार भी कोई ध्यान से देख रहा है?

मुझे लगता था कि हमारे ही घर की दादाजी की देहात की और मामाजी की शहर की दुनिया के बीच अटलान्टिक और प्रशान्त-महासागर था। मानो अब अपार अन्तराल आरम्भ होता था और मेरी यह तीव्र इच्छा थी कि इनके बीच की दूरियाँ कम हों इनकी निकटता बढ़े। गाँव में मैं मौसेरा के घर जाकर ग्वाला नारी की पाठशाला में मौसी द्वारा ले जायी जाती थी और अब भारत के गाँवों में घूम रही हूँ और शायद

इसीलिए मेरे नाम पर नाहक बड़े-बड़े सिद्धान्त चिपकाये जाते हैं। लोग कहते हैं 'उसने वर्णभेद के खिलाफ जिहाद बोल दिया है'। 'वह धार्मिक समता चाहती है' 'गरीबों की भलाई चाहती है' आदि। लेकिन मैं इतना ही चाहती हूँ कि मेरी अलग-अलग दुनिया निकट आये मैं अपने जीवन के बिखरे हुए टुकड़ों को जोड़ सकूँ और एक अखण्ड जिन्दगी प्राप्त कर सकूँ। दूसरों की भलाई के लिए नहीं बल्कि अपनी ही हिताकांक्षा से। किसी बहुत ऊँचे ध्येय से प्रेरित होकर मैंने यह काम शुरू नहीं किया था बल्कि मैं चाहती थी कि दादाजी के देहात में बच्चों के साथ खेलनेवाली और चूंकिंग के सरकारी मकान में सबका लाड़-प्यार पानेवाली चिंगलिंग अमेरिकी मित्रों के साथ अध्ययन करनेवाली रिटा और भारत के गाँवों में घूमनेवाली ऋता के जीवन के विभिन्न हिस्से मिलकर एक हो जायें और इसीके लिए मैं चाहती थी कि सारा जगत् ऐक सूत्र में जुड़ जाय।

सत्तावन आ रहा था। सारे देश में फैले हुए भूदान कार्यकर्ता उत्साह के साथ काम कर रहे थे। 'गाँव की धरती गाँव का राज्य' 'सत्तावन में हो स्वराज्य' के नारे गूँजने लगे थे। जगह-जगह युवकों ने कालेज तथा नौकरी छोड़कर इस क्रान्तिकारी कार्य के लिए सत्तावन का एक साल देने का संकल्प किया था। पाँच लाख गाँवों में भूमिक्रान्ति का सन्देश पहुँचाने के हेतु सैकड़ों पदयात्राएँ आयोजित की जा रही थीं। तेलंगाना में जिसका उद्गम हुआ वह गंगोत्री अब भूदान-गंगा बनकर वेग से बहने लगी थी। गत छह साल से चल रहे भूदान-आन्दोलन में इस साल विशेष जोर आया। मैं चाहती थी कि कहीं अलग काम करूँ और विनोबाजी के पास जो पाया उसका वितरण करूँ। मदुरा के मीनाक्षी मंदिर में वह इच्छा पूरी हो गयी। मंदिर में हजार खंभेवाला मंडप और शिल्पकला के हजारों उत्तम नमूने हैं। यह सब देखकर मैं दंग रह गयी। विनोबाजी ने कहा कि वेदों में हजार खंभेवाले आकाश-मंडप का जिक्र आता है। उसी कल्पना को शिल्पियों ने पत्थरों में साकार कर दिया है। हर पत्थर को गौर से देखना हो तो शायद उतना ही समय लगेगा जितना शिल्पियों को

मंदिर बनाने में लगा होगा। दो घंटे में पूरा मंदिर देखकर जब मैं पड़ाव पर लौटी तब भी मेरा मन वहाँ छूट गया था।

विनोबाजी ने मुझसे कहा: 'सत्तावन आ रहा है। करुणा के द्वारा शांति करने के कार्य में बुद्धभक्तों की सेवा इस बुद्धभूमि को प्राप्त हो रही है, यह एक सुन्दर संयोग है। आप चाहोगी तो गया जिले में करुणा का संदेश घर-घर पहुँचाने का काम कर सकती है।

मैं कब से चाहती थी कि पचीस सौ साल की बुद्ध जयन्ती का समारोह देखने बोधगया जाऊँ। लेकिन उन दिनों विनोबाजी दक्षिण में यात्रा कर रहे थे इसलिए मुझे बुद्ध भगवान् के बदले श्रीरंगम् नटराजन् मीनाक्षी आदि के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो रहा था। श्रीरंगम् के मंदिर में काले पत्थर में खुदी हुई भगवान् विष्णु की शेषशायी मूर्ति मुझे बुद्धदेव के महापरिनिर्वाण की याद दिलाती थी। नटराजन् के नृत्य में धर्मचक्र प्रवर्तन की गति देखी थी और मीनाक्षी माता ने मायादेवी का स्मरण दिलाया था और इसीलिए इस साल बोधगया जाने की कल्पना से मैं पुलकित हो उठी। चीन के बुद्ध मंदिरों में पृथ्वी को रोके कयामत तक सुगन्धित करने लायक धूप जलानेवाले अपने अगणित पूर्वजों का मुझे स्मरण हो आया। बुद्धत्व प्राप्त होने पर सर्वप्रथम जो भूमि उनके चरण-स्पर्श से पावन बनी उसी भूमि में यह पावन पर्व अहिंसा-करुणा का संदेश सुनाने के लिए पदयात्रा करते हुए बीतेगा यह सौभाग्य किसी बड़ी तपस्या से ही प्राप्त हो सकता है। लेकिन मैंने कोई तपस्या नहीं की थी इसलिए यह मेरी किसी तपस्या का फल नहीं था बल्कि मैं स्वयं अनेकों की तपस्या का फल थी।

नूतन वर्षारम्भ के दिन जब मैंने गया शहर छोड़ा और मेरी पदयात्रा प्रारम्भ हुई तब चलते समय बाबीजी ने कहा: कम से कम आठ दिन का नाश्ता तो साथ ले जाओ। तुम्हारे लिए मैंने कम गात का ही मग्गी और नमकीन बनाया। मुझे हँसी आ गयी। उससे तो बोझ बढ़

जायेगा। जैसे मुसाफिर के साथ सामान बोझ न होकर सहारा बनता है लेकिन पदयात्रा में छोटी गठड़ी का भी बोझ मालूम होता है।

जीवन-यात्रा में भी मानव भिन्न-भिन्न विचारों का सामान साथ ले चलता है लेकिन आखिरी चढ़ाई प्रारम्भ होते ही वह सामान का बोझ फेंक देता है और सर्वथा मुक्त बनकर चढ़ता जाता है। ज्ञान-विज्ञान वेद यानी भवसागर से पार ले जानेवाली नौका। लेकिन अंतिम अवस्था में वेदों का भी त्याग करना होता है। वेदान् अपि सन्यस्ति। भौतिक वस्तुओं का त्याग कर वेदों का आश्रय लिया जाता है और फिर वेदों का भी त्याग कर सन्यास लिया जाता है तब कहीं निर्वाण का निनाद सुनाई देता है। मैंने सामान का बोझ तो नहीं उठाया लेकिन विचारों का बोझ उठाकर पदयात्रा प्रारम्भ की इसका मुझे उस समय भान न था। तीन दुखों के दर्शन के कारण बुद्धदेव ने ज्ञान की राह ली। क्या मेरे लिए अभी तक उस तीसरे दुःख का दर्शन बाकी था?

गया जिले में ऐसा कोई गाँव नहीं है जहाँ पर बाबाजी का परिचय न हो। मेरी पदयात्रा का कार्यक्रम तय कर उन्होंने पहले पखवाड़े की यात्रा की पूरी व्यवस्था कर डाली थी। प्रथम सप्ताह में वे स्वयं मेरे साथ चले। इतना सारा इन्तजाम हो गया तो फिर यात्रा में हमारा पराक्रम ही क्या रहा? मैं उनसे कहती लेकिन उनका एक ही जवाब मिलता तुम इतनी दूर से यहाँ आयी इसीमें सारा पराक्रम हो गया। अब हम चाहते हैं कि तुम्हें कम से कम तकलीफ हो। तुम पदयात्रा का संकल्प न करती तो अच्छा होता। मैं तुम्हें जीप में घुमाता।

इस व्यवस्थित पदयात्रा में मैंने जाना कि मेरे जीवन और विचारों में जमीन आसमान का अन्तर है। शारीरिक कष्ट विशेष महसूस नहीं होता था। लेकिन इस यात्रा में सुधीर सत्यराजन् जैसे शिक्षित साथी नहीं थे। मेरे साथ जो तीन स्थानीय कार्यकर्ता थे उनमें से दो भोजन और निवास की व्यवस्था करने के अलावा और कुछ नहीं जानते थे और तीसरा केवल पैदल चलना जानता था। लम्बी राह तय करते समय घंटों तक मौन

भाता चमती। मैं समझ नहीं पाती कि इनसे क्या चर्चा करूँ ? व दोनों मेरे लिए बहुत तकलीफ उठाते इसलिए मुझे संकोच भी होता। सामान बहुत होता था इसलिए गीता और धम्मपद के अलावा और कोई किताब भी साथ नहीं रखी थी। पढ़ना करीब-करीब बन्द था। आठ-दस दिन म कभी पुराना हिन्दी समाचार-पत्र मिलता जिसमें स्थानीय समाचार ही अधिक रहते। दो-एक माह के बाद मुझे महसूस होने लगा कि मेरा बौद्धिक उपवास ही रहा है। लम्बे अर्से के बाद एक पड़ाव पर गया से आया हुआ एक छात्र अपने साथ मिठाइयाँ लाया। अंग्रेजी अखबार में लपेटा हुआ वह कागज मैंने उससे छीन लिया। पटना के 'इण्डियन नेशन' के पुराने किसी अंक का वह आधा हिस्सा मेरे लिए उस समय अनमोल बन गया था। उसमें दो-चार खबरें थीं—चीन अमरिका और जापान की। कोई विशेष बात नहीं थी फिर भी कागज के उस टुकड़े ने मुझे फिर-से सारे जगत् के साथ जोड़ दिया।

मन-बुद्धि के उपवास के कारण पेट की ओर मेरा ध्यान बिलकुल न था। मैंने गाँववासों से कह दिया कि मुझे वही खिलाइये जो आप स्वयं खाते हैं। कई घर ऐसे थे जहाँ पर उन दिनों सिर्फ सत्तू खाया जाता था।

हम चीनी ललित कलाओं में पाककला को सबसे ऊँचा स्थान देते हैं। मैं सारी दुनिया घूम चुकी लेकिन चीन जैसा भोजन मुझे कहीं नहीं मिला। भोजन म भी हम कला का दर्शन करते हैं। पंचप्राणों को रसना का रूप देकर हम हर चीज का स्वाद धीरे-धीरे चखते हैं। यह कहा जाता है कि खाने की कला में फ्रेंच लोग हमारी बराबरी कर सकते हैं लेकिन पाक कला में चीनियों का मुकाबला कोई देश नहीं कर सकता। हम उस मनुष्य मानते हैं जो भोजन की कला नहीं जानता। हमारे जीवन में सबसे ऊँचा स्थान न तो धर्म का है न दर्शन का है न राजनीति का। भोजन को हम सर्वश्रेष्ठ स्थान देते हैं। पपा से मिलने कई विदेशी आया करते थे। उनमें से अधिकतर जब चीन पर लेख लिखते तब हमारे यहाँ के स्वादिष्ट भोजन का जिक्र अवश्य करते थे। हमारी नानीजी के दिन में चीनी भोजन

और चीनी नानाजी को ही रुचिकर स्थान पाते थे। उसमें भी शायद नानाजी का नम्बर दूसरा था। बिहार की उस यात्रा में नमक या गुड़ के साथ सत्तू खाते समय मुझे अनेक चीनी स्वादिष्ट भोज्य पदार्थों का स्मरण हो आता था।

धीरे-धीरे बढ़ती हुई गर्मी के साथ गरीबी का भी भयानक स्वरूप दिखायी देने लगा। सर्दी में गरीब बिहारी और चना आदि कुछ चीजों से अपना गुजारा कर लेते थे। लेकिन धूप तेज होने पर गरीबों के पेट की आग भी भड़क उठती। यह एक सौभाग्य की बात थी कि गर्मी में सत्तू के साथ कच्चे या पके आम भी खाने को मिल जाते थे। मेरे देश में अकाल ग्रस्त दरिद्र मिट्टी या पत्ते भी खा लेते हैं लेकिन चीनी पकवान खा-खाकर मेरी जीभ बड़ी नखरेबाज हो चुकी थी इसीलिए सत्तू के साथ आम मिलने पर भी वह शिकायत करती थी।

अनुभव की बात तो अलग रही। दुर्भाग्य से मैंने गरीबी को इतने नजदीक से कभी देखा भी नहीं था। गरीबी के साथ गन्दगी जैसे अनेक दुर्गुण भी आ जाते हैं। मैंने आज तक पढ़ा था कि सभ्यता का विकास समृद्धि में होता है। विभिन्न कलाओं और विद्याओं का विकास उच्च मध्यम और उच्चवर्गीय लोगों ने किया जिनके पास पर्याप्त सुख-सुविधाएँ थीं। लेकिन इस यात्रा में मेरे उस ज्ञान की बुनियाद ढहने लगी। मैं प्रतिदिन देख रही थी कि पेट की धधकती हुई आग की ज्वालाएँ चेहरे पर नहीं दिखाई देतीं। संस्कृति की कसौटी पर कसा जाय तो बिहार के गरीब गँवार किसानों की संस्कृति [illegible] अमीरों की संस्कृति से कम नहीं बल्कि अधिक उत्कृष्ट साबित होती। कभी कभी मैं उनकी हालत बर्दाश्त नहीं कर पाती थी। [illegible] अमीरजादों के पास अनाज के भण्डार पड़े हैं आप क्यों [illegible] ना कोई भूमिहीन जिसके बदन पर बस हड्डीभर का बदन [illegible] है। जिसकी पीठ और पेट एक हो रहे हैं और जिसकी आँखों [illegible] ज्योति भी जा चुकी है जवाब देता। 'हमारे भाग-करम का [illegible] कैसे भाग में जो लगेगे? आखिर भगवान् की मर्जी

मिसालें पेश करती हुई मैंने तत्त्व की तरह कहा 'हम जब इस दुनिया को छोड़कर चले जायेंगे तब न धन-दौलत को साथ ले जायेंगे न बीवी-बच्चों को। हम अपने कर्म को ही साथ ले जायेंगे।' उसके बाद 'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या' जैसे खूब रटे हुए वचन सुनाये और भूदान देने की अपील की। भाषण के बाद कुछ देर शांति रही। अक्सर गाँवों में यह रिवाज है कि जब तक बड़े लोग आगे नहीं बढ़ते छोटे की हिम्मत नहीं करते। मैंने उस ब्राह्मण से पूछा : 'आप कुछ देंगे न?'

"दो एकड़।"

'आपके जैसे बड़े लोग इतना कम देंगे तो यह आपके लिए शोभा न देगा।'

सभा में बैठे हुए सज्जनों में से किसीने हलके-से कहा : 'इनके पास सत्तर एकड़ जमीन है।' दूसरी आवाज सुनाई दी 'हाँ और बहुत अच्छी जमीन है। पाँच हजार रुपया एकड़वाली। इन्हें छठा हिस्सा तो देना ही चाहिए।'

मैंने पूछा 'आपके परिवार में कितने व्यक्ति हैं?'

'साठ-सत्तर होंगे।'

मैं चौंक पड़ी। एक परिवार में साठ-सत्तर? मुझे याद आया कि मेरे देश में भी इतने बड़े परिवार थे।

दूसरे सज्जन कह रहे थे—'वास्तव में इनका परिवार काफी बड़ा है।'

'क्या नहीं बारह हिस्सा दीजियेगा?' मैंने सहज ही पूछा।

'ठीक है लिख लीजिये बारह एकड़।'

मेरा मन साक्षी दानपत्र भर रहा था। दस्तखत करते समय दाता बड़े प्रसन्न थे। मेरे मन में विनोबा का वचन याद आया 'मैं कौन हूँ? क्या मेरा है क्या मेरा दान ... म ... करने पर उन्होंने दा ... बदले मान ... का दान लिया ... पर्याप्त ... से अधिक मूल्य की जमीन! मैं विश्वास ... नहीं ... भगवान ... मन ... है। "निमित्तमात्रं

वह पूरी तरह फटा हुआ है। रुई के छोटे-मोटे ढेर घूम रहे हैं; खटमल मच्छर और कई प्रकार के अनामी कीड़े मेरा खून चूस रहे हैं। शाम को गृहिणी ने मेरे माथे पर कुछ दवा लगायी और मैं सो गयी। रात में मेरी आँखें खुलीं गृहिणी की प्यारभरी आवाज से। थोड़ा तुलसी का काढ़ा लीजिये। उस घर में थर्मस नहीं था तो फिर फीडिंग कप कहाँ से होगा? एक बड़े कटोरे में काढ़ा रखा गया। मैं बड़ी मुश्किल से उठकर बैठी और दो-चार घूँट पीकर फिर लेट गयी। रातभर कष्ट से कराहती रही। दिनभर काम करके गृहिणी थकी थी फिर भी वह बीच-बीच में मेरे पास बैठकर मेरा माथा सहलाती रही। दो तीन दिन बीत गये। मैं सोचने लगी कि अब तक डाक्टर क्यों नहीं आया? लेकिन उन गाँवों में डाक्टर शब्द भी शायद किसीको नहीं मालूम होगा। बीमार होने पर भी गाँव की बहन जब तक शक्य होता काम करती और असह्य होने पर खाट पकड़ लेती। दवा के अभाव में यहाँ मर जाना आम बात थी। भगवान् की यही इच्छा थी ऐसा कहकर दो-चार दिन रोना और फिर अपनी बोझिल जिन्दगी की गाड़ी में जुत जाना यही इनका क्रम था। दुःखी होकर रोते रहना इनकी सामर्थ्य से बाहर की चीज है क्योंकि उसके लिए भी फुर्सत चाहिए। बुखार की बेहोशी में मैं सब कुछ भूल चुकी थी।

शायद उस समय मैं जागृति-सुषुप्ति की सीमा रेखा पर थी। रसोईघर में शायद कोई बर्तन गिरा होगा। मुझे लगा कि कुछ आवाज सुनायी दे रही है। शायद यह हवाई जहाज की आवाज होगी। क्या मेरे लिए हवाई जहाज आ गया? मम्मी तुम कितनी देर से आयी? क्या तुम्हें अब तक कोई खबर नहीं मिली? चुंकिंग दूर जरूर है लेकिन प्लेन तो वहाँ पर यहाँ से पहुँच सकता है। चीन के विदेशमंत्री की इकलौती बेटी बीमार है तो क्या उसे ले जाने के लिए 'प्लेन' नहीं मिलेगा? अगर चीन के पास पर्याप्त पेट्रोल न हो तो अमेरिका से मँगवाया जा सकता है। मम्मी एक बार जब मुझे बुखार हो गया तब तुमने मुझे स्पेशल हवाई जहाज से हांगकांग ले जाने का कार्यक्रम बनाया था। उस समय बुखार अधिक

न था फिर भी तुमने डॉक्टरों से पूछा 'क्या उसे अमरिका से जाना होगा ? डॉक्टर मुसकराये । 'आप चिन्ता न कीजिये । दो-चार दिन में ठीक हो जायगी । और आज मैं ज्वर की आखिरी मंजिल तक आ पहुँची हूँ फिर भी तुम नहीं आयीं' ममी क्या तुम भूल गयी उस घटना को ? देश की हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही थी । उधर जापान ने पर्ल हार्बर पर हमला कर अमेरिका को लड़ाई में खींच लिया । मंत्रि मण्डल की खास बैठकें चल रही थीं । पपा कहा करते 'गंभीर चर्चाओं के समय भी मेरा मन घर पर रहता है चिम के पास । पपा आज मैं हिन्दुस्तान के इस देहात में एक निहायत गन्दे कमरे में पड़ी हूँ । बुखार में मौत की घड़ियाँ गिन रही हूँ । फिर भी आपका मन इधर नहीं है ? आप कहा करते थे कि चीन के हर बच्चे के लिए पढ़ाई और दवा-दारू का इन्तजाम होना चाहिए । आज आपकी लाड़ली चिम को तीन दिन से न किसी डॉक्टर ने देखा न कोई दवा मिली । फिर भी आप खामोश ?

शायद उस समय सिर दर्द बढ़ गया था और मैंने करवट बदली । क्या चीन की हुकूमत बदली इसीलिए कोई डॉक्टर नहीं आ रहा है । क्या चीन के डॉक्टर यह सोच रहे हैं कि पुरानी सरकार के मंत्री की लड़की को दवा देने से शायद नयी लाल सरकार हमें सुख से जीने नहीं देगी ? मेरी कोई सहेली यहाँ मेरा हाल पूछने क्यों नहीं आयी ? क्या वे भी मानती हैं कि चिमलिम से दोस्ती करना अपराध है ? और अमरिकन दोस्त मेरी चिन्ता क्या नहीं कर रहे हैं ? क्या उन्होंने मुझे 'लाल चीन' का खुफिया मान रखा है ?

काल की गति मन्द पड़ गयी थी । एक-एक मिनट एक-एक दिन के जैसा भारी मालूम हो रहा था । शायद एक युग बीत जाने के बाद मेरा एक साथी मेरा हाल पूछने आया । मैंने उससे कहा कि 'संभव हो तो चाहे जिस तरीके से मुझे यहाँ से गया ले चलिये । हमारे मेजबान भाई ने सिर हिलाते हुए कहा : लगभग आठ मील के बाद पक्की सड़क मिलेगी । वहाँ आप वहाँ तक डोली से जा सकेंगी । लेकिन इस गाँव में डोली भी नहीं

मिलेगी। जरा सब्र कीजिये बुखार उतरने पर दो दिन आराम करने के बाद आप फिर पैदल चलकर भी जा सकेंगी।" मैं चाहती थी कि अभी पैदल चलना शुरू करूँ और फिर सवारी का कोई सवाल ही न रहे। मैंने उठने की कोशिश की लेकिन सिर ऊँचा करना भी संभव नहीं था। मेरा जाने का हठ कायम था। आखिर में वे मेजबान भाई डोली की खोज में निकल पड़े।

बड़ी दूर से डोली लाने में दो दिन और बीत गये। बुखार कम होने के कोई आसार नहीं नजर आ रहे थे। मैंने पहले डोली कभी नहीं देखी थी। आदमियों के कंधे पर चढ़ना मानो लाश बनने जैसा है। विदाई के समय गृहिणी के नेत्र आँसुओं से भीग गये : आप नाहक इतनी जल्दी जा रही हैं रुक जातीं तो दो-चार दिनों में स्वस्थ हो जातीं और दाल भात खाकर विदा होतीं तो कितना अच्छा होता। तेज बुखार में ही आप विदा हो रही हैं। इसलिए मुझे बहुत दुःख हो रहा है। उसका प्रेम मुझे पीछे खींच रहा था। लेकिन मैंने कहा 'हम शहरवाले बड़े कमजोर होते हैं। बीमारी में बिना दवा के काम चलाने की जो हिम्मत आपमें है वह हममें नहीं होती। वह शायद कुछ नहीं समझी। बड़े प्यार से नाश्ता साथ में रख दिया और कहा : 'इस गरीब बहन को मत भूलियेगा।"

डोली छोटी थी। उसमें लेटा नहीं जा सकता था। तकिये के सहारे बैठने में बहुत तकलीफ हो रही थी। चिन्ता थी कि आठ मील की लम्बी यात्रा कैसे तय होगी? डोलीवाले तेज चल रहे थे। दर्द से मेरा शरीर टूक-टूक हो रहा था। लगता था कि आठ मील की इस यात्रा में इस देह का भी अन्त हो जायगा। सोचने लगी यहाँ के लोग मेरा दहन करेंगे या दफन। अगर मैंने पहले ही बता दिया होता कि मैं चीनी बौद्ध हूँ तो अच्छा होता। अब ये लोग मुझे अमरिकन ईसाई मानेंगे और दफन के समय किसी पादरी को बुलायेंगे। मम्मी नाराज न होना। तुम जो बाइबिल की कहानियां सुनाया करती थीं वे मुझे बहुत पसन्द थीं।

मेरे जीवन में धम्मपद का जो स्थान है वही बाइबिल का है। लेकिन

भगवान् बुद्ध की तपस्या भूमि में मरते समय मैं अमिताभ का जप सुनना चाहती हूँ।

बैसाख की कड़ी धूप के कारण डोलीवाले बहुत थक जाते। बीच-बीच में अपनी पगड़ी की अदला-बदली करते। मुझे बड़ी शर्म मालूम हो रही थी। अमरिका के एक विचारक कहते हैं कि अपराधी को अस्पताल भेजना चाहिए और बीमार को जेल। कुछ मील का रास्ता तय करने के बाद डोलीवाले रुक गये। उन्होंने पेड़ों की शीतल छाया में थोड़ा विश्राम किया। मैं चाहती थी कि उनसे बात करूँ उनके दुःख-सुख में हिस्सा लूँ लेकिन मेरे थके हुए शरीर में बोलने की भी शक्ति न थी। ताप-तप्त धरती अंगार बन रही थी। मेरे देश का एक प्राचीन कवि मेरे दिल के दर्द को कविता में प्रकट कर चुका था।

"सूखे पत्तों की सरसराहट व्यथित अंतर कँपाती है!
शनैः शनैः समीर सूर्य किरणों को
निश्चित प्रतीची की ओर ले जायगा!
लेकिन परित्यक्त इस पथिक शरीर को
कहाँ विश्राम का सहारा मिल पायगा?
गैरों की दुनिया में भटक रहा हूँ यहाँ
क्या मेरी माँ है? क्या मेरे पिता हैं?
क्षितिज के पार तक फैली इस धरती को
सूखी हुई घासों ने पूरा ढक दिया है
व्योम के नीचे खड़ा हूँ खिन्न
जीवन एकाकी है।"

डोली के बाद बैलगाड़ी फिर बस और रेल की यात्राएँ पूरी कर जब मैं वर्धा पहुँची तब मुझे स्नेहसिक्त बापूजी की वाणी से परिचय मधुधारा प्रवाहित होने लगी। उन दिनों बापूजी दौरे पर थे। डॉक्टर की सलाह से मुझे वर्धा के सरकारी अस्पताल के जनरल वार्ड में भर्ती किया गया। बापूजी नहीं जानती थी कि मेरे लिए क्या करना चाहिए?

दिनभर मेरे पास बैठी रहती थीं । दो-एक दिन अस्पताल का प्रबंध बड़ा अच्छा मालूम हुआ लेकिन जनरल वार्ड के कई किस्म के रोगियों के बीच अधिक दिन तक रहना मेरे लिए कठिन हो गया । मेरे अमरिकी मित्र कभी बात भी नहीं पायेंगे कि यहाँ पर जनरल वार्ड की हालत कितनी भयानक होती है ! दिन रात रोगियों की दर्दभरी कराह और परिचारिकाओं का गुस्सा । ममी-पपा कभी कल्पना तक नहीं कर सकते थे कि उनकी बिच को कभी ऐसी हालत में भी रहना पड़ेगा ! घर पर मैं बहुत कम बीमार पड़ती थी । फिर भी मामूली सर्दी-जुकाम होने पर ममी तीन-तीन डॉक्टरों को बुलाती । चाचीजी जब मुझे चम्मच से मोसबी का रस पिलाती तो ममी के स्मरण से मेरी आँखें भर आती थीं ।

खबर मिलते ही चाचाजी गया दौड़े आये । मैं जनरल वार्ड में रखी गयी हूँ यह देखकर वे गुस्सा हो गये । 'बेटी की चिन्ता क्या इसी तरह की जाती है ?

चाची ने कहा 'मुझे मालूम नहीं है कि क्या-क्या करना चाहिए ?"

चाचाजी फौरन मुझे स्पेशल रूम में ले गये । वह एक छोटा-सा ब्लाक था । चाचीजी ने कहा 'बड़ी अच्छी जगह है । अब मैं दिन रात यहीं रहूँगी । डॉक्टर ने बताया कि टाइफाइड हो गया है । यह सुनकर चाचाजी बहुत चिन्तित हुए और क्या तक की मेरी यात्रा का वर्णन सुनकर तो उन्हें दो रात नींद नहीं आयी ।

चारों ओर खबर फैल गयी । पदयात्रा के कारण गाँव-गाँव में मेरा अच्छा परिचय हो गया था । दिनभर मेरा स्वास्थ्य-समाचार जाननेवालों का तांता लगा रहता था । उन सबको डर था कि यह विदेशी महिला अगर यहाँ मर गयी तो हमारे देश के लिए एक कलंक की बात होगी । कुछ लोगों ने व्यक्तियों ने इसे प्रकट भी किया । चाचाजी कहते थे तुम्हें खूब रसगुल्ले खिलाये बिना यहाँ से जाने नहीं दूँगा । तुम्हारे अमेरिकावाले तुम्हें इस हालत में देखेंगे तो हिन्दुस्तान की कितनी बदनामी होगी ।

क्या चाचाजी ज्योतिष जानते थे ? दूसरे दिन चाचीजी ने मेरी

खूब सारी डाक ला दी जो बीस-पचीस दिन से इकट्ठी हो रही थी। मैंने सबसे पहले हेलन की चिट्ठी पढ़ी।

प्रिय रिटा

तुम्हें मजेदार समाचार सुनाती हूँ। तुम्हारे कारण जिम के पिताजी भारत की ओर खिंच गये थे और उन्होंने भारत के विषय में बहुत सारी किताबें मँगवायी थीं। उन किताबों के पन्ने उलटते-पलटते जिम भी हिन्दुस्तान से प्रेम करने लगा। तुम्हारी चिट्ठियों के कारण उसका प्रेम बढ़ता गया और उसी धुन में अब उसने सदा के लिए हिन्दुस्तान जाने का निश्चय कर लिया है। तुम शायद विश्वास न करो लेकिन यों सच्ची बात है, जस ज्यों-की-त्यों तुम्हें लिख रही हूँ। मेरी भी बड़ी इच्छा थी भारत जाने की और इसीलिए मैंने जिम को स्वीकार कर लिया है।

तारीख को हमारी शादी होगी और दूसरे दिन हम भारत के लिए रवाना हो जायेंगे। बम्बई पहुँचेंगे। अभी हमने इतना ही तय किया है कि सर्वप्रथम तुमसे मिलेंगे। फिर तुम हमें विनोबा के पास ले चलोगी। ले चलोगी न? और वहीं पर हम अगला कार्यक्रम तय करेंगे।

जिम कह रहा है कि 'रिटा किसी दुर्गम प्रदेश में घूम रही होगी। सैकड़ों मील पैदल चलने पर फिर कहीं हम उसके पास पहुँच पायेंगे।"

मैंने उससे कहा है मेरा विश्वास है कि रिटा बम्बई में ही हमारा स्वागत करेगी। अब मेरी लाज रखना तुम्हारे ही हाथों में है।

किसी का पता मुझे याद नहीं। उसे समाचार दे देना।"

शेष मिलने पर।

प्यार,
हेलन

मुझे लगा कि मेरी आँखें मुझे धोखा दे रही हैं। हेलन और जिम भारत आयेंगे सेवा करेंगे हम तीनों साथ रहेंगे। अद्भुत। कुछ देर तक मैं यही सोचती रही। मार्जरी ने पूछा 'घर से चिट्ठी आयी है?' 'जी हाँ

अमरिका से आयी है। मेरी एक सहेली अपने पति के साथ यहाँ पर आ रही है सेवा करने।

कमाल की है आप लोगों के अन्दर सेवा भावना।

मैंने तय किया था कि बिनी को मेरी बीमारी की खबर नहीं लगने दूँगी क्योंकि खबर पाते ही वह दौड़ी आयगी। मुझे अपने साथ से जादवी और यहाँ के लोहियाजना को दुःख होगा। इसी डर से मैंने उसे अब तक बीमारी के बारे में कुछ भी नहीं लिखा था। यद्यपि मेरा दिल उससे मिलना चाहता था। लेकिन अब तो हेमन्त जिम के आगमन की खबर उसे देनी ही थी। उसके साथ लिखा कि मेरा स्वास्थ्य थोड़ा खराब था अब ठीक है। मेरा पत्र पाते ही बिनी रात के हवाई जहाज से कलकत्ता आयी और फिर गया। मैं जानती थी कि गया का अस्पताल उसे अच्छा नहीं लगेगा। उसने हठ पकड़ लिया कि मैं तुम्हें तुरन्त बम्बई ले जाऊँगी। उस समय बुखार भी उतरा हुआ था। डॉक्टर ने अनुमति देते हुए कहा 'सफर में बड़ी तकलीफ होगी। बिनी ने तुरन्त जवाब दिया मैं इसे चार्टर्ड प्लेन से ले जाऊँगी। आप चिन्ता न कीजिये।

प्लेन दो-एक दिन नहीं मिल सकता था। आखिर हमने रेल-यात्रा का तय किया। चाचाजी को दुःख हुआ। 'यहाँ पर हम तुम्हारा ठीक इन्तजाम नहीं कर सके। उन्होंने भर्रायी हुई आवाज में कहा। मुझे चोट लगी। आप ऐसा न सोचें। यहाँ व्यवस्था में कोई कमी न थी। लेकिन मेरी सहेली ने बिलकुल हठ पकड़ लिया है। मैं मजबूर होकर जा रही हूँ।

बिनी के साथ मैं दूसरी दुनिया की ओर चल पड़ी लेकिन मन प्रसन्न नहीं था। मुझे दुःख था कि बिनी चाचाजी चाचीजी से ठीक तरह से बोली तक भी नहीं। ट्रेन में मैंने उसे कह दिया तो वह गुस्से में बोली तुम ऐसे ऐरे-गैरों से कैसे दोस्ती कर पाती हो? मुझसे ऐसा काम कभी नहीं होगा। उस गन्दी जगह में तुम इतने दिन तक कैसे रही?

तुम कैसे जान सकोगी? तुम इस धरती पर कभी रहती ही हो?

बीच में जब कभी बिनी को स्मरण हो आता तो कहती 'तुम बीमार हो इस तरह यहाँ बैठकर बातें करने से तुम्हें नुकसान होगा। और फिर चर्चा को आगे बढ़ाती। अमरिकी जीवन की स्मृतियों का लेन-देन करते-करते कभी-कभी आधी रात बीत जाती। हम तीन साल के बाद मिली थी। इस बार जब मैं भारत लौटी तब बिनी यूरोप चली गयी थी। हेलन के आने तक बिनी तीन साल के सारे किस्से सुनाना चाहती थी। इसलिए मैं अक्सर श्रोता ही बनी रहती। हर दो-चार दिन पर बिनी ड्राइव के लिए निकलती और मुझे साथ ले जाती। गाड़ी चलाते समय वह यह भूल जाती कि सड़क पर और लोग भी हैं। वह कहती कि मैं सिवा आदमी के और किसीको बचाने की चिन्ता नहीं करती हूँ। उसके साथ चलना जाना मुझे पसन्द नहीं था। इसलिए वह नाराज हो जाती थी। उसका गुस्सा दूर करने के लिए मैं रात्रि की नीरवता में उसके साथ घूमने निकलती।

जब मुझे मजबूरी से आराम करना पड़ा तब मैंने उसका उपयोग लेखन में किया। बिहार लौटने पर मेरे लिए शान्ति से लिखना संभव नहीं था। मैंने एक लेखमाला शुरू की जिसका शीर्षक था : 'मैं हजार मील चली'। पहला लेख प्रकाशित होते ही पथा के प्रकाशक ने लिखा कि उस लेखमाला को पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाय। उन्होंने मुझे कई बार कहा था कि पथा की परम्परा चलाना मेरा धर्म है। वे यह भी कहते थे कि 'आपके पिताजी ने पुस्तकों का रुपया चीनी बैंक के बजाय अमरिकन बैंक में रखा होता तो आप जिन्दगीभर आराम करतीं।

उस पहली पुस्तक को लिखने में मुझे समय का कोई खयाल न रहता। दिनभर लिखती ही रहती। लेकिन रात में बिनी मेरी कलम छीन लेती। दस-बीस मील का चक्कर काटे बगैर वह सो नहीं सकती थी। जिस दिन मैं अन्तिम अध्याय लिख रही थी उसी रात बिनी मुझे बाहर खींच ले गयी। घटाभर भटकने के बाद उसने सागर के किनारे एक शान्त एकान्त स्थान में गाड़ी खड़ी की। पूर्णिमा निकट थी। बरसात की पहली जोरदार

बौछार भी आ चुकी थी। सागर का यह रूप भी बड़ा सुहावना प्रतीत हो रहा था। बालू में चित्र बनाती हुई मिनी बोल रही थी

"मैंने तुम्हें उस पंजाबी युवक के बारे में कहा था जो लन्दन में मुझे मिला था। लेकिन शायद मैंने तुम्हें वह पूरी कहानी नहीं सुनायी। मैंने उससे शादी करने का फैसला किया और फिर तोड़ भी डाला। बैस डैडी ने भी उसको पसन्द नहीं किया था। एक बॉल के समय हमारा परिचय हुआ था। वह बहुत आकर्षक ढंग से नाचता था। इसी कारण मैंने उसे पसन्द किया। हमारी दोस्ती बढ़ती गयी। आठवें दिन हमने शादी तय की और तय करने के बाद चौथे दिन मैंने इनकार कर दिया। ठीक ही किया।

"इसका नम्बर कितना होगा ? मैंने विनोद में पूछा।

"होगा उन्नीसवाँ-बीसवाँ। लेकिन अब मैं गंभीरता से सोच रही हूँ। उस दिन मैंने तुम्हारा क्लब के चार दोस्तों से परिचय कराया था। व चारों मेरे पीछे पड़े हैं। मुझे तो इन सबसे बढ़ जर्मन इंजीनियर अधिक पसन्द है जो अभी शिमला में मिला था। लेकिन वह यहाँ पर पाँच साल से अधिक नहीं रहेगा।

"पाँच साल के लिए उससे शादी करने में कोई हर्ज नहीं है। मिनी मेरे विनोद को नहीं समझ पायी।

मैं भी यही सोच रही हूँ। इन दिनों तलाक भी आसानी से मिल जाता है लेकिन मैं तुम्हारी बात माननेवाली हूँ। बताओ मैं किसको स्वीकार करूँ। यह मत कहो कि यह मेरा विषय नहीं है। तुम मिनी को अच्छी तरह जानती हो। अब बताओ तुम्हारी मिनी के लिए क्या उचित होगा।

मुझे हँसी आ रही थी। लेकिन मिनी गंभीर थी। मैंने उस जर्मन के पक्ष में निर्णय दिया जिसको मैंने कभी देखा भी नहीं था।

मैं जानती थी कि मेरी सलाह की औकात क्या है ? बाद में पता चला कि उस जर्मन के लिए भारत में शादी करना कुछ कठिन है। फिर मिनी

ने बम्बई के चार गुजराती मित्रों में से एक युवक को पसन्द किया। उसके पिताजी करोड़पति थे और वह भी एक बार यूरोप हो आया था। जिनी कहती कि वह थोड़ा बड़ा है। इसलिए मैं उस पर अपनी सत्ता चला सकूँगी। अगर वह मेरे जितना चुस्त होता तो मुझे उसकी बात माननी पड़ती जो मेरे लिए असंभव था। जिनी के डैडी ने यह देखकर चैन की साँस ली कि उनकी बेटी ने सारी दुनिया घूमने के बाद गुजराती युवक को पसन्द किया।

हेलन और जिम के जाते तक मेरी पुस्तक पूरी हो गयी और स्वास्थ्य भी ठीक हो गया। हम तीनों जब विनोबाजी से मिलने केरल जा रहे थे तो रेल के तीसरे दर्जे के डिब्बे में बैठे हुए मुसाफिर सोचते होंगे कि इन तीन प्राणियों जैसे सुखी लोग शायद ही और कोई होंगे। लम्बे अर्से के बाद मैं ऐसे दोस्तों से बात कर रही थी जिनके पास मेरा दिल खुलता था। हेलन और जिम भारत को पहल-पहल देख रहे थे। मैंने जब उन्हें अपनी यात्रा के कुछ मजेदार किस्से सुनाये तो मारे हँसी के उनका दम फूलने लगा। यह कहानी बिहार की है। सर्दी के दिन थे। रात काफी हो गयी थी। मैं रजाई ओढ़कर सो गयी थी। थका हुआ शरीर चंद क्षणों में स्वप्न-लोक पहुँच चुका था। ग्यारह सवा ग्यारह बजे होंगे। किसीने सिर की तरफ से रजाई का पल्ला हटा दिया। मैं जाग गयी। दूसरी बहन लालटेन लिये खड़ी थी और चारपाई को घेरे हुए दस-बीस औरतों का एक झुण्ड खड़ा था। रजाई हटानेवाली गृहिणी थी जिसके घर पर हम ठहरे थे।

मैंने गुस्से से पूछा 'आप यह क्या कर रही हैं?' किसीने शान्ति से जवाब दिया 'हम आपका दर्शन करना चाहती हैं।' इतने में किसी बहन ने पैर की तरफ की रजाई हटा दी। 'पैर न उघाड़िये सर्दी से मैं ठिठुर रही हूँ।' मेरी प्रार्थना की ओर किसीने ध्यान नहीं दिया। दो-तीन बहनों ने मेरे पैरों की मालिश शुरू की। 'आप पैदल चलती हैं। महान् तपस्या करती हैं। हमें आपकी कुछ तो सेवा करने दीजिये।' मैं सोना चाहती थी लेकिन दर्शन और सेवा का यह हमला घंटों चलता रहा।

जिम शोखमिजाजी पर हसन से बोला : 'देखो यह हालत होगी तुम्हारी । तैयार रहो ।'

हसन ने तुरन्त कहा : "मेरी पूरी तैयारी है । तुम अपना देखो । खाने-पीने के मामले में तुमको ही अधिक तकलीफ होनेवाली है ।" उसने मेरे पास शिकायत दर्ज करते हुए कहा : 'रीटा मैं इसको अमरिका से ही कह रही हूँ कि यहाँ से मांस-मदिरा छोड़ दो, भारत में यह सब नहीं चलनेवाला है । लेकिन इसने मेरी बात नहीं सुनी । अब इसको खूब तकलीफ होगी ।'

जिम नहीं समझ पा रहा था कि अमरिका के जीवन में जो मामूली बात मानी गयी है उसको यहाँ पर इतना बड़ा क्यों माना जाता है ? समझता भी कैसे ? उसने अब तक एक ही दुनिया देखी थी ।

जो मुझे बिहार की पदयात्रा में देखते हैं उन्हें आश्चर्य होता है कि मैं किसी के घर कैसे रह पाती हूँ ? मेरे अमेरिकी दोस्त समझ नहीं पाते हैं कि मैं पद-यात्रा कैसे कर पाती हूँ ? इसी तरह मैं अलग-अलग दुनिया में रहती हूँ और मेरे जीवन के अलग-अलग हिस्से बनते जाते हैं । जिस तरह दुनिया के भिन्न-भिन्न देशों के बीच दीवारें खड़ी हो गयी हैं उसी तरह मेरी अलग-अलग दुनिया के बीच भी दीवारें खड़ी हो गयी हैं । भीतर की दीवारों को तोड़ने के लिए मैं कलम की कुदाली उठाती हूँ और बाहर की दीवारों पर प्रहार करना प्रारम्भ कर देती हूँ ।

●

नौ

•

"कम्युनिस्ट राज आया" हमारी मेल सुपारी के बगीचों के बीच दौड़ रही थी। मेरे चीनी नयन सुपारी के ऊँचे वृक्षों के सुकोमल निखरे हुए सौन्दर्य को अपनी पलकों के भीतर समेट रहे थे। सुपारी के बाग मुझे चीनी ललनाओं के समूह-से प्रतीत हो रहे थे। छरहरे बदन की एक-एक सहेली की स्मृति जाग उठी। हेलन का उक्त वाक्य मुझे एकाएक सुखमय अतीत से व्यथामय वर्तमान में खींच लाया। आह भरते हुए मैंने कहा "हाँ यहाँ भी वह आनेवाला है लेकिन उसकी याद अभी से क्यों दिला रही हो?" हेलन कुछ न समझ सकी और विस्मय की दृष्टि से मेरी ओर देखने लगी। उसके पास भारत का नक्शा था। उसके अनुसार अभी हम जिस स्टेशन से गुजरे थे वह हमें केरल पहुँच जाने की सूचना दे रहा था और जिसे हेलन शब्दों में दुहरा रही थी। जिम का ध्यान नक्शे की ओर था। "कितना छोटा-सा प्रदेश है यह! इधर सागर उधर गिरिवर" उसके शब्दों ने मुझे वास्तविकता की ओर खींचा। "अच्छा तुम केरल की बात कर रही थी। क्षमा करो। मेरा मन कहीं और था।"

जिम बोल उठा "हाँ चीन में होगा। लेकिन केरल में और तुम्हारे येनान में कुछ भी समानता नहीं दीखती है। येनान चीन के उत्तर में तो केरल भारत के दक्षिण में। येनान जंगल-पहाड़ों के प्रदेश में तो केरल सागर के किनारे। नक्शा कह रहा है कि केरल भारत का 'येनान' नहीं बन सकता है।

हेलन "नक्शा ही क्यों अखबार भी तो यही कह रहे हैं। तुमने नहीं पढ़ा कि केरल की जनता विनोबा का स्वागत कितने उत्साह से कर रही है। केरल की कम्युनिस्ट सरकार के मुख्यमंत्री विनोबा से मिलने गये थे और

कानून-मन्त्री ने तो अपनी सरकार की ओर से घोषित किया कि भारत में कानून का तरीका कारगर न होगा भूमि-समस्या विनोबा के हृदय परिवर्तन के तरीके से ही हल होगी।

जिम ने झट कहा 'कम्युनिस्टों पर कभी यकीन नहीं किया जा सकता है। पूर्वी यूरोप का सारा इतिहास यही बता रहा है। मुझे डर है कि ये कम्युनिस्ट मीठी-मीठी बातें करके भूदानवालों को भी अपने जाल में फांस लेंगे। उसके हर शब्द से उसके देशवासियों की भावना प्रकट हो रही थी।

हेलन 'पहले तुम इतिहास के जाल से छुटकारा पा लो। कम्युनिज्म के बारे में अपने सारे पूर्वाग्रह कायम रख हम शान्ति की खोज नहीं कर पायेंगे। इस अणुयुग की समस्याएँ तभी हल होंगी जब हम सारे पूर्वाग्रह छोड़ मुक्त मन से सोचेंगे।

मैंने समर्थन करते हुए कहा सर्वोदय-दर्शन का यह एक बुनियादी सिद्धान्त है कि अणुयुग की राजनीति में विश्वास-शक्ति का प्रयोग करना होगा। अब संशय और अविश्वासी राजनीति नहीं चलेगी।

जिम "लेकिन इतनी भोली मत बनो कि कम्युनिस्टों पर विश्वास कर उनकी हर बात मानने लगो।

हेलन ने आवेश के साथ कहा: 'आणविक अस्त्रों का ढेर इकट्ठा कर शान्ति की खोज करने के दिन लद चुके हैं। अब पूर्णतया नयी राह खोजनी होगी।

'अच्छा फिर खोजेंगे। फिलहाल जरा सामान समेट लिया जाय। गाड़ी आधे घंटे में एर्णाकुलम् पहुँचनेवाली है। जिम ने हँसते हुए कहा।

एर्णाकुलम् स्टेशन पर उतरते ही जिम मकान ढूंढने लगा। केरल में जनमत के बल पर साम्यवादी पक्ष सत्ताधारी बन गया तब से अमेरिकन समाचार-पत्रों में यही चर्चा थी कि क्या केरल भारत का येनान बनेगा?

चीन की साम्यवादी क्रांति का श्रीगणेश मलाबार में ही हुआ था। जिस 'केरल' को ढूँढ रहा था लेकिन मुझे पग-पग पर 'चीन' दिखाई दे रहा था।

चीनी गृह-निर्माण विज्ञान की यह विशेषता है कि किसीको यह पता ही न चलता कि उद्यान कहाँ समाप्त होता है और घर कहाँ आरम्भ होता है ? हम चीनी कभी सोच ही नहीं सकते कि बिना उद्यान के भी कोई घर होता है। गरीब-से-गरीब चीनी किसान की झोपड़ी के पास भी दो-चार फूल के पौधे जरूर होंगे। ये उद्यान पश्चिमवासों के जैसे कृत्रिम नहीं होते। प्रकृति में जितनी सुसंगति और रेखांकन है उसीकी अनुकृति है चीनी उद्यान। सत्रहवीं शताब्दी में लेन्फू ने कहा था कि उद्यान-गृह में वास्तुविद्या और कल्पना का ऐसा सुमधुर संयोग रहे कि जो है सो दिखाई न दे और जो नहीं है सो दिखाई दे। जब कोई विदेशी दस-पाँच ऊँचे वृक्ष फैली हुई कुछ लताएँ जैसा शोभाला और गुफियों के सुख देखता है तब वह सोच भी नहीं सकता कि वह किसी कोठी के पास पहुँचा है। लेकिन छोटे-से दरवाजे के भीतर घुसते ही उसे किसी जमींदार का आलीशान भवन दिखाई देता है। चीनी गृह-निर्माण कला की विशेषता है प्रकृति के साथ एकात्मता।

त्रिवन्द्रम से लेकर कासीकट तक सपाट और पहाड़ के बीचवाला प्रदेश है—केरल के उद्यान-गृहों की एक मनोहर मालिका। यहाँ अलग-अलग गाँव हैं ही नहीं सड़क के दोनों ओर सतत नारियल ताड़ और सुपारी की छाँह में स्थित छोटे-बड़े घर आँगन में केलों से लदे पेड़ अपने भारी-भरकम शरीर के भार से शाखाओं को झुकानेवाले कटहल समुद्र के पानी के छोटे मोटे शान्त गम्भीर जलाशय दिखाई देते हैं। यह सब देखकर मन हुआ कि यहीं बस जाऊँ। लेकिन यहाँ भी साम्यवाद मेरा पीछा कर रहा था।

मेरे अन्तर की अनामिका को भी पो साथ देने लगा।

'ऊपर अनन्त आकाश की नीलिमा
नीचे अनन्त वन की है हरीतिमा

खींच लगाती है मेरी यह वेदना
फैली इस धरती पर, ऊँचे इस अंबर में
देख सकूँगा स्वप्न दूर के इन आँखों से
झाँककर ऊँची पहाड़ियों के झरोखे से
तोड़ रही है मेरे अन्तर के तार-तार
असीम अगाध को मेरी यह आतुरता।"

विनोबाजी के साथ चर्चा करते समय मिस ने वही प्रश्न पूछा जो मेरे मस्तिष्क में मँडरा रहा था : 'इस नयनाभिराम प्रदेश में कम्युनिज्म कैसे फैला ?'

:

विनोबाजी ने मुस्कराते हुए कहा : "विज्ञान का सिद्धान्त है कि परस्पर विरोधी शक्तियों में परस्पर आकर्षण होता है।"

मिस ने आगे चलकर कहा : 'चीन भी ऐसा ही रमणीय प्रदेश है, लेकिन साम्यवाद के आगमन के पश्चात् चीनी जीवन में कोई रमणीयता नहीं रही है। मैंने अभी-अभी एक फ्रेंच पत्रकार की पुस्तक में पढ़ा है कि चीन के जीवन में अब विनोद भी नहीं रहा।

विनोद ? चीनियों का प्राणवायु। बोझ से दबा हुआ चीनी मजदूर भी विनोद में विश्राम पाता है। दो-चार बीघे जमीन से दस-बीस व्यक्तियों के परिवार के लिए पर्याप्त अनाज पैदा करने का व्यर्थ प्रयास करते हुए भी भूखा किसान विनोद से पोषण पा सकता है। मैंने यह सब निकटता से देखा था। बाहरवाले नहीं जान पाते कि चीनियों के अनाकर्षक भाव शून्य प्रतीत होनेवाले सपाट चेहरे के अन्तर में भावनात्मकता और विनोदी वृत्ति छिपी रहती है। हम चीनियों को प्रथम आर्य सत्य 'दुःख' का ज्ञान कराने के लिए बुद्धदेव की आवश्यकता नहीं है। सर्वथा प्रतिकूल परिस्थिति से जूझता हुआ चीनी किसान हँसता और हँसाता है। जीवन संग्राम में हारता हुआ भी वह पराजय को विनोद में टाल देता है। पर

यह विनोद अभी है नहीं कभी था। उस फ्रेंच पत्रकार की किताब के शब्द मेरे सम्मुख उपस्थित हुए : 'कम्युनिस्ट सरकार ने चूनी भांति के कुप्प में सबसे बड़ा बलि चढ़ाया—चीनी विनोद का। अब चीन के नगरों में पहले जैसे हास्य-विनोद के अट्टहास नहीं सुनाई देते। दिनभर की कड़ी मेहनत से थके-मांदे मजदूर चुपचाप घर लौटते हैं। शायद यह सोचते हैं कि बातचीत के सिलसिले में मुंह से यदि कुछ 'सत्य' निकल जायगा तो कम्युनिस्ट सरकार के कोप का शिकार बनना पड़ेगा। सम्भवत इसी डर से चीनियों ने मौनव्रत धारण कर लिया है।'

क्रूर किस्मत का मजाक उड़ानेवाले चीनी विनोद की अंतिम दर्द भरी चीख सुनना मेरे लिए असंभव हो गया। बाहर की किसी ध्वनि को सुनते समय कान बन्द किये जा सकते हैं लेकिन अंतर की आर्तध्वनि को कैसे रोका जा सकता है?

जिन सुना रहा था : 'कहा जाता है कि चीन की कम्युनिस्ट सरकार ने न सिर्फ चीनी विनोद को बल्कि चीनी सभ्यता को ही मिटा दिया है। मैं अमरीकन लोगों की राय नहीं निष्पक्ष तटस्थ व्यक्तियों की राय बता रहा हूँ।'

बिनाबाबी ने शान्ति से कहा : "दस-बीस साल की घटनाओं को लेकर किसी प्राचीन देश के बारे में कोई राय बनाना उचित नहीं है। चीन रूस जैसा आधुनिक देश नहीं है। साम्यवाद रूसी सभ्यता को आसानी से निगल गया। लेकिन चीन की पांच हजार साल पुरानी सभ्यता को पचा सकना साम्यवाद के बस की बात नहीं है। जरा समय बीतने पर लगेगा कि चीनी विनोद अपनी प्राचीन सभ्यता के साथ फिर से सिर उठा रहा है।"

प्रार्थना की घंटी बजी। भारतीय चीनी भक्त मानेंगे कि भगवान् ने [illegible] की नाईब की है। इन्सान को अपनी चाह पूरी करने [illegible] किसी तरह का आधार पर्याप्त मालूम होता है। मुझे भी [illegible] ऐसा लगा जैसे भगवान् कह रहा हो—"तथास्तु"।

बस गयी थी । उसने कहा "केरल में और सब तो अच्छा है, लेकिन उधर हमारे पिता की सम्पत्ति मेरे भाइयों को मिली और इधर सास की सम्पत्ति ननदों को । हम तो दोनों तरफ से गये । हेलन ने उससे कहा : 'तो फिर आप ग्रामदान का काम उठा लीजिये जिससे किसीके पास सम्पत्ति ही न रहेगी ।

हेलन और जिम जनता में घुल-मिलकर उनके दिल को करीब से जानने की बराबर कोशिश करते थे । उन्हें हिन्दी का ज्ञान न था इसलिए मेरे साथ विनोबाजी की सन्निधि का लाभ उठाकर ज्ञान-चर्चा सुनने में उन्हें कोई दिलचस्पी न थी । वे मुझसे कहते तुम तो बस रूखी-सूखी ज्ञान चर्चा सुनती रहती हो हमें चर्चा के साथ ही घर-घर में बढ़िया नाश्ता भी मिल जाता है । कटहल की चिप्स और भरमा केले का स्वाद तुम क्या जानोगी ? उनका कार्यक्रम उनके अमेरिकन स्वभाव के अनुकूल ही था । अमेरिकन लोग नहीं जानते कि दिन में दो बार तरपेट खा लने से भी काम चल जाता है । उनका मुँह दिनभर चलता रहता है । पकवानों की सूची के साथ वे मुझे रोज नयी-नयी बातें सुनाते 'रिटा आज तो बड़ा मजा आया । एक क्लर्क ने कहा कि उसने इस चुनाव म साम्यवादी पक्ष को वोट दिया । क्योंकि इससे पहलेवाले दो चुनावों म उसने कांग्रेस और प्रजा-समाजवादी पार्टी को वोट देकर महसूस किया था कि उनसे जनता की भलाई न होगी । इसलिए इस बार उसने तीसरी पार्टी का वोट देकर अपने नसीब को आजमाने की कोशिश की है ।' एक स्त्री ने तो खूब कहा सभी पार्टीवाले चोर-चोर मौसेरे भाई होते हैं । चुनाव से पहले बड़-बड़े वादे करते हैं और चुनाव के बाद उसे भूल जाते हैं । इसलिए मैंने तय कर लिया कि अब किसीको भी वोट न दूँगी ।

केरल में तीस फी सदी से अधिक लोग ईसाई हैं । छोटे-से गाँव में भी बड़ा गिरजाघर दिखाई देता है । ईसाई धर्म पहले भारत में फैला और उसके बाद लगभग दो सौ वर्ष बाद यूरोप में फैला । प्रथम ईसाई मिशनरी ईसा के पहली ही सदी में भारत आया था । उसकी समाधि मद्रास पास

में है, जो शंकराचार्य का जन्मस्थान है। ये दोनों महात्मा प्रसन्नता से साथ रह सकते हैं। लेकिन उनके चेले उनका नाम लेकर आपस में लड़ते हैं।

जिम ने कहा, "अधिकतर ईसाई मिशनरी कम्युनिस्टों के खिलाफ हैं। मुझे लगता है कि कम्युनिज्म का मुकाबला करने के लिए धर्मसंस्था का अच्छा आधार मिल सकता है। उधर अरब राष्ट्रों में भी इस्लाम धर्मसंस्था साम्यवाद को रोक रही है।

मैंने कहा, "मुझे यह नहीं जँचता है। आध्यात्मिकता एक सबल शक्ति है लेकिन धार्मिकता धर्मसंस्था में वही कट्टरपन है। उसमें व्यक्ति की स्वतन्त्रता का गला उसी तरह घोंटा जाता है जैसे साम्यवादी या नाजी तानाशाही में। धार्मिकता का बहिरंग भले ही अलग हो लेकिन अंतरंग वैसा ही है जैसा तानाशाही का।

जिम : "होगा, लेकिन आज तो धर्मसंस्था साम्यवाद को रोकने में सहायता कर रही है।

"यह निरा भ्रम है। साम्यवादी अधिनायकवाद से मुकाबला करने के लिए हमारे पास स्वतन्त्रता की सशक्त शक्ति होनी चाहिए। बुराई का प्रतिकार बुराई से नहीं हो सकता। अंधकार पर विजय पाने के लिए प्रकाश चाहिए, अंधकार नहीं।" मैंने आवेश के साथ कहा।

मैं जानती थी कि जिम में प्रामाणिकता है, लगन है, स्नेह-निष्ठा है। लेकिन उनके जैसे ही हमारे कुछ अमरिकन मित्र प्रामाणिकता से मानते हैं कि साम्यवाद एक आसुरी शक्ति है, उसे समाप्त किये बगैर मानव का कल्याण नहीं होगा और इस कार्य में किसी प्रकार के भी साधन इस्तेमाल किये जा सकते हैं। प्रत्येक सामान्य अमेरिका साम्यवाद का नाम सुनने पर आमादा हुआ है लेकिन वह नहीं जानता कि साम्यवाद क्या और कैसे फैलता है? उसे यह भी नहीं मालूम कि उसका मुकाबला कैसे किया जा सकता है। मेरे सारे अमरिकन मित्र साम्यवाद को जानते थे केवल पुस्तकों और समाचार-पत्रों के द्वारा। साम्यवादी सरकार की

सहायक शक्ति से मेरा सब कुछ लुट चुका था फिर भी मुझे लगता था कि अमेरिका में साम्यवाद के प्रति जो द्वेष और विरोध है उसमें अज्ञान है।

यह भी खूब रहा। आप मेरे प्रदेश में आयीं और मेरे घर नहीं आयगी? दो-चार दिन बाद सरल अचानक आ धमकी। मैं भूल ही गयी थी कि उसका घर यहीं पर है। मैं अपनी प्रथम भारतीय सहेली को भूल गयी। इससे मैं मन-ही-मन बहुत लज्जित हुई। "इस समय तो तुम काम के बोझ से लदी हो। फिर कभी अवश्य आऊँगी तुम्हारे घर।" मैंने अपना समझ कर कहा। विनोबाजी की यात्रा की व्यवस्था का काफी भार सरल के ऊपर था। पड़ावों की पूर्व तैयारी सभा की व्यवस्था दान प्राप्ति आदि कई काम करती हुई वह रात को ठीक से सो भी नहीं पाती थी। फिर भी वह मुझे अपने घर ले जाना चाहती थी। वास्तव में भारतीयों के आतिथ्य का मुकाबला शायद ही कोई कर सकता है।

जब से जिम और हेमन ने जाना कि सरल इस प्रदेश की प्रमुख कार्यकर्त्री है तब से उन्होंने उस पर प्रश्नों के हमले शुरू कर दिये। अतिथियों को बुरा न लगे इस खयाल से कार्य-व्यस्त रहती हुई भी सरल उनके लिए समय निकाल ही लेती।

जिम ने उससे वही सवाल किया जो उसका अपना सवाल था: "यहाँ पर साम्यवादी आपका बड़ा विरोध करते होंगे?

सरल — नहीं विरोध नहीं वे तो हमें अच्छा सहयोग दे रहे हैं। कहीं-कहीं विनोबाजी के पड़ावों की व्यवस्था भी उन्होंने ही की है।

जिम — आपको सहयोग देकर वे अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं अपने चुनाव में उनके लिए यह पूँजी काम आयगी।

सरल — सभी पार्टियाँ ऐसा ही करती हैं। सबका ध्यान चुनाव की ओर ही रहता है।

लेकिन सभी पक्ष एक-से नहीं होते। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी [illegible] में साम्यवाद की [illegible] है। अन्य पक्षों के जैसी वह कोई

का विचार क्रान्ति-विचार नहीं बल्कि भ्रान्ति-विचार है। साम्यवादी कट्टर धार्मिकों के जैसे पुरातन-पूजक हैं।

जिस ने तालियाँ बजायीं। मुझे याद आया—कठोपनिषद् का एक मंत्र। उसमें कहा गया है कि हमारी इंद्रियाँ बहिर्मुख होती हैं। इसलिए हम दूसरों का दोष पाते हैं लेकिन अपने को नहीं।

साम्यवादी पार्टी को सत्तारूढ़ करनेवाली केरल की जनता से विनोबाजी कहते थे "आप स्वेच्छा से स्वामित्व समर्पण कर भगवान् के यानी समाज के स्वामित्व की प्रस्थापना करें। विनोबाजी के आगमन के पूर्व केरल के चारों प्रमुख ईसाई संप्रदायों की ओर से एक वक्तव्य निकला था। उसमें कहा गया था कि प्रभु ईसु ने कहा है कि अपने पड़ोसी पर अपने जैसा प्यार करो। विनोबाजी उसी राह पर चलकर हमें भूदान कार्य के लिए प्रेरित कर रहे हैं। हर ईसाई को चाहिए कि वह उनके इस धर्म-कार्य में सहयोग करे। ईसाई धर्म-गुरुओं को भूदान पसन्द था लेकिन ग्रामदान नहीं। केरल-यात्रा के दौरान जब कुछ ईसाई प्रमुख विनोबाजी से मिले तो एक ने कहा कि 'हम ईसाई मानते हैं कि व्यक्तिगत संपत्ति पवित्र वस्तु है। विनोबाजी ने जवाब दिया मैं भी मानता हूँ कि इन्सान को अधिकार है अपनी मेहनत की कमाई पर। व्यक्तिगत स्वामित्व पवित्र वस्तु है लेकिन स्वेच्छा से उसका समर्पण पवित्रतर वस्तु है। सभी धर्मगुरुओं को समाधान मिला। और उन्होंने ग्रामदान कार्य के लिए हरी झण्डी दिखायी।

जब विनोबाजी साम्यवादियों से कहते कि आपका यह कर्तव्य है कि आप ग्रामदान का काम उठायें क्योंकि यह आपका ही काम है, तो कइयों को डर लगता कि साम्यवादी अपने मतलब के लिए इसका लाभ उठायेंगे। इस पर विनोबाजी कहते सर्वोदय समुद्रवत् है। क्या सागर किसी भी नदी का इनकार कर सकता है? वह हर नदी और नाले से कहता है कि मेरे पास आओ मैं तुमको अपना खारा रूप दे दूँगा।

साम्यवाद की गंगा और समाजवाद की यमुना आगे चलकर सर्वोदय सागर में लीन होनेवाली है। आक्षेप उठानेवालों को डर था कि साम्यवादी सर्वोदयवालों को खा जायेंगे। विनोबाजी को पूरा विश्वास था कि सर्वोदय-विचार साम्यवाद को आसानी से हजम कर लेगा। ईसाई धर्मपंथों से लेकर साम्यवादी पक्ष तक विभिन्न दिशाओं में बहनेवाली भिन्न-भिन्न सरिताओं को आत्मसात् कर लेनेवाले सर्वोदय-सागर की कल्पना कर मुझे एक ही साथ असीम आनन्द और अपार दुःख की अनुभूति हुई।

एक दिन हेमन ने विनोबाजी से कहा : 'आप चीन जायेंगे तो चीनी जनता भी आपका इसी तरह प्रेम से स्वागत करेगी।'

विनोबाजी मुसकराये : 'लेकिन चीनी सरकार इजाजत देगी?'

हेमन : 'अगर न दे तो क्या करना होगा? इसे तो आप ही अच्छी तरह से जानते हैं।'

विनोबाजी : 'हाँ-हाँ, जानता हूँ और वही तो मैं कर रहा हूँ। यह युग है भाई, आई० सी० बी० एम० का। अब किसी देश पर बम गिराने के लिए वहाँ जाने की कोई आवश्यकता नहीं रह गयी है। अपने ही स्थान पर बैठकर बटन दबाया और महाअस्त्र ठीक उसी स्थान पर जा गिरा। तो हम भी यहीं बैठे-बैठे चीन पर प्रेमास्त्र फेंका करें।'

मैंने कहा : "बुद्धि से यह मान्य हो सकता है, लेकिन मन नहीं मानता।"

विनोबाजी : "इस विज्ञान युग में मन की भूमिका पर रहने से काम नहीं बनेगा। मन से परे आत्मज्ञान की भूमिका पर जाकर चिन्तन करना होगा, तभी इस युग की समस्याएँ हल हो पायेंगी। उपनिषदों में भी यही क्रम बताया है। 'मनो ब्रह्मेति' के पश्चात् 'विज्ञानम् ब्रह्मेति' की भूमिका पर जाना है।"

उस समय मुझे लगा कि मैंने यह सब समझ लिया और मुझे नया प्रकाश मिल गया। लेकिन कुछ दिन बाद पता चला कि केवल बिजली चमकी थी, प्रकाश नहीं मिला। काश्मीर शास्त्रों में दर्शन के दो प्रकार बताये गये हैं—प्रातिभ दर्शन और अनुदर्शन। मानव को बिजली की चमक-सा

प्रातिभ दर्शन कभी हो भी जाता है लेकिन सतत प्रकाश देनेवाले सूर्य-सा अनुदर्शन तब होता है जब कि 'हिरण्मय पात्र' का आवरण पूरा खुल जाता है। तब कहीं भीतर छिपे हुए सत्य का दर्शन हो पाता है। मैं चीनी हूँ मैं अपने देश की कुछ भी सेवा करने म असमर्थ हूँ। इस भाव-आवरण ने मेरे मन को ढाँक लिया था। इसीलिए मुझे भान नहीं हो रहा था कि मैं कौन हूँ? राजपुत्र सिद्धार्थ ने गृहत्याग तब किया जब कि उसने तीसरे दुःख को देख लिया था। जीवन पर प्रचण्ड आघात करनेवाला वह तीसरा दुःख क्या अभी तक मुझसे दूर है?

विनोबाजी ने लिम हेलन को मेरे साथ बोधगया के समन्वय आश्रम मे रहने की सलाह दी। हम तीनों को बड़ी खुशी हुई कि अब हम साथ रहकर काम कर पायेंगे। समन्वयाश्रम की जन्मकथा अद्भुत है। सन् ५४ मे गया जिले की यात्रा करते समय विनोबाजी ने बार-बार कहा था कि 'इस युग की माँग है वेदान्त और अहिंसा का समन्वय। इस प्रकार से समन्वय का प्रयोग करने के लिए बोधगया में कोई केन्द्र खोला जाय तो अच्छा होगा। उन्होंने यह भी तय किया था कि जमीन दान मे मिलने पर ही काम प्रारम्भ होगा। बुद्ध-मन्दिर के बिलकुल समीप पाँच एकड़ जमीन का टुकड़ा था। बोधगया के महन्त उसके मालिक थे। थाइलैण्ड लंका जापान जैसे कई बौद्ध देशो की सरकार लाखों रुपया देकर वह जमीन खरीदना चाहती थी। लेकिन महन्तजी ने पैसे की परवाह न करते हुए वह जमीन विनोबाजी को दान दे दी और वहीं पर समन्वय आश्रम की नींव डाली गयी। आश्रम की भूमि पर कुँआ खोदने का काम चला और खोदते समय काले पत्थर की एक अखण्डित सुन्दर बुद्ध-मूर्ति प्राप्त हुई। मानो बुद्धदेव का प्रत्यक्ष आशीर्वाद प्राप्त हुआ। यह कहानी मेरे चित्त को छू गयी। रमन और लिम का मानस मुझसे भिन्न था। वे दोनों बाइबिल के संस्कारों मे पले थे। बोधगया बुद्ध-मूर्ति समन्वयाश्रम जैसे शब्दों के उच्चारण मात्र से मेरे अन्तर मे जो अनुभूति उठती वह उनके लिए संभव न थी। इसी तरह मानस में भेद पैदा होता है। केवल शब्दों

की ही नहीं हृदय की भी भाषाएँ भिन्न हो जाती हैं और फिर कोई किसीकी भावा नहीं समझ पाता।

'आपको बोयमया अच्छा लगगा ? किसीने हँसकर से पूछा। उसने सहजता से उत्तर दिया क्यों न अच्छा लगेगा ? मेरी प्रिय रिटा का यह प्रिय स्थान है और रिटा मुझे प्रिय है तो यह स्थान भी मेरे लिए उतना ही आकर्षक है।"

बस ही सारी दुनिया की भाषा एक न हो लेकिन एक हृदय की भावा को दूसरा हृदय समझे। दिलों को जोड़ते हुए हमें जगत् को जोड़ना है और उसका प्रारम्भ अपने ही जीवन से करना है। ०

दस

•

बगीचे की किसी लता के सुकोमल कोंपलों में छिपी हुई कली को देख मम्मी के पास दौड़कर शुभसमाचार सुनाये बगैर मुझे चैन नहीं पड़ता था। मेरे बालमन के लिए यह एक पहेली थी कि कल तक जहाँ हरी कोंपलें दिखती थीं वहाँ आज एकाएक यह नन्ही-सी कली कैसे और कहाँ से आ गयी ? पपा को बगीचे का बड़ा शौक था। आखिर वे चीनी जो थे। विदेशगमन से पहले भी वे कई दफा भिन्न-भिन्न देशों की यात्रा कर आये थे। विदेश-यात्रा से लौटने पर वे उस देश के फूल-पौधों और वृक्ष-लताओं पर लेख लिखते तथा हर नये पौधे की कलम हमारे बगीचे के लिए ले आते। मगर कोई पौधा जड़ न पकड़ सकता तो वे लिखते : न विदेश का हर पौधा चीन की भूमि में जड़ पकड़ेगा और न विदेश का हर विचार। चीन की धरती उस पौधे को कभी स्वीकार नहीं करेगी जो उसमें मेल न खाता हो। हम चीन-देशवासियों को भी चाहिए कि बाहर से आनेवाले हर विचार की अच्छी तरह छानबीन करें और ग्राह्य विचारों को ग्रहण कर अग्राह्य को फेंक दें। भारत से आया हुआ अहिंसा तथा करुणा का बुद्ध-विचार हमें लेने योग्य लगा इसीलिए हमने उसे अपनाया। पश्चिमवालों का समता स्वतन्त्रता और बन्धुता का विचार हम अवश्य लेंगे लेकिन उनके यंत्रीकरण केन्द्रीकरण और युद्धों को अस्वीकार करेंगे। फूल के पौधों से प्रारम्भ कर दर्शन तक छलांग लगाना चीनियों के लिए सहज था। हम नहीं मानते कि दर्शन कोई ऐसी चीज है जो चन्द व्यक्तियों की बपौती हो सकती है। जीवन की हर छोटी मोटी चीज से हमें दर्शन हासिल होता है। कविता के रस का स्वाद मिलता है और उसका आनन्द भी। हम चीनी जीवन से प्रेम करते हैं।

हमारे लिए जीवन कमलपत्र पर गिरे हुए जल-बिन्दुओं जैसा है। नव मुकुलित नयनाभिराम पंकज की पलकों से बिखरे वे आँसू कहते हैं—'जीवन में सुख के क्षण अल्पजीवी हैं, इसीलिए वे बड़े अनमोल हैं।

अमेरिकी डाक टिकटवाले लिफाफे मेरे पास अक्सर आते और आसपास के स्कूल के लड़के हमेशा मुझसे माँग ले जाते। एक दिन मेरे पास एक भारी बंडल आया, जिस पर कई अमेरिकी डाक टिकट चिपके हुए थे। बच्चों को टिकट देने के बाद मैंने बंडल खोला। रंग-बिरंगे चिकने-चमकील आकर्षक मुखपृष्ठवाली किसी किताब की दो प्रतियाँ थीं। 'मैं हजार मील चली' लेखिका 'रिटा'

मम्मी अन्ना पर झिलमलाती हर कली को तुम्हारी प्रशंसाभरी आँखें प्यार से निहारती थीं और आज अपनी प्यारी बिटिया की जीवनलता की खिली हुई प्रथम कलिका को क्या तुम नहीं देखोगी? भले ही सारा जगत् इस फूल की प्रशंसा करे, मगर मम्मी-पपा के दुलारभरे शब्दों के बिना...

आँसुओं से भरी आँखों को वह रंग-बिरंगा चमकीला चिकना आकर्षक इन्द्रधनुष-सा प्रतीत हुआ। सचमुच मानव-जीवन इन्द्रधनुष-सा ही होता है। हर्ष और विषाद की छायाएँ एक-दूसरे में मिली हुई नजर आती हैं, वेदना और सुख-संवेदन के अलग अलग रंग बताना संभव नहीं होता।

मम्मी, तुम स्वयं कुछ क्यों नहीं लिखती? सिर्फ पपा की किताबों का अनुवाद क्यों करती रहती हो?" मैं अक्सर मम्मी से पूछती।

पपा ने लिखना आरम्भ किया था चीनी में ही। यद्यपि बाद में वे अंग्रेजी के भी अच्छे लेखक माने जाने लगे। मम्मी उनकी किताबों का अंग्रेजी अनुवाद बहुत सुन्दर करती थीं। मैं उनसे कहती: "तुम्हारी शैली कितनी अच्छी है। तुम स्वयं अपनी ओर से भी कुछ लिखो।

मम्मी मुझे पुरानी स्मृतियाँ सुनातीं, "मैं जब कॉलेज में थी तब बहुत लिखा करती थी। लेकिन ... के आते ही मेरा साथ सब छूट गये। तब

उसका अन्य किसी भूमि में जड़ पकड़ना संभव न था। लेकिन ममी ने असंभव को संभव बनाया। पपा की चीनी भाषा की सारी सुन्दरता को अंग्रेजी अनुवाद में उतार दिया। कुछ वर्ष के पश्चात् पपा स्वयं अंग्रेजी में लिखने लगे। उनके प्रशंसकों को कभी पता न चला कि उनकी अंग्रेजी शैली उनकी अपनी नहीं है। अमेरिका से शिक्षा-दीक्षा लेकर आयी हुई मेरी आधी अमेरिकन ममी बुनियाद का पत्थर ही बनी रहीं जिस पर पपा का कीर्ति-मंदिर खड़ा हुआ।

'ममी तुम पपा से भी अच्छा लिखती हो' मैं बार-बार उनसे कहती। मुझे दुलार से सहलाते हुए वह उत्तर देतीं "ममी और पपा दोनों से अच्छा लिखेगी हमारी विर्मलिंग। जिस दिन मैं तुम्हारी पहली किताब इन्हीं आँखों से देखूँगी तो मानूँगी कि अब मुझे और कुछ पाना ही नहीं। हम दोनों यह अनुभव करेंगे कि हमारा जीवन सफल हो गया।

आकर्षक चमकीले मुखपृष्ठवाली उस किताब के साथ प्रकाशक महोदय का पत्र भी आया था। उन्होंने लिखा था: 'हम पश्चिमवालों को [illegible] चीन के जनगण का परिचय कराया उस सुप्रसिद्ध चीनी लेखक की कन्या की यह पहली कृति प्रकाशित करते समय मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

[illegible] के आँगन में आरम्भ से झूलनेवाला सुमन नहीं जानता कि [illegible] की गोद में छिप गया है अदृश्य हो गया है।

[illegible] की भूरि भूरि प्रशंसा कर प्रकाशक महोदय ने अन्त में लिखा था [illegible] अपने अनुभवों को हृदय [illegible] प्रतिबिम्बित किया है। मेरा विश्वास है कि अत्यन्त महान् [illegible] आप भी मौलिक उपन्यास की रचना अवश्य करेंगी।

[illegible] पपा का नाम विख्यात था विचारक और दार्शनिक [illegible] ममी उनके सिर्फ तीन उपन्यासों का ही अंग्रेजी अनुवाद कर [illegible] इसके बाद ममी उस काम के लिए अधिक समय नहीं

वे सभी थी । लेकिन उन तीन उपन्यासों ने ही पश्चिमी जगत् में धूम मचा दी थी । पपा अपना हर उपन्यास चीनी में लिखते थे । उनका कहना था कि 'विचारों की अभिव्यक्ति अन्य भाषाओं में भी हो सकती है लेकिन हृदय के भावों को मातृभाषा में ही व्यक्त किया जा सकता है' । ममी जब गर्व के साथ पपा को सुनाती कि 'विंग ने स्कूल में अंग्रेजी निबन्ध में सबसे अधिक नम्बर प्राप्त किये हैं' तो पपा कहते कि 'विंग को जब साहित्य सृजन की स्फूर्ति होगी तब वह चीनी में ही लिखेगी अंग्रेजी में नहीं' । पपा चाहते थे कि मेरा चीनी ज्ञान परिपूर्ण हो और इसीलिए सैकड़ों कामों में व्यस्त रहते हुए भी वे मुझे चीनी सिखाने का समय निकाल ही लेते थे ।

चीनी साहित्य दो विभागों में बँटा हुआ है—विचार प्रवर्तक और मनोरंजनात्मक । सत्य-दर्शन करानेवाले प्रथम विभाग को चीनी समाज में प्राचीन काल से ही ऊँचा स्थान प्राप्त था । भावाभिव्यक्तिवाले दूसरे प्रकार के साहित्य का स्थान निम्न था और उपन्यासों कहानियों का स्थान तो निकृष्ट ही माना जाता । इसी कारण प्राचीन साहित्य में सर्वोत्तम उपन्यासों की संख्या अपेक्षाकृत कम है । लेकिन काव्य को अपवाद माना गया था । उसका स्थान बहुत ऊँचा था । चीनियों के पास भावाभिव्यक्ति का यही एक माध्यम था जिसकी समाज में प्रतिष्ठा थी । इसलिए चीनी काव्य जगत् अन्य किसी भी भाषा के सर्वोत्तम काव्य की बराबरी कर सकता है । चीनियों के जीवन का सारा आनन्द काव्य में भरा है । चीनी विद्वानों के ज्ञान को परखते समय भी उनका लिखा काव्य देखा जाता था । प्राचीन चीनी नाटकों में संवाद की अपेक्षा संगीत का भाग अधिक रहता था ।

हम चीनी मानते थे कि दुनिया में अगर कोई सभ्यता है तो हमारी ही है । चीन को छोड़ बाकी सारी दुनिया असभ्य असंस्कृत है । चीनी भाषा में विदेशी के लिए जो शब्द इस्तेमाल किया जाता है उसके मानी है—"जंगली असभ्य । पश्चिमवालों के सम्पर्क से चीनी अभिमान को बड़ा धक्का लगा । हमने पहली बार देखा कि पश्चिमवालों के पास न

सिर्फ विज्ञान है बल्कि ऐसा दर्शन और साहित्य भी है जो शायद हमसे ऊँचा है। पश्चिमी सभ्यता के हमले से चीन की जड़ें हिल गयी। उसके परिणामस्वरूप हर बात में पश्चिम का अनुकरण करने की प्रवृत्ति बढ़ती गयी। पपा को यह सब पसन्द न था। वे चाहते थे कि अपने दिल और दिमाग के दरवाजे बाहरी विचारों के लिए अवश्य खुले रखें जायें लेकिन अपना चीनीपन हम न भूलें। पुराने चीन में उपन्यास लिखना प्रतिष्ठा की बात नहीं थी। लेकिन आधुनिक चीन में उसके खिलाफ बगावत आरम्भ हुई जिसमें पपा का भी हिस्सा था।

हमारे प्रकाशक महोदय चाहते थे कि पिता के समान पुत्री भी उपन्यास लिखे। वे क्या जानेंगे कि मेरे पास भावाभिव्यक्ति का एक ही माध्यम है—चीनी-भाषा जो आज मुझसे दूर चला गया है। अब मैं चीनी में कैसे लिखूँ? और कुछ लिखूँ भी तो मेरे चीनी भाई-बहन उसे पढ़ भी तो नहीं सकते। हाय! मेरे अन्तर के भाव शब्दों का सहारा लेकर व्यक्त जगत् में अब कभी अवतरित न हो सकेंगे। मेरी भावभाषा—मेरी अभिव्यक्ति का सहारा मुझसे दूर है पास है केवल एक विदेशी अंग्रेजी भाषा जिसमें मैं कुछ मूक विचार मात्र प्रकट कर पाती हूँ। चीन की भूमि पर जब लाल झण्डा फहराया गया तभी से नियति की इच्छा जाहिर हो गयी कि चीनियों के दिल न हों और अगर हों भी तो कभी प्रकट न हों। अमरिकन प्रकाशक महोदय यह सब कैसे जानेंगे?

लिफाफों को अलग रख मैंने मेज साफ देखी। बहुत-से पत्र एक साथ आये थे। पत्र खोलने समय सबसे पहले हम अक्सर उनके पत्र पढ़ते हैं जो हमारे प्रियतम हैं। फिर प्रियजनों की बारी आती है और अन्त में परिचितों की। मैं भी यही करती तो मुझे एक कटु सत्य का भान होता कि अभी भी मेरे मन में अपने-पराये का भेद मौजूद है। सर्वत्र समभाव का विचार होठों पर है दिल में नहीं। इसीलिए मैंने वर्णाक्षरों का क्रम अपनाया। सबसे पहले अमरिकन प्रकाशक महोदय का पत्र देखा जिसमें उन्होंने यह

भी पूछा था कि किताब की रायल्टी के रुपये कहाँ रखे जायें ? उन्होंने यह सलाह भी दी थी कि अमेरिकन बैंकों में रुपये जमा करने में बुद्धिमानी है। वे शायद सोचते होंगे कि कहीं भारत में भी कम्युनिज्म आ गया तो पिता की तरह पुत्री की भी सारी संपत्ति छीन ली जायगी। मैंने तय किया उन्हें लिखूँगी कि कुल रकम भारत भेज दी जाय। मन ही मन सारा आयोजन भी कर डाला कि किस संस्था को कितने रुपये दूँगी। अपने पास कुछ भी नहीं रखूँगी।

उसके बाद बम्बई से आया हुआ जिनी का पत्र खोला। उसने बड़े आग्रह के साथ अपने विवाह-समारोह में सम्मिलित होने का निमंत्रण भेजा था। मन में विचार आया कि जिनी को इस अवसर पर कोई अच्छा-सा उपहार देना होगा तो किताब के कुछ रुपये अपने पास रख लेने में क्या हर्ज है ? फिर मुझे बड़ी हँसी आयी। मेरा अपरिग्रह का संकल्प एक दिन से अधिक नहीं टिक पाया था। जिनी सारी दुनिया देख चुकी थी। मेरे लिए समस्या थी कि उसके योग्य कौन-सा उपहार दूँ। विवाह-समारोह दिल्ली में होनेवाला था। शायद वर-वधू के माता-पिता को अपने वैभव के प्रदर्शन का सबसे उपयुक्त स्थान दिल्ली ही मालूम हुआ होगा। क्योंकि केन्द्रीय सरकार के मंत्री उच्च अधिकारी विदेशी दूतावास के सभी ऊँचे लोग आदि दिल्ली में थे। जिनी के पिताजी की हर बड़े नगर में एक कोठी थी। वे बड़े गर्व के साथ कहा करते थे कि "मैं प्रान्तवादी नहीं हूँ सच्चा भारतीय हूँ। हर प्रान्त में मेरा घर है।" मैं जानती थी कि जिनी मेरी एक न सुनेगी। मैं दिल्ली न जाऊँ तो वह विवाह-मंडप को छोड़ चार्टर्ड प्लेन लेकर मेरी खोज में दौड़ी आयेगी। इसीलिए मैंने उसके निमंत्रण पर वहाँ जाने का ही निश्चय किया।

सुधीर ने लिखा था "सन् सत्तावन समाप्त हो रहा है। दिसम्बर की ३१ तारीख तक हमें भूदान में पूरी ताकत लगानी है। इधर बिहार जैसी कामयाबी नहीं हो रही है फिर भी काम अच्छा और ठीक चल रहा है। आपको हमारे लिए कुछ समय देना ही होगा। मैं जानता हूँ कि इस समय

आपके लिए नया जिला छोड़ना कठिन होगा फिर भी मेरी विनम्र प्रार्थना है कि आप महाराष्ट्र आयें। आपके आगमन से हमें कितना बल मिलेगा आप स्वयं देख लेंगी।

सन् सत्तावन के महत्वपूर्ण दिनों में मैं काम छोड़कर किसी की शादी के लिए दिल्ली जाने का अपराध करनेवाली थी। इसलिए सुधीर का निमंत्रण स्वीकार कर उसका प्रायश्चित्त करने का सोच लिया।

कोई विश्वास नहीं करेगा कि भारत में लम्बे अर्से से रहने पर भी मैंने अब तक दिल्ली नहीं देखी थी। दिल्ली का मुझे बड़ा आकर्षण था लेकिन कोई एक ताकत मुझे दिल्ली की ओर खींचती तो दूसरी दिल्ली से दूर। इस खींचातानी में मैं अब तक दिल्ली से दूर ही रही।

'पीकिंग' और 'दिल्ली' इन दो नामों में एशिया का मानो प्राचीन सभ्यता का सारा इतिहास समाया हुआ है। एक-दूसरी से होड़ नहीं सहयोग करनेवाली दो महान् संस्कृतियों के ये दो प्राणवान् प्रतीक हैं। हजारों साल पहले जब मनुष्य इतिहास लिखना नहीं जानता था उस युग से एक प्रक्रिया चल रही है। चीन जैसे विशाल देश के उत्तर में स्थित पीकिंग और भारत जैसे विस्तीर्ण देश के उत्तर में स्थित दिल्ली अनेक साम्राज्यों के उदय और अस्त देखते रहे हैं। कोई पराक्रमी वीर शस्त्र उठाकर अपने-अपने देशों को पादाक्रांत करता और उधर पीकिंग तथा दिल्ली में नूतन साम्राज्य की नींव पड़ जाती। उदय के बाद मध्याह्न आता। संस्कृति के विविध पहलू अपने समस्त वैभव के साथ निखर उठते और फिर वैभव का सूरज अस्ताचल की ओर बढ़ता। देश में फूट पैदा होती। भिन्न-भिन्न प्रदेशों में अलग अलग छोटे राजे सरदार अपना सिर उठाते। साम्राज्य की जड़ उखड़ती। देश में गृह-युद्ध का सिलसिला शुरू हो जाता। फिर कोई दूसरा वीर निकलता। देश को एक बनाता। नये साम्राज्य की स्थापना करता। लेकिन विजेता वीर चाहे जो हो चीन की राजधानी बनती वही पीकिंग और भारत की वही दिल्ली। कभी कोई विदेशी आक्रामक आता शस्त्र-बल से अपनी सत्ता जमाता। लेकिन चीन पर

आक्रमण करनेवाले विदेशी चीनी बन जाते। चीनी सभ्यता में समा जाते और उनकी राजधानी होती पीकिंग और इधर भारत पर अपनी सत्ता लादने की कोशिश करनेवाले विदेशियों की हस्ती भारत की सभ्यता में विलीन हो जाती और वे अभारतीय भारतीय बन जाते उनकी राजधानी होती—'दिल्ली'।

अब चीन का प्राचीन साम्राज्य मिट चुका था। प्रजातन्त्र का ढाँचा अपनाकर चीन को मजबूत राष्ट्र बनाने का यत्न करनेवाले च्यांग की सरकार भी गिर चुकी थी। साम्राज्यवाद सामन्तशाही पूँजीवाद को खत्म करने पर तुले हुए साम्यवादियों ने चीन में अपने पैर जमा लिये थे और जनता की तानाशाही स्थापित की थी। लेकिन उन्होंने राजधानी बनाया 'पीकिंग' को जो चाऊ चेन मिंग चिंग सम्राटों की नगरी थी। भारतीय जनता ने अंग्रेजी सल्तनत को समाप्त कर स्वराज्य प्राप्त किया था लेकिन उसने भी राजधानी बनायी 'दिल्ली' को जो हिन्दू मुगल और अंग्रेज सम्राटों की नगरी थी। नयी आशाएँ, आकांक्षाएँ और नये सपने लेकर पीकिंग और दिल्ली ने नयी राह चलना शुरू किया था।

दिल्ली का इतिहास मुझे बुला रहा था और उसका वर्तमान मुझे रोक रहा था। नयी दिल्ली में 'लाल चीन' की सरकार का दूतावास था जिसमें मेरे देशवासी रहते हैं जो मेरी भाषा बोलते हैं।

चीनी की आधुनिकतम ढंग की शानदार चमचमाती गाड़ी दिल्ली की चिकनी चौड़ी सड़कों पर तेजी से दौड़ रही थी और मैं देख रही थी दिल्ली को। मैं बम्बई कलकत्ता और मद्रास जैसे बड़े शहरों को देख चुकी थी किन्तु न जाने क्यों मुझे लगता था स्वतंत्र भारत की राजधानी अन्य शहरों से कुछ भिन्न होगी। बम्बई जैसी व्यापारधानी से हम कुछ खास अपेक्षा नहीं करते हैं। लेकिन गांधीजी के बलिदान से पुनीत बनी हुई गांधी-शिष्यों की नयी दिल्ली राजधानी नहीं लोकधानी होगी ऐसी आशा अकारण ही मेरे मन में छिपी थी। हम जैसे विदेशियों को भारत

आते ही चोट न पहुँचे इसलिए कभी तो कम-से-कम भारत की राजधानी का स्वरूप वास्तव में भारतीय होना चाहिए था।

दिल्ली के कनॉट प्लेस में दुनिया के हर देश की हर चीज मिल सकती है। बिनी के लिए भारत की कला का कोई अच्छा-सा नमूना खरीदने के लिए मैंने काफी दूकानें देख डालीं लेकिन मुझे कोई भी चीज पसन्द न आयी। आखिर अनायास मेरे पैर एक चीनी दूकान की ओर बढ़ गये। दिल चाहता था कि दूकानवाले भाई से अपनी भाषा में बात करूँ। चीनी चीजों के दाम अपनी भाषा में पूछूँ। लेकिन अमेरिकन नागरिक होने का स्वाद रखती हुई मैं ठीक अमेरिकन उच्चारण में बोलने लगी। उस चीनी दूकान की हर चीज मुझे आकर्षक प्रतीत हुई। आखिर मैंने बिनी के लिए चीनी कला का एक सुन्दर प्रतीक चीनी मिट्टी का 'टी-सेट' खरीद लिया। उस 'गुड़िया' कला के दाम की ओर मेरा ध्यान न था। 'टी-सेट' पर हलकी अस्पष्ट रेखाओं से की गयी चीनी प्रकृति की प्रतिकृति को मैं अपनी आँखों में भर रही थी। चीनी कलाकार मानते हैं कलाकृति वह है जिसमें थोड़ा-सा व्यक्त किया जाता है और बाकी रसिकों की कल्पना के ऊपर छोड़ दिया जाता है। उस दूकान की हर चीज मेरी भाषा में मुझसे बात करने लगी। हर चित्र की हलकी रेखाएँ मुझे चित्रकला के सिद्धान्त समझाने लगीं।

बिनी की भी राय मुझ जैसी ही थी कि उसे जो सैकड़ों कीमती उपहार मिले हैं उन सभी सितारों में चाँद था वह 'टी-सेट'। उसने कहा : 'इस आकर्षक टी-सेट के लिए अब बढ़िया चीनी चाय मँगवानी पड़ेगी।' बिनी ने चीनी चाय चखी थी। प्रतिदिन अमरिका में वह सुबह हमारे कमरे में चीनी चाय का जायका चखते-चखते मुझसे पूछ लेती कि हम चीनी मानते हैं कि चाय बनाना ललित कलाओं में से एक श्रेष्ठ कला है और चाय पीना भी उसी कला का एक अंग है।

शादी के लिए एक ही दिन बाकी था। घर में सर्वत्र आमोद-प्रमोद

जम रहा था । रात का साढ़े ग्यारह बज जिनी ने मुझस कहा 'चलो बाहर घूम आने का दिल करता है ।

दिसम्बर की सर्दी में मध्य रात्रि के समय दिल्ली की निर्जन शान्त सड़कों पर दौड़नेवाली कार की गति में हमें बड़ा आनन्द आ रहा था । कुछ देर बाद कार चलाने की मेरी इच्छा हुई । 'जरा ह्वील दो मेरे हाथ में । गाड़ी दौड़ रही थी और हमने जगहों की अदला-बदली कर ली । जिनी ने कहा तुम्हारे हाथ में ह्वील रहने पर मेरी गाड़ी के लिए कोई खतरा नहीं रहेगा ।

'बस-बस । कल तो तुम अपनी गाड़ी का ह्वील दूसरे किसीके हाथ में देनेवाली हो ।

'कदापि नहीं' जिनी ने हॉर्न बजाते हुए निश्चय के साथ कहा । मैं उसकी ओर देखती ही रह गयी । उसने धीमी आवाज में कहा : कभी-कभी लगता है कि मैं नाहक इस जजाल में फँस रही हूँ । उधर घर पर मेहमानों की भीड़ इकट्ठा हुई है और इधर दिल चाहता है कि कहीं भाग जाऊँ ।

मैंने पूछा 'भागकर क्या करना चाहती हो ?

'यही तो नहीं जानती जानती होती तो भाग जाती । आज तो मैं यह भी नहीं समझ पा रही हूँ कि आखिर मैं किसलिए जी रही हूँ ।"

"कल पता चलेगा" मैंने विनोद करने की कोशिश की लेकिन जिनी गम्भीर होकर बोल रही थी 'मजाक न करो । मैं चाहती हूँ कि वह 'कल' कभी न आवे । उधर मेरी भारतीय परम्परा मुझे कल के दिन की महिमा समझा रही है और इधर मेरा मन बगावत करना चाहता है ।"

"बगावत करना चाहता है माने क्या करना चाहता है ? मैंने फिर से पूछा ।

"उतना जानती होती तो कल तुम्हें यह जिनी फेरे लगाती हुई नहीं दिखती । तुम्हारे जैसी गाँव-गाँव में पदयात्रा करती हुई नजर आती ।"

"गाँव में पदयात्रा ? मुझे बहुत ही अचरज हुआ ।

"तुम्हें यह मज़ाक लगता है न ? अमरिका में और अन्य दोस्तों के साथ हँसी-मजाक करने में और शराब पीकर नाचने-खेलने में मैंने अब तक जिन्दगी बितायी लेकिन उसमें मुझे कभी समाधान हासिल न हो सका । कल मैं भारतीय गृहिणी की भूमिका को अपनानेवाली हूँ । लेकिन वह भी मुझे समाधान नहीं दे पायेगी । मैं समझ ही नहीं पा रही हूँ कि आखिर मैं किसलिए जी रही हूँ ।

विनी तुम्हारी ही नहीं इस अभागी दुनिया के सभी युवकों और युवतियों की यही हालत है । कोई नहीं जानता कि वह किसलिए जी रहा है । उसीकी खोज में तो मैं तुम्हारे देश पहुँची हूँ ।

फिर तुमने जान लिया कि जीवन का उद्देश्य क्या है ? तुम्हें [illegible] प्राप्त हुई । तुम बड़ी भाग्यशालिनी हो ।

कार की गति बढ़ती जा रही थी । लम्बे अरसे के बाद मैंने अपने हाथ में ह्वील पकड़ा था । बेशक, अनियन्त्रित वाहनों की तीव्र गति में भी मैंने मस्ती का अनुभव किया था । विनी धीरे से बोली, 'गाड़ी रोको कहीं [illegible] । दिल्ली के किस हिस्से में किस दिशा में स्वच्छन्द गति से दौड़ती हुई हमारी गाड़ी कहां पहुंची थी इसका हमें कुछ भान न था । गाड़ी रोककर हमने घूमना प्रारम्भ किया । मैंने सहज ही इधर-उधर देखा और चौंक पड़ी । मैं उसी कोठी के पास थी जिसे आज तक मैं टालती रही थी । चीनी गणराज्य का वह दूतावास था जिसके भीतर सोते हर व्यक्ति मेरे हमवासी थे मेरी भाषा बोलनेवाले । क्या होगा अगर मैं इसके भीतर चला जाऊं ? मैं चीनी हूं मुझे भीतर जाने की इजाज़त [illegible] मिलती । मैं दूर-दूर के देशों में भटक रही हूं लेकिन मेरा [illegible] क्या न [illegible] ने इसका अनुभव कर लिया था [illegible] मन में वह इसी तरह आ रहा था ।

अपनी कंदराओं में
निशिर निवास कहाँ

छिप मत जाना कहीं
लौट आ प्राण मेरे लौट आ!
मेरे आत्मन्! लौट आ!

मत जा दिशाओं में
पूरब में पश्चिम में
उत्तर में दक्षिण में
लौट आ प्राण मेरे, लौट आ!
मेरे आत्मन्! लौट आ!

रवि के उदय की वह गौरव
जो पाती है पूरब में
अपमित हैं संकट उपस्थित
जो तेरे लिए पश्चिम में
मत जा प्राण वहाँ लौट आ!
मेरे आत्मन्! लौट आ!

उत्तर के वीरान वे प्रदेश
मेरे प्राण! खतरनाक हैं
जलती हुई दक्षिण की धरती
जो मीलों तक खाक है
वहाँ मत जा
मेरे आत्मन्! लौट आ!

चीन की चारों दिशाओं में जाने के बाद वह फिर से अपने घर लौटना चाहता था और मैं तो चीन से निकली हूँ ।

'क्या सोच रही हो? इस समय तुम्हारा मन मेरे पास नहीं है।' किसी ने कहा।

मैं उसे कैसे बताती कि मेरा मन कहाँ गया था ? "यही सोच रही थी कि निकटवर्ती कोठियों में सोये हुए लोग क्या सपने देख रहे होंगे । मैंने अन्यमनस्क होकर कुछ कह डाला 'माफ करना मैं तुम्हारी कुछ भी सहायता नहीं कर पाऊँगी ।

विनी पहले जैसी ही गम्भीरता से बोल रही थी : "तुम नहीं जानती कि तुमने मेरे लिए क्या-क्या किया है ? तुम्हारे अस्तित्व से ही मुझे कितना सहारा मिला है और सतत मिलता रहेगा । वैसे ऊपर ऊपर से दिखाई देता है कि हमारे रास्ते अलग-अलग हैं लेकिन तुम जैसों की राह दूसरों से भिन्न नहीं होती है । सुदूर भविष्य में हमें जहाँ जाना है वहाँ पर तुम लोग पहले ही पहुँच चुके हो । सागर की लहरों के साथ इधर उधर भटकनेवाली बिना पतवार की किश्तियों के जैसे हम भटकते रहते हैं । तुम जैसे व्यक्ति हमारे लिए दीप-स्तंभ हैं ।

विनी पागल तो नहीं हुई है ? आज तक कभी भी मैंने उसके मुँह से ऐसी बातें नहीं सुनी थीं । वह अक्सर मुझसे कहती थी : "तुम तो बस जीवन का उद्देश्य ढूँढ रही हो तुम जानती ही नहीं जीवन के आनन्द को । वही विनी आज यह सब अट-संट क्या बोल रही है ? आज शाम को उसने एक 'पेग' अधिक ले लिया है क्या ?

मन्द की मद्धिम रोशनी में विनी का चेहरा अधिक गंभीर लग रहा था । वह ठीक कह रही थी दीप-स्तंभ अपनी ही जगह पर खड़ा रहता है । उसे कभी इस बात का रंज नहीं होता कि किश्तियाँ उसकी उपेक्षा करती हैं । मद्धिम आँधी-तूफ़ान पर वह सिर उठा अपने प्रकाशभरे नेत्रों से किश्तियों की ओर एकटक देखता रहता है और उसीसे किश्तियों को नवजीवन प्राप्त होता है ।

विनी की बात सुन चीन से मानो मैं जागी । "चलो वापस चलें ।" विनी ने प्यार भरे स्वर में कहा । उसने स्टीयरिंग घुमाना शुरू किया । हमारी जहाज जैसी गति से हमारी गाड़ी दौड़ने लगी । हम घर पहुँचीं तब देखा

आसमान में सितारों ने अपनी जगहें बदली थीं। वही कह रही थी—
"तीम।"

विनी निश्चिन्तता से सो गयी। किन्तु मेरा मन हिमालय के उस पार उलझा हुआ था। 'कु सुमान्' अब भी गा रहा था

शांति विश्रांति आराम है वहाँ
आ मेरे आत्मन् लौटकर यहाँ
हिम और चू के इस प्यारे प्रदेश में
मर जो पस्तात इस जीवन में देश में
इच्छानुकूल जो चाहे वह करता रह
जिसमें चित्त रमता है वही कर
जिसमें दुःख की स्मृति नष्ट हो जायगी
सम्यातीत आनन्द भुवन में यहाँ
आ मेरे आत्मन् लौटकर यहाँ!

: :

वधू की सर्वाधिक प्रिय सखी होने के नाते विवाह-समारोह में मुझे विशेष इज्जत मिली थी। हर कोई एक-दूसरे से पूछता "यह लड़की कौन है? और मेरे नाम पर चाहे जैसी कहानियाँ गढ़ ली जातीं।" 'इनके पिताजी अमरिका के प्रसिडेंट थे' से लेकर इनके पिता 'हॉलिवुड के मर' थे' तक विविध जानकारियाँ मेरे बारे में दी जा रही थीं। सबसे अन्त में जब यह कहा जाता था कि 'ये अपने देश के देहातों में पैदल घूमती हैं तो कहानियाँ और अधिक दिलचस्प बन जातीं। सब कहानियों का सार था कि मैं अमरिका के किसी बड़े आदमी की बेटी हूँ और सिनेमावालों के साथ घूमती हूँ।

विवाह-समारोह में विनी कॉच की गुड़िया-सी सज रही थी और उसीकी तरह काम कर रही थी। उसने कहा कि 'गुड़िया बनने के बदले वधू अगर इन्सान बनना चाहे तो उसकी शादी ही नहीं हो सकती है। जैसे अमरिका में वह 'डिनर कुसर' के सामने प्रवेशन हो बैठती थी वैसी

ही विवाह-समारोह में पुरोहितजी के सामने बैठी और उन्होंने जो उठक-बैठक करवायी वह सारा चुपचाप करती रही। सबके मन में डर था कि विनी पुराने रिवाज न मानने देगी लेकिन उसने सब कुछ ज्यों का त्यों किया और वर-वधू दोनों पक्षों की बड़ी-बूढ़ियों की इच्छाएँ पूरी हुईं।

शामवार दावत के समय विनी के बगलवाले सोफा पर बैठकर मैं मेहमानों को देख रही थी। कीमती सूट पहने हुए एक सज्जन विनी के भाई से कुछ पूछ रहे थे। बीच-बीच में मेरा नाम भी सुनाई दे रहा था। उधर ध्यान न देने के इरादे से मैं दूसरी तरफ देखने लगी। विनी ने एक वस्त्राभरणा गजगामिनी का परिचय कराते हुए कहा: "आप हैं [illegible] की रानी साहब।" रानी साहब के नवरत्नों के अलंकार रंगबिरंगी दीप-मालाओं के प्रकाश में जगमगा रहे थे और वैभव का इश्तिहार कर रहे थे। "मैं यूरोप दो बार हो आयी लेकिन आपके अमेरिका में आने का सौभाग्य मुझे अभी तक प्राप्त न हो सका। सुना है कि अमेरिका के मुकाबले यूरोप कुछ है ही नहीं"—रानी साहब ने कहा। बड़ी विचित्र बात है कि भारत में मजदूर से लेकर रानी तक सबके मन में हमारे अमेरिका के लिए आकर्षण है। रानी साहब को जब मैंने अपने देश की जानकारी दी तो उन्होंने अन्त में मुझे अपनी रियासत की भेंट देने का निमंत्रण देते हुए कहा: "अंग्रेज चले गये और उनके साथ साथ हमारा वैभव भी चला गया। अब आपको हमारी गरीब दुनिया में जो [illegible] मिलेगी उसीसे संतुष्ट होना पड़ेगा।" प्रणाम कर रानी साहब ने विदाई ली। मैं उनकी पाँच-सात सौ रुपयेवाली [illegible] की साड़ी की ओर देख रही थी जो बनारसी कला का [illegible] समझा था। मैं समझ न पायी कि जो चीजें प्रदर्शनी में [illegible] होती हैं उन्हें ये लोग अपने शरीर पर क्यों लादे फिरती [illegible] विनी [illegible] के बाद दूसरे से मेरा परिचय करा रही थी। [illegible] परिचय के बाद बोले। "बड़ी खुशी

हुई आपसे मिलकर । मैं गत सप्ताह अमेरिका से लौटा हूँ । वहाँ एक पत्रिका में आपका एक लेख पढ़ा था । बहुत अच्छा लिखती हैं आप ! आपका लेख पढ़ने पर मुझे पता चला कि हमारे देश के गाँवों की हालत क्या है ?

चीनी के भाई से बात करनेवाले सज्जन निकट आकर बोले : "आप ही हैं मिस रिटा ! कुछ काम है आपसे जरा उस ओर चलेंगी !

मैं समझ न पायी कि इनका मुझसे क्या काम होगा । मंडप के एक छोर पर पहुँचकर जहाँ और कोई न था वे सज्जन मेरे कान में फुसफुसाये : "लिन् को आप पहचानती हैं न ? मैंने कहा 'जी हाँ थोड़ा-सा परिचय है ।

सज्जन आगे बोले 'मेरा नाम है चांग । मैं अभी-अभी चीन होकर आया हूँ । भारत सरकार के एक डेलिगेशन के मेंबर के नाते मैं वहाँ गया था ।

'लिन् से आप हांगकांग में मिले ?

नहीं चीन में । वही तो हमारे डेलिगेशन का दुभाषिया था ।

मुझे अत्यधिक विस्मय हो रहा था । वे सज्जन और धीमी आवाज में बोले : लिन् ने आपके लिए एक पत्र दिया है । उसने मुझे बार-बार बताया था कि चाहे कितनी भी देर क्यों न हो यह पत्र मैं खुद ही आपको दूँ डाक से न भेजूँ । उसने मुझे इतना ही कहा था कि आप अमेरिकन हैं और विनोबाजी के साथ घूम रही हैं । आज बड़ा अच्छा संयोग बना आपसे मिलने का । लिन् कह रहे थे कि वह आपसे सिर्फ एक दफा हांगकांग में मिले थे ।

मेरी सबसे बड़ी चिन्ता दूर हुई । लिन् ने यह नहीं बताया कि मैं चीनी हूँ । लेकिन वह चीन किसलिए चला गया ?

"आप हमारे घर आइये अपनी फुरसत से । फिर दे दूँगा वह पत्र । मैंने तुरन्त कहा "कल सुबह आऊँगी ।

श्री वमा भारत सरकार के एक बड़े अधिकारी थे। दिल्ली में हर व्यक्ति के मकान का टाइप उसके वेतनमान पर निर्भर रहता है। यह तय है कि अमुक वेतन पानेवाले को अमुक प्रकार का मकान मिलेगा। विशाल उद्यान के बीच स्थित आलीशान बंगला श्री वमा का वेतनमान बता रहा था। सर्दी के दिन थे। इसलिए वमा दम्पति बाहर की हरी घास पर रखी कुर्सियों में बैठकर सुबह की धूप का आनन्द ले रहे थे। पति के हाथ में फाइलें थीं और पत्नी स्वेटर बुन रही थी। मेरी गाड़ी देख दोनों उठ खड़े हुए 'आइये आपका ही इन्तजार था।' ड्राइंग रूम में एक निहायत मुलायम सोफे पर मुझे बिठाकर श्री वमा किन् की चिट्ठी लाने भीतर गये। श्रीमतीजी अतिथि को कम्पनी देने वहीं बैठी थीं लेकिन मेरा ध्यान उनकी मौसम जलवायुवाली बातों की ओर न था। रंग-बिरंगे साटन के छोटे-छोटे तकियों के बीच बैठे-बैठे मैं उनके ड्राइंग रूम की रचना देख रही थी जिसका मुझे विशेष शौक था। वहाँ भारतीयता नजर नहीं आयी। हाँ प्रवेश करते ही भारत के प्रधान मंत्री का एक बड़ा आइल पेंटिंग जरूर दिखाई दिया था और किसी कोने में एक स्टूल पर गांधीजी की छोटी-सी मूर्ति भी रखी गयी थी। ड्राइंग रूम में जगह-जगह चीनी चीजें रखी हुई थीं। दीवालों पर टँगे चीनी पेंटिंग्स देख मेरा मन मुग्ध हो गया। फायर प्लेस के ऊपर चीन से लायी हुई एक बुद्ध-मूर्ति भी थी और उसके बगल में एक फोटो था जिसमें श्री वमा चीन के प्रधानमन्त्री से नमस्कार करते हुए दिखाई दिये।

यह लीजिये आपका पत्र। बड़े सौभाग्य की बात है कि इसी के बहाने आपकी पद धूलि से हमारा घर पवित्र बन गया। उत्तर भारत के प्राय हर घर में यही सुनाई देगा।

श्रीमतीजी भीतर चली गयीं और श्रीमान्जी आज चीन का बखान करने लगे। चीनी सरकार ने हमारी यात्रा की बड़ी अच्छी व्यवस्था की थी। हमें वे सभी स्थान दिखाये गये जो देखने लायक थे। पीकिंग के प्राचीन राजमहल से लेकर आदर्श सहकारी गाँवों तक सब कुछ देखा।

कम्युनिस्ट सरकार ने पुराने सम्राटों के महल भी बड़ी अच्छी हालत में रखे हैं। सुना कि चेंग के जमाने में प्राचीन इमारतों की बड़ी दुर्दशा थी। एक आदर्श गाँव में सहकारी खेती के बारे में एक किसान युवक ने हमें इतने अच्छे ढंग से जानकारी दी कि हमारे यहाँ के बड़े नेता भी ऐसा नहीं बोल सकेंगे। चीन की सहकारी खेती के प्रयोग में पैदावार तो बढ़ ही रही है इसके अतिरिक्त वहाँ के सब लोग इतने खुश नजर आ रहे थे कि बिना बताये ही हमने समझ लिया कि उन्होंने अपनी मर्जी से सहकारी खेती को अपनाया है। चीन की इस नयी हुकूमत के बाद चीन भीतर और बाहर से पूरा-पूरा बदल गया है। वहाँ पर हर गाँव में मैंने कितनी सफाई देखी। मक्खी-मच्छर के तो नामोनिशान तक मिट चुके हैं। मैं एक सज्जन से मिला जो पहले पूँजीपति थे। यद्यपि चीन की नयी हुकूमत द्वारा उनकी सम्पत्ति छीन ली गयी फिर भी वे नाराज नहीं थे। उन्होंने सुनाया कि 'नयी सरकार सबके साथ बड़ा अच्छा बर्ताव करती है सिवा उन लोगों के जो प्रतिक्रियावादी हैं।' बहनजी आपसे क्या कहूँ? मैंने अब तक सारा सुना भर था लेकिन अब प्रत्यक्ष नये चीन को देखकर मेरी आँखें चौंधिया गयीं। मेरी तो निश्चित राय है कि चीन का अनुकरण किये बगैर भारत तरक्की नहीं कर पायगा।

श्रीमान्‌जी की राय उनकी अपनी नहीं थी। मैंने अनुभव किया कि वह उस समय के भारत की प्रातिनिधिक राय थी। श्रीमतीजी चाय ले आयीं और 'चीन का बखान' कुछ देर के लिए स्थगित हुआ। मिठाइयों से भरी तश्तरियाँ देखकर मैंने कहा क्षमा कीजियेगा। मैं नाश्ता करके आयी हूँ।

ऐसा भी कभी हो सकता है? ये तो पंजाब की खास चीजें हैं। आपको हर चीज चखनी ही पड़ेगी और मिठाइयाँ तो सेर-सेर खायी जाती हैं। श्रीमान्‌जी खिलखिलाकर हँसे।

जब श्रीमतीजी ने चाय का प्याला बढ़ाया तो श्रीमान्‌जी बोले :

'बस चाय पीना तो चीनी ही जानते हैं । क्या मजेदार जायका है चीनी चाय का । आप कैसे जान सकेंगी ?

लिन् का पत्र पढ़ने के लिए मैं छटपटा रही थी लेकिन सभ्यता का दामन पकड़ कर मिठाइयों का हमला बर्दाश्त करती रही ।

लिन के बारे में कुछ जानने हेतु मैंने चर्चा छेड़ी 'मैं जब अमरिका से इधर आ रही थी तब हाँगकाँग में लिन् मिले थे । भले आदमी जान पड़े ।

श्रीमान्‌जी 'बहुत अच्छे । बहुत अच्छे । उन्होंने हमारी बड़ी मदद की । भारत के बारे में वे बहुत जानना चाहते थे । मैं यह भी नहीं जानता था कि विनोबा पैदल चलते हैं या हवाई जहाज में उड़ते हैं । लेकिन लिन् को यह भी मालूम था कि विनोबा अब तक कितने हजार मील चल चुके हैं । आपके मुतल्लिक उसने आखिर तक कुछ नहीं कहा था । विदाई से कुछ समय पहले चुपके-से यह चिट्ठी देते हुए कहा मिस रिटा अमरिकन है और विचार से कट्टर एंटी कम्युनिस्ट है । इसीलिए यह पत्र आपके पास दे रहा हूँ । वरना हमारे देश में पूरी आजादी है । हम अभी भी पत्र भेज सकते हैं । हाँ सब कातिलीहिमों के साथ हुकूमत कड़ा रुख अख्तियार करती है । लिन् ने यह भी कहा कि आपसे उसका थोड़ा-सा परिचय है और जब आप भारत में ही घूम रही हैं तो उन्होंने सोचा कि मेरे जरिये आपके पास चीन की खूबसूरत कुदरत का कोई चित्र भेजा जाय ।

एक पत्र भेजने में लिन् ने कितनी सावधानी बरती थी । लेकिन आखिर वह चीज वापस भेजा क्यों ?

दुबारा दिल्ली आयेंगी तो हमारे यहाँ ही ठहरेंगी जाना दम्पति के निमन्त्रण को स्वीकार कर मैंने उनसे विदा ली । गाड़ी दरवाजे से बाहर निकली और मैंने लिन् का पत्र खोला । उस लिफाफे में चीनी प्रकृति का कोई सुन्दर चित्र न था । आज के चीनी जीवन की विकृति

का भयंकर भग्नचित्र था। जमाने के बाद मैं अपने देश से आया हुआ अपनी भाषा में लिखा हुआ पत्र पढ़ रही थी।

"प्रिय बहन चिनलिंग

मातृभूमि पर लौट आने के पश्चात् मैंने जबान के साथ दिल पर भी ताला लगा दिया था। संयोग से भारत से आए हुए मेरे सज्जन मिले तो मैंने लेखनी की चाबी से उस ताले को कुछ देर के लिए खोलने का विचार किया।

तुम्हारे सामने यह होगा कि मैं चीन क्यों लौटा? उसीके जवाब में मैं यह पत्र लिख रहा हूँ।

तुमने बड़ी कोशिश की और मुझे हॉंगकांग में स्वाभिमान के साथ जीवन बिताने का मौका दिया। मैं बड़ा कृतज्ञ हूँ लेकिन मुझे यह महसूस होने लगा कि विदेश में प्राप्त होनेवाली स्वतन्त्रता का कोई मूल्य नहीं है। इसीलिए मैंने फिर से अपनी मातृभूमि पर जाकर गुलामी का जीवन जीना पसन्द किया।

हॉंगकांग में हम मिले थे और तुमने वहाँ पर एक समाचार-पत्र में मेरे लिए काम भी ढूँढ दिया था। मैंने पीठ का बोझ पटककर सिर का बोझ उठा लिया था। मेरे मन में सहज ही लाल चीन के खिलाफ बातें आ जाती थीं। लेकिन कई दफा उन्हें इसीलिए अस्वीकृत किया गया कि उनमें लाल चीन की पर्याप्त निन्दा और ताईवान (फारमोसा) सरकार की पर्याप्त स्तुति नहीं की गयी है। सम्पादक महोदय मुझे उपदेश सुनाने लगते कि क्या और कैसा लिखा जाना चाहिए? मैं जानता था कि उनकी बात न मानने से मुझे पुनः पीठ पर बोझा लादना होगा।

एक दिन मैं घूमते-घूमते काफी दूर निकल गया। उधर भीड़ कम थी। मुझे ऐसा लगा कि कोई मेरा पीछा कर रहा है। मैंने अनुमान कर लिया कि यह कौन होगा? तेजी से चलकर वह मेरे पास पहुँचा। गुड ईवनिंग कई दिनों से इच्छा थी कि आपसे मिलूँ। आपके लेख मैं बहुत

पसन्द करता हूँ। मुझे उससे बात करनी ही पड़ी। उसके पश्चात् वह मुझसे करीब करीब हर रोज मिलने लगा।

मेरा अनुमान सही था कि वह लाम चीन सरकार का गुप्तचर होगा। कुछ दिनों के बाद उसने मुझसे कहा "मुझे यह देखकर बड़ा दुःख हो रहा है कि तुम्हारे जैसा बुद्धिमान् प्रतिभाशाली युवक यहाँ सड़ रहा है। मातृभूमि लौट चलोगे तो तुम अपनी कलम के द्वारा अपने देश की अच्छी सेवा कर पाओगे। वह बार-बार मेरे कानों में ऐसी ही बातें डालता रहा। मैंने एक तटस्थ लेख लिखा था जिसमें तुम्हारी भारत-यात्रा के अनुभवों का जिक्र कर अन्त में लिखा था कि साम्यवाद के साथ मुकाबला करना हो तो अमरिका के हथियारों के बल पर यह काम नहीं हो सकेगा। जब हम उन सभी कामों को जो साम्यवादी बुरे तरीकों से करते हैं अच्छे तरीकों से कर पायेंगे तभी साम्यवाद की जड़ें हिलेंगी।

संपादक महोदय ने मुझे बुलाया। लेख को लौटाते हुए उन्होंने चीनी नम्रता से कहा 'हमारा यह बड़ा दुर्भाग्य है कि इसके पश्चात् आपकी प्रभावशाली लेखनी से लिखे गये सुन्दर लेख हमारे तुच्छ समाचार-पत्र में नहीं दिखाई देंगे।

इनकार करने का चीनी ढंग तुम तो जानती ही हो। मैं फिर बेकार हो गया।

उधर चीन में राष्ट्रपति माओ ने नयी नीति का उद्घोष करते हुए कहा था कि शत-शत प्रकार के सुमन खिलें भिन्न-भिन्न विचारों का विकास हो। साम्यवादी सरकार की यह नयी उदार नीति मुझे बड़ी आकर्षक लगी। मैंने सोचा अब चीन लौटने में कोई हर्ज नहीं है। हांगकांग में भी मुझे सिवा बोझ ढोने के और कोई काम मिलनेवाला न था। तुम कहोगी कि क्या दुनिया में और कोई जगह नहीं थी? नहीं मैं तुम्हारी तरह अच्छी अंग्रेजी नहीं जानता था। मेरे हृदय में छिपे हुए कलाकार के पास अभिव्यक्ति का केवल एक ही साधन है—चीनी भाषा। चीन से दूर किसी भी देश में मैं चला जाता तो पेट की आग शायद बुझती लेकिन

हृदय के भीतर का कलाकार तड़फड़ाता ही रहता । इसीलिए मैंने उस नये मित्र की सलाह मान ली और उसीकी सहायता से चीन में फिर से प्रवेश पा लिया । मैं जानता था कि मुझ जैसे लिपिकों को वापस से आने का दायित्व कम किया गया है ।

चीन लौटने पर चन्द दिनों में ही मेरा भ्रम दूर हो गया । चन्द महीनों में सबको पता चल गया कि 'शत शत प्रकार के सुमनों को खिलने देनेवाली' लाल सरकार की नयी नीति यानी 'बुद्धिजीवियों' को फँसाने का एक मायावी जाल था । उस नीति की घोषणा के पश्चात् कुछ भोले लेखकों ने वास्तव में नये विचार के फूल खिलाये और लाल सरकार का 'शांतिद्रोहियों' की नयी सूची मिल गयी । भिन्न-भिन्न रंग रूप-गन्धवाले सुमन खिलने से पहले ही मसल डाले गये ।

फिर भी लाल चीन की सरकार को मुझ-जैसे बुद्धिमान् लिपिकों की आवश्यकता थी । मुझे शिक्षा-विभाग में काम मिला । मेरे अधिकारी जानते थे कि मैं लेखक हूँ इसलिए उन्होंने मुझे बार-बार आग्रहपूर्वक कहा कि मैं कुछ लिखूँ । यहाँ पर यह तय रहता है कि क्या और कैसे लिखना चाहिए । सरकारी नीति से भिन्न कुछ भी लिखना सम्भव नहीं हो पाता है । इसलिए मैंने राजनीति का पूर्णतया छोड़कर उपन्यास लिखना आरम्भ किया । चन्द्रमा सितारे सरिता सागर फूल पत्ती आदि का सहारा लेकर अपने नये उपन्यास में काम करना आरम्भ किया । नये चीन में यह अनिवार्य है कि हर किताब प्रकाशित होने के पहले 'चीनी लेखक संघ' के पास अनुमति और सुधार के लिए भेजी जाय । 'लेखक संघ' ने मेरे उपन्यास को अच्छा बताया और कुछ बार सुधार करने के लिए कहा गया । उदाहरणार्थ 'आपके उपन्यास का हीरो किसान है उसे उस गाँव के सरकारी आन्दोलन का नेता भी बनाइये और उसके जीवन के द्वारा यह कहानी का एक सुन्दर चित्र खड़ा कीजिए । हीरोइन कवि है यह अच्छा ही है लेकिन उसके बाप का जमींदार भी बताना है और अपने पिता की या उसकी करतूतों की सारी जानकारी जन विभाग के द्वारा सरकार

तक पहुँचाती है ऐसा चित्र भी उपस्थित किया जाय। इसकी कविताओं में तारों का और प्रकृति का वर्णन विषय रहता है वह न रहे। मुक्ति के पश्चात् चीनी स्त्रियाँ कपास की तरक्की कर रही हैं उसी पर वह कविताएँ लिखें। कुल मिलाकर आपके उपन्यास में चाँद-सितारे, वन-उपवन आदि का जिक्र आवश्यकता से अधिक किया गया है। उसके स्थान पर क्रान्ति के पश्चात् चीनी किसान के जीवन का उपवन कैसे खिल उठा है यह चारु वर्णन किया जाय। आपकी लेखनी समर्थ है उसका उपयोग अमेरिकन साम्राज्यवादियों की और उनके पिट्ठुओं की पीटने में कीजिये। विनोद भी आप कर सकते हैं। लेकिन कभी-कभी विनोद के कारण लोगों का ध्यान पैदावार बढ़ाने की ओर न जाकर अन्य छोटी-छोटी चीजों की ओर चला जाता है। इसलिए विनोद की भाग हटा दें तो बेहतर होगा। वैसे आपकी शैली बड़ी रोचक है। बस केवल अंतिम अध्याय में थोड़ा परिवर्तन करना आवश्यक है। विवाह के तुरन्त बाद हीरो अमेरिकन साम्राज्यवाद को समाप्त करने की प्रतिज्ञा कर 'लाल सेना' में भर्ती हो जाता है और हीरोइन यह कहती हुई कि जीवन में प्रेम का वह स्थान नहीं जो सहकारी आन्दोलन का है उस क्षेत्र के सहकारी आन्दोलन का काम उठा लेती है। ऐसा दृश्य उपस्थित किया करें। नायिका साम्यवादी पार्टी की सक्रिय सदस्य बन जायगी तो सोने में सुगन्ध आ जायगी।

इतना 'कम सुधार' करने के हेतु मैंने एक उपन्यास फिर से लिख डाला। अब मेरा उपन्यास पचास करोड़ पाठक पढ़ेंगे। चीन के सभी समाचार पत्रों में उसकी सराहना की गयी है। सोचा था कि तुम्हारे पास एक प्रति भेजूँ लेकिन 'रोमांटी रायल्टी' आदि बुर्जुआ विचारों से हमें सख्त नफरत है इसलिए मेरे पास रुपये का तो नाम भी न लो। अपने उपन्यास की एक से अधिक प्रतियाँ भी नहीं हैं।

मुझ जैसे व्यक्ति के लिए जो चीनी भाषा के अलावा अन्य किसी भाषा में अपने अन्तर के भावों को प्रकट नहीं कर पाता चीन को छोड़ अन्यत्र कहीं कोई स्थान नहीं है। यह बात ठीक है कि यहाँ पर मुझे अपनी किताब

ग्यारह

•

'बहूरानी बहूरानी !

मिट्टी की मोटी-मोटी दीवारोंवाले मकान के आँगन में चारपाई पर बैठी सासजी पुकार रही थीं। वे हुक्का गुड़गुड़ा रही थीं और तंबाकू की उबकानेवाली गन्ध चारों ओर फैल रही थी। "अरी ओ बहूरानी !

मैंने सोचा कि अब कोई युवती लंबा घूँघट काढ़े चूड़ियों की खनखनाहट करती हुई धीरे-से आयेगी और दरवाजे की आड़ में खड़ी होकर दबी जबान में कहेगी "जी" और फिर सासजी हुक्म करेंगी।

लेकिन बहूरानी आयी और सासजी की चारपाई पर धप से बैठ गयी। बिहार के गाँवों में एक चमत्कार हो गया 'वेल डन् वेल डन्' कहती हुई मैं तालियाँ बजाने लगी। बहूजी ने मेरी ओर देखा। सासजी उसे मर्यादा का पाठ पढ़ा रही थी— 'सिर ढँके रहो। माँग क्यों नहीं भरी ? और चूड़ियाँ कहाँ गयीं ? "टूट गयीं"—बहूजी ने लापरवाही से जवाब दिया। च च बेटा ऐसा न कहो। सदा सुहागन रहो। लाल-लाल चूड़ियाँ सदा तुम्हारी कलाई में चमचमाती रहें। अपशकुन मिटाने के लिए बहू के माथे का स्पर्श कर अपनी उँगलियाँ चटकाती हुई सासजी ने कहा।

बिहार के गाँवों में जिस नवका वेश बन गया था और हेलन मामी। युवा उसे बहूरानी कहते और बच्चे सदा हेलन मामी' के इर्द-गिर्द मँडराया करते। नवीनता के कारण उसे यह सब अच्छा लगता और विदेशी महिला होने के कारण उसकी हर बात की सराहना होती। भारतीय सम्मिलित परिवार-पद्धति उसे बहुत आकर्षक मालूम हुई।

वह कहती कि भारत में व्यक्ति को संरक्षण प्राप्त होता है। माँ-बाप भाई-बहनें रिश्तेदार, गाँववाले सभी की स्नेहवर्षा के कारण व्यक्तित्व का अच्छा विकास हो पाता है। अमेरिका में व्यक्ति निराधार, एकाकी अरक्षित जीवन बिताता है।

जिम उससे सहमत नहीं हो पाता। वह कहता अमेरिका में ऐसा संरक्षण भले न हो पर स्वतंत्रता तो है। वहाँ पर बहू की तो बात ही छोड़ दो क्या कोई लड़का भी घर के पचास बुजुर्गों की अनुमति लिये बिना कोई काम कर सकता है? ऐसे वातावरण में व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। इन गाँवों की कोई बहू क्या तुम्हारे साथ बाहर निकलती है? तुम्हारी सराहना कर सारी औरतें घरों में ही छिपी रह जाती हैं।

हेलन जब छोटी थी तभी उसके पिता की मृत्यु हुई। उसकी माँ ने दूसरी शादी की। यद्यपि उसके इस दूसरे बाप ने उसके लिए आर्थिक व्यवस्था ठीक से कर दी थी लेकिन पिता की मृत्यु के साथ ही हेलन ने माँ का स्नेह भी खोया था। उसकी रूपवती माँ को यह कहते हुए संकोच मालूम होता था कि उसकी एक इतनी बड़ी लड़की है। कभी किसी दावत में माँ-बेटी साथ जाती तो उसकी माँ बाद में बड़े गर्व के साथ सुनाती कि सभी युवक हेलन की अपेक्षा उसीकी ओर अधिक आकर्षित होते हैं। हेलन का अधिकतर जीवन स्कूल-कॉलेजों के होस्टलों में बीता था। वह बार-बार कहती 'मुझे तो भारतीय परिवार-व्यवस्था अधिक पसन्द है। क्योंकि उसमें हर व्यक्ति को एक अनमोल चीज प्राप्त होती है स्नेह'।

जिम फिर से कहता 'तुम्हें उस स्नेह का आकर्षण इसीलिए है कि तुमको यहाँ की महिलाओं की तरह घर की चहारदीवारी में कैद नहीं रहना है। अगर तुम भारतीय बहू होती तो बगावत कर कभी की बाहर निकल गयी होती।

हो सकता है लेकिन मैं अमेरिका में पैदा हुई इसलिए मुझे आज भारतीय समाज-व्यवस्था अधिक अच्छी लगती है।

मैं बीच में बोली : 'क्या हम ऐसा समाज नहीं बना सकेंगे जिसमें स्वतन्त्रता भी हो और संरक्षण भी।'

जिम सिर हिलाते हुए कहता : 'कभी नहीं। हमें इनमें किसी एक को छोड़ना ही पड़ेगा। तुम्हारा आदर्श आकर्षक जरूर है लेकिन असम्भव भी है।'

मैं विश्वास के साथ कहती : 'ग्रामदान के बाद असंभव संभव हो जायेगा। उस समाज में हर व्यक्ति पूरी स्वतन्त्रता के साथ अपना विकास कर सकेगा और ग्राम-परिवार की ओर से उसे पूरा संरक्षण प्राप्त होगा।'

जिम दूने जोर से कहता : "मैं मानता हूँ कि ग्रामदान से आर्थिक समस्या हल हो सकेगी। लेकिन उससे सामाजिक समस्या भी हल होगी और आदर्श समाज बनेगा यह कहना अत्युक्ति है। समाज में सदा कुछ द्वन्द्व रहेंगे और हमें उसमें से किसी एक को छोड़कर ही दूसरे को स्वीकार करना होगा।"

हमारी ऐसी चर्चाएँ चलती रहतीं और उसीसे गाँव के कठिन जीवन में आनन्द रह पाता। हम तीनों अलग रहते तो शायद जिम और हेलन कुछ ही दिनों में ऊबकर अमेरिका लौट जाते। पाँच-छह शताब्दियों पहले का जीवन जीनेवाले गाँववालों के साथ रहना भारत के शिक्षितों को भी कठिन मालूम होता है। इसीलिए अमेरिका से सेवा करने के लिए आये हुए युवक यहाँ विशेष सम्मान पाते हैं। जिम मानता था कि किसी दूर के कुएँ से पानी निकालकर सिर पर घड़े रख पानी लाने में मानवीय शक्ति का भयानक अपव्यय होता है। लेकिन जिम भारतीय तरुणों के समान यह कहकर अपने देश को कोसता नहीं रहा। गाँव के साधन इस्तेमाल कर जो सुधार किये जा सकते हैं उसके प्रयोग करने लगा। चीन-जापान जैसे देश इन समस्याओं को किस तरह से हल कर रहे हैं? इस बारे में उसने सारा साहित्य मँगवाकर अध्ययन किया और छह माह के भीतर गाँव के कुएँ पर छोटा पम्प बिठा दिया। धान कूटने की सरल छोटी मशीनें और खेती के कुछ सुधरे हुए औजार मँगवाये तथा स्वयं कुछ बना भी लिये।

मैं बराबर देखती रही कि अमेरिकन लोग किस तरह परिश्रम के साथ अक्ल को जोड़कर जीवन को सुन्दर बना लेते हैं। इसी कारण तो अमेरिका इतना विकास कर पाया है।

जिम को सबसे अधिक तकलीफ हुई भारतीय जीवन में श्रम को घृणा की दृष्टि से देखने के मूल्य और आलस्य के कारण। गाँव के अर्धशिक्षित युवक टूटी-फूटी अंग्रेजी में जिम के साथ बातचीत कर गर्व महसूस करते लेकिन उसके साथ मेहनत करने में हिचकते। भला वे नीच कर्म कैसे करेंगे? अच्छे स्वस्थ युवक किनारे खड़े-खड़े जब जिम को काम करते हुए देखते तो कभी-कभी वह गुस्से में कहता: अब मैं समझ पा रहा हूँ कि कम्युनिस्ट सरकार को जबर्दस्ती क्यों करनी पड़ती है।

मेरे पास गया के एक एम एल ए साहब का एक अनपेक्षित पत्र आया शायद इसीलिए कि जिम साम्यवाद को अधिक निकटता से जान ले। चीन से आये हुए एक डेलिगेशन के सदस्य उनके घर जलपान के लिए आनेवाले थे जो भूदान के बारे में कुछ जानना चाहते थे। एम एल ए साहब ने मुझे उस समय उपस्थित रहने के लिए निमंत्रित किया था। मैं उस पत्र का मतलब नहीं समझ सकी। जिम को कुछ संदेह हुआ। उसने कहा 'हम दोनों भी तुम्हारे साथ गया जायेंगे। तुम्हें अकेले नहीं जाने देंगे। लाल चीन की सरकार शायद यहाँ पर भी तुम्हें सुख से जीने नहीं देगी। मुझे उसकी बात नहीं जँची। मम्मी-पापा ने मुझे सदा निर्भयता का पाठ पढ़ाया था। मैं अब तक किसीसे डरी नहीं थी। अब इस बुद्ध-भूमि में अपने एक देशवासी से मिलने में मुझे भय क्यों मालूम होगा? मैंने निश्चय के साथ कहा: 'मैं अकेली ही जाऊँगी। वे दोनों खामोश रहे लेकिन मैं जब गया के लिए रवाना हुई तो दोनों तैयार खड़े थे। हेलन ने कहा: "इन गाँवों में कोई भी आवश्यक चीज नहीं मिलती है सब कुछ गया से ही खरीदना पड़ता है। और हम तीनों साथ चलने लगे।

एम एल ए साहब से मेरा परिचय काफी था। बीच-बीच में वे

मैंने मेहमान को गौर से निहारा और अपनी आँखों पर विश्वास न कर सकी। वह लिन् था लिन्। हाँगकाँग में मैंने उसे पीठ पर बोझा लादे हुए देखा था। और कुछ माह पहले उसका चीन से भेजा हुआ पत्र भी मुझे प्राप्त हुआ था। लेकिन यह सब उससे कैसे कह पाती। वहाँ पर अंग्रेजी समझनेवाले लोग बैठे थे और उनके सामने चीनी में बोलना उचित न था। एम एल ए साहब ने परिचय कराया "आप हैं बहन देवी अमरिका से आयी हुई गया की विख्यात भूदान-कार्यकर्त्री हैं।" लिन् ने औपचारिकता निभाने के लिए नमस्कार किया। एम एल ए और उनके भाई यह जानने के लिए बड़े उत्सुक थे कि चीनियों को भूदान का विचार कैसे समझाया जायगा। इसलिए दोनों वहीं पर बैठे रहे। मैंने भूदान पर भाषण देना आरम्भ किया। लिन् की छोटी आँखें मुसकरायीं। थोड़ी ही देर में जलपान की तश्तरियाँ आयीं। बरबास दोनों भाई टेबल सजाने लगे। मैंने धीरे से चीनी में पूछ लिया: 'मुझसे मिलने की हिम्मत तुमने कैसे की?

'हाँ हिम्मत तो मैंने जरूर की है। ये सज्जन किसी काम से दिल्ली गये थे। वहाँ पर संयोग से उनसे मुलाकात हुई। हमारी बोधगया-यात्रा की व्यवस्था करनेवालों में से भी एक थे। उन्होंने यह भी बताया कि बोधगया में एक आश्रम है। मैं जानता था कि तुम्हारा आश्रम से संपर्क है।

मुझे हँसी आयी: भारत में सैकड़ों आश्रम हैं।

लिन्: 'होंगे लेकिन आश्रम के कारण ही मुझे तुम्हारा पता चला और भूदान की जानकारी हासिल करने के बहाने मैंने इस मुलाकात की योजना बनायी।

हमारे सामने तश्तरियाँ मेज पर सजाकर रख दी गयीं। बरबासे भाई चिल्ला रहे थे 'पानी लाओ चाय कब बनेगी?"

मैंने फिर धीरे से पूछा लेकिन तुम अपने साथियों को छोड़कर अकेले इधर कैसे आ पाये? तुम्हारे पीछे कोई खुफिया नहीं है?"

लिन् बहुत कुछ कहना चाहता था। वह तेजी से बोलने लगा 'ये

सज्जन जानते हैं कि मैं चारी से भूदान की जानकारी हासिल कर रहा हूँ। उन्होंने सारी योजना बनायी है। हम दोनों में बपशप करते हुए जान-बूझकर दूसरा रास्ता पकड़ लिया और ये अब मुझे इधर न आये। मुझे शीघ्र लौटना होगा वरना मेरा कोई साथी यहाँ पहुँच ही जायगा।

मुझसे रहा नहीं गया। मैंने पूछ ही लिया : तुम्हें पसन्द है ऐसा जीवन ?

'पसंद नहीं इसीलिए तो यह सारा उपक्रम किया। क्या तुम मुझे इससे मुक्ति दिला सकोगी ? मुझ पर कड़ी निगरानी रखी जाती है। प्रतिक्रियावादियों से मेरा कभी संपर्क था इसे लाल सरकार कभी न भूल पायेगी।

मैं इस वक्त तुम चीनी डलिगेशन के मेंबर बनकर आये हो। इसलिए तुम्हारी मुक्ति सम्भव नहीं दीख रही है। मैं नहीं मानती कि भारत सरकार तुम्हें पनाह देगी। भारत और चीन के सरकारों की बड़ी दोस्ती है न !

लिन् की छोटी आँखों में दिखाई देनेवाला दुःख मुझसे छिप न सका। उसने निराश होकर पूछा : 'तो क्या और कोई रास्ता नहीं है ? सरकार भले ही न दे पर क्या भारत की जनता भी मुझे सहारा नहीं देगी ?

मैं खामोश रही। वह खिन्न होकर बोला : 'मैं नहीं चाहता कि मेरे कारण तुम्हारे लिए खतरा उपस्थित हो। और कोई रास्ता न हो तो मैं जाऊँगा वापस।

मेरे मन की बात उसने जान ली।

तुम कहोगी वह अच्छा-खासा हांगकांग पहुँच गया था। फिर चीन में भला वापस क्यों गया ? तुम्हारी बात सही है। अपनी भाषा में लिख सकूँगा इसी आशय से मैं चीन चला गया और अम्मा के सिवा मेरे लिए कोई स्थान न था। लेकिन

कुछ क्षण खामोश रहकर वह फिर-से बोला : 'सरकार की आज्ञा बनी रही मैं यही लिखता रहा। लेकिन कुछ दिनों पूर्व मुझे एक बड़ा

निश्चित काम दिया गया—'चीनी क्रान्ति का इतिहास' लिखने का। जैसे सरकार जो कहती थी उसे लिख डालता लेकिन उस काम में यह लिखने की नौबत आयी कि तुम्हारे पपा 'देशद्रोही क्रान्तिद्रोही' थे। हमने उन्हीं से देशभक्ति और क्रान्ति का पाठ पढ़ा था। उनके बारे में यह लिखना मेरे लिए असंभव था। अस्वस्थता का बहाना कर मैं उस काम को टालने की कोशिश करने लगा। लेकिन 'मुक्त' चीन में यह सम्भव न था और मुझे अपने इन्हीं हाथों से यह लिखने का पाप करना पड़ा कि तुम्हारे पपा चीन के दुश्मन क्रान्तिद्रोही अमेरिका का पालतू कुत्ता

किन् मुश्किल से अपनी सिसकियों को रोक सका।

वे दिन मेरी आँखों के सामने आये जब पपा ने मंत्रीपद से त्यागपत्र दिया था। सन् १९४५ के अगस्त में विश्वयुद्ध समाप्त हो गया और गृहयुद्ध आरम्भ हो रहा था। जनरैलिस्मो च्यंग के नेतृत्व में राष्ट्रवादी कोमिन्तांग सरकार ने कम्युनिस्टों की चुनौती को स्वीकार कर लिया था। उस समय वायव्य की ओरवाला येन्सी येनान आदि प्रदेश छोड़ सारा चीन राष्ट्रवादी सरकार के कब्जे में था। राष्ट्रवादी सेना के पास लाल सेना की अपेक्षा बहुत अधिक अस्त्र-बल था संख्या-बल था। इसलिए कोमिन्तांग के नेतागण सोचते थे कि हम बड़ी आसानी से लाल सेना को खतम कर पायेंगे। इधर चुंकिंग में समझौते के लिए बातचीत भी चल रही थी। साम्यवादियों की ओर से चाऊ एन् लाई डेलिगेशन के नेता बनकर बातचीत के लिए चुंकिंग आये थे। साम्यवादी पक्ष की ओर से निम्न शर्तें रखी गयी थीं देश में कोमिन्टांग की एकपक्षीय सरकार न रहे, सब पक्षों की मिली-जुली सरकार बने और प्रजातंत्र के सिद्धान्तों के अनुसार राज्य का कार्य चलाया जाय। भूमि-सुधार का कानून शीघ्रातिशीघ्र बनाया जाय। कोमिन्टांग की ओर से यह शर्त रखी गयी थी "पहले लाल सेना' को राष्ट्रवादी सेना में विलीन किया जाय। पपा मानते थे कि साम्यवादी पक्ष की शर्तों को स्वीकार करना उचित होगा और उसके लिए उन्होंने अपने पक्ष के नेताओं को तैयार करने की पूरी कोशिश की। पपा स्वयं

अब से यह कह रहे थे कि भूमि के बँटवारे का कानून बनाया जाय। कारखानों के मजदूरों के अधिकारों की रक्षा के लिए भी कानून बनाया जाय। कोमिंताग की बैठकों में उन्होंने बार-बार आग्रहपूर्वक यह विचार रखा था लेकिन उनके प्रगतिशील विचार, सत्ता-संपत्ति से मदांध उनकी पार्टीवालों को कभी नहीं जँचे। गृहयुद्ध को रोकने के लिए उस समय अमेरिका की सरकार भी पूरा प्रयास कर रही थी। पपा के विचारों को अमेरिकन जनमत की काफी अनुकूलता प्राप्त हुई थी। लेकिन सारी कोशिशें व्यर्थ गयीं। बातचीत असफल रही और गृहयुद्ध का ताण्डव नृत्य शुरू हो गया। निराश होकर पपा ने सार्वजनिक जीवन से निवृत्त होने का निर्णय किया। विदेश-मंत्री-पद और कोमिंतांग पार्टी की सदस्यता का भी त्यागपत्र देकर उन्होंने राजधानी से सदा के लिए विदा ले ली। और गाँव के एक छोटे-से घर में जहाँ पर हमारी थोड़ी-सी जमीन थी अध्ययन-मननादि में जीवन बिताने का फैसला कर लिया। दुनियाभर के समाचार पत्रों ने लिखा कि पपा का त्यागपत्र चीन के लिए बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण घटना साबित होगी। चीन के सभी हितचिंतकों को उससे बड़ा दुःख हुआ। त्यागपत्र देकर पपा ने साम्यवादी पार्टी के नेताओं को एक पत्र लिखा कि 'जिस तरह जापान का मुकाबला करने में चीन की सभी ताकतें एकजुट हुई थीं उसी तरह अब देश के नवनिर्माण के कार्य में सबकी ताकतें एकत्र करने की सुमति सबको प्राप्त हो यही एक अभिलाषा लेकर मैं सबसे विदा हो रहा हूँ।' साम्यवादी नेताओं ने भी पपा की निवृत्ति पर खेद प्रकट किया था। चीनी जनता की भलाई के लिए अपने को खपानेवाले और जनहित के लिए ही मंत्रीपद का त्याग करनेवाले मेरे पपा आज देशद्रोही माने गये थे। चीनी क्रान्ति के इतिहास में उनका नाम गद्दारों की सूची में दर्ज किया गया और इतिहास के काले पन्नों में लिखा गया।

मिन् का गला भर आया था। बड़ी मुश्किल से वह बोल पाया : जिस कलम के द्वारा तुम्हारे पपा का नाम गद्दारों की फेहरिस्त में दर्ज किया गया उस कलम को मैंने फेंक दिया। और संकल्प कर लिया कि

जब तक सात बीत में रहूँगा कभी कलम नहीं उठाऊँगा। मेरे इस निर्णय से सरकार मुझ पर खफा हो गयी।

बाहर से कुछ आहट हुई। शायद कोई आया होगा मुझे शक हुआ। मैं झट भीतर चली गयी और दौड़ती हुई चौके के पास पहुँच गयी। गृहिणी के साथ बातचीत करने का नाटक भी आरम्भ कर दिया। मेरा शक ठीक निकला। जिन् को ढूँढने ही कोई आया था। बड़ी सफाई के साथ चीनी में स्पष्टीकरण देते हुए जिन् ने कहा : बातचीत मे हम दोनों रास्ता भटक गये और फिर ये सज्जन मुझे अपने घर ले आये। भारतीय लोग अतिथि सेवा में कमाल कर देते हैं। यहाँ आते ही इन्होंने मुझ पर पकवानों का ऐसा हमला शुरू किया कि मेरे लिए यहाँ से निकलना मुश्किल हो गया।"

बाहर से आये हुए भाई ने चारो ओर नजर दौड़ायी। कप तश्तरियाँ गिलास सारे बता रहे थे कि जिन् ठीक कह रहा है। कमरे में सिर्फ दो ही मौजूद थे—एम एस ए साहब और उनके भाई। शायद बाहर से आये हुए उस भाई को जिन् की बातों से संतोष हो गया। जिन् झट बाहर निकल गया।

वे दोनों काफी दूर चले गये होंगे। कुछ देर बाद बाहरवाले कमरे में आकर मैंने मेजबान महाशय से कहा : 'मैं चाहती थी कि घर में सबसे परिचय कर लूँ। इसीलिए भीतर चली गयी। उनको मेरे इस कथन में कोई बनावटीपन नहीं मालूम हुआ। उन्होंने बड़े स्नेह से कहा : "आप तो जहाँ कहीं जाती हैं सबको अपना बना लेती हैं। हमारे घर में भी सब चाहती थीं आपसे मिलना। लेकिन वे आप से क्या बोल पायी होंगी। बिलकुल अनपढ़ हैं।

नहीं-नहीं हमारी तो खूब दोस्ती हो गयी।

फिर से बाहर आहट सुनाई दी। मैं भीतर की ओर दौड़नेवाली ही थी कि दो व्यक्ति दरवाजे तक पहुँच गये। देखा तो जिम और हेलन मेरी खोज करते हुए वहाँ आ धमके थे। मैंने निश्चिन्तता की साँस ली। उन दोनों को देख हमारे मेजबान बड़े खुश हो गये। आइये आइये।

आज हमारे लिए बड़े सौभाग्य का दिन है। बड़े-बड़े विदेशी सज्जनों की चरण-धूलि से हमारा घर पवित्र हो रहा है। मुन्ना कौन है उधर, जरा जलपान लाओ। और भी मेहमान आये हैं। गरम-गरम चाय भी लाना।

जिम-हेलन काफी भूखे नजर आये। तश्तरियाँ आयीं और चट साफ हो गयीं। जलपान के बाद मकवान ने कहा: "अब काफी रात हो गयी है खाना भी यहीं खा लीजिये" तो हेलन ने तुरन्त स्वीकार कर लिया। हम जानते थे कि हिन्दुस्तानी लोग अमेरिकन उच्चारण नहीं समझ पाते। इसीलिए सभ्यता की बात को अलग रख हम तीनों मिन् की बात करने लगे।

मिन् की कहानी सुनकर जिम का अमेरिकन खून खौलने लगा। अपना एक मित्र साम्यवादी तानाशाही के चंगुल से छुटकारा पाना चाहता है तो क्या हम निर्वीर्य बनकर केवल देखते रहेंगे? हमें कुछ करना ही होगा।

मैंने जाकिन से कहा मेरे मन में भी तुम्हारी जितनी तड़पन है। लेकिन तुमने केवल इस मित्र की कहानी सुनी है ऐसी सैकड़ों कहानियाँ सुनते-सुनते मेरे कान अब बहरे हो चुके हैं। अब मेरे सामने किसी एक व्यक्ति के भविष्य का सवाल नहीं रहा। मेरा यही लक्ष्य बन गया है कि जगत् में कहीं भी असत्य और हिंसा न रहे।

जिम समझ न सका कि मैं कैसे स्थिर और शांत रह सकी हूँ। उसने फिर से पूछा तुम मिन् के लिए क्या कुछ भी नहीं करना चाहती हो?

चाहती जरूर हूँ लेकिन जानती हूँ कि मैं उसके लिए कुछ नहीं कर सकती हूँ। संभव है कि तुम मिन् को मुक्ति दिला सकोगे लेकिन मेरे सामने अकेला मिन् नहीं सारे करोड़ों की जनसंख्यावाला चीन पड़ा है।"

जिम के लिए मेरी बात समझना असंभव था। दुनिया में कहीं भी स्वतंत्रता के लिए खतरा पैदा होते ही उसकी रक्षा के लिए एटम बम लेकर दौड़ जाना अमेरिका का यह एक सबक था। एक की स्वतंत्रता की रक्षा

दूसरा नहीं कर सकता है और वम की सहायता से तो कर्त नहीं कर सकता है इसका अभी तक न जिम को मान हुआ था न उसके देश को। मेरी एक न सुनता हुआ जिम दूसरे ही दिन दिल्ली चला गया। अमरिकन दूतावास की सहायता से लिन् की मुक्ति के लिए वह कोशिश करना चाहता था। अपनी सफलता के बारे में उसे न सिर्फ आशा थी बल्कि विश्वास भी था। मैंने उसे बार-बार समझाया कि तुम्हारी इन कोशिशों के कारण लिन् के गले की रस्सी और खिचती जायगी लेकिन उस समय वह यह कैसे देखता ? भविष्य में वास्तविकता ही उसे इस सबका भान करानेवाली थी। जिम को बहुत दिनों के बाद पता चला कि उसकी सहायता की कोशिश के कारण ही लिन् का शिक्षा-विभाग का कम तकलीफवाला जीवन समाप्त हुआ और उसे 'कम्न् के छत' पर सड़क बनाने के लाल सरकार के महान् कार्य में श्रमदान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अपना कार्य-क्षत्र छोड़ बाहर भटकना मुझे पसन्द न था। लेकिन उस वर्ष बार-बार बाहर जाना पड़ा। सुधीर का एक कड़ा पत्र आया। पत्र चार-पाँच सालों से उसने मुझे कितनी बार निमंत्रण दिया था लेकिन कुछ-न-कुछ काम आता रहता और मैं उसके आश्रम न जा पाती। अब उसका 'आखिरी चेतावनी' वाला पत्र आया "हमारा प्रदेशीय सर्वोदय सम्मेलन हमारे आश्रम में तारीख को होगा। आपको प्रधान प्रतिनिधि के तौर पर निमंत्रण देना तय हो चुका है। हमने पत्रक भी छाप डाले हैं और समाचार-पत्रों में खूब प्रचार किया है। इस पर भी यदि आप नहीं आयेंगी और हमारी फजीहत होगी तो उसकी सारी जिम्मेवारी आपकी रहेगी।" इस पत्र के जवाब में मुझे उसके निमंत्रण को स्वीकार करना ही पड़ा।

भारत भी चीन जैसा लम्बा-चौड़ा विशाल देश है। मैंने चीन की अपेक्षा यहाँ पर यातायात के साधन अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं रेलें हैं,

बसें हैं लेकिन उनमें से अधिकांश की गति मुझे बैलगाड़ी जैसी मालूम होती है। यहाँ पर किसी एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में जाना हो तो लगता है कि दुनिया की सैर करने निकले हैं। सुधीर के आश्रम में पहुँचने के लिए जितना समय लगा उससे चौथाई समय में मैं हवाई जहाज से न्यूयार्क पहुँच जाती।

सुधीर का आश्रम सड़क से दूर था। यातायात के समस्त साधनों का उपयोग कर अन्त में सर्वोत्तम साधन पदयात्रा का भी उपयोग करना पड़ा तब कहीं मैं आश्रम पहुँची।

वैसमाला की तलहटी के निविड़ कानन में स्थित मिट्टी और घास-फूस की झोपड़ियोंवाला छोटा-सा गाँव देखकर मेरी तबीयत खुश हो गयी। सम्मेलन के लिए आये हुए सौ-दो सौ मेहमानों के कारण आश्रम में काफी चहल-पहल थी। व्यवस्था का दायित्व दीपा के ऊपर था और वह दिन-रात व्यस्त रहती थी। फिर भी उसने मुझे अतिथि-निवास में रहने नहीं दिया। अपने घर पर ठहराया और रोज सुबह-शाम मेरे लिए विशेष भोजन भी पकाया। उसकी कुटी मुझे बड़ी प्यारी लगी। बगीचे में खिले रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियाँ जुही मालती रातरानी और चमेली की मकान की छत पर सुगन्ध फैलानेवाली लताएँ, पिछवाड़े में लाल टमाटर, गोभी मौकी कद्दू धनिया की क्यारियाँ लिपी-पुती साफ-सुथरी दीवालें सुव्यवस्थित ढंग से रखी हुई मिली-जुली चीजें बाँस की शेल्फ पर रखी हुई दस-बीस अच्छी किताबें—यह सारा देख मैंने दीपा से कहा : 'मन करता है कि यहीं रह जाऊँ। रूठने का नाटक करती हुई दीपा बोली : "बस-बस खूब जानती हूँ। पाँच साल से बराबर बुलाती रही तब कहीं आज न्त चरणा का स्पर्श मिला हमारी कुटी को। सारी दुनिया घूमने के लिए आपके पास समय है लेकिन इस गरीब भाभी के पास आने के लिए फुरसत नहीं।

म्हारे पर तुम अधिक सुन्दर लगती हो।

"ज़रा धीरे-धीरे बोलिये कोई सुन लेगा तो उसे शंका हो जायगी कि कहीं यह विदेशी महिला अन्धी तो नहीं है।

'अंधी तो हूँ ही। मेरे आँखें होतीं तो तुम्हारी यह रमणीय कुटी देखने कब की आ गयी होती।"

दिनभर सम्मेलन का कार्यक्रम चलता रहता। हम दोनों को बातें करने की फुर्सत मिलती रात ग्यारह बजे के बाद। उस समय दोनों की आँखें नींद से बोझिल रहतीं। लेकिन फिर भी हर रात दो बजे से पहले हम सोने का नाम न लेतीं। पहले दिन जब दीपा सामूहिक भोजनालय का सारा काम निपटाकर साढ़े ग्यारह बजे घर लौटी तब मैं पढ़ रही थी। मेरे हाथ से किताब छीनती हुई वह बोली: 'कितना पढ़ोगी? पढ़-पढ़कर इतना ज्ञान प्राप्त कर चुकी क्या अब भी कुछ बाकी रह गया है? इधर तो महीने बीत जाते हैं लेकिन हमें किताबों का दर्शन तक नहीं होता है।

मैंने कहा: 'यह ठीक नहीं है। प्रतिदिन कम-से-कम आधा घंटा तो ज़रूर पढ़ना चाहिए। शरीर के साथ बुद्धि को भी खुराक मिलनी चाहिए।

'सब जानती हूँ लेकिन समय मिलेगा तब न पढ़ूँगी? हमारे आश्रम में पूरा स्वावलम्बन चलता है। चूल्हा चौका बर्तन-सफाई, कपड़े धोना बगीचे का काम यह सारा तो है ही। ऊपर आश्रम की पाठशाला में चार घंटे पढ़ाने का भी काम करना पड़ता है और ऊपर से तीन बच्चों की देखभाल। कभी इसे बुखार तो कभी उसे जुकाम। बताइये कैसे समय निकालूँ पढ़ने के लिए?

मैंने पूछा 'घर के कामों में सुधीर कुछ सहायता नहीं करता है?

'घर पर रहते हैं तब तो कुछ करते हैं। पर वे यहाँ रहते ही कहाँ हैं? बाहर घूमने में ही उनका अधिक समय बीतता है, और जब यहाँ रहते हैं तब भी दस-बीस लोग दस-बीस समस्याएँ लेकर घेरे रहते हैं। वैसे काम करने में मुझे कोई कष्ट नहीं मालूम देता। लेकिन बच्चे बहुत

तंग करते हैं। इस साल मैंने जबकर प्रकाश को माँ के पास रखा तो इनकी भौंहें चढ़ गयीं।

मैं कुछ समझ न सकी : उसमें तुमने क्या बुरा किया ?"

सुधीर पढ़ने का नाटक कर रहा था लेकिन अब उससे रहा न गया। उसने कुछ उत्तेजित होकर व्यंग्य करते हुए कहा 'आज की शिक्षा पद्धति को गलत मानकर हम गाँवों में नयी तालीम की शाला चलायेंगे। उसमें गाँव के बच्चे पढ़ेंगे लेकिन हमारे बच्चे शहर के स्कूलों में पढ़ेंगे। तो क्रान्ति होने में देर क्या रहेगी ?

शायद दीपा ऐसे उपहासभरे शब्द सुनने की अभ्यस्त थी लेकिन मुझे यह अखरा। मैंने तुरन्त कहा : क्या आपने कभी इस ओर ध्यान दिया है कि दीपा काम के बोझ से दब रही है क्रान्ति का सारा बोझ क्या वह अकेली ढोयगी ?

'काम अधिक था इसलिए नहीं भेजा प्रकाश को। ये चाहती हैं कि लड़का डॉक्टर बने इंजीनियर बने। इसीलिए उसे अभी से स्कूल में भर्ती कराया है। सुधीर न [illegible]सी तीव्रता से जवाब दिया।

दीपा कैसे चुप रहती हाँ-हाँ चाहती हूँ कि मेरा लड़का डॉक्टर बने। सब आपके जैसे बेवकूफ नहीं बन सकते हैं। नयी तालीम की मामूली दस तक की शिक्षा पाकर बच्चों का भविष्य क्या बनेगा ? बड़े होने पर बच्चे हमें कोसेंगे तब पता चलेगा।

सुधीर और क्रुद्ध हो गया "आपके लड़के डॉक्टर, इंजीनियर बन [illegible] गाँव के दूसरे लड़के क्यों न बनें ? वे हल क्यों चलाते रहेंगे ?"

[illegible] बात दूसरी है। उन्होंने आज तक हल ही चलाया है।"

[illegible] में पड़ जाना।

सुधीर [illegible] मुस्कुरा कर कहा : देखा आप ? यह भी मामूली है कि हम [illegible] हम मध्यमवर्गीय हैं और गाँववाले नीच-गँवार [illegible] अब क्रान्ति कैसे हो सकेगी ?

[illegible] 'तालीम की बात रहने दीजिये। इस गाँव
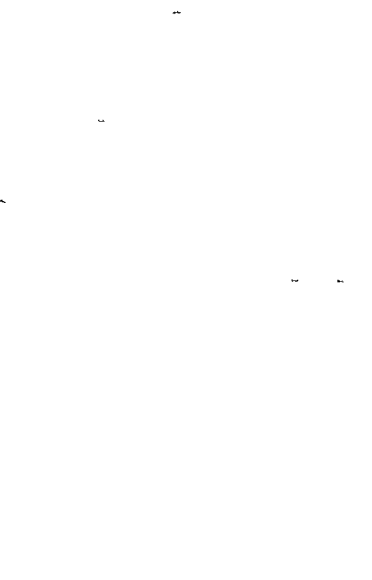
कर पायी। हो सकता है कि आन्दोलन में अभी भाटा (उतार) आया है। ऐसे समय पर हम संकल्प और वात्सल्य के साथ काम करते रहेंगे तो कल ही ज्वार (चढ़ाव) भी आ जाय। कार्ल मार्क्स ने जो कहा था वह हमारे लिए आज विशेष लागू होता है कि भविष्य हमारा है। हमारे हृदय में इस श्रद्धा का दीप जलता रहेगा तो वास्तव में भविष्य हमारा होकर रहेगा।

सुधीर के प्रदेश में जाने का यह मेरा पहला ही अवसर था। यहाँ के कार्यकर्ताओं के पास संख्या-बल नहीं था पर गुण-बल था। प्रभु ईसु के वचन के अनुसार वे 'पृथ्वी का नमक' थे। लेकिन अगर नमक ही अपना 'खारापन' छोड़ दे तो ? यही सवाल था। इसीके उत्तर में भारत की अहिंसक क्रान्ति का भविष्य निर्भर था। ●

बारह

●

अभी दिल्ली से लौट भी न पाया था कि मुझे फिर बाहर जाना पड़ा। उत्तर बिहार के सीतामढ़ी इलाके में एक छोटी-सी घटना घटी और दंगे की आग भड़क उठी। उसे बुझाने हम सारे कार्यकर्ता वहाँ पर दौड़े गये।
सन् सत्तावन में केरल की यात्रा में शान्ति-सेना की स्थापना करते समय विनोबाजी ने कहा था कि 'यह स्थापना नहीं बल्कि पुनः स्थापना है। शान्ति सेना की स्थापना तो पहले ही हो चुकी है। बापू ने उसकी स्थापना की। वे उस सेना के एकमात्र सेनापति भी थे और एकमात्र सैनिक भी। सेनापति के नाते उन्होंने आज्ञा दी और सैनिक के नाते उस आज्ञा का पालन कर वे चले गये। गांधीजी प्रथम शान्ति-सैनिक थे वे एक ही शान्ति-सैनिक थे। अब उस एक के पीछे हमारे जैसे शून्य खड़े होने लगे और शान्ति-सेना बन गयी।

शान्ति-सेना के सुप्रीम कमाण्डर थे—विनोबाजी। जानी बलिदान करने में वे सबसे आगे रहनेवाले थे। अहिंसा शान्ति के तरीके से भूमि-समस्या हल हो सकती है यह साबित हो गया था। मैसूर नगर के निकटवर्ती येलवाल में भारत के राजनैतिक पक्षों के सभी प्रमुख नेताओं ने विनोबाजी के सान्निध्य में इकट्ठे हो। सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव स्वीकृत किया था जिसमें कहा गया था कि 'ग्रामदान से देश की भौतिक और नैतिक उन्नति होगी। इसलिए समस्त देशवासियों को चाहिए कि वे ग्रामदान का काम उठावें। ग्रामदान के कार्य के लिए राष्ट्रनेताओं की सर्वानुमति पाने के बाद विनोबाजी ने सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के सामने दूसरी महत्त्वपूर्ण समस्या पेश की। उन्होंने कहा: 'अब हमें यह सिद्ध करना है कि अहिंसा से देश में आन्तरिक शान्ति प्रस्थापित हो सकती है

मुसलमानों के घर जलाते समय आप कैसे भूल जाते हैं कि उन घरों के भीतर माताएँ ही रहती हैं ? काफी चर्चा के बाद लोग समझ पाते थे। कहीं-कहीं मुझे यह भी सुनना पड़ता "आप गोरे लोग तो गाय खाते हैं आप क्या समझेंगी हमारी भावनाओं को। कहनेवाला तुच्छ दृष्टि से मेरी ओर देखकर चल देता।

आसपास के गाँवों का मुसलमान समाज काफी भयभीत था। भय से भागनेवालों को वापस लाना और बसाना हमारा एक काम ही बन गया था। कहीं-कहीं भयभीत होकर सौ-पचास मुसलमान गुट बनाकर रहते हुए नजर आये। हिन्दू सुनाते कि वे हमसे लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। उसमें कुछ सत्य भी था। भय हिंसा को किस तरह पैदा करता है हिंसा के बाद प्रतिहिंसा आती है और इस प्रकार हिंसा का दुश्चक्र चलता ही रहता है, यह सब मैं देख रही थी। जिन मुसलमानों के घर जलाये गये उनमें से अधिकांश गरीब थे। उनकी फूस की झोपड़ी को जलने में देर भी क्या लगती ? हिंसा का नगा नाच आरम्भ होने पर बलि चढ़ते हैं गरीब ही।

शान्ति-स्थापना के कार्य में हमसे होड करने और कोई नहीं आया। निरीक्षण आदि के लिए कुछ राजनीतिक दलवाले अवश्य पहुँचे थे। भकिन वे भी चाहते थे कि कोई शान्ति-सैनिक साथ हो तो अच्छा। सुना कि कहीं-कहीं पर पुलिसवाले भी भयभीत थे। हम कोई बहादुर तो न थे लेकिन हमारे मन में सबके लिए समान प्रेम था। इसीलिए हम निर्भयता से घूम रहे थे। सबको निर्भयता का विचार दे रहे थे। मैंने वहाँ पर महसूस किया कि प्रेम से बढ़कर शक्तिशाली शस्त्र और कोई नहीं हो सकता। जिन्होंने आगजनी लूटपाट आदि में हिस्सा लिया था वे भी हमारा विचार सुन रहे थे। क्योंकि वे जानते थे कि हमारे मन में उनके लिए पूरा प्रेम है। हम जानते हैं कि वे बुरे लोग नहीं हैं अच्छे ही हैं लेकिन भावना के उन्माद में और किसीके भड़काने से उनसे बुरा काम हो गया है। अब ठंडे दिमाग से सोचने पर उनमें से अधिकांश महसूस करने लगे कि

उनमें बसना हुई है। उनमें से कुछ तो ऐसे थे जिन्होंने हमारे साथ जिन मुसलमानों के घर जले थे उनके लिए फिर से नये घर बनाने के काम में भी सक्रिय सहयोग किया। धीरे-धीरे भय समाप्त होता गया और हिन्दू-मुसलमान पड़ोसी फिर से पहले की तरह प्रेमपूर्वक रहने लगे। मैंने एक विनोबा-वचन बार-बार पढ़ा था कि मानव मूल में अच्छा है, किसी विकार के वश होकर वह बुरा काम कर डालता है लेकिन बुराई उसका स्वभाव नहीं है। वहाँ पर मैंने उस विनोबा-वचन पर घटनाओं के द्वारा लिखा गया भाष्य पढ़ा। मैंने यह भी देखा कि मानव चाहे जितना ऊपर चढ़ सकता है और चाहे जितना नीचे उतर भी सकता है। अपने गरीब मुसलमान पड़ोसी की झोपड़ी जलानेवाले हिन्दू भाई भी हमने देखे अपने मुसलमान पड़ोसी की रक्षा के लिए अपनी जान खतरे में डालनेवाले हिन्दू भाई भी देखे। कहीं-कहीं हिन्दू पड़ोसियों ने आक्रमण करनेवाली भीड़ से कहा पहले हमें मार डालो जीते-जी हम अपने मुसलमान पड़ोसी का बाल भी बाँका न होने देंगे।

हमारा सबसे बड़ा काम था अशान्ति की आग को फैलने न देना। छूत की बीमारी की तरह अशान्ति भी तेजी से फैलती है। इस काम में सफलता प्राप्त होते ही हमने विस्थापितों की पुनःस्थापना का काम उठाया। सरकार तथा अन्य संस्थाएँ भी इस काम के लिए आगे बढ़ीं। दोनों समाजों में स्नेहभाव तथा परस्पर विश्वास पैदा करने का काम भी चलता रहा। बाद में हमने सुना कि हमारे शान्ति-कार्य का अच्छा असर हुआ। जगह जगह लोग कहने लगे कि शान्ति-सैनिक समय पर न आते तो दंगा बहुत फैलता। हमारे कार्य का दृश्य फल क्या था मैं नहीं जानती हूँ। लेकिन मुझे एक बड़ा अनमोल फल प्राप्त हुआ। मानव की मूलभूत भलाई पर मेरी जो श्रद्धा थी वह वहाँ जाने के बाद और मजबूत हो गयी।

जगत् में सर्वत्र दो शक्तियों के बीच चलनेवाला संग्राम मेरे हृदय के कुरुक्षेत्र में बराबर चलता रहता। सत् शक्ति की विजय होने पर श्रद्धा-

दुदुभि बजती और प्रसन्न भक्ति सफल होने पर प्रभदा डंके पर चोट करती। किसी भी चीज का हलका-सा स्पर्श होते ही सितार के तार झनझना उठते हैं जगत् की हर छोटी-मोटी घटना मेरी जीवन-वीणा के तारों को छेड़ देती।

सन् १६४६ में चीन की लाल सरकार ने एलान किया था कि तिब्बत जैसे सारे प्रदेशों को जो चीनी साम्राज्य का हिस्सा माने जाते थे स्वय-निर्णय का पूरा अधिकार दिया गया है। मेरे देश की नयी सरकार की उस पहली अच्छी कृति की प्रशंसा मैंने कई दफा की थी। लेकिन सिर्फ दो साल के अन्दर ही लाल चीन की 'मुक्ति-सेना' तिब्बत में घुसी और दुर्बल तिब्बत को हार माननी पड़ी। बन्दूक के बल पर तिब्बतियों के दस्तखत लिये गये और यह जाहिर किया गया कि तिब्बत मुक्त हो गया। उस समय किसीने भी तिब्बत की सहायता नहीं की। अमेरिका जहर का घूंट पीकर रह गया। शायद वह कुछ असमर्थ था। लेकिन भारत ने क्यों चुप्पी साध ली यह मैं कभी न समझ पायी। लाल चीन पर पूरा भरोसा रख भारत ने 'पचशील' का समझौता किया और चीन का यह दावा मजूर किया कि तिब्बत चीन का ही हिस्सा है। बलि चढ़नेवाले बकरे के लिए शायद साल में दो चार दूसरे बकरे आंसू बहाते होंगे लेकिन जब तिब्बत जैसा एक देश बलि पर चढ़ा तब इस विशाल जगत् में किसीने उसकी आह भी न सुनी।

आठ साल बीत चुके थे। दुनिया तिब्बत की कभी की भूल चुकी थी। लेकिन भोले भाले बहादुर तिब्बती चुप न रहे। जब चीनी टैंकों की गड़ गड़ाहट फिर से सुनायी देने लगी तब तिब्बतियों ने विद्रोह किया और बेकसूर बेगुनाह तिब्बती चीनी तोपों के शिकार होने लगे। तिब्बत की सर्वोच्च आध्यात्मिक शक्ति (दलाई लामा) भी चीन की फौजी ताकत के सामने टिक न सके। अगर अध्यात्म में ऐसी शक्ति नहीं कि वह क्रान्ति पर अपना रंग चढ़ा सके तो फिर क्रान्ति उस पर अपना लाल रंग चढ़ाती है। अब अध्यात्म गिरि-कंदराओं में और मठ-मन्दिरों में कैद नहीं रह सकता है। उसे क्रान्ति के क्षेत्र में जीवन के हर क्षेत्र में उतरना होगा और अपना

प्रभाव जमाता होगा । शायद दुनिया को इसका एहसास हो इसीलिए हिमालय के शीत हिमांक से मशालित की ज्वालाएँ भड़क उठी थीं ।[1]

दलाई लामा के साथ तिब्बती शरणार्थियों की बाढ़ भारत की ओर उमड़ पड़ी । भारत ने उदारता से सबको पनाह दी और अपनी सांस्कृतिक परम्परा का निभाया । बौद्धों को बुद्ध-भूमि सहारा न दे तो और कौन देगा ?

दस साल पहले मेरे देश में खूनी क्रान्ति हुई और उससे सारा चीन लाल बन गया । अब वह लाल खून 'बाँस का पर्दा' (बाम्बू कर्टन) फाड़कर बाहर निकल आया था । गीता ने जिसे 'स्थैर्य-विभूति' माना वह हिमालय भी हिल गया । शायद युग-युग के इतिहास में पहली बार हिमालय हिला था । उसकी शान्त ठंडी बर्फीली गोद में इतनी हलचल इसके पहले कभी नहीं हुई थी ।

और यह सब मैं असहाय निरुपाय बेबस होकर देख रही थी । दुनिया के सौ करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार, नौ सौ निन्यानवे मानवों की आँखों की तरह मानव की आँखें भी इसे देख रही थीं ।

मेरे अमेरिकन दोस्तों ने तिब्बती शरणार्थियों के लिए इकट्ठा किया हुआ कुछ रुपया मेरे पास भेज दिया । शायद इसलिए कि मेरे देश की सरकार ने जिनका बलि चढ़ाया उन्हें मैं अधिक निकटता से देख सकूँ । तिब्बती शरणार्थियों का कैंप असम में तेजपुर के पास था । मिस मीर एलन का उस काम में बड़ा उत्साह था । शरणार्थियों की सेवा के लिए हम त्रिमूर्ति की असम यात्रा आरम्भ हुई । उस समय मेरे पास अभी रानी जमिन की पूंजी समाप्त हो चुकी थी ।

गया से तेजपुर की यात्रा बड़ी लम्बी और जी उबानेवाली रही । बार बार गाड़ी बदलनी पड़ी । भारत में तीसरे दर्जे की यात्रा करते समय यह भूल जाना चाहिए कि हम इन्सान हैं और हमारे सहयात्री भी इन्सान [illegible] नरक का अनुभव करना हो तो मरने की जरूरत नहीं तीसरे दर्जे की यात्रा करना पर्याप्त है । हिन्दुओं का मानना है कि चौरासी लाख

योनियों से पार होने पर फिर कहीं मानव-जन्म प्राप्त होता है। मया से टनपुरवाली तीसरे दर्जे की यात्रा में मुझे लगा कि मेरा जन चौरासी लाख योनियों में से किसीमें जन्म हुआ होता तो कितना अच्छा रहता। मच्छर, मक्खी कीटाणु बनकर यात्रा करने में मन तो दुःखी न होता। मानव-जन्म हमें कुछ देर से मिलता तो शायद तब तक भारत की रेलगाड़ियों की हालत कुछ सुधरी हुई रहती।

आसाम जाने का एक सरल सीधा रास्ता था। लेकिन भारत के विभाजन से वह बन्द हो चुका था। मैंने आज तक यह कभी न सोचा था कि 'राष्ट्रीय प्रभुसत्ता' वाला सिद्धान्त रेल-यात्रा में भी इतनी रुकावटें पैदा कर सकता है।

आसाम में प्रवेश होने से पहले ही चाय के बागान दिखाई देने लगे। सुव्यवस्थित सुनियोजित ढंग से लगाये गये चाय बागान की लम्बी-सीधी रेखाओं को देख सफर की कुछ थकान मिट गयी। कहीं भी नजर दौड़ाने पर दिखाई देते आँखों को सुख देनेवाले चाय के सुकोमल पौधे। किन्तु उन पौधों की सुन्दरता में भी मानव-जीवन की विकृति छिपी हुई थी। चाय पीनेवालों का चाय पैदा करनेवालों से कोई वास्ता नहीं। बड़ी-बड़ी तनख्वाह लेनेवाले चाय-बागानों के अफसरों का बागान के मामूली मजदूरों के साथ कोई मेल नहीं रहता है। चीन के राष्ट्रीय पेय के जन्म की कहानी मुझे साम्यवाद के जन्म की कहानी सुनाने लगी।

गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ती जा रही थी। सुबह ही गयी थी मैंने आँखें खोलीं और अचानक दिखाई दिए सूर्य के सुनहरे किरणों से जगमगाते हुए हिम-शिखर। जिस भगवान् ने मुझे आँखें दीं उसके प्रति आज तक मैंने कभी इस प्रकार कृतज्ञता प्रकट नहीं की थी। अवनी-अम्बर को हिम सूत्र से बाँधनेवाला 'देवतात्मा' हिमालय मैं अपनी आँखों से देख रही थी। चीन और भारत को अपनी भुजाओं में भर लेनेवाले पृथ्वी के मानदण्ड हिमालय को मैं अपनी आँखों से देख रही थी। किसी बीते हुए युग में इस 'नगाधिराज' हिमालय के इस पारवाले भारत ने पुकारा था और उस पार

वाले चीन ने उसे हृदयंगम किया था। और भारत-चीन और भारत का धर्मसूत्र से जोड़नेवाला हिमालय भी हिल गया था।

कामरूप (असम) भारत के ईशान्य छोर पर स्थित सीमा प्रदेश है। उसे तिब्बत चीन बर्मा और पाकिस्तान जैसे महान् पड़ोसी मिले हैं। प्रभु ईसु ने हमें आज्ञा दी पड़ोसी पर प्यार करो। और उन्होंने यह भी आज्ञा दी कि दुश्मन पर प्यार करो। इन दो आज्ञाओं का आखिरी हिस्सा एक-सा है शायद इसीलिए दोनों को मिलाकर हमने मान लिया कि पड़ोसी यानी दुश्मन। और जहाँ अपने देश की सीमा पड़ोसी से जोड़ती है वहीं सशस्त्र सेनाएँ रखीं। सभ्यता संस्कृति की यही निशानी मानी गयी और फिर भारत भला कैसे इससे अलग रहता? आधुनिक सभ्यता की प्रतीक सशस्त्र सेना चारों पड़ोसियों से देश की रक्षा करने का महान् उद्देश्य लेकर असम में डटी हुई नजर आयी।

भारत के त्रिकोण में तीन कोण हैं—केरल कश्मीर और कामरूप—जो प्रकृति की सुन्दरता में एक-दूसरे से होड़ कर सकते हैं। कामरूप में मैंने पाया कश्मीर और केरल की सुन्दरता का संगम। केरल की तरह यहाँ भी घने जंगल हैं फलों से लदे हुए केले के पेड़ लोचीले कटहल नारियल और गगनचुम्बी सुपारी भी है। यद्यपि केरल की तरह सागर की सन्निधि नहीं पर छोटे छोटे तालाब जरूर हैं। हरी-भरी प्रकृति की गोद में वहाँ लकड़ी के छप्पर वाले मकान बड़े खूबसूरत लगते हैं और कश्मीर का सखा हिमालय तो कामरूप की जैसे आत्मीय देने हाथ बढ़ाये खड़ा है।

हा भविष्य इस धरती पर शायद ऐसा कोई प्रदेश न होगा जहाँ प्रकृति की सुन्दरता के साथ मानव जीवन की विकृति कुरूपता न हो। कश्मीर और केरल जैसे की सुन्दरता का आलाप गरीबी के कारण बेसुरा हो जाता है। उधर पश्चिम में अपनी बुद्धिमत्ता की डींग हाँकता हुआ मानव प्रचण्ड शस्त्रों का निर्माण कर चुका है। वैज्ञानिक बड़े गर्व के साथ कहते हैं कि हमारे पास ऐसे औज़ार और शक्तियाँ हैं, जिनके बल पर सारे जगत्

में मानवमात्र को चार घण्टे से अधिक श्रम नहीं करना पड़ेगा और उस श्रम से वह हर प्रकार के सुख-साधन प्राप्त कर लेगा। उधर समृद्धि की इतनी प्रचुरता और इधर मानव के लिए जीवन को भी दुर्लभ बना देनेवाली दरिद्रता। विज्ञान-युग में भी दरिद्रता टिक पाती है इसके माने हैं कि मानव की बुद्धि का दिवाला निकल चुका है। मानव-जीवन में करुणा नहीं है इसीलिए चारों ओर तृष्णा है। समाज-व्यवस्था की बुनियाद अहिंसा नहीं है इसीलिए चारों ओर अभाव है।

कामरूप में दरिद्रता का वीभत्स रूप नहीं दिखाई देता है, लेकिन उस कमी की पूर्ति हिमालय के चरणों में बसे हुए छोटे खूबसूरत तेजपुर नगर के पास तिब्बती शरणार्थियों के कैंप ने कर दी और प्रकृति की सुन्दरता के साथ मानव की विकृति साकार रूप धारण कर खड़ी हुई। तिब्बत न कभी आक्रामक था न साम्राज्यवादी। दुनिया की छत पर स्थित वह बेचारा बेगुनाह मुल्क गत कई शताब्दियों से जगत् से बिलकुल ही अलग रहा। उसने कभी यह जानने की तकलीफ भी नहीं उठायी कि दुनिया में अन्यत्र कहाँ क्या हो रहा है? न उसे औद्योगिक क्रान्ति का पता था न ज्ञान क्रान्ति का। अपने मध्ययुगकालीन जीवन में कोई परिवर्तन करने की आवश्यकता उसने महसूस नहीं की थी। अपनी ध्यानावस्था या सुषुप्तावस्था से वह जाग उठा चीनी तोपों की आवाज सुनकर। जागने पर उसने इतना ही जाना कि वह अपने ऐसे पड़ोसी देश का जो भौतिक शक्ति में उससे अधिक बलशाली था गुलाम बन चुका है और यह जानते ही वह मुक्ति के लिए छटपटाने लगा।

मेरे चारों ओर शरणार्थियों के कैंप थे जिनमें मेरे रिश्तेदार जैसे दीखनेवाले लोग थे। उन्होंने आज तक कभी किसीको कोई तकलीफ नहीं पहुँचायी थी। उनकी यही मांग थी कि उन्हें जीने दिया जाय। लेकिन वासना की कोई सीमा नहीं होती महत्त्वाकांक्षा की भी सीमा नहीं होती। इसीलिए जगत् की इस शीत शांत छत पर भी पड़ोसी की फौज आ धमकी और आग-गोले बरसाने लगी। बेचारे तिब्बतियों को बगैर

गुनाह के ही सजा मिलती गुरु हुई और उन्हें अपना घर-द्वार जमीं-जायदाद जन्मभूमि सब कुछ छोड़कर शरणार्थी बनना पड़ा ।

भारत की सरकार और जनता ने तुरन्त उन शरणार्थियों की सहायता का काम आरम्भ कर दिया । उनकी उजड़ी हुई जिन्दगी फिर से बसाना सम्भव न था । केवल उन्हें इसको सहने लायक बनाना सम्भव था । इससे अधिक कोई कुछ नहीं कर सकता था । अमरीकन युवकों के द्वारा भेजा गया प्रेम का प्रतीक थोड़ा-सा रुपया आदि लेकर जब हम तेजपुर पहुँचे तब शरणार्थियों के झुण्ड-के-झुण्ड आ ही रहे थे । मैंने सोचा कि जिस-हमन को प्रारम्भ के कार्य में कुछ थोड़ी सहायता कर मैं चली आऊँगी क्योंकि वहाँ पर काफी काम पड़ा था ।

जब हमन ने पूछा कि 'तुम इनकी भाषा कुछ समझ पाती हो न" तो मुझे बड़ी हँसी आयी । मैंने कहा : "चीनी और तिब्बती भाषाएँ एक दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं । दोनों देशों की भाषा संस्कृति आदि में काफी अन्तर है । हाँ दोनों का धर्म एक ही है और दोनों मंगोलियन वंश के हैं ।"

कुमारियों की असमानता से शरणार्थियों की दर्दनाक कहानियाँ सुन सुनकर हेमन के होश गुम हो गये । उसने आज तक ऐसा दुःख देखा न था लेकिन मेरे लिए उन कहानियों में कोई नवीनता नहीं थी सिर्फ व्यक्तियों के और गाँवों के नाम भिन्न थे । इसी प्रकार की दर्दनाक कहानियाँ मैं पन्द्रह वर्षों से लगातार सुनती आयी थी । इन घटनाओं का तटस्थ निर्विकार और पक्षोमवृत्ति से विचार करना चाहिए ऐसा मुझे प्रतीत होने लगा था । साम्यवादी राष्ट्रों को छोड़ अन्य सब देशों ने चीन के इस कुकर्म की कड़ी आलोचना की थी जो स्वाभाविक ही था । लेकिन चीन के उस अन्यायपूर्ण आक्रमण में भी सत्य का छोटा-सा अंश छिपा हुआ है इसका विनोबाजी के अलावा अन्य किसी का ध्यान न हुआ । विनोबाजी ने कहा था कि चीन की बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए चीन की भूमि अपर्याप्त है । उसे अधिक भूमि की आवश्यकता है । इसलिए इधर-उधर हाथ पैर फैलाये बगैर उसका काम नहीं चलेगा । भूदान का अभिनव

है। आप केवल निमित्त बन गये। वैसे कभी न कभी मुझे उधर भेजा ही जाता।

हेलन ने कुतूहल से पूछा "कान्सेन्ट्रेशन कैंप में आपको तकलीफ बरदाश्त हुई होगी।

शरीर को तो जरूर तकलीफ हुई, लेकिन मन की तकलीफ मिट गयी। चिपलिन के पपा के नाम पर अमेरिका का 'पालतू कुत्ता' जैसी बातें लिखने के कुकर्म से मुझ कान्सेन्ट्रेशन कैंपवासी तकलीफ बढ़कर मालूम हुई। वैसे वहाँ पर हमें पन्द्रह हजार फीट की ऊँचाई पर पठार पर सड़क बनाने के काम में खटना पड़ता था। तम्बू भी पर्याप्त मात्रा में न थे इसलिए हमें कड़ाके की सर्दी में भी खुले में सोना पड़ता था और दिन में एक दफा भोजन मिला तो हम उसे बहुत समझते थे। इन सबके बावजूद मैं वहाँ पर था इसीलिए मुक्त हो सका।

आप सैकड़ों मील पैदल चलकर आये? और इतनी सर्दी में? हेलन को बड़ा अचरज हो रहा था।

लिन् बोला "जब चीनियों के चंगुल से मुक्त होकर दलाई लामा के भारत पहुँचने की खबर आयी तो मेरे साथ काम करनेवाले तिब्बती मजदूर भी भाग जाने की योजना बनाने लगे। उनके साथ रहकर मैंने कुछ तिब्बती भाषा सीख ली थी। एक अन्धेरी रात में बर्फ गिर रही थी चीनी पहरेदारों की आँखें बचा हम भाग निकले। रास्ते में जगह-जगह हमारे जैसे ही भारत की ओर भागनेवाले तिब्बती मिलते रहे। जो घर छोड़ नहीं सके उनकी भी हमारे साथ हमदर्दी थी। इसीलिए सफर में विशेष खतरे नहीं उठाने पड़े।

जिम ने पूछा: इतने लंबे सफर में कहीं भी चीनी सिपाहियों ने आपको देखा नहीं?

लिन् सबसे कठिन था ब्रह्मपुत्र पार करना। दोनों किनारों पर चीनी फौज की कड़ी निगरानी थी। चीनी मुख्बिर होने का बहाना बनाकर मैं वहाँ से निकला। ब्रह्मपुत्र पार करने पर फिर जो प्रदेश आया वह

तिब्बती शरणार्थियों के सम्बन्ध में था इसलिए उस यात्रा में हमें कोई तकलीफ नहीं हुई। जगह-जगह गाँववालों ने हमारी सहायता की। हिमालय की बर्फीली गोद में ऊँची-नीची पगडंडियों पर चलते समय तकलीफ मालूम होती था मैं 'ह्वेनत्सांग' 'फाहियान' जैसे प्राचीन चीनी यात्रियों का स्मरण करता और फिर भारत की ओर बढ़ते हुए मुझे विशेष आनन्द होता। भारत की सीमा पर पहुँचते ही मेरे साथवाले तिब्बतियों ने घुटने टेककर गुरुदेव की प्रार्थना की। मैं भी उनके साथ हो गया।

जिम ने लिन् से बार-बार आग्रह किया कि उसे अमेरिका आना चाहिए। भारत में उसके लिए खतरा है, लेकिन लिन् पहले ही तिब्बती शरणार्थियों के साथ रहने का निर्णय कर चुका था। उसने कहा: "मेरे देश की सरकार ने इन निरपराध तिब्बती लोगों पर जो क्रूर अत्याचार किया है उस पाप का कुछ प्रायश्चित्त मेरे द्वारा ही जाय तो मैं अपना जीवन सार्थक समझूँगा। मैं तिब्बती बनकर इनके बीच रहूँगा और इनकी सेवा करूँगा।

लिन् को मनाना संभव न था। उलटे जिम पर ही लिन् के विचारों का असर होने लगा। उसने पूछा 'अपने देश की ओर से जो पाप होता है उसमें अगर हमारा हिस्सा न हो तो उसका प्रायश्चित्त हमें क्यों करना चाहिए?

लिन्: 'अपने देश के द्वारा हमें जो सहूलियतें सुरक्षा आदि प्राप्त होती हैं, उसका हम हमेशा फायदा उठाते ही हैं न? क्या वे सारी सहूलियतें हमें अपने निजी पुरुषार्थ से प्राप्त होती हैं? अमेरिकन नागरिक होने के नाते आप दुनियाभर में कहीं भी जा सकते हैं, कारोबार निश्चित बरार कर सकते हैं, तो फिर अमेरिकन समाज में जो वर्ण-विद्वेष का पाप है उसे मिटाने की जिम्मेदारी क्या आपकी न होगी?"

जिम "तुम्हारी बात सही है। लेकिन यह बताओ कि आज चीन में अमेरिका के प्रति जो इतना भयानक विद्वेष है उसका क्या कोई आधार है? क्या अमेरिका ने चीन में अपना साम्राज्य स्थापित किया था?"

तेरह

●

प्रबल झंझावात की तरह उस तीसरे दुःख से मेरी तीसरी दुनिया की जड़ें न हिल जातीं तो शायद मेरे अन्तर में सोये हुए गुरुदेव कभी जाग ही न पाते।

सुना है कि कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ की प्रिय ऋतु थी वर्षा। नवपल्लवों को प्रस्फुटित करनेवाला वसन्त और धन-धान्य-समृद्धि से धरती को विभूषित करनेवाला हेमन्त भी उनका प्रेम पाता था। लेकिन प्रखर ग्रीष्म से दग्धतप्त धरती पर 'अमृतधारियाँ' करनेवाला आषाढ़ उनके चित्त को चुरा लेता था। किन्तु मेरे चीनी मन को नवनवोन्मेषप्रसवा वसुधा के सभी उन्मेष आकर्षित करते हैं। फिर भी जाने क्यों बरसात का वह मेघाच्छादित प्रभात किसी अज्ञात की ओर संकेत कर रहा था। मेघ बाहर से कहीं भी तूफान के आसार नहीं नजर आ रहे थे फिर भी दिन का वह अन्धकारमय आरम्भ देख मुझे लगा जैसे मन्दिर की अविकल अविचल और स्थिर बुद्ध-मूर्ति भी कुछ अशान्त अस्थिर-सी हो गयी है। नित्यक्रम के अनुसार प्रातःकालीन प्रार्थना के पश्चात् मैं बुद्ध-मंदिर गयी जो आश्रम से केवल दस कदम की दूरी पर था। प्रतिदिन उस समय मैं देखती थी सन्ध्या के रंग से रँगी हुई रक्तिम प्राची। लेकिन आज घने काले मेघों से आच्छादित चारों दिशाएँ किसी अज्ञात भविष्य की आशंका से खिन्न दिखाई दीं। उस अन्धकारमय वातावरण में प्रकाश-किरणों के वितरण के लिए मैंने मंदिर का पंचज्योति प्रदीप जलाया। किन्तु बाहर की हवा के तेज झोंकों में प्रदीप की एक भी ज्योति न टिक सकी। अन्धकार न मिट सका।

अगरबत्ती जलाकर मैं अमिताभ के चरणों में झुक गयी। उसी समय

बाहर की वह दिल दहलानेवाली ठंडी हवा वेग से भीतर घुसी और उसके साथ ही पानी की बूँदें भी।

बौछार में भींगती हुई मैं भागम लौटी। पानी की बूँदों से कुछ गला हुआ आज का समाचार-पत्र पड़ा था। देखी प्रथम पृष्ठ पर बड़े-बड़े अक्षरों में छपी हुई एक खबर—'चीन ने भारत पर हमला किया।

'असम्भव' 'असम्भव' 'सर्वथा असम्भव'। पत पाँच हजार साल के प्रदीर्घ इतिहास में जो कभी न हुआ वह आज कैसे हो सकता है? जब मानव इतिहास लिखना जानता भी न था तभी से भारत और चीन की मैत्री चली आ रही है और बुद्धदेव ने तो दोनों देशों को स्नेहसूत्र से धर्मसूत्र से सदा-सदा के लिए गूँथ दिया है। सैकड़ों बौद्ध भिक्षु, चीनी जनता को बुद्ध का संदेश देने के लिए हिमालय के गगनस्पर्शी हिम-शिखरों को लाँघकर, गोबी की मीलों तक फैली हुई रेतीली मरुभूमि को भूखे-प्यासे पारकर पैदल चीन पहुँचते थे और हजारों चीनी यात्री उसी राह से बुद्ध-भूमि के दर्शन हेतु भारत-यात्रा करते थे। दोनों के सम्मिलित प्रयासों के परिणामस्वरूप हिमालय के क्रोड़ अंक में और गोबी की मरुभूमि पर न जाने कितने विशाल विहारों और मनोहर मंदिरों का निर्माण हुआ था और आज उसी चीन ने इस भारत पर आक्रमण किया है। नहीं नहीं। यह कभी नहीं हो सकता।

चीन में चाहे च्यांग काई शेक की हुकूमत हो या माओ-त्से-तुंग की भारत ने चीन के साथ सर्वांगित मैत्री कायम रखी। चीन को राष्ट्रसंघ में स्थान मिलना चाहिए इसके लिए चीन से भी कुछ अधिक प्रयत्नशील भारत रहा। 'हिन्दी चीनी भाई भाई' का मधुर उद्घोष अभी भी भारत भूमि में चारों ओर गूँज रहा है फिर पर भी चीन ने भारत पर आक्रमण किया। नहीं सम्भव नहीं। कदापि सम्भव नहीं।

लेकिन समाचारपत्रों की यह बड़े-बड़े अक्षरोंवाली खबर कुछ और ही कह रही थी। भारत के प्रधानमंत्री ने लोकसभा में घोषित किया था कि 'चीन ने भारत की भूमि पर आक्रमण किया है। लद्दाख का बारह सौ

निकले। यह गलत न था। जिम ने कहा : "हम आज तक यही तो चिल्ला रहे थे लेकिन भारत सरकार ने हमारी एक न सुनी और बिना सोचे-समझे चीन पर भरोसा रखा। अब वह उसीका फल पा रहा है। इस पर से तो उनकी आँखें खुलनी चाहिए। हलन ने भी उसका समर्थन किया। उसे यह दुःख जरूर था कि भारत की शान्तिवादी विदेश-नीति असफल रही। उन दोनों के लिए यह केवल बौद्धिक चर्चा का विषय था लेकिन मेरे समस्त जीवन में भूचाल आ चुका था।

जिम के सामने फिलहाल एक व्यावहारिक समस्या आ खड़ी हुई। "रिटा तुमने अमेरिका का नागरिकत्व छोड़कर भारत की नागरिकता लेने में बुद्धिमानी नहीं की। हमने तुम्हें बार-बार मना किया पर तुम नहीं मानी।

मैंने शान्तिपूर्वक कहा 'मुझे अभी तक भारत का नागरिकत्व नहीं प्राप्त हुआ है। हाँ अमेरिका का नागरिकत्व मैंने जरूर छोड़ दिया है।"

"माई गॉड स्थिति कितनी जटिल हो गयी। अब तो भारत सरकार तुम्हें 'चीनी' मानकर चाहे जब जेल में भेज सकती है। मैं आज ही दिल्ली चला जाऊँगा। तुम्हारे लिए फिर से अमेरिकन नागरिकत्व प्राप्त करना होगा। जिम के उतावलेपन से मैं परिचित थी।

'मुझे अमेरिकन नागरिकत्व नहीं चाहिए" मैंने शान्ति से किन्तु निश्चय के साथ कहा।

और भारत का न मिला तो?

'जो होना है सो होगा।"

जिम को केवल मेरे नागरिकत्व की चिन्ता थी। मुझे अपने अस्तित्व मात्र की ही चिन्ता थी। अब मैं किसी प्रकार की सुरक्षा नहीं चाहती थी। इस तूफान में अपने-आपको झोंक देने का मैंने निश्चय कर लिया था। मैं नहीं जानती थी कि कल क्या होनेवाला है। न मुझे उसके लिए कोई परवाह ही थी।

न मेरा कोई वतन रहा न कोई घर। मेरा चमन कब का उजड़

चुका था। मेरे दोस्त कब के बिछुड़ गये थे। फिर भी जिन्दगी बाकी थी जीने की प्यास बची थी। अमेरिका में और भारत में फिर से मैंने नयी उम्मीदों के साथ नये-नये घरौंदे बनाये थे लेकिन अब वे घरौंदे भी ढह चुके थे। पतझड़ के सूखे पत्ते-सी मैं आंधी में उड़ रही थी भटक रही थी। मैं चीनी हूं इसका पता चलते ही भारत सरकार के कानून की पकड़ में किसी भी क्षण पकड़ी जा सकती थी। मेरे सारे साथी स्वयं विनोबा भी बेबस थे कोई मुझे बचा नहीं सकता था। अपने छुटकारे का प्रयास मुझे खुद ही करना था।

इसीलिए मैंने तय किया कि भारत की जनता से सच्ची बात कह दूंगी। सत्य की कसौटी पर मेरी जीवन-ज्योति जगमगा सकती थी और सदा के लिए बुझ भी सकती थी। मैंने सत्य की शरण में जाने का निश्चय कर लिया जो मुझे तार भी सकता था मार भी सकता था। उसके तारने और मारने दोनों में मेरा कल्याण था।

किसी बड़े शहर की वह विशाल सभा थी। चीनी आक्रमण का प्रतिरोध करने हजारों की तादाद में नगरवासी और ग्रामवासी इकट्ठा हुए थे। उनमें से कुछ मुझे पहचानते भी थे लेकिन किसीको सही बात मालूम न थी। उनसे मेरा परिचय था विनोबाजी की अमेरिकन शिष्या' के नाते। आज उन्हें मेरा असली परिचय मिलनेवाला था। सभापति महोदय तथा कुछ अन्य वक्ताओं से भी मेरा परिचय था। मैंने सभापतिजी से बोलने की अनुमति मांगी। उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दी और बड़े आदर के साथ मुझे मंच पर अपनी बगलवाली कुर्सी पर बिठाया। अमेरिकन महिला के समर्थन की उस समय उन्हें भी आवश्यकता थी। मुझसे कहा गया था कि तीन चार वक्ताओं के बाद मुझे बोलना है।

सत्ताधारी पक्ष के एक नेता बड़े जोश के साथ भाषण दे रहे थे : "चीन के आक्रमण का हम डटकर मुकाबला करेंगे। भारत की एक-एक इंच भूमि की रक्षा के लिए खून की नदियां बहा देंगे। चीनियों को हिमालय

के उस पार खदेड़े बगैर चैन की साँस न लेंगे। हमने दोस्ती का हाथ बढ़ाया था लेकिन चीन ने हमें धोखा दिया।"

मेरा मन चिल्ला-चिल्लाकर कहना चाहता था कि 'चीन ने नहीं चीन की आज सरकार ने।"

"हिमालय हमारा है हमारा है हमारा है। (करतल ध्वनि की गूँज) हमारे ऋषि-मुनियों की तपस्या से पवित्र बने हुए हिमालय पर आज ये लुटेरे अपना हक बता रहे हैं। चीनियों का हिमालय पर कोई अधिकार नहीं है।"

मेरे अंत-पटल पर 'अमिताभ-अमिताभ' का जप करते हुए युद्ध-भूमि की ओर बढ़नेवाले अपमानित चीनी यात्रियों की परछाइयाँ नाचने लगीं।

दूसरे भाई बोल रहे थे : 'चीन का सारा इतिहास बता रहा है कि चीन बराबर साम्राज्यवादी रहा है उसने दूसरों पर आक्रमण किया है। ऐसा-सी ताकत आयी नहीं कि उसने हमेशा हाथ-पैर फैलाने के प्रयास किये हैं। चीनी स्वभाव से ही साम्राज्यवादी हैं।

मुझे याद आयी पश्चिमी इतिहासकारों की किताबें जिनमें उन्होंने हमारा उपहास करते हुए लिखा है कि "चीनी हद से ज्यादा शान्तिवादी हैं और इसीलिए कमजोर रहे हैं। चीन की समाज-व्यवस्था में प्रथम स्थान दार्शनिक का दूसरा किसान का और सबसे आखिरी स्थान सिपाही का रहा है। लड़ने को हमने सदा नीच कार्य माना है। लाओत्से ने हमें सिखाया है कि "हिंसा करना धर्म के खिलाफ है। समाज का सबसे बड़ा दुश्मन है सिपाही और हथियार।

तीसरे वक्ता का भाषण जारी था : तिब्बत को निगलकर अब चीन की गिद्ध दृष्टि हमारी ओर लगी है। लेकिन चीनियो ! याद रखो हमने आज तक शान्ति की बातें की होंगी पर अब हम तुम्हारे आक्रमण का प्रतिकार 'शठं प्रति शाठ्यम्' के न्याय से करेंगे। "दोस्त की पीठ में छुरा भोंकनेवाले चीनियों से अधिक नीच इस दुनिया में कोई न होगा!"

मेरा दिल बगावत कर रहा था। चीनियों ने कोई अपराध नहीं किया

था। चीना जनता के मन में आज भी भारत के प्रति आदर की भावना बनी हुई है। हमारा यह विश्वास सदा अटूट रहेगा कि भारत-भूमि में पैदा होना माना पूर्वजन्म के पुण्यात्मा होने हैं। लेकिन हमारे देश पर सत्ता जमानेवाली सरकार ने भारत पर आक्रमण करने का यह दुष्कर्म किया है। हां हम उस सरकार को रोकने में असमर्थ अवश्य थे लेकिन यह आक्रमण चीनियों का नहीं था।

चीन महाशय उठ खड़े हुए : 'कीड़े-मकोड़े और मेढक खानेवाले चीनियों को हम हां-हां में क्या करें। (हंसी) हमें इनकी नाक काटनी है पर उनकी नाक ही कहां है ? (खूब हंसी)

मैंने फिर सभापतिजी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। उन्होंने कहा अब इनके बाद आपको ही बोलना है।

मुझे यह याद नहीं कि वे भाई कितने मुखों तक बोलते रहे। लेकिन बाद में लोगों ने मुझे सुनाया कि उस दिन मैं पूरा डेढ़ घंटा बोली।

मैंने भाषण आरम्भ किया तब न मेरे पैर थर-थर कांप रहे थे न हृदय की धड़कन तेज हुई थी न मन में अशान्ति थी न बुद्धि में अस्थिरता। किसी अज्ञात शक्ति से मुझे अद्भुत बल मिल रहा था।

मेरे प्रिय भारतीय बंधुजन

(तालियों की गूंज) 'आज मैं आपके सम्मुख खड़ी हूं एक सत्य कहने के लिए। शायद यह सुनकर आपको बड़ी चोट पहुँचेगी लेकिन सत्य कहां मानने वाले भारतीयों से भी मैं सत्य न कहूं तो और किससे कहूं ? मैं जानती हूं कि सत्य सुनने पर आपकी मेरे विषय में क्या धारणा बनेगी ! फिर भी सत्य की पतवार सौंपकर मैंने अपनी जीवन-नौका मँझधार में छोड़ दी है।

लोगों के चेहरे बता रहे थे कि वे कुछ न समझ पाये।

'आप मानते हैं कि मैं विनोबाजी की अमेरिकन शिष्या हूं। मैं विनोबाजी की शिष्या जरूर हूं लेकिन अमेरिकन नहीं चीनी हूं। (सभा में कुछ हलचल शुरू हुई) मैं अमेरिका की नागरिक हूं नहीं कभी थी।

लेकिन आज मैं आपके सामने खड़ी हूँ किसी देश के नागरिक के नाते नहीं बल्कि आपके देश पर आक्रमण करनेवाले चीन देश में पैदा हुई एक चीनी इन्सान की हैसियत से। (सभा में अशान्ति बढ़ी)

"चीन की लाल सरकार ने भारत पर जो आक्रमण किया है उससे आपको दुःख जरूर हुआ है लेकिन आपसे भी अधिक दुःख मुझे हुआ है। चीन की लाल सरकार के इस कुकर्म का प्रतिरोध कठोरता से हम सबको करना चाहिए। (अशान्ति कुछ कम हुई)

लेकिन आप यह न भूलिये कि यह चीन का आक्रमण नहीं है चीन पर सत्ता चलानेवाली लाल सरकार का आक्रमण है। चीनी जनता और चीनी सरकार एक नहीं बल्कि भिन्न है। चीनी जनता के हृदय में आज भी भारत के लिए श्रद्धा है स्नेह है आदर है। (पुन: कुछ अशान्ति शुरू हुई)

दुनिया के किसी भी देश की सरकार की हरकतों के लिए उस देश की जनता को गुनहगार समझना ठीक नहीं है। हर देश की जनता अभी तक मूक है कमजोर है, बेबस है। उसकी अपनी ताकत अभी तक कहीं भी नहीं बन पायी है। किसी वाद या विचार की पोशाक पहनकर महत्त्वाकांक्षी सत्ताकामी राजनीतिज्ञ जनता के नाम पर हुकूमत चलाते हैं। जनता का राज्य कहीं भी स्थापित नहीं हो पाया है। चीन की लाल सरकार साम्राज्यवादी होगी लेकिन चीनी जनता नहीं है। हम चीनी सदा शान्तिप्रिय रहे हैं। शायद हद से ज्यादा शान्तिप्रिय।

सभा में गड़बड़ शुरू हो गयी। चारों ओर से शोर हुआ 'चीन के एजेन्टों को नीचे बैठाया जाय उन्हें बोलने न दिया जाय।' और फिर शोरगुल प्रारम्भ हुआ। सभापतिजी खड़े होकर लोगों को शान्त करने की कोशिश करने लगे। मैंने उनसे कहा 'आप तकलीफ न उठाइये। आज मैं अकेली ही सबसे निपट लूँगी। यह जनता चाहे मुझे सिर पर उठाये या पैरों तले रौंद डाले मैं सत्य ही कहूँगी।

मैंने फिर से भाषण प्रारम्भ किया और दस पाँच मिनट में शान्ति हो गयी।

लाल चीन की सरकार ने आपकी भूमि हथिया ली है। वह तो निर्जन भूमि है जहाँ के पहाड़ पत्थरों या बरफ पर लाल सरकार अपनी हुकूमत कायम कर रही है लेकिन उस सरकार ने मेरे जैसे सैकड़ों चीनियों का सब कुछ बर्बाद कर डाला है। माँ बाप रिश्तेदार स्नेहीजन सबको कत्ल कर डाला है। हमारे मकान मिट्टी में मिला दिये हैं। हमें देश से निकालकर निराधार निराश्रित शरणार्थी बना दिया है।

सभा में पूरी शान्ति हो गयी। मैं कहती जा रही थी। लोग खामोशी के साथ सुनते जा रहे थे। अन्त में मैंने कहा जिस भारत ने हम चीनियों को बुद्धि दिया धर्म दिया दर्शन दिया वह भारत केवल चीनी आक्रमण का सफलता के साथ मुकाबला करने में संतोष कर लेगा तो हमें घोर निराशा होगी। आप किसी बीते हुए युग में हमारे पास आये थे प्रेम और विचार लेकर। अब हम आस लगाये बैठे हैं कि भारत फिर से हमारे पास आये सर्वोत्तम-विचार देने अहिंसा का पाठ पढ़ाने। हमें चाह है कि आप फिर से चीन आयें और हमारे दिलों पर प्रेम की हुकूमत चलायें।

मेरा भाषण समाप्त हुआ और बड़ी देर तक तालियाँ गूँजती रहीं। दूसरे दिन के समाचार-पत्रों ने प्रथम पृष्ठ पर मेरी पूरी कहानी प्रकाशित की। अब तक जो कहानी मेरी दो-चार निकटतम सहेलियाँ ही जानती थीं वह अब सारी दुनिया को मालूम हो गयी।

जब मैंने समाचार-पत्रों में च्यांगकाई शेक के समाचार देखे थे तब अमेरिका के [illegible] में पड़ रही थी। मैं जानती थी कि वे सत्ता छोड़ना ही चाहते थे इसलिए उस समाचार से मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। हाँ फिर भी दुःख जरूर हुआ। एक अमेरिकन पत्रिका के सम्पादकीय में जो लिखा गया था उससे मैं भी सहमत थी। " जैसे व्यक्ति का सत्ता-त्याग मानो चीन की राष्ट्रीय सरकार की नैतिक शक्ति का अस्त। अब

शायद चीन को अच्छे दिन नसीब नहीं हैं।" उस समय मुझे कुछ नहीं सूझ रहा था कि विदेश में रहकर मैं क्या कर पाऊँगी? ममी के पास एक पत्र भेजा कि मैं वापस आना चाहती हूँ तो उसने तुरन्त उत्तर दिया : "यहाँ सब तरफ अशान्ति है मत आओ। मैं जानती थी कि वह मना करेंगी। जब उधर ममी-पपा अशान्तिमय वातावरण में थे तो मेरे लिए अमेरिका का सुरक्षित जीवन दूभर हो गया। इसलिए मैंने पपा के मित्रों की सहायता से चीन जाने की कोशिश शुरू की और ठीक उसी बीच मेरे पास पपा का पत्र पहुँचा। काश मैं जानती होती कि वह उनका आखिरी पत्र होगा।

मेरी प्यारी चिन

तुम्हारे पपा जीवन-संग्राम में हार गये हैं फिर भी उनके जीवन में आशा है क्योंकि उन्हें विश्वास है कि उनकी चिन कभी जरूर सफल होगी। अपनी जवानी में हमने जो सुन्दर सपने देखे थे वे सब टूट चुके हैं। हमारी समस्त आशाएँ-आकांक्षाएँ नष्ट भ्रष्ट हो गयी हैं। हमारे महान् लक्ष्य धूल में मिल चुके हैं। हम जो पा न सके तुम हासिल कर लेना। हम जो कर न सके तुम करके दिखाना। प्रजातंत्र के अपने विचारों को हम जीवन में न उतार सके। हमारे साज के टूटे तार कोई राग न बजा सके लेकिन तुम्हारे जीवन के साज के जरिये प्रेम शान्ति का संगीत सुनाये यही हमारी कामना है कामना है प्रार्थना है।

बिटिया तुम हमारी चिन्ता न करो। तुम्हारी ममी और मैं अपने गाँव के उस छोटे-से खूबसूरत मकान में बड़े आनन्द से दिन गुजार रहे हैं। धरतीमाता ने हमें अपनी गोद में सहारा दिया है। हम उसकी सेवा करते हैं। प्रतिदिन उष:काल के समय देखते हैं बाग के पौधों को जो अपने योग-क्षमा की आँखों में अरुण रंग की पावन आभा की सभा सजते हैं। सन्ध्या समय सबसे विदा लेते समय सूर्यनारायण हमारे लिए भी खास सिन्दूर के दूर से स्नेह-संदेश भेज देता है। सुबह का तीन घंटा हम बगीचे

में काम करते रहते हैं और फिर बरामदे में कुर्सियों पर बैठ पढ़ते रहते हैं। उस समय अनेक जात-अजात पंछी हमसे गुफ्तगू करने आते हैं। उनमें से एक नन्ही चिड़िया हमारी दोस्त बन गयी है। ठीक नाश्ते के समय वह मेरे कन्धे पर आकर बैठ जाती है। फिर एक और वह जाती है और दूसरा मैं। हमारे इस दिलचस्प जलपान के समय पूरबवाली खिड़की से बाँस की कोमल कोंपलें भी हमसे-से भीतर घुसकर कहती हैं— जय मालिक। उधर मकान की बायी ओरवाली क्यारियों में गुलाब ऐसे मस्त खिले हैं कि कभी-कभी वे हवाई जहाज पर सवार होकर तुम्हारे पास पहुँचने की योजना भी बना लेते हैं।

और मैंने नयी किताब लिखना शुरू किया है। मेरे प्रकाशक से कहना कि महीनेभर में भेज दूँगा। तुम्हारी मम्मी मेरी सब किताबों का अनुवाद करने में इस प्रकार भिड़ गयी है कि अब प्रकाशक महोदय की अच्छी-खासी फजीहत होनेवाली है। हाँ एक और खास बात कहता हूँ किसीसे कहना नहीं। अनुवाद का काम पूरा होने पर तुम्हारी मम्मी अपनी आत्मकथा लिखनेवाली है। तुम खुशी से उछल पड़ी न यह सुनकर?

ओ हाँ यह दूसरी महत्त्वपूर्ण बात तो छूट ही गयी। आजकल भोजन में बड़ी स्वादिष्ट चीजें मिलती हैं। खुद तुम्हारी मम्मी खाना पकाती हैं। उस वक्त हमें तुम्हारी बड़ी याद आती है। कितना अच्छा होता अगर तुम यहाँ होती और मजे से हमारे साथ जबान चटकाकर बढ़िया-बढ़िया चीजें खाती।

हमारी चिन्ता न करना। हम जैसे निरपराधी प्राणियों को 'जान लेना' क्यों सतायेगी? बहुत सारी जमीन तो हम पहले ही बाँट चुके हैं। अब जो छोटा-सा टुकड़ा अपने पास बचा है उसको दे देने की बात कहीं जाम तो अब भी दे दें। हम दोनों की अब विशेष जरूरतें ही क्या हैं? खाना भी हम कम्बख्त कम ही खायेंगे क्योंकि बूढ़े होते जायेंगे न!

चिड़िया रानी तुम सदा खुश रहना। खूब सारा ज्ञान प्राप्त करना

विद्वान् बनना और फिर वह काम करना जो तुम्हारे ममी-पपा नहीं कर पाये। चीन तुम्हारा इंतजार करता रहेगा।

प्यार और आशीष के साथ
पपा'

हाँ यही पत्र था जिससे मैं भ्रम में रही वास्तविकता से दूर पड़ी रही। लाल सेना के आगे बढ़ने की खबरें बराबर मिलती रहीं लेकिन मैं निश्चिन्त रही। दिन बीते सप्ताह बीते माह बीते घर से कोई पत्र न आया। फिर भी मेरी बेफिक्री बनी रही।

मेघाच्छादित उदास संध्या बरफ गिर रही थी। सर्दी बढ़ गयी थी ऊनी कपड़े पहनकर हीटर की गर्मी से मैं अपने शरीर में गर्मी बढ़ाने की कोशिश कर रही थी। बर्फ गिरती ही जा रही थी। सर्दी बढ़ती ही जा रही थी किसीने दरवाजा खटखटाया हेलन भीतर आयी उसके हाथ में शाम का समाचार-पत्र था। उसकी आँखों से आँसू छलक रहे थे। मैंने समाचार-पत्र छीन लिया। प्रथम पृष्ठ पर एक समाचार था

"ताईवान से खबर आयी है कि चीन के भूतपूर्व विदेशमंत्री और उनकी धर्मपत्नी को लाल सेना ने कत्ल कर दिया।

मानवीय शक्ति की एक सीमा होती है जिसे भगवान् जानता है। उस सीमा के उस पार जाना दुष्कर हो तो उससे मुक्त करने के लिए भगवान् कुछ और योजना बनाता है।

समाचार पढ़ हेलन रोने लगी। मैं समझ न पायी कि वह क्यों रो रही है? मैंने उससे कहा: "चुप रहो हेलन चीन के विदेशमंत्री की इकलौती लाड़ली बेटी तुम्हें हुक्म दे रही है चुप रहो।

हेलन सिसक-सिसककर रोने लगी। उसके सिर पर हाथ फेरती हुई मैं बोली: "चीन की भावी प्रधानमंत्रिणी तुम्हें हुक्म दे रही है और फिर भी तुम नहीं मानती डरो मत। वह प्रजातंत्रवादी है, साम्यवादी नहीं। वह तुम्हें मार नहीं डालेगी तुम्हें पूरी स्वतंत्रता देगी। रोना भी बर-

कुछ आवाज आयी कोई गिर गया। शायद हसन ही होगी। मगर हसन तो तकिये के पास बैठी थी। बगल में एक सज्जन खड़े थे।

"डॉक्टर बताइये क्या हुआ?

हसन की आर्त आवाज सुनते ही मैं उचककर उठ खड़ी हुई। मत रोको मुझे जाने दो चीन मेरा इन्तजार कर रहा है।

हसन ने मुझे पकड़ रखने की भरपूर कोशिश की। वह चीखती रही पकड़े रह गयी फिर भी मैं भाग गयी दूर-दूर कहीं भाग गयी चीन की ओर मेरे चीन की ओर।

मैं चीन नहीं जा सकी। ताइवान पहुँचते ही मुझे पता चला कि चीन के द्वार मेरे लिए बन्द हो चुके हैं शायद सदा के लिए।

मैं चीन नहीं पहुँची पर चीन ही मेरे पास पहुँच गया। मैंने देखा सैकड़ों लोग चीन से भागकर ताइवान आ रहे थे। उनमें से कुछ मेरे परिचित भी थे। शायद उन्हींमें से कोई मुझे पहचान कर ले गया और फिर मैंने खूब सारी बातें जान लीं अपने चीन की बातें मम्मी-पपा की बातें।

बहुत बड़ी अमेरिकन गाड़ी से उतरे हुए एक सज्जन मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए बोले बिर्मलिप बेटा तुम्हारे मम्मी-पपा महान् थे। मैं उनके पास गया था उन्हें समझाने। मैंने बहुत आग्रह से कहा कि ताइवान चलिये लेकिन तुम्हारे पपा ने जवाब दिया यह धरती मेरी माता है मैं इसकी गोद में खेला अपनी शक्तिभर इसकी सेवा की। अब इसे छोड़कर मैं कहाँ जाऊँ? फिर मैंने तुम्हारी मम्मी को समझाया। कहा कि साम्यवाद तुम्हें जिन्दा न रहने देगा और आप जैसों का चीन को सख्त जरूरत है; चीन के ही लिए आपको बचना चाहिए। तुम्हारी मम्मी बोली अपने प्राण बचाने के लिए क्या हम मातृभूमि को छोड़ दें? नहीं यह कदापि सम्भव नहीं। तब तक कर पायेंगे इन प्राणों की रक्षा? किसी दिन तो भगवान् के पास जाना ही है न? प्रभु ईसु हमें बल दे ताकि हम मेरी माँ पर टिक सकें। मैंने उन्हें बताया कि कुछ दिनों के

लिए तो तान्यान चलिये। हम शीघ्र ही वापस आ जायेंगे। इन कम्युनिस्टों की अधिक दिन नहीं चलनेवाली है। पर तुम्हारे पपा ने अपना अन्तिम निर्णय सुना दिया 'जिन लोगों के साथ मैं आज तक रहा उन्हींके साथ रहूँगा। हमें जीवन मिले या मृत्यु, हम यहीं पर रहेंगे।

मुझे ठीक याद नहीं आ रहा है कि यह सब कहनेवाले सज्जन कौन थे शायद पपा के साथवाले कोई कैबिनेट मंत्री थे।

एक बूढ़ी चिल्लाती हुई आयी: 'इन महात्माओं को क्रूरता से कत्ल करनेवाली लाल सेना कभी सफल न होगी कभी सुख न पायेगी। यह थी मेरे मामा के घर काम करनेवाली नौकरानी।

हमारे गाँव का एक बूढ़ा बड़ी देर तक मेरे पास बैठकर दुख सुनाता रहा:

'लाल सेना अपने गाँव की ओर बढ़ने लगी तो हम सारे गाँववाले भयभीत हो गये। लेकिन बाबूजी ने हमें हिम्मत दी। उन्होंने कहा कि 'लाल सिपाही सिर्फ उन्हींको मार डालते हैं जो बुरे हैं और जो मजदूरों का दमन करते हैं। अच्छे लोगों के साथ वे बड़ा अच्छा व्यवहार करते हैं। हमारे डरने का कोई कारण नहीं है। गाँव का एक युवक बोला: बाबूजी हमें आपके लिए ही चिन्ता हो रही है। सुना है कि सरकार चलाने वाले बड़े लोगों के साथ लाल सिपाही बड़ी क्रूरता से पेश आते हैं। बाबूजी फिर भी हँसते जा रहे थे। वे हमें समझा रहे थे कि 'तुम नहीं जानते कि साम्यवादी लोग पहले चीनी हैं और फिर साम्यवादी। गरीबों का शोषण करनेवालों का वे दमन करते हैं। वे मुझे क्या सतायेंगे? मेरे पास न अधिक जमीन है न संपत्ति। अधिकांश तो हमने पहले ही बाँट दी है। और त्यागपत्र देकर सरकार से अलग हुए भी हमें दो साल हो रहे हैं। मैं न जर्नलिस्ट हूँ न जमींदार। मैं तो किसान हूँ और लाल सेना किसानों की ही तो रक्षक है। बाबूजी ने बहुत समझाया फिर भी हमारा डर बना ही रहा। किसीने कहा 'लाल सिपाही नास्तिक होते हैं भगवान पर ... हम सभी गाँववालों ने मिलकर ...

मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। लाओत्से और कनफ्यूशियस की श्रेष्ठ भूमि में पैदा हुई एक कन्या की सेवाएँ आज भारत को प्राप्त हो रही हैं, यह अद्भुत संयोग है। हमारे दोनों देशों की गूढ़ और गहरी दोस्ती है। आपकी चीनी भाषा बड़ी मधुर है। मुझे तो वह पक्षियों के कलरव-सी लगती है। भगवान् की कृपा हमेशा प्रत्यक्ष रूप से प्रकट नहीं होती। अभी जो घटना बनी है उसमें भी मुझे भगवान् की करुणा नजर आ रही है।

चीन और भारत का संपर्क हो रहा है। प्रारम्भ में संपर्क कभी-कभी कटु भी होता है। इस सम्पर्क में से मधुरता पैदा हुई, तो विश्व-शान्ति की राह खुलेगी और अगर इसमें से कटुता पैदा हुई तो विश्व-विनाश आयेगा।" भारत के पास एक विश्व-कल्याणकारी विचार है। इसलिए हम मानते हैं कि यह संपर्क सुअवसर है। इस विज्ञान-युग में राष्ट्रों के बीच की दीवारें ढह जायेंगी। दुनिया एक बनेगी। 'विश्व-साम्राज्य' की स्थापना होगी। विज्ञान युग में हमें बनना है 'विश्वमानुष'। बुद्ध भगवान् का धर्म-चक्र प्रवर्तन-कार्य अधूरा रह गया था, वह हमें पूरा करना है। विज्ञान ने भौतिक अन्तर समाप्त कर देशों को जोड़ा। अब हमें वेदान्त के आधार से मानसिक अन्तर समाप्त कर दिलों को जोड़ना है। भगवान् इस महान् कार्य में अपना औजार बनाना चाहता है। शायद इसीलिए वह आपको यहाँ लाया।

मृत्यु से बड़ा जन्म में होता है ऐसा माना गया है। मैंने भारतीय समाज के सम्मुख समर्पण किया और उसने मुझे अपना लिया। मेरे अन्तर की सारी अशान्ति दूर हो गयी। अस्वस्थता न रही। तड़पन मिट गयी

ऊँचे आकाश में आनन्द से झूमनेवाले पुष्प को पता नहीं हुआ कि बीज भूमि में लुप्त होकर शून्यवत् हुआ है।

मेरे पाँव बुद्ध-मन्दिर की दिशा में बढ़ने लगे। रात हो गयी थी इसलिए बाहर के प्रकाश की प्रतीक्षा करनी नहीं थी। पाँच ज्योति का बड़ा दीया कदाचित् हवा के झोंके से बुझ जाय इसलिए मैंने मूर्ति के निकट एक छोटा-सा दीप ही जलाया। उस छोटे-से दीप के छोटे-से प्रकाश से बाहरी दुनिया का घना अन्धकार दूर होना कठिन ही था भव्य मूर्ति भी स्पष्ट नहीं दीख रही थी पर उस दीप ने दो वस्तुएँ आलोकित कर दीं—गुरुदेव के चरण तथा निर्मालिका के सुमन।

•

विश्व-शान्ति-साहित्य

अहिंसक क्रांति की प्रक्रिया	दादा धर्माधिकारी
विश्व-शान्ति क्या संभव है ?	कैथलिन लांसडेल
मेरी जीवन-यात्रा मैत्री यात्रा	शंकरराव देव
शान्ति-सेना	विनोबा
अहिंसक शक्ति की खोज	
विदेशों में शान्ति के प्रयोग	मार्जरी साइक्स
गांधीजी और विश्व-शान्ति	बंशीधर शर्मा
शस्त्रबन्दी क्यों और कैसे ?	रमावल्लभ चतुर्वेदी
जय जगत्	विनोबा
आजादी खतरे में	जयप्रकाश नारायण
किशोर-पत्र	नारायण देसाई
स्वाध्याय	
उपेक्षित उर्वसी अंचल	
दया-दमन	
शान्ति-सेना	
किशोर शान्ति-दल	
शान्ति-गीत	
शान्ति-सैनिक प्रशिक्षण	

लेखिका की अन्य कृतियाँ

विनोबा के साथ
शान्ति की राह पर
बाबदेव की शरण में (नाटक)
हार जीत (नाटक)

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी